

रूहानी डायरी

भाग 1

हुजूर महाराज सावन सिंह जी
के
समय का हाल
(1 अक्टूबर, 1942 से 19 अक्टूबर 1944)

लेखक
राय साहिब मुन्शीराम
(रिटायर्ड डिस्ट्रिक्ट व सेशन जज)

राधास्वामी सत्संग ब्यास

7
9
30
47
69
88
109
126
146
176
182
207
217
229
234
240
245
248
264
275
283

रूहानी डायरी, भाग 1
- राय साहिब मुन्शी राम

प्रकाशक:
सेवा सिंह,
सेक्रेटरी,
राधास्वामी सत्संग ब्यास,
डेरा बाबा जैमल सिंह,
जिला अमृतसर (पंजाब)-143 204

© Radha Soami Satsang Beas-1968; 2000
All Rights Reserved

पहली बार से नौवीं बार	1968-2000	77,000
दसवीं बार	2003	12,000

मुद्रक : सरताज प्रिंटिंग प्रेस, जोशी एस्टेट, टॉडा रोड, जालन्धर शहर

विषय-सूची

भूमिका	7
1. डलहौजी व सिकन्दरपुर की यात्रा और डेरे में रहने का हाल	9
2. साँगली, बम्बई इत्यादि के (देहली के रास्ते) दौरे	30
3. डेरे में ठहरना, डलहौजी और पहाड़ी क्षेत्र की यात्रा का हाल	47
4. सिकन्दरपुर की यात्रा का हाल	69
5. डेरे में निवास का हाल	88
6. देहली के रास्ते सिकन्दरपुर और पिसावा के दौरे की घटनाएँ	109
7. डेरे में निवास का हाल	126
8. डलहौजी के दौरे का हाल	146
9. डेरे में निवास का हाल	176
10. डलहौजी की यात्रा का हाल	182
11. डेरे में निवास का हाल	207
12. सिकन्दरपुर का दौरा	217
13. डेरे में निवास का हाल	229
14. सिकन्दरपुर का दौरा	234
15. डेरे में निवास का हाल	240
16. कालू की बड़ के दौरे का हाल	245
17. सिकन्दरपुर के दौरे का हाल	248
18. सिकन्दरपुर, देहली और रोहतक के दौरे का हाल	264
19. डेरे में निवास का हाल	275
20. मिण्टगुमरी, मुलतान, बनी बग्गी व लदरोर आदि के दौरे का हाल	283

21. डेरे और डलहौजी में निवास का हाल
 22. कालू की बड़ के दौरे का हाल
 23. डेरे में निवास का हाल तथा कालू की बड़ का दौरा
 24. डेरे में निवास का हाल
 25. डलहौजी का दौरा
- उद्धरण
अनुक्रमणिका
हमारे प्रकाशन

298

310

319

328

343

354

362

367

पाठकों से निवेदन

अकसर देखने में आता है कि हिन्दी पाठक श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणी (गुरुवाणी) का शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाते हैं। गुरुवाणी मूल रूप में गुरुमुखी लिपि में लिखी गई है। इसमें कई शब्दों के अन्त में ह्रस्व इ (i) और ह्रस्व उ (u) की मात्राओं का प्रयोग है। यह प्रयोग केवल व्याकरण की दृष्टि से हैं; वाणी पढ़ते समय ये मात्राएँ आमतौर पर उच्चारण में नहीं आतीं। हिन्दी पाठक बड़े प्रेम से गुरुवाणी का पाठ या गायन करने का यत्न करते हैं, लेकिन इन मात्राओं और कुछ अन्य अपरिचित हिज्जों के कारण अनजाने में उच्चारण गलत हो जाता है। गुरुवाणी का रूपान्तर देवनागरी लिपि में करते समय ये ह्रस्व हटा दिये गए हैं और अन्य छोटे-मोटे परिवर्तन कर दिये गए हैं ताकि हिन्दी पाठकों को गुरुवाणी के ठीक उच्चारण में सहायता मिल सके :

मूल रूप :

अखी बाझहु वेखणा
विणु कंना सुनणा।
पैरा बाझहु चलणा
विणु हथा करणा।

उच्चारण रूप :

अकखीं बाझों वेखणा
विण कंना सुनणा।
पैरां बाझों चलणा
विण हत्थां करणा।

सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु।
सुणिऐ लागै सहजि धिआनु।

सुणिऐ पढ़ पढ़ पावह मान।
सुणिऐ लागै सहज ध्यान।

यहाँ यह बात स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि इन मात्राओं का प्रयोग पढ़ने में भले ही नहीं होता, गुरुवाणी में इन मात्राओं का व्याकरण और अर्थ की दृष्टि से विशेष महत्व है। गुरु साहिबान के सन्देश को अधिक गहराई से समझने के इच्छुक गुरुवाणी का मूल रूप में अध्ययन कर सकते हैं।

— प्रकाशक

प्रार्थना

हे परमात्मा! मुझे चेला बनाना, गुरु न बनाना।
मुझे सेवादार बनाना, सेवा कराने वाला न बनाना।
मुझे बाहरी विद्या देना या न देना, मगर आन्तरिक ज्ञान देना।
मुझे सांसारिक पदार्थ न देना, मगर सुख देना।
मुझे सवारी न देना, टाँगें देना।
मुझे स्वादिष्ट भोजन न देना, भूख देना।
मुझे अमीराना बिस्तर न देना, नींद देना।
मुझे संसार की शाबाश न देना, अपनी शाबाश देना।

भूमिका

लाला मुन्शी राम जी, पंजाब के न्याय विभाग में अफ़सर थे। आप अपनी योग्यता व बुद्धिमता के कारण जज के पद से उन्नति करके डिस्ट्रिक्ट व सेशन जज के उच्च पद पर पहुँचे। आप एक उच्चकोटि के दयालु और न्यायशील न्यायाधीश रहे हैं। ब्रिटिश सरकार ने आपको राय साहिब की उपाधि से सुशोभित किया था।

1942 में आप अपने पद से अवकाश-प्राप्त करके अपने सतगुरु जी की शरण में ब्यास में रहने लगे।

1952 में मुझे 'द पाथ ऑफ़ द मास्टर्स' पढ़ने का अवसर मिला। हुजूर सन्त-सतगुरु के दर्शन की इच्छा हुई। राय साहिब का ध्यान आया। उन्हें इजाज़त के लिये लिखा, जवाब आया कि जब चाहो, आ सकते हो। मैं गया, उनके सादा जीवन और उच्च विचारों ने अपना प्रभाव डाला। महाराज चरन सिंह जी के दर्शन हुए, उनकी दया-दृष्टि पड़ी, और मैं निहाल हो गया। चरणों में शरण देने की प्रार्थना की, तो आज्ञा हुई कि अभी कुछ समय के लिये सोच-विचार कर लो, जल्दी की ज़रूरत नहीं। दो चार बार फिर गया, राय साहिब का संग मिला। उनको पूर्ण गुरु-भक्त व विचारवान दार्शनिक पाया। मेरे ऊपर उनका रंग चढ़ता गया। प्रार्थना करने पर हुजूर महाराज जी ने मुझ पर दया करके, नामदान बख़्शा दिया।

राय साहिब से बातचीत में पता चला कि आप नियमित रूप से डायरी लिखते रहे हैं। मेरे चाव और प्रेम प्रकट करने पर आपने बड़े प्रेम और कृपा से यह डायरी मुझे पढ़ने को दी। मैंने इसे एक अमूल्य निधि पाया।

परम सन्त-सतगुरु महाराज बाबा सावन सिंह जी के समय में जब राय साहिब आये और उन्होंने सेक्रेटरी का कार्य सँभाला, उस समय आपने यह डायरी लिखनी शुरू की। जब महाराज जी सत्संग के लिये दौरे पर तशरीफ़ ले जाते थे तो आप भी हमेशा उनके साथ होते थे। विचार परमार्थी थे और हृदय में

प्रेम था। गुरु-भक्ति के नशे में मस्त थे। वही रंग उनकी लिखी हुई डायरी में है। इसमें राय साहिब ने प्रतिदिन के जीवन की घटनाएँ, महाराज जी की यात्रा के रोचक हालात, सत्संग की अमृत वर्षा, परमात्मा के खोजियों से बातचीत के खास प्रभावशाली पत्रों का संग्रह तथा महाराज जी की अन्तिम यात्रा आदि घटनाओं का वर्णन किया है। महाराज सावन सिंह जी के बाद आप सरदार बहादुर महाराज जगत सिंह जी के समय में भी सेक्रेटरी के पद पर कार्य करते रहे और डायरी लिखते रहे। सरदार बहादुर जी का समय थोड़ा ही रहा और उन्होंने अपने स्थान पर श्री हुजूर महाराज चरन सिंह जी को वसीयत द्वारा अपना जानशीन नियुक्त किया। राय साहिब ने इन घटनाओं पर काफी प्रकाश डाला है।

राय साहिब अपने शेष जीवन में श्री हुजूर महाराज चरन सिंह जी के सेक्रेटरी रहे। आपने उनकी गद्दीनशीनी और बाद के वृत्तान्त बड़ी सुन्दरता से लिखे हैं। आप एक प्रेमी सत्संगी और उच्चकोटि के अभ्यासी होने के साथ-साथ, तीनों सतगुरु साहिबान के विश्वास-पात्र भी थे और वे आपसे कभी-कभी परामर्श भी करते थे। इसलिये आपकी डायरी का विशेष महत्त्व है।

इस डायरी में परम सन्त-सतगुरु महाराज बाबा सावन सिंह जी के समय की घटनाएँ बड़े विस्तार के साथ लिखी गई हैं। डायरी को तीन भागों में प्रकाशित किया जा रहा है। पहले और दूसरे भाग में श्री हुजूर महाराज सावन सिंह के समय की अक्टूबर 1942 से 1948 तक की घटनाएँ लिखी गई हैं। सरदार बहादुर महाराज जगत सिंह व श्री हुजूर महाराज चरन सिंह जी के समय का वृत्तान्त तीसरे भाग में दिया गया है। राय साहिब के कागजों में उनके हाथ की लिखी हुई प्रार्थना मिली है जिसे डायरी के आरम्भ में ही दिया गया है।

ताराचन्द अग्रवाल

रिटायर्ड डिस्ट्रिक्ट व सेशन जज

राधास्वामी कॉलोनी, ब्यास

1968



महाराज सावन सिंह जी
महाराज सावन सिंह जी

अध्याय 1

डलहीली व मिर्कन्दरपुर की यात्रा और डेर में रहने का हाल

हुजूर की डलहीली की यात्रा तथा वापसी

तारीख पहली अक्टूबर, 1942 को सुबह 6 बजे डेर से खंडा दुला नगर के गमने डलहीली की यात्रा पर चले। हुजूर महाराज फटनकोट जल्दी पहुँचने चाहते थे, लेकिन हम लोग यह कहते थे कि जल्दी की क्या उलझत है, यहाँ भी बजे बस सर्विस* चलती है, यहाँ भी बजे से पहले-पहले आगम्य से पहुँच जायेंगे। रास्ते में नहर के फाटक बन्द थे, तीन-चार फाटक अथे। अंतर्गत रुकने के कारण फाटक वाले अपने-अपने घरों में सो रहे थे, इसलिए बड़ी तादी व ड्राइवर सरूप सिंह को जाकर उनको जगाना पड़ा तबकि फाटकों के दरवाजे खोले जायें। इस प्रकार हम लोगों को हर फाटक पर जायी समय रुकना पड़ता। खैर, जैसे-तैसे 8.30 बजे फटनकोट स्टेशन के सामने पहुँचे। जहाँ से चल चला कि बस सर्विस मवा आठ बजे तक जाती है। महाराज जी ने सम्झा कि मैं तुमसे पहले ही कहता था कि जल्दी करो। धन-दौड़ करने बीकों पर पहुँचे तो पुलिस वाले ने, जोकि महाराज जी को जानता था, कहा कि अब तो मैं टेलीफोन कर चुका, सर्विस बन्द हो चुकी, अब लाचार हूँ। नतीजा यह हुआ कि हमें एक बजे तक बैरियर पर रुकना पड़ा। मैं और सरूप सिंह दोनों पुल चक्को देखने गये। कुछ पायों के बीच में गडर पायों पर रखने की बजाय पहियों के

* उन दिनों में जब भी मैदानों से पहाड़ों पर जाना होता था, दो तरफ पकड़ें जल्दी थीं, एक मैदानों से पहाड़ों की ओर, दूसरा पहाड़ों से मैदानों की ओर रास्ता तंग होने के कारण वाहन बीच रास्ते पर आकर रुकते थे। तिरिचित समय पर बैरियर खुलता था, ऊपर के वाहन नीचे और नीचे के ऊपर की ओर जाने दिये जाते थे।

बीच में अजीब कारीगरी से लटकाये हुए मालूम होते थे। वहाँ से आकर दूध पिया। मिलिट्री वालों की लॉरी चलाने की सिखलाई देखते रहे। हुजूर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से चुनी हुई वाणी छपवा रहे हैं, उसके फरमें पढ़ते रहे। इस प्रकार समय बिता कर 1 बजे चलकर 4 बजे के करीब डलहौजी पहुँच गये। संगत स्वागत के लिये उपस्थित थी। सामान उठाकर 'एल्समियर' पहुँचे। मौसम बड़ा सुहावना था। धूप खूब थी। मगर ठण्डक के कारण सुहावनी थी। सामने पहाड़ पर सफेद बर्फ चमक रही थी। हुजूर ने खड़े होकर पहाड़ का दृश्य देखा। इंजीनियर लाला त्रिलोक चन्द व हीरा नन्द उपस्थित थे।

दूसरे दिन लाला दुनी चन्द नागपाल की इच्छा पर अनुराग सागर की कथा शाम को 5 बजे शुरू की गई। मगर अनुराग सागर का हिन्दी संस्करण गलतियों से भरा हुआ निकला। बीबी लाजवन्ती पाठ करती थी, हुजूर को बार-बार ठीक करना पड़ता था, वरना अनुराग सागर जैसी उच्चकोटि की कविता सुन कर लोग आनन्द-विभोर हो जाते हैं।

3 अक्टूबर शाम को रिसालदार खुशहाल सिंह ने पाठ किया, क्योंकि सुनने वालों की संख्या अधिक हो गई थी। इस प्रकार 4 अक्टूबर तक हर शाम अनुराग सागर का पाठ होता रहा और साथ-साथ डंगा* बनाने की योजनाएँ भी बनती रहीं। कमेटी की बैठक 3 अक्टूबर को हुई, जिसमें डंगे का नक्शा पास हो गया। लाला त्रिलोक चन्द को डंगा बनाने के काम पर लगाकर हुजूर 5 अक्टूबर को सुबह ही अमृतसर के रास्ते डेरे की ओर रवाना हुए। रास्ते में पठानकोट में सीमेण्ट का पता लगाते हुए आये। सीमेण्ट कहीं भी किसी क्रोमत पर नहीं मिलता। गुरदासपुर से इधर जंगल में खाना खाया, जोकि बीबी ने साथ बाँध दिया था और गुरदासपुर दोपहर के 1 बजे पहुँच गये। वहाँ जंगलात के पब्लिसिटी अफसर लाला जगदीश चन्द के यहाँ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का भोग था। वहाँ हुजूर महाराज जी ने लगभग डेढ़ घण्टे तक सत्संग किया। वहाँ से चल कर बटाला में पाँच दस मिनट भाई शादी के काम के लिये रुकना पड़ा। वहाँ मिस्त्रियों से काम था। वहाँ से अमृतसर सत्संग-घर आये, जहाँ सत्संगियों के बार-बार कहने पर हुजुरी वाणी में से एक शब्द 'गुरु

* पहाड़ी रास्तों पर बनी पुख्ता दीवार।

चरन बसे अब मन में" का पाठ किया गया, जिसमें हुजूर ने सिमरन पर जोर दिया। क्योंकि जिसका सिमरन अधूरा है, उसका ध्यान भी अधूरा है और जिसका ध्यान अधूरा है उसका शब्द भी अधूरा है। वहाँ से लगभग 6 बजे चलकर शाम को 7.30 बजे डेरे पहुँच गये।

महाराज जी का डेरे में निवास

6 अक्टूबर, 1942 को हुजूर तो बाजरा कटवाते रहे और मैं हिसाब-किताब लिखता रहा, डाक का काम पूरा करता रहा। शाम को सरदार कृपाल सिंह ने सत्संग किया। हुजूर स्वयं उपस्थित थे, मगर थके हुए थे। तीसरे गुरु अमर दास जी का शब्द 'भाणा' के विषय में था। कभी-कभी हुजूर भी बीच में व्याख्या कर देते थे। सरदार कृपाल सिंह की व्याख्या दार्शनिकतापूर्ण (Philosophical) थी, हुजूर की सादा, आम लोगों के समझने योग्य तथा व्यावहारिक थी। हुजूर ने राजा परीक्षित का उदाहरण दिया कि 'भाणा' टल नहीं सकता।

महाराज जी का सिकन्दरपुर सिरसा की ओर प्रस्थान

7 अक्टूबर, 1942 को सुबह 6 बजे सरदार भगत सिंह को साथ लेकर सिरसा की ओर चल दिये। जालन्धर में सरदार साहिब उतर गये और संगत को दर्शन देकर सरदार लाल सिंह के साथ हुजूर लुधियाना की ओर चल पड़े। रास्ते में फगवाड़ा व गोराया में संगत को दर्शन देते हुए, लुधियाना बलवन्त राय वकील के घर आये, जहाँ संगत उपस्थित थी। वहाँ राय साहिब गुलवन्त राय डिस्ट्रिक्ट जज भी थे। उनसे बातचीत करते रहे और उनके बार-बार कहने पर उनकी कोठी देखने गये। वहाँ से सरदार निरंजन सिंह की कोठी गये, जोकि फिरोजपुर पुल के पास थी। उनकी लड़की की शादी की बातचीत करके साढ़े दस बजे के करीब मोगा में डॉ. प्रेम नाथ के यहाँ पहुँचे। वहाँ डॉ. साहिब बड़े प्रेम से मिले। उनसे बातचीत करके सरदार लाल सिंह के घर पहुँचे। उनकी माताजी की तबीयत ठीक न थी, उनकी तबीयत के बारे में पूछकर और सरदार साहिब की कोठी को देखकर हुजूर 12 बजे के करीब चल पड़े। रास्ते में मलोत

*वाणी के सभी उद्धरण पुस्तक के अन्त में दिये गए हैं।

मण्डी से इधर तौंगों के अड्डे के पास से पानी लेकर खाना खाया और सिरसा सत्संग-घर पहुँचे। वहाँ से केरे आये और केरे में कुछ समय ठहर कर मिकन्दरपुर, सरदार साहिब हरबन्स सिंह के मकान पर आ गये।

हुजूर का मिकन्दरपुर में ठहरना

मशीनों की मुरम्मत हो रही है। मिकन्दरपुर में महाराज जी का रोज का कार्यक्रम इस प्रकार है- महाराज जी सुबह नहा-धोकर व नाश्ता करके 9 बजे के लगभग केरे में, जहाँ कि मशीनें लगी हुई हैं और जोकि आबादी से दो-तीन मील दूर सड़क के किनारे सिरसा व हिसार के बीच है, पैदल जाते हैं और वहाँ जाकर काम की देखभाल करते हैं। डेढ़ बजे सबका खाना वहीं आ जाता है, सब लोग खाना खाते हैं। खाना खाने के बाद महाराज जी आराम करते हैं। और करीब 5 बजे बाहर आते हैं। बाकी लोग अपने-अपने काम में लग जाते हैं। मैं खाना खा लेने के बाद आराम-चौकी पर टाँग रखकर सो जाता हूँ क्योंकि सँचो पांजा* ने कहा है- “वह आदमी धन्य है जिसने पहले-पहल नींद का आविष्कार किया और फिर इस आविष्कार को गुप्त न रखा।” 6 बजे के लगभग सब लोग आबादी में वापस आ जाते हैं और महाराज जी सहन में चबूतरे पर कुर्सी डालकर बिराजमान होते हैं। बाकी लोग इधर-उधर बैठकर सत्संग और वचनों का लाभ उठाते हैं और फिर भोजन के बाद सो जाते हैं।

मेरे लिए अलग कमरा व स्नान-गृह है तथा हर प्रकार की सुविधा प्राप्त है। जितने लोग आये हैं सबको बढ़िया खाना मिलता है और हर प्रकार का आराम दिया जाता है। छोटे भाई सरदार हरबन्स सिंह आदर्श गृहस्थ हैं, मेहमान आ जायें तो खुश होते हैं, उनका सत्कार करने में कोई कसर नहीं छोड़ते, कोई तकलीफ़ महसूस नहीं करते और न ही खर्च की परवाह करते हैं। अतिथि-सेवा, मीठे वचन, जलपान, चारपाई इत्यादि हरएक के लिये तैयार रहती है। जैसा कि शास्त्रों में गृहस्थ-धर्म का वर्णन किया गया है, वैसा ही उनको पाया। सतगुरु महाराज दया करें कि हर गृहस्थ उनकी तरह ही गृहस्थ-धर्म का पालन करके जीवन सफल बनाये।

* एक प्रसिद्ध विदेशी उपन्यास का हँसोड़ चरित्र।

आजकल यहाँ और आसपास के गाँवों में मलेरिया तौरों पर है। महाराज जी ने सलाह दी कि इसका देशी इलाज यह है कि सात पने तुलसी के, चार या पाँच दाने काली मिर्च के साथ गण्डू लो फिर मुनक्का में, जिसमें से बीज निकाल दिये गए हों, मिलाकर गोलियाँ बनाकर खाई जायें तो मलेरिया रोका जा सकता है, और बुखार के बीच में पित पापड़ा, जंग हरड़, चिगायता, अजवायन, गिलो हरएक एक छटाँक लेकर पाँच सेर पानी में काढ़ा बनाकर एक छटाँक काला नमक भी काढ़े में डाल दें। मलेरिया बुखार वालों को एक-एक छटाँक के लगभग दिन में दो-चार बार पिलायें तो वह कुनीन जैसा ही असर करता है। क्योंकि आजकल लड़ाई के कारण कुनीन कम और महँगी मिलती है, इसलिये महाराज जी ने रोगियों को यही काढ़ा पिलाया और डॉ. मुग्ली मनोहर साहिब को सिरसा से बीमारों को देखने के लिये बुलाया। वह भी यही नुस्खा अपने बीमारों के लिये प्रयोग में ला रहे थे। मेरा विचार है कि अगर रोगी को क्रब्र हो तो पहले क्रब्र को ही दूर करना चाहिये। फिर इस दवाई से जरूर लाभ होगा।

10 अक्टूबर, 1942 को सिरसा के नायब तहसीलदार साहिब महाराज जी से मिलने केरे आये।

11 अक्टूबर, 1942 को सुबह 10 बजे सिरसा सत्संग-घर में महाराज जी ने हुजुरी पोथी में से सत्संग किया और ये शब्द लिया, ‘सतगुरु का नाम पुकारो। सतगुरु को हियरे धारो’॥²

महाराज जी ने व्याख्या की और इस बात पर जोर दिया कि अभ्यासी को अन्तर में तारा दिखाई देने लगे तो ‘निरत’ को तारे पर जमाना चाहिये, तारा फटेगा तो ‘तारा मण्डल’ नज़र आयेगा।

12 अक्टूबर, 1942 को हुजूर, दास* व भाई शादी के साथ दोपहर के समय बकबोर्ड** द्वारा सरदार बचिन्त सिंह जी के घर गये। कुछ दूर यानी दो मील तक सिरसा और हिसार के बीच पक्की सड़क पर जाना पड़ा, बाद में खेतों में से बकबोर्ड ले जानी पड़ी। रास्ता कोई न था। खेत भी समतल नहीं थे। इसलिये सफ़र आराम का नहीं था। बड़े भाई साहिब ने खूब सेवा की और चाहते थे कि महाराज

*डायरी के लेखक राय साहिब मुंशी राम

**चार पहिये वाली एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी।

जी रात को वहीं विश्राम करें। परन्तु महाराज जी को केरे में काम देखना था, इसलिये उन्होंने हठ नहीं किया और हम सब शाम को केरे होते हुए सिकन्दरपुर पहुँच गये।

13 अक्टूबर, 1942 को शाम के छः बजे सिरसा सत्संग-घर में सत्संग किया गया। उपस्थित लोगों में सिरसा के नहर विभाग के एस. डी. ओ., डॉक्टर साहिब और दूसरे बड़े-बड़े लोग भी शामिल थे। सब यही चाहते थे कि नाम के भेद का वर्णन किया जाये। महाराज जी ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से मारू राग महला पहला का यह शब्द पढ़वाया, 'काम क्रोध परहर पर निंदा'।^१ हुजूर ने ऐसी व्याख्या की कि बिना आन्तरिक मण्डलों तक पहुँचे हुए महात्मा के कोई ऐसी व्याख्या नहीं कर सकता और न ही इसे समझ सकता है। मतलब यह कि पहले नेकचलन बनो, उच्चकोटि का चरित्र बनाओ और पूरे गुरु की शरण में जाओ, जब वे नाम का भेद दें तो सिमरन करके मन को एकाग्र करो। तब अन्तर में बिजली के चमकारे, फिर सूरज, चाँद, शशमाल चक्र और इनके बाद सतगुरु का नूरी स्वरूप दिखाई देगा। तब शब्द स्वरूप सतगुरु अन्तर में शब्द सुनाकर ऊपर के आत्मिक देशों—तुरिया पद, ब्रह्मलोक से निकालकर पारब्रह्म में ले जायेंगे, जहाँ पहुँचकर आत्मा सारे परदों, मन और माया से मुक्त होकर पवित्र हो जायेगी और उस समय उसको गुरुमुखता या हंस गति प्राप्त हो जायेगी। इसके बाद वह कुल मालिक के दर्शन कर सकेगी।

सत्संग के बाद महाराज जी ने सत्संग-घर के चौबारों के आगे बरामदे के खम्भों का नाप लिया और फिर कमरों के लिये चटाइयों का नाप देखा। इस बीच रात के सवा आठ बजे गये और हुजूर बकबोर्ड में सिकन्दरपुर को चल दिये। रात के साढ़े नौ बजे केरे पहुँचे, वहाँ भाई शादी, मिस्टर भण्डारी, सरूप सिंह व गाँधी सब प्रतीक्षा कर रहे थे और चिन्तित थे कि इतनी देर क्यों हो गई। सब मिलकर सिकन्दरपुर की ओर रवाना हुए। रात के 10 बजे के लगभग खाना खाकर आराम किया। दोनों पाठी लुधियाना जाने के लिये सिरसा रह गये थे।

14 अक्टूबर, 1942 को श्री भण्डारी सुबह 10 बजे की गाड़ी से डेरे की ओर चल दिये। हुजूर सारा दिन केरे में काम की देख-भाल करते रहे। शाम को सिकन्दरपुर आये, बीमारों को काढ़ा पिलाया गया, समाचार-पत्र सुनते रहे, फिर

खाना खाकर सब लोग सो गये और यह फैसला हुआ कि सुबह छः बजे चलेंगे। सिरसा के वृत्तान्त को समाप्त करने से पहले एक बड़ा ज़रूरी वर्णन बाकी है।

कुछ अनजान सत्संगी और दूसरे लोग यह एतराज करते सुने गए कि हुजूर इतने बड़े महात्मा और महापुरुष होकर अपने बाल-बच्चों का काम दूसरे दुनियादारों की तरह करते हैं और आम गृहस्थों की तरह बर्ताव करते हैं। हुजूर ने स्वयं केरे में एक दिन शाम को मुझसे कहा कि जिस घराने में ज़रा-सी भी महन्ती आ जाये, उस घराने के लोग स्वयं कमाकर खाना शान के खिलाफ़ समझने लग जाते हैं और पूजा-सेवा का धान खाते हैं। मैं नहीं चाहता कि मेरी सन्तान अपाहिजों की तरह समाज पर या मेरे सत्संगियों पर बोझ बन जाये और परमार्थ से गिर कर पूजा व सत्संग के पैसों की आशा रखे। इसलिये मैंने इनको खेती में लगा दिया है। जितना रुपया नौकरी से पेन्शन लेने के समय मेरे पास था, वह मैंने इनके लिये ज़मीन खरीदने में लगा दिया। अगर नक़द रुपया इन्हें दे देता तो शायद ये खो देते या खर्च कर डालते। मैंने यही ठीक समझा कि नक़द रुपये देने की बजाय इनको ज़मीन खरीद दूँ जिससे अपना निर्वाह करते रहें और इनको कभी-कभी आकर सहायता देता रहूँ जिससे कि ये अपने पाँव पर खड़े हो जायें। यदि हुजूर सारे संसार का भला करने के लिये सतलोक से यहाँ पधारे हैं तो क्या हुजूर की सन्तान उन लोगों में नहीं आती? क्या वह अपनी सन्तान के प्रति लापरवाह हो जायें? हुजूर ने खेती-बाड़ी में अपनी सन्तान की सहायता करके न केवल अपनी सन्तान का भला किया बल्कि साध-संगत का बड़ा उपकार किया। फलस्वरूप अब उनके सुपुत्र साध-संगत से सेवा लेने की बजाय साध-संगत की सेवा करते हैं। जो सत्संगी उनके यहाँ जाते हैं उनका हर तरह से अतिथि-सत्कार करते हैं और केवल यही नहीं बल्कि हुजूर की देख-रेख और परिश्रम से यह क्षेत्र, जोकि सिवाय बबूलों के या कहीं-कहीं खेती के, रेगिस्तान दिखाई देता था, 25-30 वर्ष के समय में हरा-भरा और उपजाऊ हो गया है। जो अराई लोग इस प्रदेश में खेती-बाड़ी का काम नहीं जानते थे या मेहनत नहीं करते थे, उन पर हुजूर के उदाहरण का इतना अच्छा प्रभाव पड़ा कि अब वे लोग कमाद (गन्ना), सब्जी, कपास आदि फ़सलें पैदा करते हैं, जिनका पहले कभी

उनको ख्याल तक न था, कमाद को सरकण्डा कहा करते थे। अब वे खुशहाल और दौलतमन्द हो गये हैं। 'जमाले हम-नशीं दर मन असर कर्द' अर्थात् प्रियतम के सौन्दर्य ने मुझे प्रभावित किया।

इसमें एक और भी भेद है, त्यागी सन्तों से संसार को इतना लाभ नहीं पहुँचता जितना कि गृहस्थ सन्तों से पहुँचता है। त्यागी महात्मा के सम्बन्ध संसार और सांसारिक लोगों के साथ बहुत कम होते हैं। उनकी अपनी शारीरिक आवश्यकताएँ बहुत कम होती हैं इसीलिये उनके सेवकों का दायरा सीमित होता है। गृहस्थ महात्मा को डॉक्टर, हकीम, वकील, स्कूल-मास्टर सम्बन्धियों तथा दोस्त-दुश्मन सबसे सम्बन्ध रखने पड़ते हैं। हुजूर ने तो यह दायरा इतना बढ़ा कर रखा है कि कोई ही अभाग्य सत्संगी होगा जिसको किसी न किसी सम्बन्ध में हुजूर की सेवा का अवसर न मिला हो। कहीं खेती-बाड़ी का प्रबन्ध हो रहा है, कहीं मुकद्दमों की रोक-थाम हो रही है, कहीं डॉक्टर, वैद्य, हकीम बुलाये जा रहे हैं, कहीं स्कूल-मास्टर व अध्यापिकाओं से सम्बन्ध बना रखा है, कहीं लोहार, तरखान, मिस्त्री, कारीगर मशीन के फ़िटर, पटवारी, गिरदावर, माल अफ़सर तथा कमिश्नर तक से सम्बन्ध हैं, कहीं किताबें छप रही हैं। बे-समझ लोग इन सम्बन्धों पर एतराज करते हैं। जो परमार्थ के भेद को जानते हैं वे इन कामों में मालिक की अत्यन्त दया के निशान देखकर हैरान और खामोश हैं। बे-समझ लोग समझते हैं कि एक व्यक्ति, जोकि हमसे भी अधिक सांसारिक कार्यों में लगा हुआ है, वह कैसे महात्मा हो सकता है। वास्तव में वे लोग ग़लती पर हैं। वे बाहरमुखी कार्यों से महात्मा की आत्मिक उन्नति का अनुमान लगाना चाहते हैं। सन्तों की परख मन और बुद्धि के द्वारा असम्भव है। कुछ दिन उनका सत्संग और संगत की जाये तो कुछ-कुछ पता चलता है। मौलाना रूम साहिब ने इस विषय पर काफ़ी विचार किया है :

क्रोम गुफ़तन्द ऐ गिरोहे मुदई, कू गवाहे तिबो इलमे नाफ़ई।

चू शुमा बस्ताई हम ख्वाबो खुरीद, कै शुमा सय्यादो सेमुर्गे दिलेद।

ऐ दावेदारो! तुम जो तिब, चीरने-फाड़ने के माहिर हो और मान-बड़ाई चाहते हो, तुम्हें पैगम्बरों में कैसे गिना जा सकता है। खास कर जबकि आप खाने-पीने व सोने में फँसे हुए हो, आप महाबली मन को कैसे काबू कर सकते हो।

सन्त समझते हैं कि ऐ दुनियादार लोगों! तुम प्रभु के भक्तों का बाहरी रहन-सहन देखकर उनका अनुमान लगाना चाहते हो! तुम अन्धे हो, मालिक से वे आँखें माँगे जिनसे तुम्हें वह कीमती चीज़ जो उनके पास है, दिखाई देने लगे। तुम बुद्धि की तराजू में उन्हें तोलना चाहते हो यह तुम्हारी भूल है। किसी आम मनुष्य के दिल और दिमाग का पता लगाना हो तो उसके पास दिन-रात कुछ समय तक रहकर ही सही अनुमान लगाया जा सकता है। सन्तों की परख जो दूर से करते हैं, वे बड़े नादान हैं।

हुजूर का सिकन्दरपुर से चलना, लुधियाना में ठहरना और डेरे को वापसी

महाराज जी तो 5 बजे ही तैयार थे, हम सब भी तैयार हो गये, सवा पाँच बजे के करीब चल दिये। सिकन्दरपुर से चलकर सिरसा सत्संग-घर में 15 मिनट संगत को दर्शन देकर आगे रवाना हो गये। कोटकपूरा निकलकर आगे मोगा की ओर एक नहर सड़क को काटती है, उस नहर के पार मोटर ठहराकर हम सब लोग शौच आदि से निपटे। शादी व सरूप सिंह ने पराँठे खाने शुरू कर दिये। हुजूर का नवासा काका सतनाम सिंह, भाई शादी के साथ अगली सीट पर था। उसको भी खाने के लिये कहा, परन्तु उसने नहीं लिये। रास्ते में कोटकपूरा के रेलवे फाटक पर संगत दर्शनों के लिये आई। हुजूर का विचार मोगा वालों को एक घण्टा समय देने का था परन्तु हमारे सौभाग्य और उनके दुर्भाग्य के कारण कोई भी घर पर नहीं था। न डॉ. प्रेम नाथ जी घर पर थे और न सरदार भाग सिंह जी। इसलिये उनके घर से लौटकर लुधियाना की ओर चल दिये। लुधियाना में हुजूर महाराज डिस्ट्रिक्ट व सेशन जज रायबहादुर लाला गुलवन्त राय साहिब की कोठी पर तशरीफ़ ले गए। सवा दस बजे का समय था। वहाँ नहा-धोकर सबने खाना खाया। हुजूर ने दोपहर को विश्राम किया। डिप्टी साहिब लाला हरनारायण साहिब का लिखित सन्देश मिला :

नीलकंठ तुम नीले रहियो, हमारी राम-राम रामजी से कहियो।

सोते हों तो जगाकर कहियो, जागते हों तो कान में कहियो।

लुधियाना व जगराओं की संगत दर्शनों के लिये आई। शाम को राय बहादुर की कोठी में सत्संग हुआ। भीड़ अधिक न थी क्योंकि शहर वालों को सत्संग का पता न था और न ही कोठी का पता था। एक अजनबी ने बड़े पते का सवाल

पूछा कि जब सन्त कहते हैं कि ईश्वर मनुष्य के अन्दर बिराजमान है तो वह मनुष्य को बुरे कामों से क्यों नहीं रोकता और क्यों लोगों को नरक और चौरासी में भेजता है ? इस सवाल का जवाब गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी रामायण की भूमिका में अच्छी तरह से दिया है। हुजूर ने समझाया कि आग काठ में है लेकिन काठ को नहीं जलाती। अगर युक्ति से काठ में से आग को प्रकट कर लिया जाये अर्थात् एक लकड़ी दूसरी लकड़ी से रगड़ी जाये तो काठ की आग अपना असर दिखाती है। इसी प्रकार अगर अभ्यास से ईश्वर को अन्तर में प्रकट कर लिया जाये तो वह बेशक मनुष्य को बुरे कामों से रोकेगा और उसे नरकों और चौरासी में जाने से बचायेगा। शम्स तबरेज ने फ़रमाया है :

गोयन्द आँ सगाँ कि नरफ़तन्द राहे रास्त,
राह नेस्त बन्दा रा बजनाबे खुदा-दरदग।

अर्थात्, वे नासमझ, जोकि कभी सीधे रास्ते पर नहीं चले, कहते हैं कि मानव के लिये परमात्मा तक पहुँचने का कोई रास्ता नहीं- लेकिन यह झूठ है ! झूठ है !! झूठ है !!!

शाम के सत्संग के बाद कुछ समय आराम करके हुजूर सड़क पर पैदल घूमने चले गए। वहाँ से वापस आये तो सरदार बचिन्त सिंह और हुजूर के भाई सरदार कुण्डा सिंह इत्यादि हुजूर से बातचीत करने आये, क्योंकि हुजूर की बिरादरी में से एक बारात लुधियाना आई थी। दूसरे दिन सुबह ही हुजूर आनन्दकारज के लिये गए। वहाँ आनन्दकारज के बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से दो शब्दों का पाठ किया गया। एक मारू राग तीसरी पातशाही का, दूसरा पाँचवीं पातशाही का, "पाठ पढ़यो अर बेद बीचारयो"।

हुजूर ने कहा कि अभी तक लोग गुरु नानक साहिब की ऊँची फ़िलासफ़ी के द्वार पर भी नहीं पहुँचे। सत्संग के बाद हुजूर फ़ोल्डगंज में माई की धर्मशाला में बरातियों से मिलने गये। वहाँ से होकर दास* के मकान को, जोकि कचहरी रोड पर है, अपने चरण-कमलों से पवित्र किया और लुधियाना के सत्संगियों को दर्शन देकर अपने विश्राम-गृह में आ गये। वहाँ खाना खाकर लेट गये। दोपहर को भैनी साहिब से सन्त प्रताप सिंह साहिब हुजूर से मिलने के लिये आए। हुजूर

* डायरी के लेखक राय साहब मुन्शी राम।

को अपने यहाँ होनेवाले उत्सव पर आने का न्योता दिया। लेकिन ग्वालियर से जनरल राजवाड़े व रानी लक्ष्मीबाई आनेवाले थे, इसलिये हुजूर ने उत्सव में न आने की क्षमा माँग ली और रास्ते में बारातियों से मिलकर ब्यास को चल दिये। रास्ते में फ़िल्लौर, गोराया तथा मौली की संगतों को दर्शन देकर सरदार साहिब सरदार भगत सिंह जी के मकान पर ठहरे। सरदार साहिब मलेरिया से बीमार थे। परन्तु उस समय आराम था। वहाँ एक घण्टा ठहर कर शाम को डेरे पहुँच गये।

हुजूर का डेरे में ठहरना

17 अक्टूबर की सुबह कार्तिक की संक्रान्ति का सत्संग था। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब से पाँचवीं पातशाही का बारहमाहा पढ़ा गया। ऐसी उच्चकोटि की पंजाबी कविता परमार्थ के विषय पर देखने में नहीं आती। इसमें पहले परमार्थ के खोजियों के लिये पूरे गुरु की आवश्यकता पर जोर दिया गया है और फिर मृत्यु के समय का चित्र अच्छा खींचा है। हुजूर ने समझाया कि जब मनुष्य की आत्मा शरीर से निकलने को तैयार होती है, उस समय उसके सम्बन्धी बड़ी गलती करते हैं कि उसकी आत्मा को चैन व शान्ति से शरीर से अलग होने देने की बजाय रोना-पीटना व चिल्लाना शुरू कर देते हैं जिससे मरने वाले का अकाज व हानि होती है। उनको यह चाहिये कि उसका हौसला बढ़ाये कि हमारी चिन्ता न करो, मालिक का ध्यान करो, ताकि वह प्रसन्नता के साथ प्राण त्याग सके।

कार्तिक के महीने में गुरु अर्जुन साहिब ने कर्मों की फ़िलासफ़ी (सिद्धान्त) पर प्रकाश डाला है कि बुरे कर्मों का फल बुरा और अच्छे कर्मों का फल अच्छा होता है। परन्तु कर्मों से मुक्ति नहीं मिल सकती। अगर किसी ने पाप कर भी लिये तो उनका उपाय यह है कि नाम की कमाई से उनको साफ़ किया जाये। पापों को साफ़ करने का इलाज महात्मा के सत्संग तथा नाम के अभ्यास के सिवाय और कोई नहीं है।

डेरे में सुबह का सत्संग करके शाम का सत्संग हुजूर ने सत्संग-घर, मजीठा रोड, अमृतसर में किया। अँधेरा हो गया था, रात को वहाँ से वापस डेरे आ गये।

18 अक्टूबर, 1942 को जनरल राजवाड़े व रानी लक्ष्मीबाई पधारे। सुबह साढ़े नौ बजे सत्संग हो रहा था, जब यह साहिबान पहुँचे। हुजूर ने हुजुरी वाणी से कार्तिक का महीना लिया और कमलों का भेद प्रकट किया, जो शरीर के

अन्दर है। डाक कई दिनों की इकट्ठी हो गई थी, वह सुनी। रात को सर कॉलिन गारबेट पधारे।

19 अक्टूबर, 1942 को सुबह बाजरे की कटाई होती रही और डाक का काम चलता रहा। शाम को पाँच बजे सत्संग हुआ। हुजूर वाणी का यह शब्द लिया गया, 'सतगुरु का नाम पुकारो। सतगुरु को हियरे धारो'।¹⁵

सत्संग में हुजूर ने समझाया कि गुरु के समान और कोई सम्बन्धी इस संसार में नहीं है, न स्त्री, न माँ-बाप, न मनुष्य का अपना शरीर, क्योंकि गुरु मरते समय साथ जाते हैं, वे ही लोक और परलोक दोनों के साथी हैं। सिमरन चन्द्र-मण्डल से परे नहीं ले जाता, उससे आगे गुरु-स्वरूप का ध्यान आत्मा को खींचकर ले जाता है। सत्संग के बाद हुजूर सर कॉलिन को समय देते रहे।

20 अक्टूबर, 1942 को हुजूर और सर कॉलिन राय साहिब के कमरे में बातचीत करते रहे। मैं डाक का कार्य करता रहा। लाला त्रिलोक चन्द जी का डलहौजी से तार आया कि सीमेण्ट दो रुपये प्रति मन से कम नहीं मिलता और वह भी बहुत थोड़ा मिल सकेगा। उनको एक हजार रुपया भेजा गया और तार दिया गया कि खरीद लें। इसके बाद हुजूर डाक देखते रहे। पेट्रोल के लाइसेंस की, जोकि खो गया था और लाउड-स्पीकर की दख्खास्त ला। नियामत राय को रजिस्ट्री करके भेजी गई। सरदार जगत सिंह कल रात वापस चले गए। आज यह शब्द पढ़ा गया, 'गुरु गुरु मैं हिरदे धरती'।¹⁶

इसके बाद जनरल व रानी लक्ष्मीबाई मोटर कार में साढ़े छः बजे शाम को जालन्धर व देहली के रास्ते वापस चले गए। श्रीमती मानक भिड़े व सर कॉलिन गारबेट रह गए। सुना है कि जाने से पहले ये लोग हुजूर से साँगली तशरीफ ले जाने का वचन ले गए हैं। शायद 10 नवम्बर के बाद जाएंगे। आज सुबह की डाक हुजूर ने अपने कमरे के ऊपर बगमदे में ही मँगवा ली। डाक के बाद हुजूर अलग-अलग लोगों को वक्त देते रहे।

शाम को सत्संग में फ़रमाया, कि मेरे मकान के बाहर बोर्ड लगा दो कि 12 बजे से 4 बजे तक कोई मुझसे मिलने की कोशिश न करे, क्योंकि यह समय मेरे आराम का होता है। सत्संग में पढ़ा गया, 'धुन सुन कर मन समझाई'।¹⁷ सरदार

साहिब भगत सिंह जी जालन्धर से सत्संग के समय पधारे। हुजूर ने सरदार गुलाब सिंह से कहा कि व्याख्या करो। सरदार साहिब ने बड़ा दार्शनिक उपदेश दिया कि मन और आत्मा की बैठक आँखों के पीछे है, एक और तीसरी शक्ति मन और आत्मा की बैठक के पास आ ठहरी है अर्थात् शब्द, जोकि अनामा से लेकर सत्तलोक इत्यादि देशों में से गुजर कर तीसरे तिल पर आकर सुनाई देता है। बाकी सब साधन- हठ-योग, ज्ञान-योग, ध्यान-योग मरने के समय बेकार हो जाते हैं, क्योंकि यह सब शरीर व बुद्धि के द्वारा मनोकाश में किये जाते हैं और मरने के समय मनोकाश जो हृदय से लेकर तीसरे तिल तक है, सिमट जाता है, उस समय ये साधन कैसे काम दें। उस समय शब्द जोकि मनोकाश से परे है, वही जारी रहता है तथा मन और आत्मा को खींचकर ऊपर ले जाता है। चौदह शक्तियाँ या देवता शरीर में हैं। पाँच कर्म-इन्द्रियाँ और पाँच ज्ञान-इन्द्रियाँ- आँख, कान, नाक, ज़बान (स्वाद लेने-वाली) और त्वचा अर्थात् चमड़ी जो स्पर्श को महसूस करती है। त्वचा से गर्मी, सर्दी और भार महसूस होता है। मन के चार कार्य अर्थात् चार अन्तः करण- मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार हैं। बुद्धि से निर्णय लिया जाता है। अहंकार में 'मैं-मेरी' पर जोर देने की शक्ति है। मन स्वाद लेता है और चित्त देखता है। बुद्धि सबसे ऊपर अष्ट-दल कमल के पास ही है। भजन के समय ये चौदह शक्तियाँ समेटनी होती हैं।

रात के 9 बजे सरदार साहिब जालन्धर वापस लौट गये। लाला पृथ्वी नाथ परसों से आये हुए हैं और मेरे पास बिरजमान हैं।

22 अक्टूबर, 1942- कल रात 11 बजे श्रीमती वान ऐलन पधारी। आज उनको 'नाम' दिया गया। शाम के सत्संग में यह शब्द लिया गया 'धाम अपने चलो भाई'।¹⁸ सरदार गुलाब सिंह ने व्याख्यान दिया। सरदार साहिब भगत सिंह भी उपस्थित थे। हुजूर ने समझाया कि शरण से मतलब यह है कि अच्छा आचरण बनाकर मन तथा सुरत को समेटकर अष्ट-दल कमल में, जहाँ कि गुरु का नूरी स्वरूप है, पहुँचा देना और गुरु से बातें करना। सत्संग के बाद हुजूर शाम को राय साहिब के चबूतरे पर आ बिराजे और साँगली के दौरे के बारे में परामर्श देते रहे।

23 अक्टूबर, 1942- आज सुबह 9-10 बजे के बीच भी हुजूर साँगली के दौरे के विषय में विचार-विमर्श करते रहे। दोपहर के 12 बजे सर कॉलिन व

श्रीमती वान ऐलन हुजूर से विदा लेने ऊपर गये। मुझे भी अनुवादक के रूप में बुलाया गया। हुजूर ने समझाया कि जो कुछ अन्तर में देखो किसी से न कहना और चाहे युद्ध का नतीजा या देश की दशा कैसी भी हो, मेरा और तुम्हारा सम्बन्ध नहीं टूट सकता। दोनों को सुबह प्रसाद दिया गया और दोनों आज दोपहर को चले जायेंगे। शाम को सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से मारू राग का शब्द पढ़ा गया, 'सच्चा आप सवारणहारा'।⁹ सरदार गुलाब सिंह ने व्याख्या की क्योंकि हुजूर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से चुने गए शब्दों का सारा दिन अध्ययन करते-करते थक गये थे। हुजूर ने फ़रमाया कि नाम मिलना ऊँचे भागों का नतीजा है। सत्संग के बाद हुजूर एक रोगी का हाल-चाल पूछने मोटर में डॉ. चन्द्रबन्सी साहिब के साथ जल्लूवाल गये।

24 अक्टूबर, 1942 को सुबह हुजूर राय साहिब के कमरे में पधारे। कुछ समय तक बातचीत करके नई पुस्तक का मसौदा पढ़ने चले गए। शाम को सत्संग में कबीर साहिब की वाणी में से 'सिमरन का अंग' लिया गया। पाठ शुरू होने से पहले हुजूर ने फ़रमाया कि लोगों को सिमरन के लाभ का पता नहीं। यदि सिमरन पूरा हो जाये तो चलती गाड़ी को रुकने को कहो तो वह भी खड़ी हो जायेगी। एक निहंग सिक्ख का सिमरन इतना तेज़ था कि जो कोई बुखार का रोगी उनके पास आता, वह पाठ शुरू कर देता। पाठ ख़त्म होते-होते बुखार रफूचक्कर! सिमरन से चन्द्र-लोक तक जा सकते हैं। वहाँ जाकर यह संसार भूल जाता है। जितनी देर उधर रहते हैं उतनी देर सांसारिक सुख-दुःख का अनुभव नहीं होता। लोग सिमरन पर इतना जोर नहीं देते। पहले ही शब्द सुनना शुरू कर देते हैं। पर यह शब्द खींच नहीं सकता। सिमरन में इतना रस है कि ऐसा रस संसार की किसी वस्तु में नहीं है। फिर आत्मा व मन को शब्द से मिलने वाले रस का क्या ठिकाना होगा। लेकिन सिमरन ऐसा हो कि मन बाहर न जाये। अगर मन बाहर जाता है तो उसे दूसरी जंजीर ध्यान की दे दो। सिमरन ऐसा हो कि 'तन थिर, मन थिर, बचन थिर, सुरत निरत थिर होय।'

यह नोट करना भूल गया कि बेचारा दिलीपा जो हमारे मकान में रहा करता था, कल दोपहर के 12 बजे के करीब, चढ़ाई कर गया। संसार में आकर बीमारी और ग़रीबी के दिन बिताकर चला गया, परन्तु नाम साथ ले गया।

27 अक्टूबर, 1942 आज शाम को महात्मा चरणदास जी की वाणी में से 'शील का अंग' पढ़ा गया।

कल से चार रात का 'ब्लैक आउट' है इसलिये आज्ञा हुई कि शाम की जगह सत्संग सुबह किया जाये जिससे कि सूरज छिपने के पहले संगत रोटी खा सके।

28 अक्टूबर, 1942 को सुबह 9 बजे सत्संग हुआ। महात्मा कबीर की वाणी में से 'शील का अंग' लिया गया। हुजूर ने 'नामधारियों' की रहनी की बड़ी तारीफ़ की। फ़रमाया कि सन्त जीवों पर बड़े-बड़े अहसान करते हैं, मगर बताते नहीं और न ही आम तौर पर जीव को उनके उपकार का ज्ञान होता है। 'शील के अंग' के बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से पाँचवीं पातशाही का शब्द पढ़ा गया, 'दरसन भेटत पाप सभ नासै'।¹⁰

29 अक्टूबर, 1942 को 10 बजे ठट्टिया गाँव में भोग था। हुजूर वहाँ कार द्वारा गये। साथ बख़्शी चानन शाह व सरदार जोध सिंह गये। मैं डाक का काम करता रहा।

डाक का काम करनेवाले को पता लगता है कि इस ज़माने में लोग किस प्रकार दुःखी हैं। नब्बे प्रतिशत से भी ज़्यादा पत्र ऐसे होते हैं, जिनमें लिखने वाला बीमारी, ग़रीबी या सम्बन्धियों व प्रिय-जनों की मृत्यु की शिकायत करता है। आमतौर पर पत्रों का उत्तर यही होता है कि सब दुःख अपने पिछले जन्म के पापों के परिणाम हैं। मालिक के चरणों में प्रार्थना करो और नाम का सिमरन करो, मालिक दया करेंगे। कभी-कभी यह भी लिख दिया जाता है कि अमुक दवा का प्रयोग करो, आराम हो जायेगा। इससे अनजान लोग यही समझेंगे कि जब सब ऐसे पत्रों का उत्तर एक ही प्रकार का होता है तो पत्र डालने वाले को क्या सन्तोष मिलता होगा और उसको पत्र लिखने का क्या लाभ होता होगा। परन्तु हुजूर स्वामी जी महाराज ने अपनी पोथी सार बचन में फ़रमाया है :

सहो अब पड़े जैसी आय। करो फ़र्याद गुरु से जाय॥

गुनह तुम किये दिन और रात। गुरु की कुछ न मानी बात॥¹¹

प्रार्थना करने में सत्संगी का लाभ है चाहे देखने में ऐसे पत्रों का उत्तर लगभग एक ही प्रकार का होता है, परन्तु लिखने वाले को तो उसी समय सहायता मिलती है, जब वह अपनी प्रार्थना को विनयपूर्वक लिखता है। एक व्यक्ति ने लिखा था कि मुझे सख्त दर्द है और बड़ी बेचैनी है। उसको जवाब तो साफ़-साफ़ ऐसे ही शब्दों में दिया गया था। परन्तु आज उसका उत्तर आया है कि जिस दिन से उसने पत्र भेजा है उस दिन से कुछ आराम है। यह एक नहीं बल्कि इस प्रकार के बीसियों पत्र धन्यवाद के आते रहते हैं, जिससे मनुष्य हैरान हो जाता है। कई पत्रों में यह लिखा आता है कि हुजूर ने फ़लों-फ़लों संकट के समय आकर सहायता की। ये पत्र हिन्दुस्तान से ही नहीं बल्कि हिन्दुस्तान के बाहर अमेरिका, इंग्लैण्ड के सत्संगियों व हिन्दुस्तानी सैनिकों व मोटर ड्राइवरों से, जो कि आजकल द्वितीय विश्व युद्ध के कारण भारत से बाहर गये हुए हैं, प्रायः आते रहते हैं। कोई मिश्र से, कोई मलाया से, कोई बर्मा से, कोई गहरे समुद्र से, कोई अमेरिका के प्रान्त कैलिफ़ोर्निया से ऐसी बात लिखता है, जिससे हुजूर की अत्यन्त दया तथा सहायता पर आश्चर्य होता है जोकि वे अपने जीवों पर कर रहे हैं। थियोसाफ़ी की पुस्तक 'इनविजिबल हेल्परज' पढ़ी, जोकि शायद स्वर्गीय श्री लेडबीटर की लिखी हुई है। परन्तु ये पत्र जो यहाँ आते रहते हैं वे इस पुस्तक के उदाहरणों से कहीं बढ़कर हैं, जिससे स्वामी जी महाराज के ये वचन कि सन्तों के सत्संगी को प्रतिदिन सहायता मिलती है, पूरी तरह ठीक सिद्ध हो जाते हैं। चाहे उसका मतलब अन्तर के दृश्यों से लिया जाये या बाहर की सहायता से, दोनों प्रकार से ठीक है। सन्त अन्दर व बाहर दोनों तरफ़ सहायक हैं। अमेरिका से जो पत्र आते हैं, उनमें प्रायः रूहानी अभ्यास की उन्नति तथा नज़ारों का जिक्र होता है। आज एक अमेरिकन सत्संगी का पत्र आया कि वह आत्मिक शक्ति से लोगों की बीमारियों का इलाज करता है। उत्तर दिया गया कि यदि आत्मिक शक्ति को बाहर सांसारिक कार्यों में खर्च करोगे तो आगे आत्मिक उन्नति बन्द हो जायेगी। आज सीरते-उल-नबी जिल्द दोम का पन्ना 114 पढ़ रहा था। एक आयत उसमें कुरान मजीद से लिखी हुई थी, जिसका अर्थ यह लिया गया 'खुदा को बलिदान का मांस और खून नहीं पहुँचता बल्कि तुम्हारी परहेजगारी* उस तक पहुँचती है।' जानवर का बलिदान सहज है, परहेजगारी* कठिन।

* मांस आदि खाने से परहेज करना, इन्द्रियों के भोगों से परहेज करना।

30 अक्टूबर, 1942 को सुबह सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से चौथी पातशाही का शब्द राग तिलंग महला 4 पढ़ा गया 'हर कीआ कथा कहाणीआँ, गुर मीत सुणाईआँ'।¹² हुजूर ने फ़रमाया कि वास्तव में धनी वह है जिसके पास नाम की कमाई का धन है। गुरु रामदास जी को गुरु अमर दास जी ने एक कण्ठा दिया था। जब गुरु रामदास जी बाहर घूम रहे थे तो कोई व्यक्ति गुरु अमरदास जी की निन्दा करने लगा। गुरु साहिब ने अपना कण्ठा उतार कर उसको दे दिया कि यह ले लो, निन्दा मत करो। गुरु रामदास जी को अपने गुरु से ऐसा प्रेम था। कमाई करोगे तो आसानी से और शीघ्र ही सतलोक जाओगे।

सत्संग के बाद हुजूर वहीं बैठे-बैठे बच्चों का नाम रखते रहे। फिर बाजरे को इकट्ठा करने की सेवा में खड़े रहे। फिर डाक देखी।

31 अक्टूबर, 1942 को सत्संग में हुजूर स्वामी जी महाराज की वाणी से यह शब्द लिया गया, 'सुरत तू दुखी रहे हम जानी'।¹³ उस दिन के दूसरे सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से यह शब्द पढ़ा गया, 'दुनीआ न सालाहे जो मर वंजसी'।¹⁴ एक सत्संगी ने सेवा के समय एक 8-9 साल का लड़का पेश किया कि इसको किसी ने तीन-चार सेर का पत्थर सिर पर मारा लेकिन पत्थर से न चोट आई, न ज़ख्म हुआ और न सूजन हुई। महाराज जी की दया!

1 नवम्बर, 1942 को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब से पहली पातशाही का यह शब्द पढ़ा गया, 'जहं देखा तहं दीन दयाला'।¹⁵ उसके बाद हुजुरी वाणी से 'धन्य धन्य धन धन्य पियारे। क्या कहूँ महिमा शब्द की'।¹⁶ पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि पाँच शब्द का रास्ता अनादि है। जब मनुष्य को बनाया तो साथ ही यह रास्ता उसके अन्दर जब प्रभु ने रख दिया। यह रास्ता कुदरती है, बनावटी नहीं। यही रास्ता मुसलमानों के उच्चकोटि के फ़कीरों का रहा है। यही कबीर साहिब, तुलसी साहिब, दादू साहिब, पलटू साहिब, मौलाना रूम साहिब, ख़्वाजा हाफ़िज़ इत्यादि का है।

2 नवम्बर, 1942 सोमवार को नामदान दिया गया। शाम के समय स्त्री-पुरुषों को नाम दिया गया। उसके बाद लैम्प के प्रकाश में डाक सुनाई गई। मैं और डॉ. चन्द्रबन्सी साहिब बम्बई व साँगली की यात्रा के लिये खाने-पीने के प्रबन्ध के बारे में बातचीत करते रहे। आज सुबह राजा साहिब साँगली, जनरल

राजवाड़े और पूना तथा बम्बई की संगत को प्रोग्राम के बारे में तार भेज दिये गए। अमेरिका की डाक हवाई डाक से भेज दी गई।

3 नवम्बर, 1942 को सुबह 9 बजे हुजूर ने संगत को प्रसाद दिया ताकि लोग प्रसाद लेकर अपने-अपने घर वापस जा सकें। इसके बाद डाक सुनी, शाम को सत्संग बाबू गुलाब सिंह जी ने किया क्योंकि हुजूर बहुत थके हुए थे। श्रद्धा तथा भक्ति का विषय गद्य में था जिसमें हिन्दी के बहुत शब्द थे। श्रद्धा और भक्ति वह नींव है जिस पर परमार्थ की इमारत खड़ी की जाती है। अगर नींव कमजोर है तो इमारत कैसे मजबूत होगी ?

कल 7.30 बजे हुजूर डलहौजी डंगे को देखने के लिये नहर के रास्ते से जा रहे हैं। भोजन रास्ते में ही किया जायेगा।

महाराज जी का डलहौजी जाना व वहाँ ठहरना

भाई शादी और हुजूर महाराज जी कार में नहर की पटरी के रास्ते डलहौजी को सुबह 7.30 बजे चल दिये। रास्ते में नहर के पुल के पास घुमान की संगत दर्शनों के लिये आई हुई थी। वहाँ पाँच मिनट ठहर कर आगे चले। रास्ते में गगड़भाना और कादियाँ दिखाई दिये। फिर सभराओं ब्राँच आई। उसके बाद पटरी से उतर कर मालिकपुर के पास जरनेली सड़क पर चले गए। पठानकोट में लाला मलावा मल बन्सी लाल को सीमेंट के लिये पूछा गया परन्तु सीमेंट नहीं था। चक्की की चौकी पर 10.30 बज गये, वहाँ मैं और सरूप सिंह हुजूर से इजाजत लेकर चक्की नदी देखने गये। दुकानों से दही के लिये पूछा। लेकिन दही कहाँ ? चक्की से 11.30 बजे के लगभग दोनों वापस आये। भाई शादी का विचार था कि भोजन करने में देर न लग जाये। क्योंकि सर्विस 1 बजे चलती है। भाई शादी बरफ़ी लाया, सरूप सिंह पानी लाया, और हुजूर को मोटर में ही खाना दिया गया। हम तीनों ने बाहर सड़क पर बैठकर खाना खाया। सफ़र में खाना बहुत स्वादिष्ट लगा। यों भी बीबियाँ सफ़र के लिये खाना बड़ी सावधानी से बनाती हैं। सेब की सब्जी, शलगम की तरकारी, गाढ़ी उड़द की दाल और साथ में पराँठे। खाना खाकर थोड़ा आराम किया। इतने में एक अंग्रेज़ साहिब और मेम की कार आकर हमारी कार से आगे बैरियर के पास डट गई। ड्राइवर अमृतसर का बड़ा सज्जन पुरुष सिक्ख था, उसने हुजूर को पहचान लिया। बड़ी श्रद्धा से

प्रणाम किया और कहने लगा कि यह अंग्रेज़, 'मैसर्स सपिनर्ज़' का मैनेजर है और बम्बई से सैर के लिये इधर आया है। पहले मनाली की सैर की, वहाँ से अब डलहौजी देखने जा रहा है। इसे बावा प्रदुमन सिंह ने ड्राइवर समेत कार दी हुई है। फिर ड्राइवर ने बताया कि मनाली के रास्ते में मेम साहिबा कार चलाना चाहती थी, परन्तु मैंने यह ख़तरा मोल लेना पसन्द नहीं किया और गाड़ी छोड़कर अलग खड़ा हो गया तो मजबूर होकर दोनों ने मान लिया कि ड्राइवर ही गाड़ी चलाये। जब मैदान आ गया तो मेम साहिब का ड्राइवरी का चाव पूरा कर दिया गया। बैरियर पर कार हमसे आगे थी, परन्तु हम आगे निकल गये। रास्ते में बकलोह के नीचे गोरखा सत्संगी इकट्ठे हो गये थे। वहाँ हुजूर को पाँच मिनट उतरकर बातचीत करनी पड़ी। तब अंग्रेज़ की कार आगे थी। दुनैरे पर हम चारों ने मोड पिया। हुजूर ने अपने पास से पैसे दिए। डलहौजी चार बजे पहुँच गये। डंगे को देखा गया। डंगा, सचमुच लाला त्रिलोक चन्द इंजीनियर ने लाला दिवान चन्द ठेकेदार की सलाह से बहुत मजबूत बनाया था। ठोस चट्टान मालूम होती थी। ऊपर से चौड़ा है, नीचे नींव 6 फुट चौड़ी दी गई है।

डलहौजी में आजकल मौसम बड़ा सुहावना है, दिन को धूप अच्छी निकलती है। आसमान पर बादलों का नाम तक नहीं। मौसम ठण्डा और बड़ा सुहावना है। सुबह से शाम तक बहुत ठण्ड रहती है। जब हम पहुँचे तो हवा सामने के बर्फ़ीले पहाड़ों से इधर आ रही थी और ठण्ड मालूम होती थी। मैंने गर्म कपड़े पहन लिये। हुजूर ने भी ओवरकोट पहन लिया। परन्तु कहीं बाहर सैर को नहीं गये। मैं और लाला त्रिलोक चन्द रात को 8 बजे खाना खाकर ज़रा घूमने गए। बाज़ार और सड़कों पर घोर अँधेरा था। सिर्फ़ कमेटी का एक लैम्प गिरजा-घर के चौक पर जल रहा था। हम टार्च लेकर चले थे नहीं तो ज़रूर किसी गड्ढे में गिरते। शायद सारे वर्ष में सबसे ज्यादा अँधेरी रातें आजकल होती हैं। किसी संस्कृत के कवि ने ऐसे अँधेरे के विषय में क्या उचित कहा है: मानो अँधेरा शरीर से चिमटता चला जा रहा है, ऐसा लगता है कि आकाश से पिसा हुआ सुरमा बरस रहा है और आँखें ऐसी बेकार हो गई हैं जैसे बुरे आदमी पर उपकार बेकार हो जाता है :

लिम्पतीव तमोऽङ्गन वर्षतीवाञ्जन अंजन नभः

असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विष्कलता गता।

अँधेरे की गहराई को इससे अधिक ठीक शब्दों में नहीं लिखा जा सकता। रात को अच्छी सदी थी। रजाई के ऊपर कम्बल डालना पड़ा।

5 नवम्बर, 1942 को सुबह 10 बजे के करीब हुजूर धूप में आये तो बड़ा आराम महसूस हुआ और फ़रमाया कि यहाँ बड़ा एकान्त और शान्ति है। फिर मैंने डाक के दो पत्रों का जवाब सुनाया और इजाजत लेकर सैर को चला गया। कचहरी के पास तिब्बत का कोई व्यापारी बहुत मीठा और सस्ता अखरोट लाया था। कई बोरे थे। जब दो अखरोट टकराये तो टूट गये। लोगों ने हाथों-हाथ खरीद लिये। मैं और सरूप सिंह ड्राइवर दोनों वहाँ पहुँचे। व्यापारी के पास जीरा भी बढ़िया था। उससे कहा कि हमारी कोठी पर आकर दोनों चीजें दे जाये। परन्तु लोगों ने कहा कि अखरोट तो सब यहीं बिक जायेंगे। बस हमने भी 100 ले लिए और वहीं खाना शुरू कर दिया। वापस आये तो कोठी पर राय बहादुर दीवान सोहन लाल साहिब वकील चम्बा, हुजूर से मिलने आये हुए थे। उनसे हुजूर बातें करते रहे, मैं खाना खाने चला गया।

एक बात भूल गई। जब हम जा रहे थे तो श्री त्रिलोक चन्द एक पठान से बरमी भाषा में बातचीत करने लगे। बातचीत के बीच में 'बूमान' का शब्द मेरे कान में पड़ा। मैंने उनसे उसका अर्थ पूछा तो कहने लगा कि बू कहते हैं साहिबा को और मान का अर्थ है स्त्री। बूमान से मतलब मालिक, मेम साहिब है। बीबी को भी बरमी में मान कहते हैं। अच्छी भाषा है। रात को मुझे उण्ड से बुखार हो गया। सुबह कुछ हलका हो गया।

6 नवम्बर, 1942— हुजूर महाराज जी की डेरे में वापसी

डलहौजी से सुबह 8 बजे चल कर रास्ते में भोजन किया। मैं मोटरकार में लेटा रहा। बीबी ने सबको खाना खिलाया। फिर हुजूर ने गुरदासपुर में ही माल अफसर सरदार गुरबख्श सिंह के यहाँ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का भोग डाला और कुछ शब्द कहे। रास्ते में बटाला में लोहारों के साथ मशीनों की बातचीत की और अमृतसर शाम के चार बजे पहुँच गये। वहाँ हुजूर ने सत्संग किया। मैं और बालक राम रेलवे स्टेशन पर किसी से मिलने चले गए। हुजूर वहाँ से मुझे लेकर सीधा डेरे की ओर चल दिये।

7 नवम्बर से 9 नवम्बर, 1942 तक हुजूर का डेरे में ठहरना

मुझे बुखार अब भी है, 101 डिग्री रहता है। डाक बहुत इकट्ठी हो गई थी। अमेरिका के पाँच पत्र टाइप कराकर भेजे गए। एक अमेरिकन सत्संगी ने लिखा था कि मैं और मेरी पत्नी आत्मिक शक्ति से इलाज करने का काम करते हैं और मुफ्त करते हैं। हम यह काम बन्द नहीं करना चाहते। उनको जवाब दिया गया कि या तो परमार्थी उन्नति बन्द हो जायेगी या यह काम बन्द करना होगा। दूसरे यह एतराज था कि तुम लोग गुरु को खुदा समझते हो, हम इसके लिये तैयार नहीं हैं। उत्तर दिया कि गुरु को बड़ा भाई या उस्ताद समझकर उसके कहने के अनुसार अभ्यास करके अन्दर जाओ फिर उनका उन लोकों में सम्मान व पहुँच देखो।

साँगली, बम्बई इत्यादि के दौर (देहली के रास्ते)

10 नवम्बर, 1942

देहली, बम्बई व पूना के रास्ते साँगली की तरफ जाना

आज सुबह पाँच बजे मुझे तेज़ बुखार है। बैठना कठिन है, परन्तु हुजूर साथ ले जाना चाहते हैं। कार में रेलवे स्टेशन तक पहुँचा। वहाँ से सैकिण्ड क्लास में बैठ गये। बुखार तेज़ था। डब्बे में भी भीड़-भाड़ थी। डॉक्टर साहिब व दीवान साहिब को फ़िक्र थी कि सफ़र में बुखार ज्यादा न हो जाये, क्योंकि सफ़र बहुत लम्बा था। मैं मुश्किल में था यानी न तो सफ़र का शौक़ था, न ठहरने का। हुजूर की मौज पर अपने आपको छोड़ दिया था। उन्होंने कहा था कि हुजूर से विनती करो। मैंने इनकार कर दिया तो उन्होंने स्वयं ही विनती की होगी जिसके जवाब में हुजूर ने स्वर्गीय लाला मंगत राय साहिब की याद ताज़ा कराई कि एक बार उनको डेरे में निमोनिया हो गया, हमने कहा कि इस हालत में सिरसा न जाओ। उन्होंने बीमारी की परवाह न की और चले गए। रास्ते में शाम को निमोनिया ग़ायब। जिनको पूर्ण विश्वास है उनकी सँभाल मालिक ख़ुद करता है।

रास्ते में सरदार भगत सिंह व इम्पीरियल बैंक के मैनेजर आहलूवालिया साहिब, संगत के साथ दर्शनों के लिये जालन्धर रेलवे स्टेशन पर आये। सरदार साहिब जालन्धर छावनी तक हमारे साथ चले। हिटलर का भाषण हो चुका था। उसको पढ़ने का शौक़ प्रगट किया। उर्दू का अख़बार ख़रीदा और उन्होंने उस भाषण का सारांश जोकि अख़बार में लिखा था, पढ़कर सुनाया। मेरी और उनकी यह राय थी कि अब हिटलर में वह जोश और शेखी नहीं रही जो पहले भाषणों में पाई जाती थी। उसके बन्द कुछ ढीले पड़े हुए हैं। रूस के स्टालिनग्राद पर

डटे रहने और अंग्रेज़ों के उत्तरी अफ़्रीका में आगे बढ़ जाने के कारण उसकी शेखी किरकरी हो गई है।

फ़िल्लौर व लुधियाना में संगत दर्शनों को आई हुई थी। लुधियाना से आगे मैं हुजूर के डब्बे में नहीं गया और सारा दिन सोया रहा। शाम को बुखार कम हो गया। रास्ते में डॉक्टर साहिब ने मुझे दूध व कुनीन पिलाई, अंगूर खाये, संतरोँ का रस पिया। दो पढ़े-लिखे सेठ बनिये और एक मुसलमान, पंजाबी अफ़सर भी फ़ौजी लोगों के सिवाय हमारे डब्बे में थे। मुसलमान साहिब व एक बनिया सेठ, अच्छे भ्रमण करनेवाले साबित हुए। सेठ साहिब ने विलाडी वास्टक से मास्को तक अपनी लम्बी रेलवे यात्रा की घटनाएँ बड़े अनोखे ढंग से सुनाई कि तीन-तीन सौ मील तक कोई स्टेशन नहीं आता। जब आता है तो केवल एक ही क्लर्क स्टेशन पर होता है। वही सिगनेलर, पार्सल क्लर्क तथा बुकिंग क्लर्क का सब काम करता है। दो-दो दिन तक खाने को कुछ नहीं मिलता। पहले से ही खाने का प्रबन्ध रखना पड़ता है। लेनिनग्राद में उनका बाथरूम साफ़ करने वाला मोटर में सवार होकर रबड़ के बड़े-बड़े लम्बे दस्ताने पहनकर उनकी टट्टी साफ़ करने आया करता था। एक बार उसने उनको चाय पर बुलाया। सेठानी साहिबा चकराई कि हिन्दू धर्म भ्रष्ट हो जायेगा परन्तु लाचार होकर चली गई। वहाँ जब ठण्ड महसूस हुई तो उनकी श्रीमती जी ने अपना कोट अन्दर से निकालकर सेठानी साहिबा को पहना दिया।

फिर चीन की यात्रा के हाल सुनाये कि वहाँ के लोग बड़े डाकू हैं, वे लोगों को ज़बरदस्ती उठा कर ले जाते हैं और बाद में रुपया-पैसा माँगते हैं। शंघाई, केंटन इत्यादि शहरों में शाम को 8 बजे के बाद कोई भी पुरुष बाज़ारों में घूमने की हिम्मत नहीं रखता। सेठ साहिब जब घूमने जाते तो एक जंजीर अपनी कलाई में बाँधकर अपने लड़के व सेठानी साहिबा की कलाईयों में भी वही जंजीर बाँध देते, जिससे कि अगर कोई उनमें से किसी को उठाने लगे तो उसमें कुछ देरी लग जाये जिस के कारण सहायता मिल सके। जापान के लोगों की प्रशंसा करते हुए कहा कि वे लोग सत्यवक्ता, ईमानदार व नम्र हैं। पुलिस वाले को अधिकार है कि यातायात की दुर्घटना के सम्बन्ध में मौके पर फ़ैसला करके 200 रुपये तक हर्जाना दिला दे। हर्जाना उसी वक्त देना पड़ता है। उदाहरणार्थ, एक गरीब दूध की बोतलें

साइकल पर बाँधकर जा रहा था कि सामने से टक्कर हो गई। बोतलें सब चूर-चूर हो गई और दूध पानी की तरह बह गया। पुलिस वाला आ गया। दूसरे आदमी ने तुरन्त अपनी गलती मान ली। पुलिस वाले ने कहा कि एक रुपया दूध का मूल्य चुका दो। उसके पास नहीं था। थाने में ले गया। थानेदार साहिब से उस मुलजिम ने प्रार्थना की कि मेरे पास एक रुपया देने को नहीं है। थानेदार ने अपने पास से दे दिया और कहा कि जाओ और मुझे वापिस कर देना। और सिपाहियों से कहा कि इसे मारो नहीं। इसी तरह सेठ साहिब ने एक पुलिस वाले को टैक्सी लाने भेजा। उसके आने से पहले एक और टैक्सी खाली आ गई। सेठ साहिब सवार हो गये। जब चलने को थे तो पुलिस वाला भी टैक्सी ले आया। उस टैक्सी वाले को सेठ साहिब कुछ पैसे देना चाहते थे। वह मना कर रहा था कि मैं किस बात के पैसे ले लूँ। यहाँ तक कि पहली टैक्सी के ड्राइवर ने कहा कि साहिब यह उसका हक है, उसमें बैठ जाइये, मुझे कोई एतराज नहीं। ऐसे ही रूस के विषय में बतलाते हुए सेठ साहिब ने फ़रमाया कि लेनिनग्राड में दस दिन के बाद विदेशी डाक जाती थी। एक दिन, दिन-भर पत्र लिखकर जब शाम को डाकखाने गये तो डाक बाबू डाक बन्द कर दफ़्तर में ताला लगाकर घर जाने लगा। यह शर्मिन्दा से होकर सामने आये। बाबू ने पूछा कि क्या बात है ? सेठ साहिब की बेबसी का हाल सुनकर दफ़्तर खोल दिया, बोला लाओ तुम्हारी डाक कहाँ है ? दस रुपये के टिकट जो ज़रूरी थे, रख दिये। सेठ साहिब ने जेब में हाथ डाला तो पता लगा कि रुपये भूल आये थे। बड़े परेशान हुए कि अब क्या करूँ ? बाबू ने पूछा क्या हुआ ? जब सेठ साहिब ने बात बताई तो बाबू ने कहा कि चिन्ता न करो। कल-परसों तक रुपये भेज देना। यह हाल है उन देशों का।

बर्बीं तुफ़ावत रा अज़ कुजा ता ब कुजा।

अर्थात्, देखिये! रहन-सहन अथवा सभ्यता में कितना अन्तर है।

मुसलमान साहिब ने फ़रमाया कि उनकी भी यही राय है। अंग्रेज़ जाति बहुत चतुर और चालबाज़ है परन्तु व्यापार में ईमानदार है। मुसलमान साहिब ने कहा कि धर्म झगड़े की जड़ है। हुजूर ने उत्तर दिया कि हर एक के रीति-रिवाज (कर्म-काण्ड) अलग-अलग हैं और रीति-रिवाज केवल रहने का ढंग है। रूहानियत सब धर्मों की एक ही है।

देहली में बहुत-सी संगत आई हुई थी। सरदार जगजीत सिंह साहिब की मोटर आई हुई थी। फिर भी दरियागंज पहुँचते-पहुँचते 12 बज गये। वहाँ जाकर खाना खाने के बाद एक बजे रात को सब लोग सो गये। सुबह हुजूर नीचे सत्संग-हाल में संगत को दर्शन देने के लिये बैठे रहे। फ्रण्टियर मेल गाड़ी आधा घण्टा लेट थी। मेरी ड्यूटी यह थी कि सामान तौंगे में लदवा कर, सबके टिकट लेकर रेल में रखवा दूँ। लाला अमर नाथ भार्गव मेरे साथ थे। हमारा रिज़र्व डिब्बा पहले से प्लेटफ़ार्म नं. 6 के सामने खड़ा था। उसमें सामान रखवा दिया तो याद आया कि मेरा हरा बैग दरियागंज रह गया था। उसमें दो हजार के लगभग रक़म थी और रानी साहिबा के सामान का टाँगा नहीं पहुँचा था। इसलिये ताँगा लेकर दौड़ता हुआ दरियागंज गया तो हुजूर मेरे वहाँ पहुँचने से पहले ही मोटर से रेलवे स्टेशन को चल दिये थे। अपने कमरे में गया। बैग वहाँ नहीं मिला, निराश होकर नीचे आया तो इधर-उधर नज़र मारी। कहीं बैग नज़र नहीं आया। वहाँ नीचे दो-चार आदमी थे। एक ने मुझे पहचाना और बैग निकालकर मुझे सौंप दिया। कहने लगा कल यह बैग मैंने तुम्हारे हाथ में देखा था, जब तुम गाड़ी से उतर रहे थे। अब मैंने इस बैग को यहाँ नीचे पड़ा देखा। सब लोग चले गए हैं, मैंने सावधानी से उठा लिया। आपको हैरान देखा तो समझ गया कि आप बैग की खोज कर रहे हैं, यह तो। मैंने उसका बहुत धन्यवाद किया और हुजूर की विशेष गुप्त दया का भी, जोकि हर समय और हर हाल में होती रहती है, मन ही मन में धन्यवाद करता हुआ स्टेशन की ओर भागा। गाड़ी में बड़ा वक्रत था। 8 बजे गाड़ी आई। हमारा डिब्बा रिज़र्व (सुरक्षित) था। डिब्बे में चार सीटें हैं। पीछे भी बहुत बढ़िया गद्दे बैठकर सहारा लेने के लिये लगे हुए हैं। देहली से हमारे साथ श्री हेमचन्द्र भार्गव व श्री सचदेव और दो-तीन लड़के नई देहली तक हुजूर के दर्शन करते हुए गये। वहाँ से चल कर गाड़ी मथुरा में ठहरी। वहाँ श्री अमर नाथ के मामाजी श्री द्वारिका नाथ मथुरा के वकील व उनके भाई साहिबान कुछ दूसरे आदमियों के साथ हुजूर के दर्शनों के लिये आए। बीना से पहाड़ी इलाका शुरू हो जाता है। वर्षा अधिक होने के कारण बड़ी हरी-भरी घाटियाँ पहाड़ों से घिरी हुई एक-दूसरे के बाद नाचती हुई हमारे सामने से जल्दी-जल्दी भागती मालूम होती थीं। शामगढ़ के स्टेशन पर गाड़ी काफ़ी समय के लिये ठहरी। सुनने में आया कि यहाँ एक वैष्णव होटल है, जिसमें यात्री लोग भोजन करते हैं। वैसे तो डाइनिंग कार में भी बहुत-से लोग भोजन करने

गए। नागदा में जनरल साहिब ने खाना भेजा। पूरियाँ व सब्जी हर प्रकार की, जिसमें हलवाई ने उस इलाके की रीति के अनुसार बहुत नमक-मिर्च डाल रखा था। सौभाग्य से दूध की काफी मात्रा साथ थी। दूध और डबल रोटी व मक्खन जोकि श्री भार्गव अपने साथ लाये थे, आड़े समय पर खूब काम आये। रतलाम में गाड़ी कुछ देर ठहरी। यहाँ से इन्दौर तीस मील है। रतलाम में हम सब लोग खाना खाकर सो गये। हुजूर ने आदत के अनुसार अपना ट्रंक सावधानी के लिये जंजीर से सीट के नीचे जकड़कर ताला लगवा लिया और हमने सब खिड़कियाँ इत्यादि अन्दर से बन्द कर लीं क्योंकि यह सब अन्दर से बन्द हो सकती हैं। निश्चित होकर सो गये। किसी ने रास्ते में नहीं जगाया।

सुबह मैं तो 5-6 बजे के लगभग उठकर मुँह-हाथ धोकर फिर सो गया और हम 8-9 बजे तक सोते रहे, जब तक कि धूप न निकल आई। उस समय बम्बई के पास के स्टेशन पर पहुँच चुके थे और बी. बी. एण्ड सी. आई. की लोकल ट्रेन बड़ी तेजी से चल रही थी। समुद्र का दृश्य देखा। जगह-जगह पर नमक बनाने के लिये समुद्र के पानी को नालियों से ले जाकर क्यारियाँ बनाई गई हैं, जिनमें पानी सूख कर नमक रह जाता है। बीच-बीच में बहुत-से हरे पेड़ दिखाई पड़ते हैं। सारा दृश्य पानी व हरियाली का है। लम्बे-लम्बे ताड़ के वृक्ष खड़े हैं। परन्तु सब एक ही ओर को झुक रहे हैं। हुजूर के ओर की दोनों खिड़कियाँ खोल दी गईं, जिससे कि हवा और प्रकाश अन्दर आये। हमने भी केवल शीशों के परदे रहने दिए। हुजूर ने फ़रमाया कि वृक्षों का एक ओर को झुकना प्रगट करता है कि हवा का रुख एक ही ओर को जोर का रहता है।

हम सब 10 बजे के बाद बम्बई पहुँचे। वहाँ सत्संगियों की बहुत भीड़ थी। बहुत-से तो दक्षिण के मराठे लोग थे। कोई-कोई सिक्ख तथा कहीं-कहीं हिन्दू, पंजाबी बाबू भी दिखाई पड़ते थे। वहाँ कई फ़ोटो लिये और वहाँ से मोटरों में सवार होकर लैमिंगटन रोड से होते हुए सेण्डहर्स्ट रोड से लक्ष्मी बाग में आ गये। यह मकान किसी नेक दिल विधवा ने बारात वगैरह के ठहरने के लिये बना रखा है। इसका किराया 30 रुपये प्रतिदिन के करीब है। उसमें गर्म व ठण्डा पानी नल के द्वारा जब चाहें मिल जाता है। बिजली का करण्ट छोड़ दो, पानी गर्म मिलेगा। जितना गर्म चाहें उतना गर्म कर सकते हैं। हुजूर नीचे के बड़े हाल में सत्संग

फ़रमाते हैं। ऊपर की मंज़िल में एक कमरे में महाराज जी और दूसरे साथ वाले कमरे में मैं और डॉक्टर साहिब रहते हैं। मकान हवादार और खुला है। यह चौपाटी के पास ही ओपेरा हाउस, गली भट्ट वाली में है। अगर बस में आना हो तो ओपेरा हाउस का टिकट ले लो। वहाँ हम तो आराम करते रहे परन्तु हुजूर, राय बहादुर गुलवन्तराय के समधी का कारखाना व कोठी देखने चले गए। फिर दोपहर को चार बजे के लगभग हम सब लोग कारों में बैठकर वी.टी. स्टेशन को, चल दिये। वहाँ जनरल साहिब मिल गये और फिर वहाँ से 'डेक्कन क्वीन'* (Deccan Queen) गाड़ी पकड़ी, जिसमें केवल फ़र्स्ट क्लास व सैकिण्ड क्लास के टिकट वाले लोग ही बैठ सकते हैं और यह बड़ी तेज़ चलने वाली व आरामदेह गाड़ी है। इसे सारे हिन्दुस्तान में सबसे तेज़ चलने वाली गाड़ी कहा जाता है। तीन घण्टे में पूना 126 मील पहुँचा देती है। बिजली से चलती है। रास्ते में हरे-भरे मैदान, कोठियाँ व समुद्र का बड़ा मनोरंजक दृश्य आता है। इसके बाद पहाड़ व घाटियाँ दिखाई देती हैं। इस प्रकार की गाड़ी पंजाब में नहीं देखी। रास्ता बाहर से नहीं, बल्कि सारी गाड़ी में अन्दर ही अन्दर एक सिरे से दूसरे सिरे तक जा सकते हैं। इसमें एक फ़र्स्ट क्लास, दूसरा सैकिण्ड क्लास, भोजनालय और एक बैठने का कमरा है। हुजूर फ़र्स्ट क्लास में दीवान साहिब के साथ हैं। जनरल साहब व उनकी श्रीमती जी दूसरे फ़र्स्ट क्लास में हैं। मैं व शादी, सैकिण्ड क्लास में जा रहे हैं। जैसे पंजाब में डीज़ल कार के दोनों ओर लम्बी-लम्बी खिड़कियाँ लगी हुई हैं, वैसे ही इस गाड़ी में एक तरफ़ तो यात्रियों के लिये लम्बी खिड़की-सी है, दूसरी ओर छोटा-सा दरवाज़ा और उसके परे बरामदा है। सबके लिये अलग-अलग एक-एक शौचालय बना है। अन्दर के रास्ते से सोड़े व चाय वाला आवश्यकतानुसार यात्रियों को सोडा व चाय पिलाता है। गंदे अच्छे, स्थान खुला, मतलब यह है कि हमारे देखते-देखते पूना का स्टेशन आ गया।

कारों में बैठकर जनरल साहिब के मकान पर रात के 9 बजे के करीब जा पहुँचे। रास्ते में लैफ़्टिनेण्ट ब्रिज लाल कपूर के मकान पर मैं, शादी व हुजूर गये। वहाँ संगत को दर्शन दिये। जनरल साहिब ने नया मकान सवा लाख रुपये की

*डेक्कन क्वीन नामक एक ट्रेन।

लागत से बनाया है। उसमें हरी दानेदार टाइलों का फ़र्श कहीं-कहीं बहुत सुन्दर लगता है और दोनों मंज़िलों के साथ बने गोलाईदार बाधरे, हुजूर को बहुत पसन्द आये। उनमें कमानीदार लोहा है जिससे बड़ी हवा आती है। दोनों मंज़िलों के बाधरों में कुर्सी गद्दे लगे हैं। पूना में मौसम बड़ा सुहावना था। हुजूर के साथ हमें भी ऊपर की मंज़िल पर कमरा दिया गया। लोहे के पलंगों पर हरे-हरे मोटे गद्दे लगे हुए हैं। भोजन करने के लिये नीचे रसोई के पास भोजन करने का कमरा है जिसमें मेज़ कुर्सी नहीं बल्कि एक लकड़ी का पट्टा आगे और एक नीचे रख लेते हैं। एक पर खाने वाला बैठ जाता है, दूसरे पर थाली व कटोरियाँ रखी जाती हैं। पानी के लिये गिलास के स्थान पर पीतल की भारी-भारी कटोरियाँ होती हैं, जिनमें काफ़ी पानी आ जाता है।

दूसरे दिन पूना से दोपहर को चले, रास्ते में लोनन्द के स्टेशन के आगे गाड़ी 270 दर्जे का चक्कर काटती है और दृश्य देखने लायक है। इस प्रदेश में रूई, तम्बाकू और चरी खड़े थे। खाँड के कारखाने व रूई के कारखाने भी थे। रास्ते में सतारा आता है और कोल्हापुर भी। रात के 7.30 बजे हम सब बुद्ध गाँव के स्टेशन पर उतर गये जोकि मिराज जंक्शन से एक स्टेशन इधर है। वहाँ पर राजा साहिब व सर जोशी साहिब रेलवे स्टेशन पर हुजूर के स्वागत के लिये उपस्थित थे। वहाँ से साँगली का महल डेढ़ मील होगा। हम सब मोटरों में वहाँ तक पहुँचे। सामान पीछे आ गया।

13 नवम्बर से 19 नवम्बर, 1942 तक साँगली में ठहरना

हुजूर को राजा साहिब ने अपनी कोठी में ऊपर की मंज़िल में एक कमरा दे दिया, जहाँ कि उनका परिवार रहता है। हमें इससे लगभग एक फ़र्लांग पर उसी कोठी के मेहमान-घर में कमरे दिये गए। निःसंदेह महल राजाओं के लायक है और मेहमान-घर भी बहुत अच्छा है। हर तरह के आराम का सामान मौजूद है। नीचे स्नान-घर है जिसमें पानी के नल हैं। उससे परे फ्लश की टट्टी है। नौकर बाल्टियों में गर्म पानी भर कर लाते हैं क्योंकि सुबह के वक़्त यहाँ बड़ी ठण्ड होती है। यह स्थान पूना से कुछ अधिक गर्म और बम्बई से अधिक ठण्डा है। कल दोपहर को बड़ी धूप थी जिसमें चलना कठिन था। शाम को भी ज़्यादा ठण्डक नहीं होती। सुबह को हुजूर उस कोठी में सत्संग फ़रमाते हैं। केवल राजा साहिब के सम्बन्धी, नौकर-चाकर इत्यादि व हम लोग जाते हैं। कोई-कोई बड़ा

अफ़सर व शहर का बड़ा धनी आ जाता है। शाम को 7 बजे सत्संग क्लब-घर में होता है जो यहाँ से सवा मील के करीब है। अधिकतर हुजुरी वाणी का पाठ होता है। 'गुरु गुरू मैं हिरदे धरती' 'सतगुरु का नाम पुकारो' 'मिली नर देह यह तुम को' इत्यादि शब्द लिये गए।

आज सत्संग का दूसरा दिन है और क्लब-घर के सत्संग में बड़ी भीड़ थी। कोई एक हजार के करीब स्त्री-पुरुष होंगे। फिर भी पता हिलने तक की आवाज़ नहीं। लोगों ने इतने ध्यान से सत्संग सुना कि सन्नाटा छाया हुआ था। मैंने ऐसी शान्ति अपने सत्संग में नहीं देखी। कारण यह है कि इस सत्संग में कोई भी बच्चा नहीं आने दिया गया था।

15 नवम्बर, 1942 को राजा साहिब हमारी देख-रेख के लिये स्वयं हमारे कमरे में आये। हमने उन्हें विश्वास दिलाया कि हम सब अपने घर से भी अधिक आराम से हैं और उनका धन्यवाद किया। इधर-उधर की बातें व सत्संग के विषय में चर्चा होती रही।

16 नवम्बर, 1942 को सुबह 10 बजे हुजूर ने यहाँ के स्त्री-पुरुषों को नामदान बख़्शा। लगभग 50 स्त्रियाँ व 40 पुरुष होंगे। यहाँ की स्त्रियाँ व पुरुषों का पहनावा सादा है। पंजाब की तरह भड़कीले वस्त्र नहीं पहने जाते। केवल एक बण्डी (चोली) और नीचे रंगदार धोती होती है। स्त्रियाँ प्रायः रंगदार परन्तु सादा पहनावा पहनती हैं, पुरुषों की तरह धोती बाँधी जाती है। यहाँ के लोग लम्बे व तन्दुरुस्त हैं। कोई भी दुर्बल व्यक्ति दिखाई नहीं पड़ता। स्त्रियाँ भी सुदृढ़ हैं तथा उनके शरीर गठे हुए हैं। पुरुष लम्बे नहीं बल्कि पतले हैं। स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक मोटी-ताजी मालूम होती हैं। ये लोग बहुत सभ्य हैं। राजा साहिब अपनी प्रजा के हर व्यक्ति को, चाहे वह कितना ही गरीब हो, अपने पास बुलाकर बातचीत करते हैं और उनसे भाइयों की तरह बर्ताव करते हैं। राजा और प्रजा में मेल-मिलाप अंग्रेज़ी प्रदेश से बहुत अधिक है। लोग भी खुशहाल मालूम होते हैं। यहाँ खाना पंजाब से अधिक स्वादिष्ट बनता है। अर्थात् कई खाने ऐसे हैं जो पंजाब से ज़्यादा अच्छे बनते हैं। कई ऐसे भी हैं जो पंजाब में नहीं बनते, मीठी ब्रागड़ी (रोल्ड ब्रैड) जिसको करौंजी कहते हैं और छोटी-छोटी मीठी पूरियाँ, जोकि पहले घी में तल कर फिर चीनी की चाशनी में डालकर बनाई जाती हैं,

पंजाब की जलेबियों की याद दिलाती हैं। हरी मिर्च कूट-पीस कर हर खाने के साथ थाल में अलग रख देते हैं। ये लोग मिर्च खूब खाते हैं। दही में खीरे की फाँके डालकर और केले की कतलियाँ डालकर अलग-अलग थाली में एक-एक तोला रख देते हैं। दाल व चावल हर खाने में देते हैं। दाल पतली परन्तु कढ़ी हुई, बैंगन, बन्द गोभी, फूल गोभी, एक तरह की फलियाँ पतली-पतली काटकर घी में भुनी हुई, आलू तले हुए, फुलका पतला परन्तु बड़ा-सा, तोरियाँ, भिण्डी। हलवे को शीरा कहते हैं और दलिये का बनाते हैं। सुबह चाय के साथ छोटी-छोटी मट्ठियाँ, केला, मक्खन-टोस्ट, गुलकन्द अर्थात् सोपाक, जिसमें नारियल की गिरी और गुलाब के फूल की पंखुड़ियाँ होंगी, खोया जिसमें कुछ खट्टी चीज और नारियल की गिरी होती है।

शाम को सत्संग में हुजूर ने कबीर साहिब का शब्द, 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है'⁴ लिया। महाराष्ट्र में गणपति की पूजा होती है इसलिये हुजूर ने गणपति की वास्तविकता स्पष्ट की और फरमाया कि परमात्मा को पानी, पत्थर व कागज में न ढूँढ़ें। यह भी फरमाया कि जितने दल का कमल, वहाँ उतने ही देवनागरी के अक्षर होते हैं। इसके बाद 'दिल का हुजरा साफ़ कर'⁵ पढ़ा गया। रात के सवा आठ बज गये।

उस दिन दोपहर को हम सब लोग गजानन मिल्स में साड़ियाँ बनती देखने गये और जेलखाना भी देखा। गुजराती साड़ियाँ 5 गज से लेकर साढ़े नौ गज तक हैं। ऐसी साड़ियों का रिवाज उत्तरी भारत में नहीं है।

17 नवम्बर, 1942 को, आज सुबह हुजूर कार में साँगली का अतिथि-गृह (गवर्नर इत्यादि के लिये), पुराना महल, शस्त्र-गृह, गणपति का मन्दिर, अजायब-घर देखने गए। मैंने व दीवान साहिब ने नारियल का पानी पिया। यहाँ खेतों की मिट्टी का रंग काला है, कुछ गीली-सी लगती है। खेतों में हल्दी लगी हुई थी। जब मैंने ज़िमी कन्द का खेत देखा तो पूछा कि यह क्या है? बोले सूरन का गड्डा। परन्तु न तो मुझे कहीं सूर दिखाई पड़े न गड्डा। हैरान था कि सूरों का गड्डा कहाँ है। इतने में सिन्धी साहिब आ गये। उन्होंने कहा, "हाँ, हाँ! सूरन।" मैंने पूछा कि सूरन क्या? तो कहने लगे कि ज़िमीकन्द। तो समझा कि

सूरन का गड्डा क्या होता है। पुराने महल में सब अदालतें, जेलखाना, शस्त्र-घर हैं। बाहर तीन सिपाही सलामी दे रहे थे। उनकी बन्दूकें पुराने ढंग की थीं। हमारी सरकार नये ढंग की बन्दूकें अब रियासतों को देना पसन्द नहीं करती। दो तोपें ज़मीन पर पड़ी थीं, पता लगा कि उनकी गाड़ियाँ भी ले ली गई हैं। हिन्दुस्तानियों पर अंग्रेजों को विश्वास नहीं है।

शाम को सत्संग क्लब-घर के मैदान में हुआ, 'नाम निर्णय करूँ भाई'⁶ पढ़ा गया। उसके बाद तुलसी साहिब की गज़ल 'सुन ऐ तकी न जाइयो जिनहार देखना' पढ़ा गया। रात के 9 बजे हम अपने विश्राम-गृह लौटे।

18 नवम्बर, 1942 को प्रातः हुजूर और हम सब लोग एक आदर्श गाँव, जो यहाँ से 4-5 मील दूर कृष्णा नदी के पार है, देखने गए। वहाँ तम्बाकू और चरी खड़ी थी। हुजूर को कई प्रकार के लकड़ी के हल और बीजने की मशीनें दिखाई गईं। यहाँ के बैल हृष्ट-पुष्ट होते हैं। यहाँ की मिट्टी काली है जिसमें संतरा व माल्टा नहीं हो सकता जबकि रूई, कमाद हो जाता है। इसके बाद हम लोग राजा साहिब का माडर्न गार्डन, जोकि उनके महल के पास ही है, देखने उतर गये। वहाँ हरे नारियल का पानी पिया और सुपारी के वृक्ष देखे, जो नारियल जैसे होते हैं। परन्तु ये वृक्ष पतले व सीधे होते हैं और इन पर सुपारियाँ लगी देखी गईं। नारियल का वृक्ष बारह मास फल देता रहता है। हरे नारियल का मीठा पानी कुछ खट्टा था, फिर भी स्वादिष्ट और ठण्डा, कुछ लोगों ने पानी पीकर गिरी खाने के लिये नारियल फोड़े। सफ़ेद-सफ़ेद गूदा-सा निकला जिसको मलाई बोलते थे। मैंने भी कुछ मलाई खाई, परन्तु सारे रास्ते मलाई का फूसक फेंकता आया। कुछ अमरूद भी दिये गए परन्तु कच्चे थे। शादी रात का भूखा था बड़े चाव से खाता रहा। भूख कच्चा-पक्का कुछ नहीं देखती। महल में आकर राजा साहिब ने अपने परिवार के साथ हुजूर का फ़ोटो खिंचवाया। फिर हुजूर का एक फ़ोटो अकेले का और एक फ़ोटो राजा साहिब और उनके स्टाफ़ के साथ लिया गया।

आज सुबह सत्संग बन्द था। शाम को सत्संग में कबीर साहिब की वाणी में से 'सुमिरन का अंग'⁷ पढ़ा गया।

हुजूर महाराज जी का राजा साहिब के पोते का नामकरण संस्कार करना और वहाँ से वापस लौटना, पूना में ठहरना, बम्बई की यात्रा और वहाँ ठहरना

19 नवम्बर को सुबह राजा साहिब के पोते का नामकरण-संस्कार 9 और 10 बजे के बीच राजा साहिब के बड़े मर्दाने कमरे में हुआ। बच्चे को परिवार के रीति-रिवाजों के अनुसार हुजूर ने पालने में अपने शुभ कर-कमलों से लिटाया। इसके बाद उसका नाम रखा, पुरुष रामराव भाउ। इसके बाद पेड़ों का प्रसाद सब छोटे-बड़ों को बाँटा गया और सम्बन्धियों ने बच्चे को रुपये दिये। हम सबने 600 रुपया दिया। बीबी ने 50 रुपये दिये। उसके बाद हुजूर ने सारे परिवार को बधाई दी और हुजूर 40-50 स्त्री तथा पुरुषों को नामदान देने चले गए। हम सब लोग अपने कमरे में आ गये। अब दोपहर को डॉक्टर साहिब उन फ़ोटो को, जो कभी साँगली में खींचे थे, ठीक से रख रहे हैं और उनके साथ-साथ हर फ़ोटो के पीछे नोट लिख रहे हैं। नौकर सामान लेकर पाँच बजे शाम को मिरज रेलवे स्टेशन से सवार होंगे क्योंकि रात को साढ़े नौ बजे गाड़ी उसी स्टेशन से चलती है। वहाँ से सामान आसानी से रखा जा सकेगा। शेष लोग बुद्ध गाँव से सवार होंगे। सुबह 6 बजे पूना पहुँच जायेंगे। हम लोगों को राजा साहब ने अपने हाल में बुलाया और सबको एक-एक चाँदी का टी सैट और एक गड़वा व चाँदी की एक कटोरी दी, जो कि धन्यवाद के साथ ले ली गई। नौकरों को 15-15 रुपये इनाम के रूप में दिये गए और पाठियों को सौ-सौ रुपया दिया गया। इसके बाद हम सब लोग खाना खाकर 10.30 बजे के करीब मोटरों से बुद्ध गाँव रेलवे स्टेशन पर पहुँच गये। गाड़ी डेढ़ घण्टा लेट थी। मुझे महाराज जी ने अपने फ़र्स्ट क्लास के कमरे में अपने ऊपर की बर्थ पर सोने की आज्ञा दी। मेरे साथी व दीवान साहिब दूसरे दर्जे में थे, क्योंकि कोई फ़र्स्ट क्लास की सीट रिजर्व नहीं हो सकी थी। बीबी लाजवन्ती को यह शिकायत रही कि रात को उसे अकेली ही इंटर क्लास में सफ़र करना पड़ा। हालाँकि बाद में हमारे आदमी उसके डिब्बे में चले गए थे। रात को गाड़ी डेढ़ घण्टा और लेट हो गई। हम सब पूना दस बजे पहुँचे। जनरल साहिब की कारें आई हुई थीं। हम उनके महल कोरेगाँव पार्क में चले गए। नौकर पीछे से ताँगों में सामान लेकर पहुँचे। पहले हमने चाय पी, फिर

नहा-धोकर खाना खाया। फिर हुजूर ने आराम किया और हम जनरल साहिब की कार में पूना शहर की सैर करने चल दिये। वहाँ साड़ियाँ आदि की खरीद को ही पूना की सैर समझा गया। हाँ, बाज़ार जाने से पहले दीवान साहिब ने पूना के इंजीनियरिंग कॉलेज को देखा, क्योंकि 40 साल पहले वे उस कॉलेज में शिक्षा प्राप्त कर चुके थे। जब साड़ियों की खरीदारी हो गई तो हम पूना के दूसरे बाज़ार की सैर को निकले। परन्तु बदकिस्मती से जब हमारी मोटर एक चौक में से धीरे-धीरे गुज़र रही थी तो सामने गली में से एक और कार ने सीधी आकर टक्कर मारी, जिससे हमारी मोटर का शीशा और मडगार्ड टूट गये तथा मोटर के बाहर का रंग भी उखड़ गया। हमें बड़ा दुःख हुआ। मोटर-कार का नम्बर व दुर्घटना स्थान को नोट करके हम वापस आ गये। रास्ते में बन्द-बाग़ और मूला मुट्ठा दरिया देखा। दरिया के आर-पार एक पत्थर का मज़बूत बाँध लग रहा है। बाँध चौड़ा है, जिस पर लोग सैर करते हैं। कुछ पानी झील की तरह से ठहरा हुआ है। कुछ बाँध में से दूसरी तरफ़ जाता है। बाँध के बाहर दरिया के किनारे पर एक बाग़ है। इसलिये उसको बन्द-बाग़ कहते हैं।

हुजूर तो आज सारा दिन काम में लगे रहे। उनको न तो खाने का ध्यान है, न अपनी सेहत का, न सैर का। पहले नाम दिया, फिर कर्नल साण्डर्स, कर्नल डक व उनकी धर्मपत्नी और दूसरी रानियों से बात करते रहे। मैं साथ-साथ अनुवाद कर रहा था। फिर शाम के 6 बजे के करीब सत्संग हुआ 'गुरु कहें जगत सब अंधा'। मैं कर्नल डक व उनकी धर्मपत्नी को अनुवाद करके सुनाता था। हुजूर ने फ़रमाया कि मांस खाना क्यों मना है। पाप तो गेहूँ, अनाज व सब्ज़ी खाने में भी है क्योंकि सब में आत्मा और जान है। परन्तु अनाज और सब्ज़ियाँ प्रकृति के कारख़ाने में सबसे निचले दर्जे पर हैं। उनको खाये बिना निर्वाह असम्भव है, इसलिये इनको खाना ऊँचे दर्जे के जीवों को खाने की अपेक्षा कम पाप है।

सत्संग के बाद मेरे शहर के एस. डी. ओ. पण्डित चेतन दास मुझसे मिलने आ गये और उनको साथ लेकर हम सब पैदल सैर करते बाँध व मूला दरिया की तरफ़ चल दिये। हुजूर मोटर में बाहर चले गए। यहाँ रात को पुलिस, बिजली की रंगदार रोशनी द्वारा चौराहों पर यातायात का प्रबन्ध करती है। एक सिपाही लाल रंग का + निशान उस तरफ़ बटन दबाकर कर देता है जिस तरफ़ से रास्ता बन्द करना होता है। ऐसा मैंने पंजाब में नहीं देखा था।

इसके बाद डेक्कन क्वीन में सवार होकर हम दिन के ग्यारह बजे बम्बई वी. टी. स्टेशन पर पहुँच गये और वहाँ से मोटरों द्वारा लक्ष्मी बाग में स्थित धर्मशाला आ गये। यह बड़ी आरामदेह धर्मशाला है जिसे एक विधवा ने भट्टवाड़ी रोड पर रायल ओपेरा हाउस के सामने गिरगाँव में बनाया है। परन्तु 30 रुपया रोज़ किराया देना पड़ता है। इसमें बिजली द्वारा गर्म व ठण्डा पानी मिलता है। मकान में पंखे लगे हैं और बड़ी हवा आती है। बम्बई में मौसम गर्मी का ही है, चाहे नवम्बर का अन्त आ गया है। यहाँ 22 नवम्बर इतवार को दोपहर तक पंखे चल रहे हैं। सत्संग उसी मकान के नीचे के हाल में हुआ, जिसमें हजार-पाँच सौ आदमी आ जाते हैं। परन्तु जगह की कमी के कारण अब शाम को सत्संग वली नाका में होगा।

आज सुबह मैं, महाराज जी व दूसरे लोग राय बहादुर लाला शंकर दास (वकील लायलपुर) के सुपुत्र, के. एल. सोंधी के घर, जोकि जुहू में है, गये। फिर वहाँ से उनके दूसरे सुपुत्र एस. एल. सोंधी के घर माटूंगा में गये, जोकि दूसरी बड़ी मंजिल में रहते हैं। वहाँ से दस बजे आकर हुजूर ने सत्संग किया 'जग में घोर अंधेरा भारी' और बाबा सोमनाथ ने उसका अनुवाद मराठी भाषा में करके लोगों को सुनाया।

हाँ इतना लिखना भूल गया कि कल 21 नवम्बर को जज साहिब के सम्बन्धी मुझे और बाक़ी लोगों को मोटर में बैठा कर अपने बर्तनों के कारखाने में जोकि रे रोड के परे, डॉक-यार्ड के पास है, दिखाने ले गये। इस कारखाने में पीतल व ताँबे के बर्तन, थालियाँ, कटोरियाँ, गुजराती लोटे आदि बनते हैं। आजकल लड़ाई के कारण पीतल, ताँबा नहीं मिलता इसलिये पुराने टूटे-फूटे बर्तनों से ही नये बर्तन बनते हैं। इस फ़ैक्ट्री में से कुछ जगह दूसरी फ़ैक्ट्रियों को किराये पर दी हुई है। एक में चीनी के बर्तन बनते हैं। उसके इंचार्ज ने बताया कि संगमरमर की टाईल टट्टी में नहीं लगानी चाहिये, क्योंकि संगमरमर पानी को सोख लेता है; बल्कि चाईना मिट्टी की टाईल ऐसी जगह पर लगानी चाहिये। इस कारखाने के सामने एक दूसरा कारखाना था जिसमें लेथ (ख़राद) से मशीनें तैयार की जाती थीं। उसका इंचार्ज एक डेनमार्क का निवासी था। यह कारखाना साफ़ सुथरा था, यद्यपि बर्तनों के कारखाने में सफ़ाई नहीं रखी जा सकती।

आज इतवार के दिन सुबह अंग्रेज़ व हम लोग और देसी बाबू जुहू में नहाने आये थे। यहाँ समुद्र का किनारा नहाने के लिये बहुत ही अच्छा है। वली व चौपाटी की तरह इसमें बू नहीं है। सेण्डहर्स्ट रोड से जायें तो पहले वली आता है जहाँ बाबा सोमनाथ का सत्संग घर है। यहाँ रेडियो स्टेशन है। उसके परे शिवाजी रोड, विलियम रोड गुज़र कर दादर आता है। दादर से परे बान्द्रा जहाँ कि बड़ा मज़बूह (वधस्थल) है, फिर आता है सान्ताक्रूज़ व जुहू। सारे रास्ते में बड़े साफ़-सुथरे कोठीनुमा कई-कई मंजिलें मकान आते हैं। सड़कें ऐसी साफ़ हैं कि पंजाब में नहीं देखी जातीं। सब जगह चहल-पहल है। जुहू से वापसी पर माटूंगा में श्री शान्ति लाल सोंधी के मकान पर आये। वह भी ऐसा ही साफ़-सुथरा था। चारों ओर शान्ति बरस रही थी। पंजाब के शहरों की तरह शोर-गुल नहीं। कल रात मैं व हमारी पार्टी रात के 9 बजे चौपाटी की सैर को गये। समुद्र का दृश्य था, रात चाँदनी थी, इक्के-दुक्के आदमी समुद्र के किनारे बेंचों पर बैठे चाँदनी में समुद्र की लहरों का दृश्य देख रहे थे। हमारी पार्टी ने नारियल का पानी पिया और फिर घर आकर दस बजे के बाद भोजन किया। रात को बिजली के पंखों के नीचे सोये।

22 नवम्बर, 1942 को इतवार का दिन था। दुकानें बन्द थीं। सुबह का सत्संग हुजूर ने लक्ष्मी बाग में और शाम का सत्संग आर्थर रोड जैकब सर्कल व बाबा सोमनाथ के मकान पर वली नाका में फ़रमाया। दोनों स्थानों पर बड़ी भीड़ थी। जैकब सर्कल में अधिकतर बम्बई की मिलों में काम करने वाले लोग और उनके परिवार के लोग प्रतीत होते थे। वली नाका में रानी लक्ष्मीबाई और दूसरी स्त्रियाँ तथा पढ़े-लिखे लोग दिखाई दिये। सेठ मंगल दास जी जुहू से और डॉक्टर मिराजकर, जोकि बम्बई के प्रसिद्ध सर्जन हैं, हुजूर के दर्शन को आये। सर चुन्नी लाल मेहता भी आये हुए थे। दोपहर के समय हुजूर कार में हमारी पार्टी के साथ लाला देवीदयाल तुलसी राम के मकान पर, जोकि चौपाटी मेरीन ड्राईव में है, गये। वहाँ उन लोगों और एक साधु के साथ पन्द्रह-बीस मिनट ज्ञान-चर्चा होती रही। उनमें से कुछ ने सोमवार को नाम भी ले लिया।

23 नवम्बर, 1942 को सुबह मैं और डॉक्टर साहिब बस में सवार होकर साढ़े आठ बजे गेटवे ऑफ़ इण्डिया देखने गये। वहाँ से वापस आकर मैं सरदार

निहाल सिंह संन्यासी दवाखाने वाले के साथ लुहारचाल गया। लुहारचाल प्रिन्सेस स्ट्रीट के पास है और प्रिन्सेस स्ट्रीट कालबादेवी के पास है। इसके बाद हम क्राफोर्ड मार्केट में मौसमियाँ लेने गए और 12 दर्जन खरीदीं।

इसके बाद जनरल राजवाड़े ने 12.30 बजे दोपहर ताजमहल होटल में मुझे, डॉक्टर साहिब, दीवान साहिब और उनके पुत्र व लाला अमर नाथ को भोजन के लिये बुलाया हुआ था। हम वहाँ गये। ताजमहल के कमरे में जनरल साहिब व उनकी रानी साहिबा के साथ अंग्रेजी रसोइयों का बनाया हुआ वैष्णव भोजन खाया। सारा होटल देखा। कहा जाता है कि खाने के कमरे को एयर कण्डिशन कराने में दो लाख रुपया खर्च हुआ। कमरे में बड़ी सुगन्ध और ठण्डक थी। बाहर का शोर या गर्मी नहीं थी, सैंकड़ों मेजें लगी हुई थीं, जिन पर तरह-तरह के लोग, जिनमें अधिकतर अंग्रेज व मेमें थी, खाना खा रहे थे। एक तरफ दो-तीन देसी लोग वायलिन बजा रहे थे और एक मेम उनके साथ प्यानो बजाती थी, जिससे कि खाने वालों का मनोरंजन हो। यहाँ एक बोतल सोडे के बारह आने व लेमोनेड का एक रुपया लेते हैं। हमारे मेजबान ने खाना खिलाने वाले बैरों को पाँच रुपये इनाम में दिये। मेरे विचार में प्रति आदमी 20 रुपये खर्च आया होगा। बैरा खाने के साथ पानी के स्थान पर बर्फ में ठण्डा किया हुआ लाईमजूस हर एक के गिलास में भरता रहता था और उसे कभी कम नहीं होने देता था। यह गिलास मामूली न था बल्कि नीचे शीशे के पाये पर जड़ा हुआ था। पहले सूप दिया गया, फिर बेसन की तली हुई टिक्की, आमों, टमाटर सास और कई चटनियों इत्यादि के साथ दी गई, फिर उबली हुई गोभी दी गई। नमक मिर्च अपनी तबीयत के अनुसार डालना था। उसके बाद फ्रूट, सलाद व क्रीम दी गई। केक की एक पतली-सी मीठी और सूखी टुकड़ी बर्फ से ठण्डे किये हुए मक्खन के साथ रखी हुई थी। भोजन समाप्त करके हम वापस आ गये।

हुजूर का देहली के रास्ते वापस आना

23 नवम्बर की शाम को सामान लेकर मैं तो रेलवे स्टेशन पर आ गया, हुजूर बम्बई की संगत को दर्शन देते रहे। बम्बई सैण्ट्रल में कुछ टिकटों का झगड़ा रहा। हुजूर के दर्शन को बहुत-सी संगत आई थी। स्टेशन पर बहुत भीड़

थी परन्तु हमारे लिए गाड़ी का डिब्बा रिजर्व था। हमारा सारा सामान उसमें रखा गया। रास्ते में भसीन के स्टेशन पर केले बहुत सस्ते थे।

हुजूर महाराज जी का दिल्ली में ठहरना

25 नवम्बर, 1942 को सुबह दिल्ली में सत्संग का इन्तिजाम ठीक न था, क्योंकि हुजूर का तख्त कमरे में था। उसमें और उसके आगे के बरामदे में ज्यादा स्त्री-पुरुष नहीं आ सकते थे। बाहर सहन में जो लोग खड़े थे उनको न आवाज सुनाई देती थी और न ही दर्शन होते थे। कई साहिब दूर-दूर बस्तियों से सत्संग सुनने आये थे, परन्तु आज उनके लिये आगे स्थान न था। वे निराश होकर वापस चले गये। मैं भी उन्हीं लोगों में था। परन्तु शाम को हुजूर का तख्त बरामदे के किनारे पर था, अच्छा प्रबन्ध था। हुजूर को यह शिकायत रही कि लोगों ने आराम के समय भी उनसे मिलना जरूरी समझा और उनको आराम न करने दिया।

सत्संग के बाद हुजूर रात के 7.30 बजे कर्जन रोड नई दिल्ली पर सरदार जगजीत सिंह ठेकेदार के मकान पर भोजन के लिये गये। सरदार साहिब की बीबी व दोनों लड़कियों ने हुजूर को बड़े प्रेम से भोजन कराया। हमने भी भोजन किया और इसके बाद हम रात को साढ़े नौ बजे दरियागंज आ गये और आराम किया।

26 नवम्बर, 1942 को हुजूर ने नामदान दिया। हुजूर को बारह-एक बजे तक फुर्सत न मिली। दोपहर को भी लोगों को मुलाकात के लिये समय देते रहे। शाम को हमने सामान बाँधकर ताँगों में भेज दिया। हुजूर सत्संग में पधारे और गुरु अर्जुन साहिब का शब्द, 'जे भुल्ली जे चुक्की साई' ¹⁰ पढ़ा गया। फ्रण्टियर मेल गाड़ी एक घण्टा लेट थी। परन्तु हुजूर 9 बजे से पहले-पहले छः नम्बर प्लेटफार्म पर पहुँच गये। वहाँ हमारा सामान सैकिण्ड क्लास के डिब्बे में, जोकि रिजर्व था, रखा गया। हाँ, यह बात लिखना भूल गया कि शाम को डॉ. शराफ अपनी श्रीमती व सुपुत्र के साथ हुजूर को अपना आँखों का अस्पताल, जोकि दरियागंज में है, दिखाने ले गये। अस्पताल में बहुत-से बीमार स्त्री-पुरुष बिस्तरों पर लेटे हुए थे। बहुतों की आँखों पर पट्टियाँ बँधी हुई थीं मानों नरक की सजा भुगत रहे हों। आँखों की बीमारियों के लिये अच्छे-अच्छे यन्त्र दिखाई दिये।

डॉक्टर साहिब यह सेवा मुफ्त करते हैं। उनके नीचे और भी प्रसिद्ध आँखों के डॉक्टर हैं। इलाज भी मुफ्त किया जाता है। वहाँ हुजूर ने 50 रुपये दान के रूप में अस्पताल को दिये। वहाँ से होकर चाँदनी चौक में श्रीमान् अमर नाथ भार्गव की बिजली की दुकान व दरीबा कलाँ में लक्ष्मी प्रेस देखने गए, फिर इम्पीरियल बैंक के पीछे बिजली के सामान के स्टोर को देखते रहे। दिल्ली में एक सौ के लगभग स्त्री-पुरुषों ने नामदान लिया।

हुजूर महाराज जी की डेरे की तरफ वापसी

फ्रण्टियर मेल रास्ते में तीन घण्टे लेट हो गई। हम जालन्धर सुबह 9 बजे के करीब पहुँचे। सरदार साहिब सरदार भगत सिंह व दूसरे सत्संगी प्लेटफार्म पर उपस्थित थे, हुजूर मोटर में उनके निवास-स्थान को चल दिये। मैं और बाक़ी लोग हुजूर के सामान के साथ ब्यास स्टेशन पर पहुँच गये। वहाँ दो बैलगाड़ियों में सामान लाद कर मोटरकार में सवार होकर हुजूर से पहले डेरे पहुँच गये।

अध्याय 3

डेरे में ठहरना, डलहौज़ी और पहाड़ी क्षेत्र

की यात्रा का हाल

हुजूर की तबीयत जुकाम की वजह से ठीक नहीं थी। इसलिये हुजूर ने बाबू गुलाब सिंह जी से सत्संग करवाया।

29 नवम्बर, 1942 को सरदार भगत सिंह ने ख़ूब सत्संग किया। भाषा सरल व समझ में आनेवाली थी और शम्स तबरेज़ की फ़ारसी की कविता, 'सलाम अलेक ऐ दहक्राँ दरी अम्बाँ चहा दारी' (अर्थात्, ए इन्सान! तुझ पर खुदा की सलामती हो। तुझे इस दुनिया से क्या लेना है।) अनुवाद के साथ उपस्थित सज्जनों को पढ़कर सुनाई।

30 नवम्बर, 1942 को नाम दिया गया। कल मुसलमानों को नाम दिया जायेगा। हुजूर की तबीयत आज कुछ ठीक है परन्तु चेहरा कमज़ोर और पीला प्रतीत होता है जोकि अधिक व्यस्त रहने के कारण है। आज हुजूर ने दोपहर के तीन बजे भोजन किया और भोजन के बाद घुमान के और दूसरे सत्संगियों को वक़्त दिया, पर आराम नहीं किया। सुबह नौ बजे से हुजूर काम में लगे हुए हैं। शाम को सेवा में बैठे, अँधेरा हो गया।

1 दिसम्बर, 1942 को मुसलमानों को नाम दिया गया। शाम को 'रामा रम रामो सुन मन भीजै' शब्द श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से पढ़ा गया और हुजूर ने अपने शुभ मुखारबिन्द द्वारा इसकी व्याख्या की। डॉक्टर साहिब, कर्नल मार्टिन आदि को अंग्रेज़ी में अनुवाद करके बताते थे। अन्त में शाम को कहने लगे कि भाई, इससे बहुत बोझ पड़ता है।

रात को मैं नौ बजे रेडियो से ख़बरें सुनता रहा। खुशी की बात यह है कि हमारी सरकार अफ़्रीका में विजयी हो रही है और रूस मास्को व स्टालिनग्राड में जर्मनी को दबा रहा है।

२ दिसम्बर, १९४२ को सुबह हुजूर बाहर खेतों में घूमने के लिये गए। मैं मिस कॉलिन्स के साथ, जोकि म्विट्ज़रलैण्ड की रहनेवाली हैं, बाग में घूमता रहा। उन्होंने मुझे गुलदाऊदी, गेंदा, एस्टर के पौधे दिखाये जोकि सत्संग-घर के बाग में लगे हुए थे और कहा कि माली इन पौधों को बहुत ऊँचा बढ़ने देता है, जिसका नतीजा यह होता है कि फूल नहीं आते, अगर तीन फुट की ऊँचाई से ऊपर-ऊपर कभी-कभी छाँट दिये जायें तो खूब फूल आयें। आसपास की झाड़ियों को भी साफ़ कर दिया जाये तो वह उन पौधों के फूलों की खुराक लेकर फूलों को लगने से न रोके। फिर आगे जाकर मैंने तिलों के पौधे दिखाये और सरसों के साग की चर्चा की तो मिस साहिबा ने कहा कि यूरोप में जिस क्रिस्म का पालक होता है, वैसे भारत में नहीं होता। उसको साग की तरह खाया जाता है।

चापसी पर हुजूर ने साधुओं को 'प्रशादियाँ' बाँटीं। उसके बाद डाक सुनी। फिर दो बजे के लगभग खाना खाया। सवा दो बजे मुझे बुलाया कि इटली के एक सत्संगी कैदी को दिलासे का पत्र लिख देना। शाम को अंग्रेजों व मिस कॉलिन्स को नवें गुरु के भोग का शब्द 'गुन गोबिंद गायो नहीं'^{१२} का अनुवाद अंग्रेजी में करके सुनाते रहे।

३ दिसम्बर, १९४२ को सुबह नौ-दस बजे के करीब हुजूर जल्लूवाल किसी मृतक का भोग डालने गये। बहुत से लोग साथ गये। वहाँ से ढिलवाँ डिपो कार में गये। तीन बजे वापस लौट आये। आते ही आराम करने की बजाय डाक सुननी शुरू कर दी।

शाम को 'सतगुरु का नाम पुकारो'^{१३} का शब्द पढ़ा गया। मेरा काम था कि अंग्रेजों को अनुवाद करके सुनाता जाऊँ। हुजूर ने समझाया कि गुरु-भक्ति अल्नी सिला का चाटना है, परन्तु जब तक गुरु-भक्ति पूरी न हो जाये अर्थात् आत्मा सूर्य-लोक और चन्द्र-लोक को पार करके सतगुरु के नूरी स्वरूप को प्रकट न कर ले तब तक गुरु-भक्ति पूर्ण नहीं होती। उसके बाद नाम-भक्ति सरल और आनन्ददायक है, क्योंकि शब्द में आनन्द है। जिसकी गुरु-भक्ति पूर्ण हो गई उसकी मुक्ति में कोई शंका नहीं। असली परोपकारी सन्त हैं। उनके पास इस संसार रूपी जेलखाने की कुंजी है। वे जेलखाने को खोलकर कैदियों से कहते हैं : जाओ अपने-अपने घरों को। दूसरे परोपकारी कैदियों को थोड़े समय

के लिये तो सुखी कर देते हैं परन्तु जिस से मुक्ति नहीं मिलती। सत्संग के अन्त में फ़रमाया कि सन्तमत का सार-तन्त्र गुरु-आज्ञा का मानना है। बस यही पूजा और यही भक्ति है।

४ दिसम्बर, १९४२ की शाम को हुजुरी बागी में से 'गुरुमता अनोखा दरमा'^{१४} का शब्द लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि गुरुमत सूर्य, चन्द्रलोक से आगे सतगुरु के नूरी स्वरूप के दर्शन से आरम्भ होता है। जब कोई सत्संगी उस स्थान पर मन और आत्मा को एकाग्र करके ले जाये तो उस समय वह गुरुमत में प्रवेश करता है और उस समय ही यह समझा जायेगा कि उसको गुरु मिल गया। सन्तमत पारब्रह्म से शुरू होता है। फ़रमाया कि सहस्र-दल कमल और बंकनाल के बीच बहुत-सी रचना है, जिसकी चर्चा इस शब्द में नहीं की गई है और जिस पर कई पुस्तकें लिखी जा सकती हैं। सहस्र-दल कमल की ज्योति के तिल में से गुजरने पर वह रचना दिखाई देती है।

५ दिसम्बर, १९४२ को डाक देखने के बाद हुजूर ने फ़रमाया कि हमारा दाने, दिवाने व मस्ताने सभी तरह के लोगों से वास्ता पड़ता है और कामों-क्रोधियों के साथ भी निर्वाह करना पड़ता है। कल डलहौजी जाने की तैयारी है।

हुजूर महाराज जी की डलहौजी की यात्रा और वहाँ ठहरना

सुबह ८ बजे डलहौजी को चल दिये। मैं, बीबी लाजवन्ती व भाई शादी मोटर कार में पिछली सीट पर थे और हुजूर ड्राइवर के साथ। रास्ते में हुजूर घुमान की संगत को दर्शन देने के लिये उतरे। ऐसा प्रतीत होता था कि सारा गाँव ही दर्शन करने आ गया हो। वहाँ से नहर की पट्टी पर होते हुए ११.३० बजे चक्की की बैरियर (चौकी) पर पहुँच गये। वहाँ खाना खाने के लिये जगह देखकर, खेस बिछाकर हुजूर और हम सबने खाना खाया। बीबी वेचारी कै के डर से भूखी रही और रास्ते में दुनरे तक तो उसे कुछ तकलीफ़ नहीं हुई, परन्तु बनीखेत के आसपास उसका जी बहुत मिचलाया और थूकने लगी तथा होश-हवास खोने लगी। अन्त में डलहौजी डाकखाने के पास पहुँच गये। हमेशा की तरह त्रिलोक चन्द साहिब मौजूद थे। हुजूर ने डंगों को देखा। तीनो डंगे अब बन गये हैं सिर्फ सबसे ऊपर के डंगे में दो दिन का काम बाक़ी है। तीनों डंगे बहुत मजबूत मालूम होते हैं।

रात को बातचीत के बीच हुजूर ने फ़रमाया कि उन्होंने 18 वर्ष पहाड़ पर नौकरी की। जब बर्फ़ पड़ने का समय आता है तो पहले वर्षा आती है, फिर ओले पड़ते हैं, फिर बर्फ़। आदमी तीन फुट गहरी बर्फ़ तक चल सकता है। जानवर दो फुट से अधिक गहरी बर्फ़ में नहीं चल सकते। अगर चलते-चलते आदमी थककर बर्फ़ पर आराम करने के लिये बैठ जाये तो नौद आने लगती है। इसके बाद ठण्ड से मृत्यु का डर है। अगर बर्फ़ पड़ कर रात को तारे निकल आयें तो दूसरे दिन बर्फ़ सख्त हो जाती है और आदमी उस पर चल-फिर सकते हैं। रात बड़ा जाड़ा था, मेरे नीचे रूईदार गद्दा, उसके ऊपर दो फिर सकते हैं। रात बड़ा जाड़ा था, मेरे नीचे रूईदार गद्दा, उसके ऊपर दो कम्बल बिछे थे और मेरे ऊपर एक रजाई तथा रूईदार तुलाई थी। फिर भी गर्म पाजामा व गर्म क़मीज़ पहन कर सोना पड़ा।

7 दिसम्बर, 1942 को कोठी के उत्तर की ओर की खिड़कियों के आगे टीन की चादरें या लकड़ी की पटियाँ लगाई जा रही हैं, जिससे बर्फ़ से नुकसान न पहुँचे। इस समय दोपहर के 2 बजे बड़ी धूप है। परन्तु हवा बड़ी ठण्डी है।

सुबह हुजूर ने एक-दो पत्र लिखवाये। हुजूर कहीं बाहर घूमने नहीं गये। केवल शाम को डंगे की बनावट का निरीक्षण करने गये। हुजूर ने रात को बातचीत के बीच कहा कि कभी-कभी लोग वहम के कारण मकानों को भूत-प्रेत वाला समझने लग जाते हैं। जब आपकी बदली मरी पहाड़ पर हुई तो आपने बस्ती से बाहर एक बैंगला किराये पर लिया। बैंगला बिलकुल एकान्त में था। कोई उसे किराये पर नहीं लेता था, क्योंकि लोगों का ख़याल था कि उसमें भूत रहता है। लोगों ने हुजूर से कहा कि आप इस कोठी को न लें, इसमें एक भूत रहता है जो रात को इसमें रहनेवालों को पत्थर और ईंटें मार कर भगा देता है। हुजूर ने जवाब दिया, “कोई बात नहीं। मैं और भूत इकट्ठे रह लेंगे”।

रात को मकान पर पत्थर गिरने की आवाज़ आने लगी। उन दिनों बाबा बन्ता सिंह* हुजूर की नौकरी में था। वह घबरा कर बाहर भाग निकला। शोर और पत्थर गिरने की आवाज़ सुनकर हुजूर बाहर आये। आपने देखा कि कोठी

*भाई बन्ता सिंह आजिवन हुजूर की नौकरी में रहा। हुजूर के सिरसा में ज़मीन ख़रीदने के बाद सिरसा में रहा और हुजूर के परिवार की सेवा करता रहा। बड़ा प्रेमी अभ्यासी था। हुजूर के जीवन की कई बातें सुनाया करता था। सन् 1951 में उसने सिरसा में चोला छोड़ा।

से लगा हुआ एक पेड़ है, जिसके अखरोट जैसे सख्त फल हैं जो रात को तेज़ हवा चलने पर कोठी की टीन पर टकरा-टकरा कर आवाज़ कर रहे हैं। दूसरे दिन हुजूर ने पेड़ का वह टहनियाँ कटवा दिया।

इसी प्रकार हुजूर ने लुधियाना ज़िले के एक जाट की कहानी सुनाई कि उसके खेत में माता देवी की बुर्जी बनी हुई थी। अप्रैल में नवरात्रों के दिनों में जब उसकी गेहूँ की फ़सल पकने को होती तो सैकड़ों स्त्रियाँ व बच्चे माता देवी को पूजने के लिये आते और फ़सल को नष्ट-भ्रष्ट कर देते। बेचारा लाचार था क्या करता। अन्त में एक रात उसने बुर्जी को उठाकर शहीदों के स्थान पर रख दिया। सुबह गाँव में शोर करने लगा कि भाइयो रात बहुत-से बाजे-गाजे हो रहे थे। क्या आपने नहीं सुने? उन्होंने कहा कि हमें तो सुनाई नहीं दिये। जाट ने कहा कि भाई, रात को शहीद माता देवी को ब्याह कर ले गये, इसलिये बहुत बाजे बजते रहे। इनसान का दिल वहम से कमज़ोर होकर ख़याली चित्रों से उसको डराता है।

हुजूर महाराज जी का डलहौज़ी से लौटना

1 बजे की सर्विस से हम शाम के सात बजे के क़रीब नहर के रास्ते डेरे पहुँच गये।

हुजूर महाराज जी का डेरे में ठहरना

9 दिसम्बर को मैं हिसाब-किताब में लगा रहा। डेढ़ बजे के क़रीब हुजूर, मैं, राय साहिब तथा भाई शादी कार में सवार होकर अमृतसर गये क्योंकि हथियारों का निरीक्षण कराना था और बैनामे कराने थे। रात के दस बजे तक अमृतसर में ज़मीन के कागज़ात वग़ैरह पर बातचीत होती रही।

10 दिसम्बर को मेरा सारा दिन बैनामों के मामले में गया। शाम को 5 बजे फ़ुर्सत मिली। हुजूर ने 9 दिसम्बर की शाम और 10 दिसम्बर की सुबह को 9 बजे सत्संग किया। अमृतसर से चल कर शाम को 7 बजे के क़रीब डेरे वापस आ गये। रास्ते में ब्यास रेलवे स्टेशन के फाटक के पास बीबी धर्मदेवी व जमादार प्रताप सिंह लारी में मिले। अर्ज की कि हुजूर सत्संग के लिये आठ दिन के लिये पहाड़ पर पधारें। हुजूर ने आज्ञा दी कि परसों सुबह आठ बजे जालन्धर के रास्ते मुकेरियाँ को मोटर कार से चलेंगे। सामान लारी में कल जायेगा।

हुजूर महाराज जी का पहाड़ का दौरा

हुजूर महाराज जी की पहली यात्रा
12 दिसम्बर को सुबह 8 बजे मैं, डॉ. चन्द्रबन्सी, भाई शादी तथा हुजूर मोटर कार में जालन्धर के रास्ते मुकेरियाँ को चल दिये। 9 बजे जालन्धर में सरदार साहिब के मकान पर पहुँच गये। सरदार साहिब के हठ करने पर हुजूर उतर पड़े और हम लोग मिठाई और फल खाने लग गये। अभी सरदार गुग्गल सिंह हमारे लिए दूध ला ही रहे थे कि मोटर कार चल पड़ी। हम बीबीयों को दर्शन देने थे। बहुत-से सत्संगी स्त्री-पुरुष वहाँ आ गये और अर्ज करने लगे। प्रिंसिपल साहिबा बड़ी आदर्श युवती हैं। बड़े प्रेम व आदर-सत्कार से हमारी आव-भगत की। हुजूर को मोटर कार तक पहुँचाने आई। हुजूर ने भी उनको कुछ आन्तरिक बातें बताईं। वहाँ से आगे सरदार साहिब अपनी कार में दूध लाकर हम सबको पिलाकर वापस चले गए। रास्ते में टाँडा के पास सड़क पर हजारों की संख्या में लोग जमा थे। बाजे बज रहे थे। हुजूर ने कुछ देर सत्संग किया। फिर छोड़ा, कुराला व झंगरलाँ, दसूहा में भी ऐसे ही लोग जमा थे। दसूहा में भी एक छोटा-सा शब्द पढ़ा गया। वहाँ मेरे पुणे मित्र पण्डित सदा नन्द, लाला देव राज और पण्डित मथुरा दास वकील साहिबान मिल गये, जिनके दर्शन मैंने 25 साल के बाद किये।

रास्ते में सरूप सिंह डाइवर ने हुजूर से सवाल किया कि ये जो इतने लोग हुजूर के दर्शन को आये हैं उनको क्या लाभ होगा ? हुजूर ने फरमाया जो प्रेम-भाव से दर्शन करेंगे, उनको मनुष्य-जन्म मिलेगा। जो सत्संग सुनकर खोज करेंगे उनको कभी नाम मिलेगा। जो दोष-दृष्टि से आये हैं उनको कोई लाभ नहीं होगा। हुजूर ने आगे यह भी फरमाया कि संस्कार सबके हृदय पर पड़ता है और लाभ पहुँचता है। अब सोचो कि हुजूर की इस यात्रा से परमात्मा की सृष्टि को कितना भारी लाभ होगा। सैकड़ों बल्कि हजारों मनुष्य-जन्म के अधिकारी हो जायेंगे और बिना मेहनत या कोशिश के हजारों नाम के भी अधिकारी बन जायेंगे। मुकेरियाँ से आगे सनियाल 11-12 मील पर था। हम शाम को तीन-चार बजे के करीब वहाँ पहुँच गये। भोजन के बाद 5 बजे सत्संग हुआ, जिसमें तीसरे गुरु साहिब का शब्द श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'काया कामण अत सुआले पिर वसै जिस नाले' ¹⁵ पढ़ा गया।

हुचूर ने फ़रमाया कि मनुष्य की बड़ी भूल है कि परमात्मा या खुदा को जंगलों, पहाड़ों, पत्थरों, मूर्तियों, किताबों और नदियों आदि में खोजता है। परमात्मा किसी को बाहर न मिला है और न मिलेगा। परमात्मा तो मनुष्य के अन्दर है। अगर मन और आत्मा को अन्दर ले जायें तो परमात्मा मिले और मुक्ति भी। धार्मिक पुस्तकों में तो परमात्मा नहीं है, केवल परमात्मा की बड़ाई या महत्ताओं की आन्तरिक यात्रा के वृत्तान्त लिखे हुए हैं। जो लोग केवल धर्म-शास्त्रों को प्रतिदिन पढ़ लेते हैं और उससे ही मुक्ति की आशा रखते हैं वे भूले हुए हैं। पुस्तकों के उपदेश पर चलने से अर्थात् आत्मा को अन्तर में इकट्ठा करके रूहानी मण्डलों में चढ़ाई करने से मुक्ति होगी। जो लोग देवी-देवताओं को पूजते हैं उनका हाल ऐसा ही है जैसे कोई राजा अपने नौकर को पूजे। परमात्मा ने मनुष्य, जोकि उत्तम रचना है, की सेवा के लिये देवी-देवता बनाये हैं। उनका कर्तव्य मनुष्य के शरीर की देख-भाल करना, पैदा करना तथा संहार करना है, चाहे हम उसको पूजें या न पूजें। मनुष्य के पूजने योग्य परमात्मा के सिवाय कोई नहीं है।

कल सुबह 9 बजे सत्संग होगा और उसके बाद हुजूर नामदान देकर 3 बजे शाम मुकेरियाँ और हाजीपुर के रास्ते तलवाड़े जायेंगे। वहाँ रात ठहरेंगे।

13 दिसम्बर, 1942 को सुबह उठा तो कन्धे और पीठ में दर्द था। डॉक्टर साहिब कहते हैं कि टाक्सोमिया है अर्थात् शरीर में विषैले कीटाणु जमा हो गये हैं। यहाँ सीलापन बहुत है। बाहर मकान का फ़र्श हमेशा गीला रहता है। पानी 15 फ़ुट पर है। हवा में नमी है। आज सुबह 9 बजे हुजुरी वाणी में से 'यह तन दुर्लभ तुमने पाया'⁶ का शब्द लिया गया। सुबह से बादल हैं। उपस्थिति कल से कुछ कम थी। सत्संग के बाद एक सत्संगी ने प्रार्थना की कि उसको अन्तर में आज्ञा हुई कि तुम आठ दिन के अन्दर वृक्ष से गिर कर मर जाओगे। लोगों ने रोका कि वृक्ष पर मत चढ़ना, उसने कहा जो मुसीबत आनी है वह कैसे टल सकती है। इसलिये उसको वृक्ष पर ईंधन लेने के लिये चढ़ना था। जब वह टहनियाँ काट चुका तो ऐसा लगा कि वह पीठ के बल नीचे गिर गया। बड़ी ऊँचाई से गिरा, रास्ते में ही होश गुम हो गये थे परन्तु उसको ऐसा लगा जैसे किसी ने उसके सिर और टाँगों को ज़मीन से टकराने से रोकने के लिये थामे रखा हो। सिर्फ़ कमर टकराई और उसको दर्द हुआ, जिससे मुँह और दूसरे सुराखों से खून आने लगा। फिर उसको हुक्म हुआ कि दूसरे हकीम की दवाई खाओ (वह ख़ुद भी हकीम था) और दस दिन में ठीक

हो जाओगे। उसने ऐसा ही किया और बारहवें दिन बहँगी उठाने के लायक हो गया (वह झीवर का काम करता था)। किसी ने पूछा मरा क्यों नहीं? उत्तर मिला कि कई बार अन्दर पीछे से क़ाल की आवाज़ आ जाती है जिसको अभ्यासी सतगुरु की आवाज़ समझता है।

सत्संग के बाद हुजूर चार मील पैदल चल कर हुलेड़ गाँव में सत्संग घर की जगह देखने गये। रास्ता गीला था। जगह-जगह पानी की नदियाँ बह रही थीं। इस इलाक़े में मलेरिया और तिल्ली का जोर है। यहाँ धान ख़ूब होता है। इसलिये लोग खुशहाल हैं, परन्तु कमज़ोर। वहाँ से एक बजे लौटे। लोगों को नाम दिया। परन्तु भोजन नहीं किया। केवल सुबह दही लिया होगा। नामदान के समय आसपास के गाँवों के हज़ारों स्त्री-पुरुष सत्संग सुनने को जमा हो गये थे परन्तु हमारा प्रोग्राम बन चुका था। हम शाम को 4 बजे ख़ुर्दपुर के रास्ते हाजीपुर को चल दिये। रास्ते में बहुत-से नाले आये जिन पर पुल थे लेकिन हमारी मोटरकार का पुलों पर से गुज़रना मुश्किल था, क्योंकि इसका नीचे का भाग ज़मीन से टकराता था। रास्ते में बहुत-से गड्ढे भी थे। हमारे साथ लारी में 18-20 आदमी थे, जो रास्ते में कहियों से सड़क ठीक कर देते थे। गाँव के आदमी, औरतें, बच्चे हमारी मोटर देखने या हुजूर के दर्शन करने आ खड़े होते, क्योंकि इस रास्ते से कभी मोटरें, कारें या लारियाँ नहीं गुज़री होंगी। सड़क से शिवचक में बीबी माला के सम्बन्धियों को दर्शन देने गए। उनके घर सड़क से एक मील के लगभग होंगे। वहाँ से हाजीपुर होते हुए तलवाड़ा, बँगला डी. बी. में 8 बजे शाम को पहुँच गये जोकि हाजीपुर से 8 मील है। हाजीपुर से आगे देड़ में कुछ सत्संगी एकत्रित थे। वहाँ हुजूर ने 5 मिनट बैठकर दर्शन दिये। तलवाड़े का डाक बँगला ब्यास नदी के किनारे स्थित है। कमरों के तीन सेट हैं। आगे खुला मैदान है, जिसमें पेड़ लगे हैं। अच्छी छाया है।

आज सुबह 10 बजे के सत्संग में दो हज़ार के करीब व्यक्ति एकत्रित थे। 'जग में घोर अंधेरा भारी' का शब्द लिया गया। ब्यास और मुकेरियाँ के बीच अधिकतर हिन्दू राजपूतों की आबादी है। हुजूर ने फ़रमाया कि उनके पूर्वज चन्देल राजपूत थे और यहाँ के पार नालागढ़ के इलाक़े में आबाद थे। अकबर के ज़माने में वहाँ से लुधियाने के ज़िले में जाकर आबाद हो गये और जब औरंगज़ेब के समय में राजपूत लोग मुसलमान हो गये तो उन्होंने अपनी

लड़कियाँ मारनी शुरू कर दीं और जाटों की लड़कियाँ लेने लगे। इसलिये जाट कहलाने लग गये।

तलवाड़ा से हम सब 14 दिसम्बर, 1942 को दोपहर के सवा एक बजे चल दिये। रास्ते में भम्भूताड़ी गाँव आया। वहाँ राय साहिब लाला ज्ञान चन्द, रिटायर्ड स्कूल इन्स्पेक्टर, ने बड़े प्रेम से हुजूर का स्वागत किया। वहाँ हज़ारों स्त्री-पुरुष आसपास के गाँवों से जमा थे। हुजूर ने मोटर कार से उतर कर सत्संग किया और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब से 'रामा रम रामो सुन' शब्द की व्याख्या की। वहाँ से आगे दौलतपुर में संगत को दर्शन दिये। यह रास्ता कार के लिये अच्छा नहीं। रास्ते में जगह-जगह बड़े-बड़े नालों की खुश्क तहें आती हैं, जिन पर पत्थर-कंकर पड़े हैं या रेत के ढेर हैं या ऊँचे-नीचे गड्ढे हैं परन्तु दृश्य अच्छा है। चारों ओर हरे-भरे पहाड़ों की पंक्तियाँ, बीच में खुश्क नाला, जोकि वर्षा में बड़े जोर से चलता होगा, और खेत हैं। एक लाइन को पार करो तो दूसरी ऐसी ही लाइन आ जाती है। दौलतपुर में आर्य समाज का हाई स्कूल है। वहाँ से चलेट दो-तीन मील के करीब होगा। वहाँ हमारी पार्टी शाम के 7 बजे के लगभग पहुँच गई।

चलेट में बड़े-बड़े फ़ौजी अफ़सर और नौकरी-पेशा ज़मींदार रहते हैं। आसपास के गाँवों में बहुत-से सत्संगी बसे हुए हैं। बहुत से स्त्री-पुरुष व बच्चे सत्संग-घर के आगे शामियानों के नीचे बैठे हुए थे। बाज़ा बज रहा था। चलेट की आबादी कई पहाड़ियों पर फैली हुई है। लोग बड़े प्रेमी हैं। यह सारा पहाड़ी इलाक़ा प्रेमियों की ज़मीन है। लोग सीधे-सादे हैं, जिनको हुजूर के उपदेश का बहुत जल्दी लाभ हो जाता है। हुजूर ने ख़ुद भी फ़रमाया कि यहाँ बहुत-से सत्संगी स्त्री-पुरुष ऊँची आन्तरिक चोटियाँ पार कर चुके हैं। हमारे आने के बाद वर्षा शुरू हो गई, जिसकी आजकल किसानों को बड़ी ज़रूरत है। ये लोग प्रसन्न हैं क्योंकि वर्षा उनके लिये अनाज देने वाली है। सारी रात वर्षा होती रही।

15 दिसम्बर, 1942 आज भी सुबह वर्षा हो रही है। बड़ी ठण्ड है। सत्संग होना सम्भव नहीं क्योंकि बाहर बैठने को जगह नहीं है। फिर भी लोग वर्षा से प्रसन्न हैं। सत्संग-घर दो मंज़िल वाला है। आगे बड़ा मैदान है। निचली मंज़िल में सत्संगी लोग ठहरते हैं। ऊपर एक कमरे में हुजूर, दूसरे में मैं और तीसरे में रसोई है। सब कमरों के ऊपर टीन की छत है। छत तो केवल एक ही है परन्तु

छोटी-छोटी दीवारें बनाकर तीन कमरे अलग-अलग कर दिये गए हैं। हुजूर का कमरा बड़ा है और दीवारें, खिड़कियों तथा दरवाजों के तख्तों पर कागज चढ़ा हुआ है। हुजूरी पलंग के ऊपर चाँदनी-सी तान रखी है। कागज चमकदार है, जैसा कि लोग रामलीला में राम चन्द्र जी के डोले पर लगाते हैं। इससे रात को लैम्प की रोशनी में कमरा बड़ा चमकता है। थोड़ा-थोड़ा फर्नीचर हर कमरे में है। इन कमरों का फर्श नीचे से ज़मीन की सतह के बराबर है, क्योंकि यह सत्संग-घर पहाड़ी के ठीक नीचे स्थित है। दूसरी मंजिल पहाड़ी की सतह के बराबर है। हमारे कमरों के पीछे गुसलाखाने हैं और पक्का सहन है अर्थात् हमारे कमरों के पीछे सारी ज़मीन ऊँची है और उस पर गेहूँ के खेत हैं। उस ज़मीन के पूर्व को खुश्क नाला है, उसके पार फिर ऊँची ज़मीन है, जहाँ आबादी है। पानी यहाँ वर्षा से इकट्ठा करते हैं, जैसे डलहौज़ी वगैरह में होता है। कुआँ यहाँ से एक मील दूर होगा।

आज संक्रान्ति को सारे दिन वर्षा होती रही। कोई सत्संग नहीं हो सका। रात के तीन बजे तक बड़े जोर की वर्षा होती रही।

16 दिसम्बर, 1942 को सुबह फिर बादल हैं। हुजूर नाम देने के लिये बीबी धर्मदेवी की कुटिया में गये हैं। मैं और डॉक्टर साहिब खुश्क नाले के ऊपर की तरफ डेढ़ घण्टे के लिये सैर को चले गए। वहाँ से 11.30 बजे वापस आये। खुश्क नाले की तह बड़ी चौड़ी थी और उसमें रोड़े ही रोड़े पड़े हुए थे। आगे जाकर ऊँचाई पर एक कच्चा तालाब था जिसमें से लोग पानी लाते थे। पानी पीने के लिये कोई कुआँ नहीं है। इसी कारण से पहाड़ी इलाकों में पानी पीने के कुआँ पर झगड़े होते रहते हैं।

खाना खाने के बाद हुजूर फ़ौजी सरदारों की आबादी में, जो सत्संग-घर से 1 मील दूर पहाड़ी पर स्थित है, सत्संग और रात को उठने के लिये तशरीफ़ ले गये। सारे चलेट में पानी की कमी है। ज़मीन के नीचे पानी नहीं है। इसलिये कुएँ नहीं खुद सकते। सरदारों की आबादी के शुरू में एक कच्चा तालाब है, जिसमें पीने के लिये वर्षा का पानी जमा रहता है। इस तालाब के पास सत्संग हुआ। शब्द हुजूरी वाणी से 'सतगुरु का नाम पुकारो' पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि जो नाम सतगुरु देते हैं उसके सिमरन करने का हुक्म है। 15-16 हजार के करीब लोग होंगे। सत्संग के बाद शाम को सरदारों के मकान की ऊपर

की मंजिल में हमें कमरे दिए गए और शाम को हुजूर हर एक सरदार के मकान पर गये। हर एक ने अपना-अपना मकान खूब सजा रखा था। इस काम में काफ़ी देर लग गई। सरसों का साग व मकई की रोटी खाई जोकि बड़ी स्वादिष्ट लगी।

17 दिसम्बर, 1942 को सुबह सवा आठ बजे ही हम पहाड़ी से नीचे उतर कर मोटर कार में बैठकर सत्संग-घर 9 बजे से पहले आ पहुँचे और वहाँ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का शब्द 'दरसन भेटत पाप सभ नासै'¹⁰ लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया, "चरण धूलि से मतलब सतगुरु-स्वरूप के चरणों तक अपने अन्दर रसाई करने से है।" सत्संग के बाद खाना खाकर मोटर कार में 11 बजे ग्रेट की तरफ़ चल दिये। रास्ते में पहले नंगल गाँव में कप्तान मोती सिंह के घर जाना पड़ा, जो सड़क से करीब 1 मील दूर होगा। वहाँ दर्शन देकर हुजूर संघनई के स्कूल में, जो सड़क के किनारे पर स्थित है, सत्संग करने के लिये 15 मिनट ठहरे। हुजूरी वाणी का शब्द 'गुरु मेरे जान पिरान, शब्द का दीन्हा दाना'¹¹ लिया। बड़ा आनन्द आया। हुजूर ने महसूस किया कि यह सड़क कहीं-कहीं से बहुत ऊँची-नीची, कहीं-कहीं रेत से अटी हुई है, कहीं छोटी-छोटी वटियों से भरी हुई है। यह इलाका खुश्क-सा मालूम होता था। कलोह में बहुत-से सत्संगी जमा थे। वहाँ से आगे इलाका समतल, हरा-भरा और खुशहाल है। ग्रेट चलेट से 9 मील पर है और ऊना 15 मील आगे। ग्रेट अच्छा क्रस्बा है। पहाड़ का केन्द्र है, अच्छा बड़ा बाज़ार है परन्तु यहाँ सत्संगी कोई नहीं है। आगे पिंजौर में बहुत-से सत्संगी जमा थे। उससे आगे पंडोगा और भरसाल में भी लोग जमा थे। भरसाल से आगे यह कच्ची सड़क होशियारपुर वाली पक्की सड़क को काटती है। उसके आगे सवां नदी आती है, जिसमें बहुत थोड़ा पानी था। सवां को पार करके ऊना का अड्डा और उससे बाँयें हाथ को मुड़कर कुछ मील पर कालसिंधी है, जहाँ हजारों स्त्रियाँ व पुरुष खड़े थे। बड़ा-सा दरवाज़ा बनाया गया था। बाजा बज रहा था। नया सत्संग-घर बना हुआ है परन्तु हुजूर केवल पाँच मिनट ठहरे। वहाँ से नारी ढक्का से आगे झम्बर आ जाता है परन्तु रास्ता खराब, कहीं कीचड़ थी, कहीं चो' कभी-कभी हमें मोटर से नीचे उतर कर मोटर को पीछे से धकेलना पड़ता था। एक जगह कार कीचड़ में धँस गई। झम्बर की

¹⁰बरसाती नदी या नाला।

आबादी ऊँची जगह पर है और बिखरी हुई है। यहाँ भी बाजे बज रहे थे और भीड़ की तो कोई सीमा न थी। जब हजरत ईसा मसीह ने अपना प्रसिद्ध उपदेश जेरूसलम की पहाड़ी पर किया होगा, उस समय भी इतनी जनता न होगी। छतें, रास्ते, मैदान, खेत सब स्त्रियों और पुरुषों से भरे पड़े थे। हुजूर चाहते थे कि उन सब व्यक्तियों को सत्संग सुनायें, परन्तु लाउड-स्पीकर न पहुँच सके क्योंकि लारी रास्ते में कीचड़ में दो मील पीछे ही धँस गई थी। हमारा सारा सामान उठाकर वहाँ से लाना पड़ा। लाउड-स्पीकर के बिना इतने ज्यादा लोगों को सत्संग सुनाना सम्भव न था। हमें भी बड़ा अफ़सोस रहा।

ये लोग धन्य हैं जो इतने ज्यादा व्यक्तियों के रहने का तथा खाने-पीने का प्रबन्ध दो रात के लिये करेंगे। हमें ऊपर की मंज़िल में कमरे दिये गए मगर वे बारिश के कारण सीले और ठण्डे थे। हमारे कमरे में पलंगों से ज़रा ऊँचे तीन बड़े-बड़े झरोखे हैं, इसलिये इस कमरे को काफ़ी हवादार मान सकते हैं। डॉक्टर साहिब तो चाहते हैं कि रात को सोते वक़्त दरवाज़ा भी खुला रखें ताकि ऑक्सीजन अच्छी तरह मिल सके, परन्तु मैंने उन्हें बड़ी मुश्किल से मनाया कि रात को दरवाज़ा ज़रूर बन्द कर देना चाहिये। वे शायद न मानते परन्तु मैंने उनका ध्यान एक और हवा आने के रास्ते की ओर दिलाया। कमरे पर फूस की छत है और उस छत और दीवारों के बीच काफ़ी अन्तर है जिसमें से रात को हवा आती रहेगी। इसके इलावा झरोखे में कोई तख्ते नहीं हैं केवल चादरें उनके आगे लटका रखी हैं।

हरक चेह बादा बाद मा कशती दर आब अन्दाख़्तम।

अर्थात्, जो हो सो हो, हमने तो नाव पानी में उतार दी।

18 दिसम्बर, 1942 को 11 बजे सत्संग बड़े मैदान में हुआ। इससे पहले मैं और डॉक्टर साहिब आसपास की पहाड़ियों पर सैर के लिये गए। सत्संग में 'यह तन दुर्लभ तुमने पाया'¹² पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि जो पुरुष पत्थर की मूर्ति पूजते हैं वे पहाड़ियों में पैदा होते हैं जहाँ कि बहुत वटियाँ होती हैं। कोई 20,000 व्यक्ति उपस्थित थे। उसी दिन शाम के तीन बजे फिर सत्संग हुआ इसमें करीब 25,000 लोग होंगे। सत्संग के बाद शाम को हुजूर बाहर सैर को तशरीफ़ ले गये। रास्ते में पहाड़ी पर सत्संगियों की छोटी-सी आबादी थी। वहाँ से स्त्रियाँ दर्शन करने उतरिं। एक ने बताया कि उसकी लड़की मियादी बुखार से छः

महीने तक बीमार रही। एक दिन सुबह रोने लगी कि सुबह हुजूर आये थे परन्तु वापस चले गए कि अभी तेरा वक़्त नहीं आया फिर उसके कुछ दिन बाद चोला छोड़ गई। इन सत्संगियों पर हुजूर की बड़ी दया है। हुजूर फ़रमाते हैं कि मालिक का नाम ग़रीबनिवाज़ है।

19 दिसम्बर, 1942 को सुबह 7 बजे हमारे बिस्तरे बैलगाड़ियों में लाद कर नाहरी की ओर भेज दिये गए, जो यहाँ से तीन मील होगा। हम मोटर कार में साढ़े नौ बजे के लगभग आ पहुँचे। हुजूर ने सुबह 11 बजे मैदान में सत्संग किया। यह गाँव मैदान में स्थित है। यहाँ लोग झम्बर से अधिक खुशहाल हैं, क्योंकि यह गाँव पहाड़ियों और चोओं से बचा हुआ है, परन्तु इस गाँव की आबादी निचान में है। इसलिये वर्षा में पानी खड़ा रहता होगा। सत्संग के बाद हुजूर से नाम लेनेवाले बहुत-से स्त्री-पुरुष इकट्ठे हो गये। हुजूर ने 1200 स्त्री-पुरुषों को नामदान दिया। इसके बाद हुजूर तीन मील दूर कराला, मोटर द्वारा गये।

हुजूर को जब आराम के लिये कहा जाये तो कहते हैं कि इस देह को अन्त में मिट जाना है। जितना परोपकार हो सके, कर लें। न उनको खाना सूझता है, न नहाना और न सैर। सारा दिन पर-हित में लगे रहते हैं और फिर किसी को जताते भी नहीं। आप अपनी बे-आरामी, कम सोने और स्थान-स्थान घूमने वगैरह की शिकायत भी नहीं करते। यह काम मनुष्य का नहीं है।

हुजूर महाराज जी का लौटना

20 दिसम्बर, 1942 सुबह 8 बजे विदा हुए। रास्ते में काफ़ी रेत थी जिसमें मोटर कार धँस गई। लोगों ने बड़ी कठिनाई से धकेल कर निकाली। 9 बजे कालसिंधी में एक विवाह सम्पन्न किया गया। इसके बाद ऊना आये, वहाँ से हरौली, जोकि रायबहादुर लाला जोधा मल का गाँव है, जाना था, परन्तु रास्ता न मिला। फिर होशियारपुर को चल पड़े। ऊना की सड़क पर बहुत मोड़ आते हैं। होशियारपुर से 4 मील बनखण्डी में, जोकि सबसे अधिक ऊँचाई पर है, आराम करने का सरकारी बँगला है। उससे परे जहानखेला, होशियारपुर से चार मील है। वहाँ हुजूर ने सत्संग किया। उसके बाद आदमपुर में गलियों में से होकर पोस्ट-मास्टर बाबू खुशी राम के यहाँ किसी बीमार को देखने पहुँचे। वहाँ से जालन्धर शहर सरदार साहिब के मकान पर आ गये। वहाँ हमने ख़ूब पेट भर कर, सरदार

साहिब की दावत का आनन्द लिया। आर्यों की दुकान की मिठाई, फल, दूध। वहाँ से चल कर शाम को 5-6 बजे के करीब डेरे पहुँच गये। हुजूर ने सत्संग किया, फिर लाहौर जाने का प्रोग्राम बनाया।

हुजूर का डेरे में निवास

21 दिसम्बर से 6 जनवरी, 1943

आज लाहौर जाने की तैयारी है। शाम को सत्संग में हुजूर ने समझाया कि जब तक विरह न हो परदा कैसे खुले ? कुछ गैर-सत्संगी ऐसे निर्मल होते हैं कि सतगुरु उनके साथ-साथ फिरते हैं। कुछ ऐसे श्रद्धालु और प्रेमी हैं कि तीर्थों को साष्टांग दण्डवत् करते हुए चले जाते हैं। आगे जाकर क्या मिलता है ? ईंट और पत्थर ! बागड़ में लोग आम तौर पर इसी प्रकार गोगा पूजने जाते हैं। कहते हैं कि गोगा एक चौहान राजपूत था जो साँप बन गया था। उनको नाम और सतगुरु का पता नहीं है। बड़े भाग्य हैं उनके जिनको कलियुग में नाम मिल गया है।

22 दिसम्बर, 1942 सुबह 6 बजे हुजूर कार में लाहौर चले गए। वहाँ राय साहिब का डॉक्टर निरीक्षण करवाया गया।

23 दिसम्बर, 1942 शाम को वापस आये।

24 दिसम्बर, 1942 सुबह को वर्षा थी और बड़ी ठण्ड थी। इसलिये बाहर से लोग पहले वर्षों की अपेक्षा कम आये। शाम को भोग डालने के बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से केवल शब्द पढ़े गए।

25 दिसम्बर, 1942 सुबह हुजूर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का भोग डालने वड़ाइच गाँव में गये। वहाँ से 12.30 बजे वापस आकर अपने कमरे में चले गए, उससे पहले डाक देखी। उस समय एक बीबी ने कहा कि उसका लड़का गुजर गया है और पूछा वह कहाँ गया ? हुजूर ने उत्तर दिया कि तुम्हारे घर में भी तो किसी के यहाँ से आया था। अब जिनके घर गया, उनका है। तुम्हारा उस पर क्या अधिकार है ?

26 दिसम्बर, 1942 को सुबह सत्संग में भोग-वाणी पढ़ी गई। हुजूर ने फ़रमाया, 'आसां पर्वत जेडियाँ मौत तनावौं हेठ'। शाम को स्वामी जी महाराज की वाणी से आषाढ़ व सावन का महोना पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि मौत दो

प्रकार की है। एक सत्संगी की और दूसरी गैर-सत्संगी की। गैर-सत्संगी दुनियादार की मृत्यु का दृश्य बड़ा भयानक होता है। इधर तो उसकी आत्मा शरीर से उड़ने को होती है, उधर सम्बन्धी लोग रोना-पीटना शुरू कर देते हैं, जिससे उसकी आत्मा को शान्ति से निकलने का अवसर नहीं मिलता। चाहिये तो यह कि जब कोई मृत्यु के निकट हो तो उसके पास जो भी हों उसको धैर्य और शान्ति से विदा करें, रोयें-चिल्लायेँ नहीं। उसको धैर्य दें कि हमारी फ़िक्र न करो, अपना ध्यान परमात्मा में लगाओ। यदि सत्संगी मरता है तो भी यही नियम लागू होना चाहिये, परन्तु उस समय उसके निकट कोई भी गैर-सत्संगी नहीं होना चाहिये, चाहे वह कैसा ही निकट सम्बन्धी क्यों न हो।

27 दिसम्बर, 1942 सुबह को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'सूरत देख न भूल गवारा। मिथन मोहारा झूठ पसारा'¹³ पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि सन्तों की शिक्षा तो दसवें द्वार अर्थात् पारब्रह्म से आरम्भ होती है, जहाँ सन्तों और भक्तों की मण्डलियाँ हैं और जहाँ से सभी रागों की धुनें निकली हैं। जब इधर से आत्मा वहाँ पहुँचती है तो वहाँ की आत्माएँ बड़े प्रेम और आदर-भाव से उसके स्वागत के लिये आती हैं और बधाई देती हैं कि धन्य हो तुम जो माया और माया के पदार्थों को त्यागकर यहाँ आ गई हो। हुजूर ने फ़रमाया कि नाम का मिलना आसान नहीं। कई जन्मों के श्रेष्ठ कर्म इकट्ठे हों तो नाम मिलता है और साधु-महात्माओं का पहले जन्मों का संग फल लाता है। फ़रमाया कि धर्मदास से कबीर साहिब का आठ जन्म का सम्बन्ध था। एक सत्संगी ने विनती की कि जब वह दस वर्ष का था तो उसकी आत्मा स्वप्न में सूरज व चाँद लोक पार करके ऊपर चली गई। ऐसा मालूम होता था कि वह एक बालक है और किसी महात्मा की गोद में लेटा है परन्तु वह रोने लगा तो उस महात्मा ने उसे गोद से बाहर फेंक दिया, बताइये, वह कौन महात्मा थे ? हुजूर ने कहा कि जब तुम अन्दर जाओगे तो वह खुद ही मिल जायेगा, बाहर से बताने की आवश्यकता नहीं है।

28 दिसम्बर, 1942 सुबह 'रामा रम रामो सुन'¹⁴ शब्द गुरु राम दास साहिब का श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से लिया गया। यह शब्द प्रायः हुजूर पढ़वाया करते हैं। इसमें एक शब्द 'सुन' का ऐसा आया है जिससे जिज्ञासु की आँखें खुलनी चाहिये अर्थात्, यह कि राम नाम केवल मानने का विषय ही नहीं है,

बल्कि सुनने का भी है। अर्थात्, परमात्मा की वाणी है जो सुनी जा सकती है। शाम को स्वामी जी की कविता के बारहमाहा में से क्वार का महीना पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि संसार के मनुष्य विषयों में ऐसे ग्रस्त हो गये हैं कि उनके नशे में सन्तों-महात्माओं के उपदेश को सुनकर टाल देते हैं। इसके बाद गुरु नानक का शब्द मारू राग में से 'कुदरत करनैहार अपारा'¹⁵ पढ़ा गया। उसके बाद कबीर साहिब का शब्द 'महरम होय सो जाने साधो ऐसा देश हमारा'¹⁶ सुनाया गया। रात को तीन दिन की डाक सुनी। लगभग 9 बजे गये। रात को हुजूर 2 बजे सोये। आज फिर लोग उनको सोने नहीं देंगे।

29 दिसम्बर, 1942 भण्डारे का दिन था। सत्संग 1 बजे के बाद आरम्भ हुआ और 4 बजे के करीब समाप्त हुआ। सत्संग से पहले हुजूर सेवा में बैठे। सत्संग में हुजुरी वाणी में से 'सतगुरु का नाम पुकारो'¹⁷ और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब से 'हर कीआं कथा कहाणीआं गुर मीत सुणाईआं'¹⁸ पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि जब से यह संसार बना है तब से हम लोग यहाँ आये हुए हैं। करोड़ों युग बीत गये। कई प्रलय और महाप्रलय हो गई परन्तु हमें अपने घर जाने का रास्ता नहीं मिला, यदि मिलता तो हम यहाँ इस प्रदेश में क्यों बैठे होते। 'सतगुरु का नाम पुकारो' से मतलब है कि सतगुरु से नाम लेकर नाम का स्मरण करके सूर्य-चौद और सितारों के पार जाकर सतगुरु के नूरी स्वरूप के दर्शन करो। सत्संग के अन्त में साई फ़ुम्मनशाह ने अपनी वाणी सुनाकर संगत को प्रसन्न किया। इसके बाद शाम को सेवा में बैठे।

30 दिसम्बर, 1942 को हुजूर ने नामदान दिया और तीन बजे के लगभग अवकाश मिला।

31 दिसम्बर, 1942 को हुजूर व्यास के लिये मोटर में दोपहर के समय चले गए। फिर वापस आकर कालाबाग व ऐबटाबाद की संगत को प्रसाद दिया, जो 100 के लगभग स्त्री-पुरुष होंगे। उसके बाद 5 बजे सत्संग हुआ, जिसमें कार्तिक का महीना हुजुरी वाणी में से पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि निचले छः कमलों में शब्द नहीं है। सत्तलोक मस्तिष्क के मध्य में तालू के स्थान पर है और भँवर गुफा जहाँ कि खोपड़ी और माथे का मेल है। ब्रह्म की मुक्ति कल्प पर्यन्त है। नौ सौ अठानवे चौकड़ी युग को एक कल्प कहते हैं। ब्रह्म की मुक्ति से

वापस आना पड़ता है। वेदान्ती दो प्रकार के हैं- एक सनातन और दूसरा नवीन। सनातन वेदान्ती व्यास, वशिष्ठ आदि अभ्यास करके ब्रह्म में पहुँचे। परन्तु नवीन वेदान्तियों के केवल तीन ही स्थान हैं। नेत्र, हृदय और कण्ठ। जब वह आँखों के पीछे चिदाकाश में जाते हैं तो उनको अपना ही रूप दिखाई देता है, जोकि बहुत चमकदार है और उससे उनको कुछ-कुछ करामातें भी प्राप्त हो जाती हैं। उस नूर और स्वरूप को देखकर वह कह उठते हैं, 'अहं ब्रह्मास्मि'।

मैं ही ब्रह्म हूँ। वास्तव में यह रूप उनका निज रूप नहीं। निज रूप तो पारब्रह्म में मिलेगा। यह रूप उनके मन का है जो उनको धोखा देकर आगे जाने से रोकता है। कुछ सत्संगी भी इस रूप को देखकर रुकने लगते हैं।

एक सत्संगी ने शिकायत की कि मेरी माँ जिसको नाम मिला हुआ था, चारपाई पर ही मर गई और उसके मरने के बाद कोई 'दिया' इत्यादि नहीं करवाया गया। उसकी बिरादरी कहती है कि उसकी गति नहीं हुई। हुजूर ने उत्तर दिया कि मेरा उपदेश तो अन्दर ज्योति के दर्शन करने का है, बाहर का दिया तो बेकार है। कोई सत्संगी मरने के समय दिया न करे और क्रिया-कर्म बिरादरी की रीति है, उसे कराओ या न कराओ, मरने वाले को उसका कोई लाभ नहीं पहुँचता। क्रिया-कर्म तो अपने जीवन में हर व्यक्ति को अभ्यास के द्वारा ही करने होते हैं। अभ्यास करना ही असली क्रिया-कर्म है। शेष क्रिया-कर्म केवल रिवाज हैं।

1 जनवरी, 1943 को जब हुजूर डाक देखने आये तो मैंने विनती की कि आज तो तबीयत थकी हुई मालूम होती है। हुजूर ने उत्तर दिया कि चलो मैंने तो गुजारा कर लिया, जो मेरी जगह आयेगा वह क्या करेगा? इस पर सब लोगों की आँखें भर आईं। आज वर्षा व ठण्ड के कारण सत्संग नहीं हो सका।

2 जनवरी, 1943 को मैं जालन्धर गया, डेरे का काम था। रात को 9 बजे डेरे वापस पहुँचा, हुजूर को रिपोर्ट दी। वहाँ महन्त इन्द्र सिंह ऐबटाबादी के विषय में बातें हो रही थीं, जिनकी 31 दिसम्बर रात को 12 बजे ही मृत्यु हो गई थी। मरने से एक-दो दिन पहले उसने हुजूर से विनती की कि या तो मुझे स्वस्थ करके अपने साथ सिरसे ले चलो या जाने से पहले-पहले मेरा फ़ैसला कर दो। हुजूर उसकी अच्छाइयाँ याद करके खुश हो रहे थे। बड़भागी जीव था जिससे

गुरु इतने प्रसन्न थे। कल को घुमान जाना है परन्तु बादल छाये हुए हैं। आज सारा दिन जालन्धर में बूँदा-बाँदी होती रही।

4 जनवरी, 1943 को वर्षा होती रही। शाम को 4 बजे के लगभग आकाश साफ़ हुआ और धूप निकली। आजकल रोज़ बाहर से केवल पाँच-छः पत्र आते हैं। बाहर जाने का प्रोग्राम मौसम की खराबी के कारण स्थगित कर दिया है। शाम को सत्संग में भोग-वाणी पढ़ी गई। उसमें आया 'जिहवा गुन गोबिंद भजो करन सुनो हर नाम'¹⁹ इसकी तुलना गुरु राम दास के शब्द 'रामा रम रामो सुन'²⁰ से करें तो पता चलता है कि नाम या राम सुनने का विषय है अर्थात्, शब्द की आवाज़ ही राम है और उसको सुनना चाहिये। यह श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का मत है।

5 जनवरी, 1943 को सुबह बड़ी धुन्ध थी, जोकि दोपहर 12 बजे के लगभग साफ़ हुई और सूर्य निकला। दोपहर को डाक देखने के बाद हुजूर ने साधुओं को प्रसाद बाँटा। फिर शाम को सत्संग किया, 'काल ने जगत अजब भरमाया'²¹ हुजुरी वाणी में से पढ़ा गया।

फिर फ़रमाया कि गुरु से प्रेम होगा तो परदा खुलेगा। जब तक इंजन न आये तो गाड़ियों को कौन खींचे? गुरु इंजन है उसको प्रगट करो जो हर समय तुम्हारे साथ रहे और बातें करे। इसके बाद परदे खुलेंगे। यह भी फ़रमाया कि प्रेम करने से हृदय, ध्यान करने से आँखें और शब्द सुनने से कान निर्मल होते हैं।

हुजूर का घुमान में सत्संग

7 जनवरी, 1943 को घुमान में हुजूर सत्संग-घर से हुजूर बाबा जी महाराज के निवास-स्थान पर गये। वह मकान कच्चा है और पवित्र स्थान है। लोगों ने विनती की कि उसको पक्का बना दिया जाये। हुजूर ने फ़रमाया कि हुजूर बाबा जी महाराज से अन्तर में कई बार विनती की है। वह सुनकर चुप्पी साध लेते हैं। हमें डर लगता है कि उनकी इच्छा के विपरीत न हो जाये। हुजूर ने कहा कि गुरु रामदास का दरबार साहिब में कच्चा कोठा था। उन्होंने आज्ञा दी थी कि जो उसको गिरायेगा उसका कुछ नहीं रहेगा। अन्त में महाराजा रणजीत सिंह ने कहा कि मैं अवश्य उसकी जगह पक्का कोठा बनवाऊँगा। परिणाम यह हुआ कि

उनका कुछ न रहा। घुमान में दो बजे से चार बजे तक सत्संग करके हुजूर साढ़े पाँच बजे डेरे पहुँच गये। कल दस बजे तरनतारन जाने का प्रोग्राम है।

8 से 11 जनवरी, 1943

हुजूर का तरनतारन व अमृतसर का दौरा

दोपहर के 12 बजे के बाद मोटर में तरनतारन की ओर चल दिये। जंड़ियाले से पहले नहर की पटरी, जो बाईं तरफ़ मुड़ती है, पर जाकर बायें हाथ को कच्चे रास्ते मोटर ले गए। ठल्हैर का गाँव नहर से तीन मील बाँये हाथ को था। वहाँ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से दो शब्द पढ़कर 4 बजे के बाद तरनतारन को इस नहर की पटरी पर चले। रास्ते में औरंगाबाद को पार करके पक्की सड़क पकड़कर तरनतारन, डेरा सन्त बग्गा सिंह साहिब, की ओर चले। डेरे के द्वार पर स्वयं सन्त जी और उनकी संगत हुजूर के स्वागत के लिये उपस्थित थी। अन्दर बीबियाँ व पुरुष दर्शनों के लिये बेचैन थे और शब्द पढ़ रहे थे। हुजूर को बाबा जी ने अपना ऊपर का कमरा दे दिया। हमें हुजूर के सामने वाले कमरों में ऊपर की मंज़िल में ठहराया गया। दोनों कमरों के बीच चौड़ा छत्ता हुआ बरामदा है और बरामदे में मेज़-कुर्सियाँ, दरियों के फ़र्श पर सजी हुई थीं। वहाँ दोनों बिराजमान हुए। हम नीचे फ़र्श पर बाबा जी को मत्था टेककर बैठ गए। इधर-उधर की बातों के बाद माल्टों का प्रसाद तरनतारन की संगत में बाँटा गया। फिर बाबा जी तो सामने के दूसरे मकान की ऊपर की मंज़िल में, जहाँ कि उनकी रसोई भी है, पधारे और हमने अपना डेरा जमाया। मैं और डॉक्टर साहिब सैर करने चले गए। वहाँ से वापस आकर रात को बाबा जी महाराज की ठहरने की जगह पर रसोई के पास आँगन में भोजन किया। तरनतारन की संगत ने बड़े प्रेम और श्रद्धा से हमारी आवभगत की। यहाँ रीति है कि संगत को सोने के लिये चारपाई नहीं दी जाती। बिजली का सब कमरों में अच्छा प्रबन्ध है।

दूसरे दिन 10 बजे से पहले अमृतसर के सत्संगी लाला अरूड़ चन्द इत्यादि आ पहुँचे और हम सब 10 बजे तरनतारन के प्रसिद्ध कोढ़ीखाने में गये। वहाँ के इंचार्ज डॉक्टर और उनकी श्रीमती जी बड़े प्रसन्नचित्त और मिलनसार हैं और कोढ़ियों व उनके बीबी-बच्चों को प्रेम से रखते हैं। 210 के लगभग पुरुष तथा स्त्रियाँ वहाँ रोग-ग्रस्त थे और 90 के लगभग बालक थे। यह बताया गया कि जब

बच्चे तीन वर्ष के लगभग हो जाते हैं तो माँ-बाप से अलग कर लिये जाते हैं, जिससे कि वह रोग उन्हें न हो जाये, क्योंकि डॉक्टरों के कथनानुसार यह बीमारी पीढ़ी दर पीढ़ी नहीं चलती बल्कि छूतछात व इकट्ठे रहने तथा खाने-पीने से एक रोगी से दूसरे को होती है। यह देखने में आया है कि वहाँ कोई विरला ही ऐसा कोढ़ी होगा जो कुँवारा हो। सबके बीबी-बच्चे थे। उनकी दशा को देखकर कर्मों के कोप का आभास होता था। कड़ियों के हाथों और पाँवों की उँगलियाँ झड़ चुकी थीं। कड़ियों की नाक बिलकुल बैठ गई थी। कुछ लोगों के चेहरों पर फुँसियाँ-सी थीं। जिनके हाथ-पाँव झड़ जाते हैं, उनको डॉक्टर लोग बर्न्ट-अप कहते हैं और उनको अस्पताल में रखने की जरूरत नहीं, क्योंकि उनसे बीमारी दूसरे लोगों को नहीं लगती और न ही उनका इलाज हो सकता है। ऐसे कोढ़ी प्रायः शहरों की सड़कों पर भीख माँगते देखे जाते हैं, परन्तु यहाँ सबके सब साथ रखे जाते हैं, यद्यपि उनको देखकर दिल काँप उठता है। हुजूर ने फ़रमाया कि इन लोगों की सेवा करना असली दान-पुण्य है। सबको पैसे, लड्डू, कुर्ते और चादरें बाँटी गईं। बच्चों के कमरे अलग थे। वहाँ जाने का समय हमारे पास नहीं था, क्योंकि बड़ों को मिठाई इत्यादि देने में लगभग 12 बज गये थे। बच्चों के लिये रुपये व मिठाई देकर हम चल पड़े। मेम साहिब ने बताया कि सरकार बड़ों के खर्च के लिये रुपया देती है, परन्तु बच्चों के पालन-पोषण के लिये रुपया बाहर 'मिशन' से आता है। यह भी पता लगा कि इस अस्पताल के पास एक और कोढ़ियों की बस्ती भी है, वहाँ हम नहीं गये।

वहाँ से सन्त बग्गा सिंह जी के कुएँ पर गये। वहाँ ऊँचे चबूतरे पर हुजूर व बाबा बग्गा सिंह जी बिराजे, बाक़ी सब नीचे बैठ गये। साईं फुम्मन शाह ने अपनी लिखी हुई पंजाबी कविता पढ़कर सुनाई और कृषकों को प्रसाद बाँटा। सत्संगियों ने विनती की कि इन बैलों पर भी दया-दृष्टि की जाये। मेरे विचार में तो हुजूर ने कोढ़ियों को भी प्रशादी देकर फिर से मनुष्य-जन्म का अधिकारी बना दिया। वहाँ से लौटकर खाना खाया। ढाई बजे के लगभग कोटली गाँव में, जोकि अमृतसर की ओर तीन मील पर स्थित है, गये। वहाँ सत्संग हुआ। बहुत-से जाट सिक्ख उपस्थित थे। लोग बड़े प्रेमी हैं। एक व्यक्ति ने मुझे बताया कि एक प्रेमी के पास पाँच भैंसें दूध देनेवाली थीं। उसने संगत की दूध और मिठाई से खूब

सेवा की। वहाँ से होकर अमृतसर की ओर, जोकि 11 मील है, चले। अमृतसर में हुजूर ने फिर सत्संग किया। मैं डाक का काम करता रहा। वहाँ से छः बजे चल कर सूर्य छिपने से पहले गुरुद्वारा तरनतारन में लौट आये। वहाँ कुछ देर आराम करके हुजूर रेलवे लाइन व मण्डी की ओर पैदल सैर को चले गए। रास्ते में ज़मींदारों से अपनी सिरसा की ज़मीन की फ़सलों के विषय में बातचीत करते रहे।

रात को भोजन करके हम कुछ हुजुरी सत्संगी, हुजूर के पलंग के पास कमरे में चले गए। पहले तो सांसारिक बातें होती रही, फिर हुजूर ने दूसरे दिन सुबह के सत्संग के लिये श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से शब्द पढ़वा कर सुने। हुजूर की मेहनत का अनुमान इससे लगा सकते हैं कि जो शब्द उन्होंने कई बार सत्संगों में पढ़े और व्याख्या की, उनको सत्संग करने से पहले फिर पढ़वा कर सुन लेते हैं। उसके बाद मैंने प्रश्न किया कि हुजूर जो चौरासी लाख योनियों की गिनती बताया करते हैं, अर्थात् 30 लाख प्रकार के वृक्ष इत्यादि; 27 लाख प्रकार के कीड़े, पतंगे, साँप, बिच्छू इत्यादि; 14 लाख प्रकार के पक्षी, 9 लाख प्रकार के जल के जीव और 4 लाख प्रकार के मनुष्य, देवता, यक्ष, किन्नर, गन्धर्व, भूत-प्रेत इत्यादि। परन्तु पशुओं को गिनती से बाहर रखते हैं। हुजूर ने उत्तर दिया कि पशु भी ऊँची श्रेणी अर्थात् मनुष्यों की श्रेणी में शामिल हैं। कोयटे वाले एक सत्संगी ने पूछा कि जब एक सतगुरु गुप्त हो जाये और अभी सत्संगी का ध्यान नहीं जमा तो किसका ध्यान करे। उत्तर मिला कि स्मरण करने से जब मन और आत्मा इकट्ठे होकर ऊपर चौंद-सूर्य से परे जायेंगे तो सतगुरु का स्वरूप स्वयं ही आ जायेगा। उनके उत्तराधिकारी से नये सिरे से नाम लेने की आवश्यकता नहीं। केवल उनसे सत्संग व भजन में रुकावट के विषय में मालूम किया जा सकता है, परन्तु अन्त समय वही चोला दर्शन देगा जिसने नाम दिया है। कभी-कभी उत्तराधिकारी का चोला भी, अर्थात् दोनों चोले अन्त समय दर्शन दे देते हैं। गुरु कभी नहीं मरता, केवल स्थूल देह लुप्त हो जाती है। परन्तु अन्तर में स्वरूप, दर्शन, सहायता व दया सेवक को मिलती रहती है। बाहर समझाने-बुझाने का कार्य वारिस चोला करता है।

10 जनवरी, 1943 को सुबह 10 बजे अच्छा सत्संग हुआ। दो-तीन शब्द श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'तेरीआं खाणी तेरीआं बाणी'²² 'रामा रम रामो सुन'²³

और 'घर मह घर देखाय देय'²⁴ पढ़े गये। फिर हुजूर महाराज जी ने स्वामी जी की सार बचन छन्द-बन्द में से विनती का विस्तार से वर्णन किया 'करूँ बेनती दोउ कर जोरी'²⁵ सन्तों ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में सबसे ऊँचे देश के मालिक के लिये स्वामी-पद का प्रयोग किया है। राधास्वामी का अर्थ, आत्मा का स्वामी है। फिर 'काहु न जानी शब्द की रीता'²⁶ इसका यह अर्थ नहीं कि शब्द का भेद स्वामी जी से पहले किसी ने प्रगट नहीं किया था, बल्कि सेवक कहता है कि मैंने पहले तीन युगों में बिलकुल शब्द का भेद न जाना, नहीं तो मेरी मुक्ति हो जाती और मैं कलियुग में इस संसार में उपस्थित ही न होता। अब स्वामी जी महाराज ने मुझ पर शब्द प्रगट किया है। इसका यह अर्थ नहीं कि स्वामी जी से पहले कोई सन्त ही दुनिया में नहीं आया। फिर फरमाया कि 'क्षर' का अर्थ है यह संसार, 'अक्षर' का अर्थ है परलोक। गुरु नानक साहिब ने भी फरमाया है कि यह सारी त्रिलोकी 52 अक्षरों में है। यह नाश हो जायेगी, परन्तु अक्षर देश में दो शब्द हैं जिनमें से एक से निचली रचना हुई और दूसरा ऊपर को ले जाता है। 'जे तू पढ़या पंडित बीना दुइ अक्खर दुइ नावा'²⁷ दसवें द्वार में यह दो अक्षर हैं। एक से निचली सृष्टि हुई, उसको छोड़ना है। दूसरा ऊपर की रचना का है। वहाँ की धुन सुनने से जन्म-जन्मान्तरों की खबर हो जाती है और यही शब्द है। उससे नीचे के शब्द में माया की मिलावट है। यह रहस्य बहुत गूढ़ है, सिवाय पूर्ण महात्माओं के किसी को नहीं पता। वैसे ही हुजूर ने कल रात फरमाया कि वास्तव में मनुष्य के वुजुद में 18 कमल हैं जिनमें से स्वामी जी महाराज ने 12 बड़े-बड़े कमल अर्थात् स्टेशन या चक्र, कार्तिक के महीने में बतलाये हैं। पिण्ड के छः चक्र ब्रह्माण्ड के छः चक्रों का प्रतिबिम्ब हैं और ब्रह्माण्ड के छः चक्र ऊपर के छः चक्रों के प्रतिबिम्ब हैं।

1. गणेश चक्र, चार दल। इसी प्रकार अन्तःकरण चार दल आँखों से ऊपर मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार। फिर त्रिकुटी का चार दल का कमल।

2. इंद्रि चक्र छः दल। इसी प्रकार अन्तःकरण से ऊपर छः दल का कमल। फिर दसवें द्वार के निचले भाग का छः दल का कमल।

3. विष्णु चक्र आठ दल। उसके ऊपर तीसरा तिल अष्ट-दल। फिर दसवें द्वार में ऊपर के भाग में अष्ट-दल। इसी प्रकार तीन ऊपर के चक्रों का हाल है।

अध्याय 4

सिकन्दरपुर की यात्रा का हाल

12 जनवरी, 1943

रात फिर वर्षा रही। हुजूर का प्रोग्राम सिरसा जाने का पहले से ही बन चुका था। इसलिये हम सब लोग सुबह छः बजे तैयार हो गये और वर्षा में ही चल दिये। ब्यास तक सड़क कच्ची थी और वर्षा से खराब हो गई थी। जब जालन्धर पहुँचे तो वर्षा हो रही थी। वहाँ से रास्ते में फगवाड़ा और मौली के कुछ सत्संगियों को दर्शन देते हुए फिल्लौर आये, वहाँ वर्षा बन्द थी। वहाँ तीन-चार मिनट लगाकर लुधियाना को चल दिये। वहाँ डाकघर के पास ग्राँड ट्रंक (जी. टी.) रोड पर स्त्री-पुरुष दर्शनों के लिये आये हुए थे। वहाँ से मोगा में डॉक्टर प्रेम नाथ साहिब के यहाँ गये तो तेज वर्षा हो रही थी। डॉक्टर साहिब को आश्चर्य हुआ कि ऐसी वर्षा में इतनी लम्बी यात्रा ? वहाँ से सरदार भाग सिंह जैलदार के मकान पर गये। मगर उतरे नहीं। फिर सीधे कोटकपूरा, मुक्तसर, मलोट होते हुए डबवाली पहुँच गये। वहाँ वर्षा नहीं थी। आगे सिरसा सत्संग में सूर्य चमकने लगा। वहाँ साधु लाला कर्म चन्द उपस्थित थे। अधिक सत्संगी उपस्थित नहीं थे। वहाँ भी कार में बैठे रहे। वहाँ से ग्रेवाल मिल्स, केरा में, जोकि हिसार जाने वाली पक्की सड़क के पास है, वहाँ आकर मोटर कार छोड़ी। 2.15 बजे के लगभग दोपहर को पहुँचे। वहाँ खाना खाया। हुजूर ने काम की देख-भाल की और वहाँ से शाम को 5.30 बजे के लगभग पैदल सिकन्दरपुर को, जहाँ सरदार हरबन्स सिंह का निवास-स्थान है, आ गये। दिन-भर के थके-हारे थे। खाना खाकर सो गये।

हुजूर का सिकन्दरपुर में निवास 13 जनवरी, 1943

नहा-धोकर हुजूर और मैं पैदल मिल में 10 बजे पहुँचे। राय साहिब लाला हरनारायण आदि तौंगे में पहुँचे। आज कमाद पेलने का काम बन्द था, क्योंकि लोग बाजरी लेने गये हुए थे। दोपहर को 2 बजे के लगभग हिसार की बस से डॉक्टर साहिब, प्रोफेसर साहिब व दूसरे सत्संगी अपने सामान के साथ आ गये। सबने खाना खाया और सिकन्दरपुर डेरा जमाने के लिये आ गये। हम वहीं रहे। डाक लिखी। परन्तु धूप अधिक नहीं थी। क्योंकि आसमान पर बादल मँडरा रहे थे। शाम को हवा भी ठण्डी चलने लगी। मैं व हुजूर पैदल शाम के 6 बजे सिकन्दरपुर आ गये। कल कमाद का काम शुरू होगा।

एक बाबू ने अपनी पत्नी के विषय में पत्र भेजा कि यद्यपि वह सत्संगिनी थी, मरने से तीन-चार दिन पहले उसको भयानक शक्लें दिखाई देने लगीं और वह चीखें मारती रही। यहाँ तक कि मरते दम तक चीखती रही। उत्तर दिया गया कि उसने भजन-सिमरन नहीं किया था, उसके विचार शक्लें बन-बन कर उसको डराते थे। परन्तु चिन्ता नहीं करनी चाहिये। जब आत्मा सिमट कर सुषुम्ना के पास जाती है तो सतगुरु सँभाल लेते हैं और उसके पापों की ओर ध्यान नहीं देते।

जुग जुग भूले जीव अनेका। दया भाव सतगुरु का ठेका।

14 जनवरी को माघ की संक्रान्ति है और आज कुछ-कुछ कमाद का कार्य आरम्भ हुआ, परन्तु अभी तक जोर-शोर से नहीं होने लगा। शाम के 5 बजे के लगभग हुजूर कार में सिरसे सत्संग-घर पहुँच गये। डाक देखने के बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से बारहमाहा का सत्संग आरम्भ कर दिया। सत्संग के समाप्त होने पर प्रसाद बाँटा और सब लोग लौट गये। बादल हो गये थे। ठण्ड अधिक हो गई। हम सब लोग सिकन्दरपुर आ गये। रात को 10 बजे के लगभग फिर घर के अन्दर सहन में सेवादारों के लिये बारहमाहा पढ़ा गया। उसके बाद प्रसाद बाँटा गया। रात के 11.15 बजे सब सो गये।

15 जनवरी को सुबह ही से दो इंजन काम करने लगे और चार-पाँच भट्टियाँ गुड़ बनाने लगीं। शाम को 7 बजे हम घर आ गये।

16 जनवरी को हुजूर 10 बजे सुबह बाहर के सहन में टहलने के लिये आ गये तो एक नौकर ने रिपोर्ट की कि एक साँड की टाँगें टूट गई हैं, क्योंकि वह एक दूसरे साँड से लड़ा था। यह भी कहा कि इन दोनों साँडों में इतनी शत्रुता है कि जब भी मिलते हैं एक दूसरे पर आक्रमण कर देते हैं। हुजूर ने फ़रमाया कि देखो यह पहले जन्मों के संस्कारों का परिणाम है वरना जानवरों में शत्रुता कैसी? वैसे ही संस्कृत के एक कवि ने कहा है कि पदार्थों में कोई आन्तरिक शक्ति एक को दूसरे की ओर खींचती है। लगाव और मोहबबत अर्थात् राग व द्वेष बाहरी सामानों की परवाह नहीं करते :

व्यतिषजति पदार्थानन्तरः कोपि हेतु-

न खलु बहिरुपाधीन् प्रीतयः संश्रयन्ते ॥

वहाँ से एक बीमार लड़के का हाल पूछकर हुजूर मिल में पधारे और वहाँ से शाम को आठ बजे लौट आये। कार्य पहले से अधिक हो रहा है।

17 जनवरी को रविवार था। हुजूर सिरसे सत्संग के लिये चार-पाँच बजे के बीच चले गए। बादल हो रहे थे। जब हम वापस आये, काफ़ी ठण्ड थी। आजकल ग्रेवाल मिल्स में गन्ने से गुड़ बना रहे हैं। मेरठ ज़िले से गुड़ बनाने वाले आये हुए हैं। यहाँ का गन्ना काफ़ी मोटा और लम्बा होता है। एक गन्ने की लम्बाई आक काटकर 11.30 फुट निकली और मोटाई भी काफ़ी थी। दुआबे में ऐसे गन्ने नहीं देखे। लोहे के बेलने इंजन से चलते हैं और लेटवाँ धुरे के गिर्द घूमते हैं। एक घण्टे में बहुत-सा कमाद (गन्ना) पेर कर रख देते हैं। इसलिये इंजन चलाने से पहले गन्ने को काटकर और साफ़ करके इकट्ठा कर लेते हैं, जिससे कि बीच में इंजन को खड़ा न करना पड़े। इस प्रकार सुबह से दोपहर तक एक बड़ा खेत पेटा जाता है। शेष दिन गन्ना काटने में बीत जाता है या गुड़ बनाने में। 8-9 भट्टियाँ हैं, जिनमें रस को काढ़ते हैं। हर एक भट्टी के ऊपर एक अण्डे की-सी शक्ल का चौड़ा-सा लोहे का कढ़ाहा होता है। दुआबे में कढ़ाहों में, जोकि गहरे होते हैं, रस को काढ़ते हैं। परन्तु यहाँ कम गहरे कढ़ाहे हैं। इनकी भाप बनाने की सतह ज़्यादा होती है। इसलिये रस जल्दी गाढ़ा हो जाता है। भट्टी भी मामूली शक्ल की नहीं होती बल्कि साईस के सिद्धान्त पर बनी है। जहाँ अण्डे की-सी शक्ल का लोहे का कढ़ाहा रखते हैं वह गढ़ा भी

अण्डे की सी शक्ल का होता है और उसकी गहराई भी लगभग इतनी होती है जितनी कि कढ़ाहे की, जिससे कि ईंधन बेकार न हो जाये। उस गड्डे के आगे एक और आयताकार कुएँ से कम गहरा छोटा-सा गड्डा है जिसमें एक छिद्र के बीच में से ईंधन दूसरे गड्डे में धकेलते हैं। इस दूसरे गड्डे के नीचे से एक मोरी ज़मीन में से पहले गड्डे के परले किनारे पर जाकर खुलती है, जिससे हवा उस गड्डे से बाहर से जाकर ईंधन को भली प्रकार जलाती है। ईंधन से पूरी-पूरी गर्मी ली जाती है। इससे जल्दी ही रस गाढ़ा हो जाता है और उसमें कभी-कभी भिण्डी की शाखाओं को पानी में भिगोकर रस में डालते रहते हैं, जिससे रस में से मैल ऊपर आ जाता है। उस मैल को कलछों से किसी बर्तन में डालते हैं। जिससे उस मैल में भी यदि कोई मिठास रह गई हो तो उसको दो या तीन बार निकाला जाये। इस प्रकार रस बड़ा साफ़ होता है और गुड़ अधिक साफ़-सुथरा बनता है। आजकल सुना है यहाँ गुड़ 12 रु. मन बिकता है। भट्टी के विषय में एक बात रह गई है कि हर एक भट्टी के उस गड्डे के, जिस पर कढ़ाहा रखते हैं, परले सिरे से एक बन्द मोरी बाहर जाती है, जिसके सिरे पर ईंटों की या मिट्टी की ऊँची-सी-चिमनी बनी होती है, जिससे कि मोरी के रास्ते धुआँ चिमनी से बाहर निकलता रहे और उसको काला न करे।

18 जनवरी को बाजरे के पिड़ और तूड़ी का कुप देखकर हुजूर 11.00 बजे सुबह कारखाने में पहुँच गये। हुजूर पैदल जाना पसन्द करते हैं, यही उनकी सेहत का राज़ है। कारखाने में जाकर भी काम की देखभाल करते हुए घूमते रहते हैं। केवल खाना खाकर कभी-कभी थोड़ा-सा लेट लेते हैं। भोजन में मटर आपको पसन्द आते हैं। और कश्मीरी सेब की तरकारी या कच्चा एक-आध सेब रोज़ ताक़त क़ायम रखने के लिये खाते हैं। उसके साथ-साथ कभी-कभी मौसमी या मीठा सन्तरा ले लेते हैं। मिठाई व तली हुई चीज़ों से परहेज़ करते हैं। सरसों का साग आपको भाता है। परिश्रम की यह हद है कि इस आयु में प्रतिदिन रात को 9 बजे के बाद ठण्ड में मिल से घर आते हैं। सुबह से लेकर रात के 9-10 बजे तक बाहर खेतों में सर्दी में खड़े रहकर काम करवाते हैं और फिर तड़के उठकर भजन भी करते हैं।

मिल में पहले गुड़ बन रहा था परन्तु चूँकि गुड़ के लिये कोई मार्केट नहीं है इसलिये अब खाँड बनाने की तैयारी है। रस को गाढ़ा करके बड़े-बड़े ड्रमों में

डाल देते हैं, राब के तौर पर। उस राब से खाँड बनेगी। हर रोज़ गन्ने के 15-16 गड्डे मिल में आते हैं और पेरे जाते हैं। सुबह 12 बजे तक गन्ने को पेरते हैं फिर यह काम बन्द हो जाता है। मगर सुबह से शाम तक भट्टियों में रस काढ़ने का काम जारी रहता है। गन्ने की कटाई और छिलाई अँधेरे तक होती रहती है और खेतों से कटे हुए गन्ने मिल से गड्डे में या आदमियों के सिरों पर आते हैं। हुजूर हर काम को स्वयं देखते हैं, मशीनों को, कटाई को, राब बनाने को, इत्यादि। बातों-बातों में हुजूर ने फ़रमाया कि शरीफ़ घरानों की औरतें अपने घर में आये हुए मेहमानों की आवभगत करती हैं, जिससे उनके वंश का नाम रोशन होता है और जब उनके पुरुष दूसरों के घरों में जाते हैं, तो उनकी भी अच्छी आवभगत होती है।

25 जनवरी को शाम के समय गन्ने के खेतों में बैठकर हुजूर ने अपने मुखारबिन्द से यह नीचे लिखा हुआ पत्र एक अभ्यासी सत्संगी को लिखवाया। सबके लाभ के लिये यहाँ लिखना आवश्यक समझा। "मैं बहुत खुश हूँ कि तुमको परमार्थ का शौक़ है। परन्तु अभी आपको सत्संग की जानकारी नहीं है। आपको समझाने की काफ़ी आवश्यकता है। इस संसार से मुक्ति के केवल तीन साधन हैं—सिमरन, ध्यान और शब्द। यह तीनों शरीर में अपना-अपना काम करते हैं। सबसे पहले हमारा यह काम है कि हम अपनी आत्मा और मन को नौ दरवाज़ों से निकालकर आँखों के पीछे स्थित दसवीं गली को खोलें। यह काम केवल सिमरन से हो सकता है। जब आप सिमरन द्वारा प्रकाश, तारा मण्डल, सूर्य मण्डल और चन्द्र मण्डल पार कर जायें तो उसके ऊपर सतगुरु खड़े हैं। सतगुरु के चरणों तक पहुँचने के लिये केवल सिमरन की ही ज़रूरत है और किसी चीज़ की नहीं। यहाँ पहुँचकर सिमरन का कोर्स समाप्त हो जाता है। सिमरन उससे आगे नहीं पहुँचा सकता। जब सतगुरु सामने आ जायें तो ध्यान की ज़रूरत है। आरम्भ में जब सतगुरु के दर्शन अन्दर होते हैं तो अभ्यासी को बड़ी प्रसन्नता होती है और यह है भी ऊँची पदवी। पहले-पहले सतगुरु आते हैं और चले जाते हैं। असल में अभ्यासी को ही ऐसे लगता है, वरना सतगुरु तो अपनी जगह खड़े हैं। अभ्यासी की रूह आती है और जाती है क्योंकि उसका ध्यान कमज़ोर है। उस समय जिज्ञासु

को ध्यान पर जोर देना चाहिये। सतगुरु के स्वरूप का इतना ध्यान करे कि अपना आपा भूल जाये और ऐसा लगे कि मैं वही हूँ जिसका ध्यान कर रहा हूँ। दूसरे शब्दों में यह कहो कि सतगुरु का रूप हो जाये, अर्थात् सतगुरु में समा जाये। जब यह हालत होगी कि सतगुरु हमेशा उसके साथ रहेंगे और उसको साथ लेकर ऊपर चल देंगे, उस वक्त जिज्ञासु घण्टे की धुन के नजदीक हो जाता है और वह ध्वनि उसको धीरे-धीरे खींचकर मंजिल-दर-मंजिल ऊपर ले जायेगी और हर मंजिल पर सतगुरु साथ होंगे। उस समय जो सवाल चाहो सतगुरु से पूछ सकते हो, उसका जवाब मिलेगा। यदि सतगुरु की कृपा से अभ्यासी को यह अवस्था प्राप्त हो जाये तो उसको इस ताकत को हज़म करना चाहिये। सिवाय सतगुरु के किसी से इसका जिक्र न करे। इस भेद को इस प्रकार छुपाना चाहिये जैसे स्त्री अपने बदन को छुपाती है। चूँकि अभी तुम्हारा अभ्यास कच्चा है, तुम्हारी आत्मा अन्दर जाने से डरती है। यदि तुम्हें सिमरन के समय प्रकाश आया था तो तुम्हें बैठे रहना चाहिये था। तुम्हें और अधिक ध्यान से उस प्रकाश को देखना चाहिये था। आँखें नहीं खोलनी चाहिये। तुम्हें प्रेम और प्यार से अन्दर जाना चाहिये। जब सतगुरु तुम्हारे अन्दर हैं तुम्हें अन्दर जाने से नहीं डरना चाहिये।"

28 जनवरी कल रात हुजूर कमाद के खेत से 12 बजे वापस आये और परसों रात के 11 बजे आए थे। इतनी मेहनत कोई व्यक्ति नहीं कर सकता। सारा-सारा दिन लगे रहते हैं। हमें 8 बजे के लगभग पहले ही घर भेज देते हैं।

30 जनवरी को महीने के अन्तिम इतवार का सत्संग हुजूर ने शाम के 5 बजे से 7 बजे तक सत्संग-घर सिरसे में किया।

31 जनवरी को लाला कुंज लाल वकील, हिसार वाले और कुछ दूसरे लोग हिसार व हाँसी से आये थे। हुजुरी पोथी में से 'नाम निर्णय' पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि लोगों ने मन और रूह को आँखों से ऊपर इकट्ठा करके ले जाने के लिये प्राणायाम, हठ-योग, ध्यान-योग इत्यादि बनाये। प्राणायाम वाले मन और रूह के साथ प्राणों को भी, जोकि जड़ हैं, समेटकर ले गये। जिसकी ज़रूरत न थी। कलियुग में सबसे आसान साधन सिमरन है, जिसके द्वारा मन और रूह को इकट्ठा करके ऊपर ले जा सकते हैं तथा देवयान और पितृयान मार्ग जो वेदों में बताया गया है, उसमें गुज़र सकते हैं। एक सत्संगी ने कहा कि

जब इस शब्द में 'गुरु की मौज में सब कुछ' लिखा है तो आप कैसे कहते हैं कि सत्संगी को अपनी मेहनत से मन व रूह समेटकर तीसरे तिल में आ जाना चाहिये। उत्तर मिला कि गुरु को तो ताक़त है कि किसी की रूह को खींचकर ऊपर के मण्डलों में ले जाये, परन्तु उस रूह में सहन-शक्ति नहीं होती। यदि ऐसा किया जाये तो मनुष्य पागल हो जाये या मस्ती में घर-बार को छोड़ दे क्योंकि वहाँ का आनन्द और प्रकाश ही ऐसा है और जब कोई बाल-बच्चे व सम्बन्धियों को छोड़ दे, तो उसको उनका कर्ज़ अदा करने के लिये फिर जन्म लेना पड़ेगा। इसलिये सन्त गृहस्थ मार्ग को पसन्द करते हैं, कि धीरे-धीरे भजन-सिमरन करते जाओ। जब बड़ी आयु में घर का कार्य सँभालने के लिये लड़के जवान हो जायें तो भजन पर जोर दे देना। गृहस्थ में मनुष्य की सब इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं। त्याग में इच्छाएँ बाकी रह जाती हैं और वह जन्म का कारण बन जाती हैं। फ़रमाया कि गृहस्थों में बहुत आन्तरिक उन्नति वाली आत्माएँ देखने में आई, परन्तु त्यागियों में कहीं-कहीं। फिर फ़रमाया कि जब वेदान्ती आँखों के पीछे अपना रूप देखते हैं तो वे ज्योति व प्रकाश को देखकर कह उठते हैं कि 'अहम् ब्रह्म अस्मि'— मैं ही ब्रह्म हूँ। वास्तव में वह रूप मन का होता है। असली रूप पारब्रह्म में मिलता है। मन के इस रूप को छोड़ देना चाहिये। इस शब्द के बाद दादू दयाल का शब्द 'जाने अंतर्दामी अकथ अकह अनामी' लिया गया। 'नौ लख कमल युगल दल अंतर द्वादस साहिब स्वामी' का अर्थ ज़रा टेढ़ा है। हुजूर ने फ़रमाया कि नौ द्वारों को लख अर्थात् पार करके आँखों के दो दल कमल में से होकर सहस्र-दल कमल में ईश्वर है। सहस्र-दल कमल बारह दल का कमल इसलिये है कि उसमें दस आवाज़ें हैं + मन और रूह = कुल बारह।

सत्संग के बाद हुजूर केरे मिल में पधारे। वहाँ बातों-बातों में ज़िक्र आया कि एक बार हुमायूँ बादशाह शेरशाह से हार कर गुरु साहिब के पास आन्तरिक सहायता के लिये आया। उस समय गुरु साहिब समाधि में थे, खड़ा रहा। अन्त में जब देखा कि गुरु साहिब ध्यान नहीं देते तो तलवार खींच ली। गुरु साहिब ने आँखें खोल दीं और फ़रमाया कि, "फ़कीर से तलवार?" हुमायूँ बादशाह ने विनती की कि मैं इस समय संकट में हूँ। गुरु साहिब ने उत्तर दिया यदि प्रेम से आते तो इस समय तुमको तख्त वापस मिल जाता। चूँकि तुमने तलवार खींची,

पहले उसका दण्ड भोगो फिर मिल जायेगा। इसी प्रकार अकबर बादशाह कहते हैं कि चित्तौड़ का किला जीतने के लिये गुरु साहिब के दरबार में विनती करने उपस्थित हुआ। गुरु साहिब ने फ़रमाया कि हमारी बावली का कड़ नहीं टूटता। तुड़वा दो तो चित्तौड़ फ़तह हो जायेगा। बादशाह ने मजदूर, कारीगर लगवा कर तुड़वा दिया। जब लोगों ने कहा कि हुजूर कड़ टूट गया, तो गुरु साहिब ने फ़रमाया कि चित्तौड़ गढ़ फ़तह हो गया है। उस समय बादशाह को भी ख़बर आ गई कि क़िला फ़तह हो गया। रात के 9.30 बजे हुजूर निवास-स्थान पर पधारे।

2 फ़रवरी से 3 फ़रवरी खाँड निकलनी शुरू हो गई है। राब में से मशीनों द्वारा खाँड निकालते हैं और शीरा जो नीचे रह जाता है, उसका गुड़ बनाते हैं। खाँड बड़ी सफ़ेद है। गुड़ जो उससे बनाया गया है, कल उसकी छोटी-छोटी टिक्कियाँ देखीं। बहुत साफ़-सुथरी दिखाई देती थीं। मैंने भी खाकर देखीं, स्वादिष्ट थीं।

एक सत्संगी ने लिखा कि वह सरकार का नौकर है। उससे कुत्ते मरवाने का काम लिया जाता है। उत्तर दिया गया किसी बहाने से छुट्टी ले लो।

आजकल बड़ी सफ़ेद खाँड बन रही है और गुड़ भी मिसरी की डलियों जैसा तैयार हो रहा है। शीरे का गुड़ गेरुवे लाल रंग का होता है।

7 फ़रवरी को शाम के छः बजे हुजूर सत्संग करने सिरसे सत्संग-घर गये। पहले तुलसी साहिब के दोहे पढ़े गए, जिनमें से एक दोहे का अर्थ, साधारण अर्थ के अतिरिक्त दूसरे ढंग से भी समझाया गया। 'अढ़ाई अक्षर प्रेम के पढ़े सो पण्डित होय।' पण्डित वही है जो पारब्रह्म में जाकर अढ़ाई अक्षर देखे। जिनमें से एक तो नीचे की सृष्टि को चलाता है दूसरा ऊपर को ले जाता है। उनका संकेत बार-बार कबीर साहिब और गुरु नानक साहिब की वाणियों में आता है। 'बावन अच्छर लोक त्रै सभ कछु इन ही माहें। ऐ अक्खर खिर जाहेंगे ओय अक्खर इन मह नाहें'¹⁴ फिर 'जे तू पढ़या पंडित बीना दुइ अक्खर दुइ नावां। प्रणवत नानक एक लंघाऐ जे कर सच समावां'¹⁵ इसके बाद गुरु राम दास जी का शब्द श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से लिया गया 'मन खिन खिन भ्रम भ्रम बहु धावै तिल घर नहीं वासा पाईऐ।'¹⁶ स्वामी जी महाराज ने भी अपनी वाणी में तिल का संकेत दिया है। 'घट भीतर तू बैठ री तिल आसन डार', 'तीन तिलों के बीच में

तेरा सकल पसार'¹⁷ कबीर साहिब ने कहा है कि, 'सन्त मिले कोई भेदी तिल का'¹⁸। शरीर में तीन तिल हैं। एक आँखों के पीछे, दूसरा सगुण और निर्गुण ब्रह्म के बीच में और तीसरा पारब्रह्म में।

12 फ़रवरी को फाल्गुन की संक्रान्ति को हुजूर ने 34 स्त्री-पुरुषों को सिरसा सत्संग-घर में शाम के समय नामदान दिया। फिर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से केवल फाल्गुन का महीना पढ़कर लौट आये।

14 फ़रवरी को शाम के 6 बजे फिर वहीं सत्संग किया जहाँ 200 के लगभग स्त्री-पुरुष इकट्ठे थे। हुजुरी वाणी में से 'यह तन दुर्लभ तुमने पाया'¹⁹ का शब्द लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि त्यागी महात्माओं की अपेक्षा गृहस्थ महात्माओं से संसार को ज्यादा फ़ायदा पहुँचता है, क्योंकि गृहस्थ ही गृहस्थ की तकलीफ़ों व दुःखों को समझ सकता है और हमदर्दी कर सकता है। त्यागियों को गृहस्थ की तकलीफ़ों का पता नहीं होता। कुछ लोग जो परमार्थ के भेदों से अनजान हैं वे भगवे कपड़े पहने हुए या फ़क़ीरों जैसे कपड़े पहने हुए साधुओं को अधिक पसन्द करते हैं और यह कहते सुने जाते हैं कि महात्मा क्या और गृहस्थ क्या? उनको ख़बर नहीं कि बाहरी त्याग की अपेक्षा आन्तरिक त्याग कहीं अधिक अच्छा है। मौलाना रूम साहिब ने अपनी मसनवी में फ़रमाया है कि 'गर दरवेशाँ तामअ आन्दोज़िशत खू, तू दर शिकम ख़्वारों साहिब दिल बजू' अर्थात् त्यागी लोग लालची और कड़वे स्वभाव वाले हैं तो तू गृहस्थ लोगों में से ही किसी उदार पुरुष की खोज कर। लोग बम्बई से हुजूर के दर्शनों को यहाँ आये हैं। कोई दो-तीन पुरुष तथा स्त्रियाँ प्रतिदिन बाहर से आते-जाते रहते हैं।

एक सत्संगी किसी दफ़्तर में नौकरी करता था। एक मास की छुट्टी लेकर घर आया। जब छुट्टी के ख़त्म होने पर वापस जाने लगा तो उसकी बीवी रोने लगी। वह हज़रत ऐसे पसीजे कि नौकरी ही छोड़ दी। जब बेकारी आई तो घरवालों ने कहा कि लाओ खाने-पीने को, फिर पछताने लगे। हुजूर ने यह सुनकर यह कहावत सुनाई कि 'कायर कूकर घर रहें, सिंह रहें बन माहीं, बाज बेगाने देश में, नित मारें नित खायें।'

महंगाई की हद हो गई। गेहूँ 11 रुपये 8 आने मन, गुड़ 12 रुपये प्रति मन, खाँड 16 रुपये प्रति मन, धान 8 रुपये प्रति मन, ज्वार-बाजरा 5 रुपये प्रति मन, मलमल का कोई कपड़ा 18-20 रुपये थान से कम मूल्य का नहीं था। लट्ठा 'डी-वन' का 54 रुपये का थान बताते हैं।

एक सत्संगी ने हुजूर से पूछा कि सिमरन ज़बान से किया जाये या दिल की ज़बान से। उत्तर मिला कि यदि मन सिमरन की तरफ़ रहता है और अधिक फैला हुआ नहीं है तो दिल की ज़बान से, वरना ज़बान से। यदि मन फिर भी बाहर जाये तो ज़बान से ऊँचे-ऊँचे जैसे मुसलमान फ़कीर जंगल में जाकर जोर-जोर से अल्लाह हू-अल्लाह हू करते हैं। इसका मतलब भी यही है कि मन ठहर जाये। यदि सिमरन के समय मन बाहर जाता है तो उसको गुरु के स्वरूप का ध्यान भी दो ताकि मन दो जंजीरों में जकड़ा जाये। सिमरन या ध्यान में खयाल को दायें कान की तरफ़ ले जाकर शब्द सुनने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये, क्योंकि इससे मन सिमरन से हटकर फैल जाता है। ध्यान को अपने केन्द्र (तीसरा तिल) से नहीं हटाना चाहिये, चाहे शब्द कम सुने या अधिक। सिमरन करते हुए ध्यान करो। यदि मन फिर भी बाहर जाता हो तो साथ शब्द भी दे दो। एक सत्संगी को उसके पत्र के उत्तर में लिखा गया कि अन्तर में यदि देवी-देवता, माया सर्पनी अथवा कुण्डलनी इत्यादि दिखाई दें तो उनकी ओर ध्यान मत दो। केवल सतगुरु-स्वरूप व शब्द को पकड़ो। भौरा नामक एक आदमी गदर में देहली से बहुत-सा रुपया लूटकर लाया। बीवी के सिवाय उसका कोई वारिस नहीं था। पत्नी से पूछा कि रुपये को कहाँ खर्च करूँ जिससे मेरा नाम हो। यदि लड़का-लड़की होता तो उसके ब्याह को धूमधाम से रचा कर नाम कमाता। पत्नी ने कहा कि मेरी बहन की सास की बरसी कर दो इससे नाम रोशन हो जायेगा। मतलब कि सब रुपया उसमें खर्च कर दिया। जब कुछ भी पास न रहा तो एक सरदार साहिब ने पूछा- भौरा क्या हाल है? उत्तर दिया भौरा उड़ गया। 'सो धन जोड़ किया क्या भाई। जगत लाज में दिया उड़ाई॥'¹

आजकल यहाँ लोगों की भीड़ है। हुजूर बहुत व्यस्त रहते हैं। हर इतवार शाम को सिरसे जाकर दो घण्टे सत्संग करते हैं।

28 फ़रवरी इतवार को मैं व हुजूर, सरदार हरबन्स सिंह के साथ मोटर कार में सिरसे गये। दड़बी की ज़मीन का सेठ देवी दयाल सुखानी के साथ सौदा

करके साई दे दी और बयाने की रसीद ले ली। कोई 600 बीघे ज़मीन है। उस दिन दड़बी में और शहर में इस सौदे का पता चल गया। सुना है कि कई लोग अचम्भे में आ गये हैं, कहते हैं ज़मीन अच्छी है। एक-एक खेत बड़े-बड़े क्षेत्रफल का है। इसमें आधे के मालिक बनिये लोग हैं और यह भी पता चला कि सेठ सुखानी ने बिहार के उत्तरी पहाड़ों में अभ्रक निकालने के कारख़ाने लगवा रखे हैं और लाखों रुपया कमाते हैं। सिक्किम के राजा साहिब तक से उनका मेल-जोल है।

उस समय एक महात्मा के बारे में सुना गया कि वह अपने इष्ट के दर्शन किये बिना, खाना नहीं खाते। कुछ लोग इसको सुनकर बड़ाई करेंगे कि बड़ी श्रद्धा है। कुछ नई रोशनी वाले कहेंगे कि वहम है। मौलाना रूम साहिब ने कहा है कि 'अबलहां ताज़ीमें मसजिद मीकुनन्द, अंहले दिल दर साफीये दिल मी रोनद' अर्थात्, अज्ञानी लोग मसजिद की इज़्ज़त करते हैं जबकि अनुभवी पुरुष अपने मन की सफ़ाई की ओर ध्यान देते हैं। यह इसलिये कि परमात्मा मनुष्य के अन्दर है न कि किताबों में या मसजिदों, मन्दिरों में। यदि परमात्मा से नीचे कोई इज़्ज़त के लायक हस्ती है तो इनसान है जिसको मुसलमान संसार में अश्रफ़ुल मख़लूक़ात कहते हैं। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब और वेद-शास्त्र नर-नारायणी देह कहते हैं। स्वयं श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में इनसानी देह को गुफ़ा अर्थात्, आत्मा के रहने का स्थान और काया-नगर कहा है। जो ईंटों या पत्थरों, इमारतों की पूजा के लिये व पुस्तकों की पूजा के लिये एक दूसरे का गला काटते हैं, वे नकली मन्दिरों के लिये अहंकार में आकर ब्रह्म-हत्या अर्थात् असली मन्दिरों को गिराने का महापाप करते हैं। फिर यह विचार करते हैं कि पुण्य कमा लिया। संसार में कैसी भूल फैली है? शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से सत्संग किया गया और वह महात्मा चुपचाप सुनते रहे।

2 मार्च दोपहर को बड़े सरदार साहिब के यहाँ हमारी दावत थी। हुजूर, राय साहिब और मैं व दूसरे लोग कार में थैहड़ी रसूलपुर उनके निवास-स्थान पर गये। बहुत ही तकल्लुफ़ से भरा हुआ व स्वादिष्ट भोजन सरदार साहिब ने ख़िलाया। सरदार साहिब स्वयं अच्छा खाना खाने के शौकीन हैं। चीज़ें तो वही थी जो हम हर रोज़ इस्तेमाल में लाते हैं केवल बनाने का ढंग विशेष था। कोई भी प्रशंसा किये बिना न रह सका। सरदार साहिब ने कहा कि पहले तो मसाले

को बारीक घोटना, फिर उसको हल्की आँच पर ठीक प्रकार से भूनना और उसके बाद सब्जी-तरकारी को मसाले में धीरे-धीरे घी डालकर भूनना मेहनत का काम है, जो कि हरएक नौकर करना पसन्द नहीं करता। राय साहिब ने कहा कि अरबी को छील कर और गोद कर गर्म घी में डाल दो और जब अरबी घी पी चुके तो फिर भूनो। बातों-बातों में राय साहिब ने कहा कि हम बाल अवस्था में मसजिदों में मौलवियों के पास पढ़ा करते थे। जब कोई त्योहार होता तो हम अपने उस्तादों को दो या चार आने ईदी के तौर पर दे देते और वह हमारी तस्खियों पर कविता लिख देते।

कल 12 बजे के बाद हुजूर सिरसा सत्संग-घर में नाम देने के लिये जायेंगे। देहली से मिस्टर सचदेव सत्संगी आये हुए थे और सत्संग-घर में ही ठहरे। सुबह को दर्शन करके वहीं से चले गए।

3 मार्च बुधवार को हुजूर ने 50 से अधिक स्त्री-पुरुष को सिरसा सत्संग-घर में नाम दिया और फिर सत्संग किया।

7 मार्च को हुजूर ने डिप्टी कमिश्नर साहिब बहादुर को लंच दिया। फिर सिरसे के अफसरों व रईसों को शाम के पाँच बजे चाय दी। लंच बहुत ही अच्छा था और चाय में सरदार भगत सिंह, जालन्धर आर्यों की दुकान से बढ़िया-बढ़िया मिठाइयाँ लाये थे, जो सबने पसन्द कीं।

8 मार्च को हुजूर का व हमारा खाना बड़े भाई, सरदार बचिन्त सिंह साहिब के घर है। उनका घर कोट बाबा सावन सिंह में है जोकि थेहड़ी रसूलपुर में स्थित है। हम सबको, जो 20 के लगभग थे, दावत दी गई थी। भाई साहिब को न केवल स्वयं अच्छा खाना खाने का चाव है बल्कि अतिथियों को भी अच्छा खाना खिलाकर प्रसन्न होते हैं। छोटे भाई और बड़े भाई साहिब के दोनों पुत्र कमर कस कर खाना खिला रहे थे। खाने में नमकीन चावल, मूँग का हलवा, दही-भल्ले, रबड़ी, हरी मटर, कचौरी इत्यादि बहुत-सी चीजें थी। हम सबने ज़रूरत से ज्यादा भोजन किया। उसके बाद कुछ समय आराम करके हम सब लोग मोटर कार और ताँगों में केरे मिल में वापस आ गये और वहाँ से सब लोग अपने-अपने शहरों को लौट गये। सरदार भगत सिंह जालन्धर को, मलिक राधा किशन वकील मुलतान को, लाला बालकराम अमृतसर को और राय बहादुर शंकर दास लायलपुर को गये। राय बहादुर की बड़ी हिम्मत थी कि 20 दिन इफ्तुएँजा से बीमार रहकर

बीमारी के बिस्तर से उठकर सीधे गुरु के भरोसे पर इतनी लम्बी यात्रा भीड़-भाड़ में तय करके आ गये। हुजूर उन पर बहुत प्रसन्न हैं।

मैं यहाँ से 8 मार्च को देहली व गुड़गावाँ गया और 13 मार्च को लौट आया। जाते हुए भटिण्डा में राजपुरा से धूरी के रास्ते जो गाड़ी आती है उसमें एक डिब्बा इण्टर क्लास का काट कर देहली जानेवाली गाड़ी में लगाया जाता है, उसमें मुझे व सरदार लाल सिंह साहिब को बड़ा आराम मिला वरना गाड़ी में बड़ी भीड़ थी।

14 मार्च को सिरसे सत्संग-घर में शाम के 6 बजे संक्रान्ति का सत्संग हुआ। मैं एस.डी.ओ. राय साहिब लाला चानन मल को मिलने चला गया। वह अभी-अभी चौधरी जयनारायण सिंह की जगह पर आये हैं। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में बारहमाहा पढ़ा गया।

15 मार्च सोमवार को हुजूर ने सिकन्दरपुर 'शान्ति आश्रम' में शाम के 7 बजे सत्संग किया और 'सतगुरु का नाम पुकारो'¹² तथा 'कोई आण मिलावै मेरा प्रीतम प्यारा'¹³ दो शब्द पढ़े गए। बड़ी शान्ति का समय था और घर के सहन में सन्नाटा छाया हुआ था। सत्संग में बड़ा आनन्द आया। हुजूर ने फ़रमाया कि 'गुरु चरनन आशिक होना'¹⁴ का मतलब है कि सत्संगी अन्तर में गुरु-स्वरूप को प्रकट करे। जो उपकार गुरु करता है, वह कोई सांसारिक सम्बन्धी नहीं करता।

रानी साहिबा साँगली को उनके पत्र के उत्तर में लिखा गया कि आप अपने युवा पुत्र की मृत्यु की चिन्ता छोड़ दीजिये। उसको अब दोबारा मनुष्य-जन्म मिल चुका है और वह वहाँ अपने माँ-बाप को उतना ही प्यारा है जितना कि तुमको था और तुम्हारा अब उस पर कोई अधिकार नहीं रहा। फ़िल्लौर के सत्संगी का आज एक पत्र आया कि हुजूर ने रेलवे ट्रेन में उसकी भाभी व बाल-बच्चों की डाकुओं से कैसे रक्षा की, यद्यपि वह सत्संगिन नहीं थी परन्तु सत्संगी की सम्बन्धी थी।

कल बड़े भाई साहिब के यहाँ सारी संगत का खाना है। कमाद पीड़ने का काम समाप्त हो गया। लोग घरों को जा रहे हैं। खाँड को बेचने व इधर-उधर ले जाने पर सरकार ने बड़ी पाबन्दी लगा रखी है। प्रोफ़ेसर जगमोहन लाल साहिब कपूरथला से आकर यहाँ ठहरे हुए हैं। उनसे खूब बातचीत होती रहती है। उनसे अंग्रेज़ी में भूगोल लेकर कुछ भाग पढ़ा जिसमें सूर्य व चन्द्रग्रहण का वर्णन व

जमीन गोल होने की दलीलें थीं। पहले जो बचपन में प्राकृतिक भूगोल हमको पढ़ाया गया था वह तो केवल बच्चों का खेल था। अब इसको इस आयु में पढ़कर बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ।

आज बड़े भाई साहिब के घर थेहड़ी में जिसको कोट बाबा सावन सिंह भी कहते हैं, सारी संगत की दावत थी। पहले हम सब लोग मिल में गये। वहाँ मैंने कल की डाक देखी, फिर दोपहर के 12 बजे सब लोग थेहड़ी को चल दिए। मैं, प्रोफेसर जगमोहन लाल और लाला त्रिलोक चन्द इंजीनियर एक ही ताँगे में थे, जिसको सरदार सतनाम सिंह चला रहे थे। रास्ते में पक्की सड़क पर जोकि हिसार जाती है, बेरों के दो-तीन बाग थे। हिसार के बेर प्रसिद्ध हैं। मेरा मन ललचाया, प्रोफेसर साहिब को भी चाव चढ़ गया। उन्होंने यह कहावत सुनाई, 'बेर-बेर मैं कहत हूँ समझे क्यों न गँवार, लाल फल काँटों लदा खावे जग संसार।' मैंने कहा कि बेर और फ्रूट हिन्दुस्तान के असली देसी मेवे हैं। बाक़ी सब मेवे, सन्तरे, मालटे आदि बाहर से लाकर यहाँ लगाये गए हैं। अतः इस ज़िक्र को सुनकर इंजीनियर साहिब ने बेरों के खरीदने का बीड़ा उठाया और तौलिया मैंने दिया। ताँगा खड़ा किया गया और बेर लाये गए। अच्छे खासे थे पर रस कम था। हमने सोचा यदि बेरों से ही पेट भर लिया गया तो दावत में क्या खायेंगे। इसलिये हाथ खींच लिया।

जब सरदार साहिब के घर पर उतरे तो संगत खाना खा रही थी। हमने भी हाथ-मुँह धोया क्योंकि राह में धूल बहुत थी। सरदार साहिब ने सबको बहुत बढ़िया खाना खिलाया। दही, दूध, घी, उनके यहाँ बहुत है और बीबियों को खाना बनाने में भी बड़ी निपुणता प्रतीत होती है। तरीदार मटर, सूखे आलू, माश की दाल, दही की बून्दी, नमकीन चावल, हलवा, घी में भुनी हुई गाजर इसके बाद सन्तरे। तात्पर्य यह है कि हमने खूब पेट-भर खाया बल्कि ठूँसा। शेख़ सादी के कहने के अनुसार खाने को नाक तक भर लिया। वहाँ से मैं 3 बजे वापस चल पड़ा और हुजूर कार द्वारा मिल में पधारे। डाक के 20-22 पत्र हुजूर को सुनाये और फिर उनके जवाब लिखे। शाम के 7 बज गये। लाला बाँकिराय से मनीआर्डर वसूल किये। सारा हिसाब-किताब किया। इसके बाद सिकन्दरपुर पैदल लौटे तो हुजूर मेरे कमरे में शोभायमान थे और राव बहादुर शिवध्यान सिंह से जोकि उस समय पहुँचे थे, बातचीत में लगे हुए थे।

रात को 10 बजे भोजन के बाद सत्संग सहन में हुआ। बड़ी शान्ति और खामोशी का समय था। ऐसा ही वातावरण ऐबटाबाद में 1910-11 में हुजूर के बैंगले में रात के समय सत्संग में देखा था। पहले हुजुरी पोथी में से 'सतगुरु सरन गहो मेरे प्यारे। कर्म जगात चुकाय ॥'¹⁵ पढ़ा गया। सन्तमत में शरण का स्थान बहुत ऊँचा है, परन्तु है बड़ा कठिन। हुजूर ने फ़रमाया कि शरण लेना इसका नाम है कि गुरु के विषय में कभी यह विचार न आये कि वह मनुष्य है और मन उसके हुक्म के आगे कोई तर्क न करे। यदि गुरु दिन को रात कहें तो कहें रात है, यदि गुरु घोड़े को भैंस कहें तो कहें भैंस है। शरण में मन का दखल बिलकुल नहीं रहता। जब तक मन की खींचातानी है, शरण नहीं। इसलिये सन्त कहते हैं कि शरण लेनी मुश्किल, भजन करना आसान है। हुजूर ने भाई मंझ की कहानी इसी विषय पर सुनाई। इसके बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'गुरू गुरू गुर कर मन मोर'¹⁶ पढ़ा गया, इसके बाद महर्षि शिवब्रत लाल की चर्चा चली। हुजूर ने फ़रमाया कि वह कलम के धनी थे।

हुजूर ने फ़रमाया कि बाबा जी महाराज के ज्योति-ज्योत समाने के बाद हुजूर स्वामी जी महाराज के भाई हुजूर सेठ प्रताप सिंह जी महाराज सत्संग करने आगरा जाया करते थे। एक दफ़ा वहाँ सन्त गरीब दास जी भी उपस्थित थे। हुजूर ने चाचा जी महाराज से एकान्त में कुछ सवाल आन्तरिक अभ्यास के विषय में पूछे जिस पर उन्होंने उत्तर दिया कि बाबा गरीब दास जी से पूछेंगे। दूसरे दिन हुजूर महाराज बीमार होने के कारण सत्संग में उपस्थित न हो सके परन्तु सेठ साहिब ने सन्त गरीब दास जी को वह सवाल पेश किये तो महात्मा जी ने फ़रमाया कि ये सवाल यहाँ के किसी सत्संगी के नहीं हैं। फिर अभ्यास में जाकर कहने लगे कि पूछो क्या पूछना है और सब सवालों का उत्तर देते रहे। रात के 11 बजे सत्संग समाप्त हुआ और हम सब सो गये।

आज राव बहादुर साहिब, जो यू. पी. के बड़े जमींदार हैं, मालटे के पेड़ों को ठीक करने में व्यस्त थे। कई पेड़ों को फूल व फल नहीं आता और कई को बहुत कम आता है। आजकल मालटे के बाग में बड़ी सुगन्ध आती है क्योंकि 'करना' महक रहा है। राव बहादुर ने हर एक पेड़ की जड़ के आस-पास 9 इंच या एक फुट गहरा गढ़ा 4 फुट गोलाई का खुदवाया और तने के बाहर जो मोटी-

मोटी जड़ें जमीन के अन्दर जाती हैं, उनके बीच में बहुत-सा जाला अर्थात् झाड़-झंकड़, जोकि अपने आप उग आता है, निकलवा दिया, जोकि वृक्ष की जड़ों को जमीन से खुराक नहीं लेने देते थे बल्कि आप खा जाते थे। इससे पौधे कमजोर और बिना फल के रह जाते थे, या कम फल आता था। जाला साफ़ कराने के बाद हरएक पेड़ में शीरा नहर की मिट्टी में गूँधकर दिया गया और नई मिट्टी डाल दी गई। आशा है कि अब पेड़ों में ख़ूब फल आया करेंगे। राव बहादुर साहिब ने फ़रमाया कि यह काम जनवरी के महीने में फूल आने से पहले करना चाहिये, क्योंकि आजकल पेड़ों में फूल आये हुए हैं और फूल इस काम में गिर जाते हैं तो फल भी कम आते हैं।

19 मार्च को हुजूर सिरसा पधारे और नामदान दिया। मैं दूसरा काम करता रहा। शाम को सिरसा में सत्संग हुआ और हम सब रात के 1 बजे कार में सिकन्दरपुर लौट आये। कमाद की कटाई का काम तो 14-15 मार्च से समाप्त हो चुका है, अब खाँड का काम कल को समाप्त हो जायेगा। लोग वापस घरों को जा रहे हैं, बहुत-से चले गए हैं। अभी कमाद बोनो का काम हो रहा है। धूप बड़ी तेज़ है। दोपहर को कार में बड़ी तपिश थी। रात को कमरे के सब दरवाज़े और खिड़कियाँ खोलकर सोते हैं। परन्तु सैंड फ्लाई (गुत्ती) रात को काटती हैं। यह रेतीला प्रदेश है।

20 मार्च शनिवार को हुजूर सिकन्दरपुर में दोपहर के बाद तक रहे और मैं भी वहीं रहा क्योंकि हुजूर को प्राइवेट काम था, कई लोगों से मिलना था। इसके बाद डाक देखी। खाना खाकर दोपहर के समय हम लोग आराम करने लगे। 3 बजे, मैं व हुजूर मिल में गये, राव साहिब व डॉक्टर साहिब घर पर रहे। धूप तेज़ थी। परन्तु शाम को आकाश में बादल थे, गर्द थी, हवा भी कुछ चल रही थी। छः बजे के बाद हुजूर मिल के बाहर सहन में कुर्सी पर बिराजमान हुए। मैं, इंजीनियर साहिब तथा दूसरे लोग भी बैठ गये और ख़ूब बातचीत होती रही। हुजूर ख़ूब हँसी की कहानियाँ सुनाया करते हैं। फ़रमाया कि पहले देहात में यह रिवाज था कि जब मेले के दिन शहर में जाना होता तो सुबह ढोल बजाया जाता जिससे गाँव के सब लोग इकट्ठे होकर मेला देखने जायें और वहाँ शहर में कोई वारदात हो जाये तो एक-दूसरे की सहायता कर सकें। एक मनुष्य 'काहना'

जोकि बुढ़ापे के कारण मेले में जाने का विचार तक न कर सकता था, ढोल की आवाज़ सुनकर बिस्तरे में पड़ा-पड़ा टाँगें मारने लगा। यहाँ तक कि रज़ाई फट गई। जब वह दिन चढ़े उठा और औरतों ने उसकी रज़ाई उठाई तो पूछा कि कैसे फटी ? तो कहने लगा कि जब ढोल बजा तो क्या मेरे बस की बात थी ?

21 मार्च को बड़े भाई साहिब के घर राव बहादुर शिवध्यान सिंह रईस (पिसावा के ज़मींदार) की दावत थी। हमें भी दावत पर बुलाया गया था। अतः हम पहले तो हुजूर के साथ ताँगों में सवार होकर मिल में गये। वहाँ से मैं, डॉक्टर साहिब, इंजीनियर साहिब, तीनों बड़े भाई साहिब के ताँगे में थेहड़ी की ओर चल दिये। रास्ते में बेरों का विचार आया, अतः सड़क के किनारे बाई ओर के पहले बाग में गये। वहाँ बहुत-सी बेरियाँ हैं। हमने कई प्रकार के बेर देखे, कुछ तो बड़े मोटे थे परन्तु रस उनमें कम था। दूसरे गोल-गोल लाल रंग के थे। वे अच्छे थे। डॉक्टर साहिब को वे पसन्द थे। मैंने कहा, जो सबसे अच्छे हैं, वे दो। बेर वाला कहने लगा, कैथली बेर देता हूँ। अतः एक बेरी पर चढ़ कर सेर सवा-सेर बेर तोड़े, जोकि खाने में स्वादिष्ट तथा रस-भरे और सस्ते थे। दो आने के सेर भर दिये। शेष जोकि हम नमूने के लिये चखते रहे, वे अलग। अर्थात् सेर सवा-सेर बेर लेकर हम चल दिये। रास्ते में विचार आया कि इतने बेर खाने के बाद खाना क्या खाया जायेगा ? अतः आधे के लगभग रख दिये। भाई साहिब के यहाँ भोजन बड़ा स्वादिष्ट था। विशेषकर फिरनी बिलकुल रबड़ी की तरह थी, परन्तु स्वाद में रबड़ी से अच्छी। सब्जियों में घी खुले दिल से डालते हैं। भोजन के बाद मैं व हुजूर दोपहर के तीन बजे मिल में वापस आ गये। वहाँ आकर डाक देखी।

फिर 5 बजे सिरसा जाकर हुजूर ने सत्संग किया। वहाँ एक मुसलमान थानेदार सत्संग-घर में आये। बड़े स्वतन्त्र विचारों के थे तथा कोई धार्मिक कट्टरता नहीं रखते थे, ईश्वरवादी थे, परन्तु ईश्वर से मिलने की आवश्यकता नहीं समझते थे। बुद्धि के तर्क से ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करते थे। हुजूर ने फ़रमाया कि आपने प्रकृति की खोज की, परन्तु रूह के अस्तित्व को नहीं माना। कहते थे कि शरीर के तत्त्वों की व्यवस्था के कारण शरीर में ताक़त, स्फूर्ति व बढ़ोतरी है। जब व्यवस्था बिगड़ गई, मृत्यु आई और सब समाप्त हो गया। हुजूर ने उत्तर दिया कि आत्मा, परमात्मा व आन्तरिक दृश्य मन के परदे के पीछे हैं। मन को स्थिर करके देखो। कहने लगे, फिर आऊँगा,

एकान्त में बात करूँगा। हुजूर ने सिरसा जाने से पहले ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर के कुछ राबियाँ को नामदान दिया।

वापसी पर पूर्णमासी का चाँद था, परन्तु ठण्ड अधिक थी। हुजूर ने गर्मी के मौसम के ठण्डे कपड़े पहन रखे थे। मिल से सिकन्दरपुर आते हुए सदी महसूस की और कहा कि रात को भी नहीं सोये, क्योंकि मच्छर काटते थे। दूसरे दिन सुबह पता लगा कि हुजूर को रात कुछ बुखार हो गया था। नाम लेने वालों के कर्म भारी थे। फ़रमाया कि दूर से आये हैं। फिर शायद अवसर प्राप्त न होता। इस विचार से अपने कष्ट का ध्यान न करते हुए नाम दे दिया। सुबह पता चला कि डॉक्टर साहिब को भी उच्च रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) हो गया। रास्ते में पैदल आ रहे थे कि हृदय की धड़कन बढ़ गई। रास्ते में ही पड़ गये। घोड़ी पर उनको लाया गया। सारी रात दिल की धड़कन धीमी रही। सुबह 4 बजे नींद आई। आज बिस्तर पर लेटे हुए हैं। आज उन्होंने वापस जाना था। परन्तु अब अटक गये हैं।

22 मार्च को लोग प्रसाद लेकर वापस जा रहे हैं। राब बहादुर, इंजीनियर साहिब तथा दूसरे ज़मींदार लोग विदा हो रहे हैं। उन सबका सामान गड्डे में सिरसा रेलवे स्टेशन तक जा रहा है। कल रात राबिये* भी चले गए। आज शाम को मिल में उदासी छा रही है। राब साहिब आज यहाँ नहीं आये और न डॉक्टर साहिब। हुजूर सो रहे हैं, मैं और शादी मक्खियाँ मार रहे हैं जोकि यहाँ बहुत हैं, जिन्होंने नींद हराम कर रखी है। हम दोनों बारी-बारी सोने का प्रयत्न कर चुके हैं परन्तु क्या मजाल कि एक सैकिण्ड के लिये भी आराम करने दें। ऋग्वेद में इनको 'अयमद' कहा है और टीकाकार लिखता है कि यह शब्द मज़ाक के तौर पर ब्राह्मणों और मक्खियों के लिये भी प्रयोग किया गया है। 'अयमद' का अर्थ है कि खाने पर बैठने वाला। परन्तु हमारे कमरे में तो कोई खाना नहीं है इसलिये यहाँ उनका आना ठीक नहीं। परन्तु यह शूद्र शत्रु है। इसलिये हम लाचार हैं। 'क्रहरे दरवेश बर जाने दुरवेश' अर्थात् फ़कीर का गुस्सा अपनी ही जान पर।

झाड़वर की रिपोर्ट है कि मोटर कार बिगड़ गई है और बाहर से पुर्जें मँगवाये बिना नहीं चल सकेगी। कल हिसार जाने का प्रोग्राम है और दो दिन के बाद

*चीनी मिल में राब बनाने वाले। राब से चीनी बनती है।

वापस डेरे जाना है। देखिये कैसे पहुँचते हैं? आज शाम को निश्चय हुआ कि झाड़वर देहली जाकर पुर्जे लाये। वह 23 मार्च को सुबह चल दिया। किसी से 'बेबी आस्टिन' माँगकर हुजूर, मैं और भाई हरबन्स सिंह उसमें बैठकर हिसार को सुबह 8 बजे चल दिये। फ़तेहाबाद में से होते हुए अगरोहे के खण्डहरों के पास से हिसार में पहुँचे। अगरोहे के खण्डहरों से पता लगता है कि किसी समय यह एक बड़ा शहर होगा। खण्डरात बड़ी-बड़ी दूर तक फैले हुए हैं। हिसार में बाबू कुंज लाल एडवोकेट के मकान पर, जोकि रेलवे रोड पर है, उतरे और खाना खाया। फिर आराम किया। 4 बजे शाम को हुजूर का बुखार 99.7 डिग्री था। हुजूर को सुबह चलने के वक़्त 100.7 डिग्री बुखार था। मैंने, डॉक्टर साहिब व दूसरे लोगों ने हुजूर से प्रार्थना की कि हिसार न जायें, परन्तु हुजूर ने उत्तर दिया कि इक्रार, इक्रार है।

शाम को बाबू जवाहर लाल भार्गव के मकान पर सत्संग हुआ। बहुत-से आर्य समाजी, सिक्ख तथा मुसलमान भी उपस्थित थे। सबने प्रेम और ध्यान से सत्संग सुना, क्योंकि हुजूर किसी धर्म का खण्डन नहीं करते, शुद्ध रूहानियत का प्रचार करते हैं। कहते हैं कि अपने-अपने धर्म में ही रहकर किसी पूर्ण सन्त-सतगुरु से रास्ता लेकर हकीकत की खोज करो। सत्संग के बाद शहर में से होते हुए रात के साढ़े नौ बजे घर पहुँच गये।

24 मार्च को हुजूर को इन्फ़्लुएंज़ा की शिकायत है। सारा दिन अन्दर कमरे में बिस्तरे पर लेटे रहे। दोपहर को डाक सुनी, जोकि हर रोज़ से अधिक थी। इसके बाद शाम के 7 बजे चबूतरे पर आ बिराजे और समाचार-पत्र पढ़ते रहे। इधर-उधर की बातें होती रहीं। कल शाम को झाड़वर सरूप सिंह मोटर कार के पुर्जे देहली से ले आया और रात को मोटर कार में फ़िट करता रहा।

आज प्रातः 25 मार्च को डॉक्टर साहिब कहते हैं कि हुजूर को 99.5 डिग्री का ज्वर है। देखो हुजूर लोगों के लिये कितना दुःख उठा रहे हैं और किसी को पता तक नहीं। सांसारिक लोग बाहरी परोपकार के लिये कितना शोरगुल करते हैं। यहाँ जो चुपके-चुपके सबसे बड़ा परोपकार कर रहा है, उसका दुनिया वालों को पता तक नहीं। आज दोपहर के बाद सिरसा संगत को दर्शन देने जाना है।

अध्याय 5

डेरे में निवास का हाल

हुजूर की डेरे की वापसी की यात्रा और वहाँ निवास

26 मार्च को सुबह 5 बजे हुजूर कार द्वारा चल दिये। रास्ते में सड़क के किनारे सिरसा के कुछ सत्संगी भाई व बहनें दर्शनों के लिये खड़े थे। वहाँ से बिना कहीं रुके मुक्तसर पहुँचे तो सूर्य निकल आया था। वहाँ पण्डित बुद्ध राम जी रईस तथा दूसरे लोग उपस्थित थे। हुजूर ने कार से उतर कर कुछ समय तक लोगों से बातचीत की। वहाँ से चलकर सराय नाँगा तथा कोटकपूरा की संगत को दर्शन देते हुए हुजूर 9 बजे मोगा सरदार बहादुर कैप्टन लाल सिंह के मकान पर पधारे। वहाँ कुछ मिनट ही ठहरकर लुधियाना की ओर चल दिये, क्योंकि डॉ. प्रेम नाथ जी के विषय में पता चला कि वह कहीं बाहर गये हैं। मोगा से डबवाली की ओर जाते हुये ऐसा लगता है कि उस रात वर्षा काफ़ी हुई थी। सिरसा में केवल पहले दिन शाम को बूँदा-बाँदी हुई थी, परन्तु सुबह सर्दी काफ़ी थी। लुधियाना में कचहरी के सामने बहुत-सी संगत जमा थी। वहाँ लगभग आधा घण्टा हुजूर महाराज जी ठहरे। संगत को दर्शन दिये परन्तु कुछ खाया नहीं। इसके बाद रास्ते में फ़िल्लौर, गोराया, मौली, फगवाड़ा की संगतों को थोड़ा-थोड़ा समय देते हुए जालन्धर शहर में सरदार भगत सिंह जी वकील की कोठी पर आकर सारी पार्टी उतर गई। वहाँ कई लोगों ने खाना खाया। मैं माई हीरों के दरवाजे से वैद्य जी को बुलाकर लाया। उन्होंने हुजूर को ठीक से देखकर इंप्लूएन्जा की दवा दी। इसके बाद राय साहिब को देखा और दवा बताई। फिर तीन बजे वहाँ से चल कर सीधे डेरा आ गये।

डेरे में बहुत संगत जमा थी, उसी दिन शाम को हुजूर ने सत्संग किया।

27 मार्च को चार बजे सत्संग हुआ। इस बार 40-50 हजार के लगभग संगत थी और ऐसी भीड़ थी कि बड़े-बड़े मेलों पर होती होगी, क्योंकि मौसम

सुहावना था और सत्संग दो माह बन्द रहा था। लंगर में रात के एक बजे तक खाना खिलाते रहे।

28 मार्च इतवार को सुबह 9 बजे सत्संग हुआ। हुजुरी वाणी में से 'सतगुरु का नाम पुकारो' लिया गया और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से पाँचवीं पातशाही का शब्द 'दरसन भेटत पाप सभ नासै' पढ़ा गया। हुजूर ने बड़ा लम्बा-चौड़ा व्याख्यान दिया। हुजूर ने फ़रमाया कि जब परमात्मा किसी जाति व देश को मिलाना चाहता है तो वह मनुष्य का जामा पहन कर इस संसार में आता है, क्योंकि देवी-देवता के रूप में आये तो हम उसे देख नहीं सकते और मनुष्य से निचली योनियों में ज्ञान नहीं। इसलिये मनुष्य का गुरु मनुष्य होना जरूरी है। राम, कृष्ण, मुहम्मद साहिब और जितने वली, पैगम्बर, अवतार, ऋषि-मुनि आये वे सब मनुष्य-शरीर को धारण करके ज्ञान देते रहे। ऐसी हस्ती का नाम है सतगुरु। परन्तु जो महात्मा हमारे ज़माने से पहले होकर गुज़र चुके हैं, यद्यपि वह अपने समय के पूर्ण महात्मा थे, फिर भी वे हमें कुछ लाभ नहीं दे सकते। यही संसार की बहुत बड़ी भूल है कि पुराने वक्तों के महात्माओं की टेक बाँधकर जीवित सतगुरु की खोज नहीं करते। सत्संग के बाद भोजन हुआ और सब लोग अपने-अपने घरों को पधारे।

29 मार्च सोमवार को भी बहुत संगत उपस्थित थी। जब सुबह हुजूर नाम देने के लिये पण्डाल में पधारे तो इस तरह भीड़-भाड़ व धक्का-पेल हुई कि हुजूर ने नाम देने से इनकार कर दिया और सब लोगों को हुक्म दिया कि अब नाम नहीं दिया जायेगा। अपने-अपने घरों को जाओ। फिर अगले सत्संग में देखा जायेगा। यह पहली बार है कि इतनी बेक्राबू भीड़ ने हुजूर को मज़बूर किया कि शोरगुल की वजह से नाम न दें। आज हुजूर ने डाक भी नहीं सुनी। फ़रमाया कि तबीयत पर बोज़ है, फिर सही।

30 मार्च मंगलवार को हुजूर ने न सत्संग किया न नाम दिया। हुजूर थकावट महसूस कर रहे हैं। सुबह को अमेरिका की डाक सुनी। शाम को दो घण्टे बाक़ी डाक देखी, फिर प्रसाद बाँटकर जानेवाली संगत को विदा किया।

श्रीमती कॉलिन्ज़ ने मुझे बताया कि क्राइस्ट वास्तव में विशेषण है, जिसका अर्थ है पहुँचा हुआ। पहले मसीह का नाम जीसस द क्राइस्ट था। धीरे-धीरे 'द' उड़ गया और जीसस भी यूनानी शब्द है क्योंकि इंजील, यद्यपि पहले-पहल

इब्रानी में लिखी गई, परन्तु उसका पहला अनुवाद यूनानी में लिखा गया। जिस भाषा में ईसा ने उपदेश दिया वह इब्रानी की एक प्राकृत अथवा आरमेनियन या आरोमाइट थी जोकि जैरूसलम में बोली जाती थी। शेख फ़ैजी ने लिखा है, ऐ नामअे तोड़ो करिस्टो। जर्मन व फ़्रान्सीसी भाषा में लिखते 'जीसस' हैं, परन्तु पढ़ते 'जीजू' हैं। श्रीमती कॉलिन्ज़ ने बताया कि उनके पास एप्लाइड फ़िलॉसफी (Applied philosophy) की डिग्री है और वह आधिभौतिक विज्ञान की भी ज्ञाता हैं। उसने तीन बातें बताईं जो बड़े काम की मालूम होती हैं। पहली यह कि हर विचार, चाहे हम उसे महसूस करें या न करें, कार्य की ओर आकर्षण रखता है। दूसरे, जब सचेत और अचेत मन की टक्कर होती है तो उसमें अचेत मन की ही विजय होती है। (Every thought conscious or unconscious tends towards action. When there is a conflict between the conscious and subconscious mind, it is the latter that always wins.) तीसरे, हर बच्चे की आयु के पहले 6 वर्ष विशेष महत्त्व रखते हैं। इस आयु के संस्कार बड़ी आयु में जाकर बड़ी कठिनाई से मिटाये जा सकते हैं। इसलिये माता-पिता को बड़ी सावधानी से बच्चे का पालन-पोषण करना चाहिये।

31 मार्च बुधवार की शाम को 6 बजे के लगभग सत्संग आरम्भ हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से महला पाँच, सोरठ राग 'पाठ पढ़यो अर बेद बीचारयो'¹³ पढ़ा गया, जिसका भावार्थ यह है कि पुस्तकों के पठन-पाठन, दान-पुण्य, तीर्थ-व्रत, योग-आसन, ब्रह्मचर्य, मौन व्रत तथा त्याग इत्यादि में मुक्ति नहीं। यद्यपि यह सब अच्छे कर्मों में गिने जाते हैं, परन्तु हर कर्म का फल कर्म है। मुक्ति सत्संग, पूर्ण महात्मा व हरि-कीर्तन अथवा शब्द-अभ्यास में है; इसके बाद 'अमृत' शब्द पर विचार किया गया। 'अमृत' का अर्थ है कि जीवन देनेवाला और यह वह शब्द है जो हर व्यक्ति के अन्दर है और शब्द मन के परदे के पीछे है। जब मन को शान्त कर लिया जाये तो शब्द मिलता है। दूसरा अमृत वह है जो सन्त-महात्मा कई बार अपनी आत्मा को रूहानी मंजिलों पर ले जाकर बनाते हैं। वहाँ से ध्यान लाकर पानी में डाला और पानी में रूहानी असर पैदा हो गया। लेकिन जब तक कोई महात्मा आन्तरिक आध्यात्मिक मंजिलों पर जानेवाला न हो, बाहर के जल को अमृत नहीं बना सकता। अमृत का यह अर्थ नहीं कि मनुष्य का शरीर न मरे, बल्कि यह कि मनुष्य जन्म-मरण से मुक्ति पा जाये।

1 अप्रैल को महाराज जी ने गिने चुने भाई-बहनों को अपने कमरों में नाम दिया। डाक सुनी। फिर शाम को 6 बजे के लगभग सत्संग में पधारे। सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का शब्द पढ़ा गया और सरदार गुलाब सिंह जी ने व्याख्यान किया। हुजूर कभी-कभी अपने मुखारबिन्द से बीच में एक-दो वाक्य फ़रमाते थे। सरदार गुलाब सिंह जी ने बहुत ठीक कहा कि आँखों की इन्द्रिय संसार से सबसे अधिक सम्बन्ध जोड़ती है, क्योंकि यह इन्द्रिय दूर-दूर तक देखकर सांसारिक फ़ोटो मन में भरती जाती है। कान की इन्द्रिय से भी सांसारिक सम्बन्ध पैदा होते हैं और जिह्वा या ज़बान दिल के तालाब को ख़ाली करने की एक नाली है। अभ्यासी को चाहिये कि इन तीनों को ज़रूरत से ज़्यादा प्रयोग में न लाये। सरदार भगत सिंह जी भी सत्संग के समय पधारे और साढ़े चार बजे के लगभग चले गए।

आज-कल महाराज जी दुर्बलता व थकावट महसूस कर रहे हैं और ख़ुरक खाँसी-सी भी है। ऐसा मालूम होता है कि काम की अधिकता से कमजोरी है। सत्संग भी शाम को सरदार गुलाब सिंह जी करते हैं।

आज-कल चनों की कटाई हो रही है। महाराज जी सुबह आठ बजे वहाँ पधारते हैं और मैं दस बजे लाइब्रेरी की पुस्तकें गिनने जाता हूँ।

4 अप्रैल शाम को सत्संग में हुजूर स्वामी जी महाराज का यह शब्द 'कोई मानो रे कहन हमारी'¹⁴ लिया गया। जिसका अर्थ यह है कि मनुष्य स्वयं ही संसार में फँसा है। यदि सांसारिक भोग छोड़ दे तो परमात्मा मिल सकता है। आज इतवार के दिन बहुत-से लोग अमृतसर इत्यादि से आ गये थे।

5 अप्रैल सुबह को आकाश पर बादल थे और मिट्टी उड़ रही थी।

6 अप्रैल को सुबह साढ़े आठ बजे चलकर महाराज जी ढिलवाँ एक सिक्ख सत्संगी के घर उसकी स्वर्गीय माँ की भोग रस्म में गये। वहाँ उनकी छत पर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का भोग डाला गया। नवीं पातशाही का शब्द 'गुन गोबिंद गायो नहीं'¹⁵ पढ़ा गया। हुजूर ने व्याख्या की और फ़रमाया कि सब दुनिया पराया काम कर रही है क्योंकि जितना भी इस दुनिया का व्यापार है वह या तो इन्द्रियों के भोग इत्यादि का सामान एकत्र करना है या इन्द्रियों के भोगों को भोगने का। यह भोग शरीर का काम है। आत्मा का काम है कि उसे उसके भण्डार अर्थात् सतलोक में पहुँचाया जाये क्योंकि हर वस्तु अपने असल में मिलना चाहती है

परन्तु सब लोग सारी आयु मन और इन्द्रियों का काम करने में बरबाद कर देते हैं। अपना काम कोई नहीं करता। हुजूर स्वामी जी ने फ़रमाया है, 'काम अपना करो जाई। पराये काम नहि फँसना ॥' यदि यह काम न किया गया तो चौरासी का चक्र तैयार है। 30 लाख प्रकार के वृक्ष, 27 लाख प्रकार के कीड़े-मकौड़े, 14 लाख प्रकार के पक्षी, 9 लाख प्रकार के पानी के जीव, 4 लाख प्रकार के मनुष्य, पशु, देवी, देवता, यक्ष, किन्नर, गन्धर्व, भूत-प्रेत इत्यादि हैं। इन सबको भोग कर मनुष्य का चोला मिलता है और केवल मनुष्य-जन्म में ही जन्म-मरण से छुटकारा यानि मुक्ति हो सकती है। देवी-देवता इत्यादि मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते। वे भी चाहते हैं कि मनुष्य-जन्म मिले तो वे मुक्ति प्राप्त कर सकें। इसलिये जहाँ तक हो सके, नाम के भजन-सिंमरन में समय व्यतीत करना चाहिये। क्योंकि एक-एक साँस का मूल्य करोड़-करोड़ रुपयों से भी अधिक है। जैसे कि सिकन्दर आज़म को सारे राज्य के बदले में एक साँस भी अधिक न मिल सका। दुनिया के काम-काज किसी के भी पूर्ण नहीं हुए। सब अधूरे छोड़कर मर गये। कहावत है 'धन्या किने न जितया, सब धन्धे जिती'।

इसके बाद 'सद' पढ़ी गई जिसमें सतगुरु अमर दास जी ने फ़रमाया है कि हमारे मरने के बाद 'मैं पिछै कीरतन करयो निरबाण जीओ। केसो गोपाल पंडित सदयो हर हर कथा पढ़ह पुराण जीओ' अर्थात् गुरु साहिब ने वसीयत की कि मेरी मृत्यु के बाद सांसारिक रस्में हिन्दुओं के रिवाज के अनुसार कर लेना परन्तु मेरा परमार्थ का रास्ता तो निर्वाण कीर्तन है, वह करते रहना। इसी प्रकार श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में आया है, 'निरबाण कीरतन गावो करते का निमख सिमरत जित छूटै'। कीर्तन का अर्थ वास्तव में तो शब्द-धुन सुनने से है जो मुक्ति का दाता है। बाहर के बाजों से मन नाचता है। उसको मुक्तिदाता नहीं कह सकते। मेरे विचार में निर्वाण कीर्तन का अर्थ है, पारब्रह्म के सार-शब्द की निर्मल धुन सुनने से, जिसके पल-भर सुनने से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। वहाँ से काम समाप्त करके हम 12 बजे वापस आ गये। आकर डाक देखी।

फिर शाम को 5 बजे दिलवाँ गये। वहाँ हाई स्कूल में सत्संग किया। जो सड़क जी.टी. रोड से रेलवे फाटक के सामने से अलग होकर दिलवाँ शहर को जाती है, इस पर यह स्कूल बड़े सुहावने स्थान पर स्थित है। सड़क के दोनों ओर आम के पेड़ खड़े हैं। पानी पृथ्वी की तह के पास होने के कारण चारों ओर हरे-

भरे खेत लहराते दिखाई देते हैं। आमों पर आजकल बौर आया हुआ है जिसमें से मीठी-मीठी सुगन्ध आ रही है। स्कूल के पीछे मैदान में बहुत-से स्त्री-पुरुष उपस्थित थे। हुजूर के लिये ऊँचा पण्डाल सजा हुआ था। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'आद निरंजन प्रभ निरंकारा' शब्द लिया गया, काफ़ी लम्बा शब्द है और उसमें सन्तमत की पूर्ण शिक्षा दी गई है। 'आद निरंजन' का अर्थ है निरंजन का आदि। निरंजन त्रिलोकीनाथ है, आदि निरंजन का मतलब अकालपुरुष है जो सतलोक का धनी है और सन्त जिसका अवतार होते हैं। इस सत्पुरुष ने 84 लाख प्रकार की खलकृत पैदा करके मनुष्य को सबसे ऊँचा बनाया। अब मनुष्य को चाहिये कि कर्म-धर्म अर्थात् तीर्थ, ब्रत, दान, पुण्य, यज्ञ, तप और विद्या इत्यादि कर्मों में मुक्ति न ढूँढ़े। कर्मों का बदला कर्म है। यदि अच्छे कर्म करेगा तो यहाँ पर जन्म लेकर उनके बदले सेठ-साहूकार, राजा-महाराजा, गुणी-ज्ञानी बन कर भोग लेगा। यह श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की शिक्षा के अनुसार कुरुत्ता (वेमौसमी) बीज है क्योंकि कलियुग में नाम के बिना मुक्ति नहीं है। अब कलू आयो रे, इक नाम बोवो बोवो अन रुत नाही नाही। मनुष्य को चाहिये कि गुरुमुख महात्मा की खोज करे, अर्थात् जो महात्मा पारब्रह्म में पहुँचकर आत्मा पर से तीनों गुणों, तीनों शरीरों, पच्चीस प्रकृति के शिलाफ़ों को उतार चुके हैं। जैसे कि गीता में भगवान कृष्ण ने लिखा है, 'त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।' कलियुग में कीर्तन प्रधान है। कीर्तन का अर्थ उस शब्द रूपी आरती सुनने से है जो आँखों के पीछे हर वक़्त आटों पहर हो रही है, बाहर के बाजों से मतलब नहीं है। इस कीर्तन को सुनने के लिये यह आवश्यक है कि किसी पूर्ण गुरुमुख से अभ्यास का ढंग सीखा जाये। जैसे कि आसा दी वार में कहा है :

बिन सतगुर किनै न पायो बिन सतगुर किनै न पाया।

सतगुर विच आप रखिओन कर परगट आख सुणाया।¹⁰

तथा :

एह जीओ बहुते जनम भरंमयां ता सतगुर सबद सुणाया।

सतगुर जेवड दाता को नहीं सभ सुणयों लोक सबाया।¹¹

अर्थात्, पूर्ण सतगुरु में वह मालिके-कुल स्वयं प्रकट होता है। सत्संग साढ़े छः बजे समाप्त हुआ। हम कार से आकर ब्यास की कोठी में ठहर गये क्योंकि

हुजूर को वहाँ खेती-बाड़ी देखनी थी। कोठी में लूसन, चटाला, आम के वृक्ष, सरु, युकलिपटिस और सब्जी-तरकारी लगी है। युकलिपटिस के वृक्ष की जलवायु स्वास्थ्यवर्धक मानी जाती है क्योंकि यहाँ रोगी प्रायः आकर ठहरते हैं। वैसे भी शान्ति का वातावरण है। वहाँ लगभग एक घण्टा ठहर कर सब डेरे वापस आ गये।

7 अप्रैल को मौसम कुछ ठण्डा है। शाम के समय डलहौजी की ओर आकाश में नीले-नीले बादल दिखाई दे रहे हैं। यह मौसम जुकाम, खाँसी आदि पैदा करता है। आज फ़ौज के तीन अफ़सर खाकी वर्दियों में डेरे आये। उनको दोपहर का खाना हुजूर के पोते सरदार पुरुषोत्तम सिंह ने खिलवाया। फिर वे 7 बजे के लगभग सत्संग में आये। सत्संग में गुरु अमर दास जी का शब्द 'किस हों सेवी क्या जप करी'¹² पढ़ा जा रहा था। महाराज जी ने इन लोगों के लाभ के लिये सन्तमत का अमली पहलू अपने मुखारबिन्द से समझाया कि यद्यपि परमात्मा सब जगह व्यापक है, लेकिन ऐसे हैं जैसे दूध में घी। दूध दिखाई देता है, परन्तु घी दिखाई नहीं देता। यदि किसी पुरुष ने दूध में से घी न निकाला हो और कहा जाये कि दूध में घी है तो वह नहीं मानेगा, परन्तु जब दूध को दही बनाकर घी निकाला जायेगा तब वह दूध को जब देखेगा, कहेगा कि इसमें घी है। इस प्रकार यद्यपि ईश्वर सर्वव्यापक है, फिर भी जब तक मनुष्य अभ्यास द्वारा उसको अपने अन्दर प्रगट न कर ले वह बाहर नजर नहीं आता, न ही सर्वव्यापक ईश्वर हमें कोई लाभ पहुँचाता है। जिस आदमी ने ईश्वर को अन्दर पा लिया वह बाहर भी कह सकता है कि ईश्वर हर जगह है। बाकी सबका कहना व्यर्थ है। अन्तर में ईश्वर प्राप्ति का साधन सतगुरु बतायेंगे। जाग्रत अवस्था में आत्मा की बैठक दोनों आँखों के बीच है। मनुष्य को चाहिये कि मन व आत्मा को नौ द्वारों से समेटकर आँखों में ले जाये, तो तारा-मण्डल, सूर्य-मण्डल, चन्द्र-मण्डल को पार करके स्थूल शरीर को छोड़कर सूक्ष्म शरीर से गुरु के नूरी अर्थात् सूक्ष्म स्वरूप को देखेगा। वह सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर से बहुत अधिक सुन्दर और सूक्ष्म है। स्थूल शरीर को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के लिये किसी सवारी, रेलगाड़ी या मोटर कार की आवश्यकता होती है। सूक्ष्म शरीर विचार की धारा से जहाँ चाहे वहाँ पहुँच जाता है। सूक्ष्म के बाद कारण शरीर मिलता है। उस लोक का नाम ब्रह्म-लोक है जहाँ से सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और संहार होता है। उससे आगे पारब्रह्म में आत्मा सब गिलाफ़ों

को छोड़कर स्वतन्त्र हो जाती है। उस समय उसका अपना प्रकाश बाहर सूर्य का होता है। फिर वह परमात्मा को समझने के योग्य बनती है। चन्द्र-मण्डल से परे सतगुरु आत्मा को शब्द देकर ऊपर चढ़ाते हैं।

8 अप्रैल को सुबह आठ बजे से पहले महाराज जी ठट्ठियाँ को, जोकि डेरे से लगभग 5 मील दूर है, भोग की रस्म के लिये गए। साथ में शादी व सरदार पुरुषोत्तम सिंह जी भी थे। मैं बीमारी के कारण तैयार न हो सका।

एक नुसखा जो महाराज जी ने दिल और दिमाग की तारत के लिये मेरे सामने एक व्यक्ति को लिखवाया, वह यह है— मगज, छोटी इलायची दो तोले, तबाशीर चार तोले, सर्द चीनी एक तोला, चार मगज 8 तोले, बादाम की गिरी 8 तोले, हरएक को अलग-अलग बारीक पीस कर कपड़छान कर लें। फिर उनमें सबके बराबर मिसरी मिलाकर रख लें; खुराक एक तोला आधी छटाँक मक्खन के साथ।

आज 2 बजे के लगभग अमृतसर जाने की तैयारी है। वहाँ से 11 अप्रैल को वापसी होगी। 8 अप्रैल को महाराज जी 3 बजे के लगभग कार में अमृतसर को चल दिये। वहाँ साढ़े पाँच बजे के लगभग सत्संग हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'हर कीआं कथा कहाणीआं गुर मीत सुणाईआं'¹³ लिया गया। महाराज जी ने फ़रमाया, जैसे कि हरी ऐनक वाले को सारी दुनिया हरी-हरी दिखाई देती है, वैसे ही गुरु राम दास जी को अपने ऊँचे प्रेम के कारण सब जगह प्रेम ही प्रेम दिखाई दे रहा है।

9 अप्रैल को सुबह साढ़े आठ बजे सत्संग आरम्भ हुआ। 'खोजत रही पिया पंथ, मर्म कोइ नेक न गाया'¹⁴ हुजुरी वाणी में से पढ़ा गया। शाम को साढ़े पाँच बजे के सत्संग में वही शब्द जो दिलवाँ में पढ़ा था, पढ़ा गया।

10 अप्रैल को सुबह सत्संग नहीं हुआ। हुजूर ने नामदान दिया। उसके बाद हुजूर पेंशन के लिये कचहरी पधारे। वहाँ लाला रोशन लाल ए. डी. एम. और खजाने का अफ़सर हुजूर के दर्शनों को डी. सी. ऑफ़िस के सुपरिण्टेण्डेण्ट लाला नत्थू राम के प्राइवेट कमरे में उपस्थित हुए। कचहरी के बाद हुजूर लॉएडज बैंक में रुपया निकलवाने गए। उसके बाद चार बजे के लगभग मोक़ल, जिला लाहौर के जमींदार सरदार दीन मुहम्मद साहिब पधारे। वे हुजूर के पुराने जानने वाले हैं, बड़े सभ्य सुसंस्कृत बुजुर्ग और जमींदार हैं। उनका विचार था कि

आजकल की सरकार की पद्धति पंजाब के लोगों के विचारों के अनुसार नहीं है, जिससे मैं पूर्णतया सहमत हूँ। एम. एल. ए. साहिबों की कहानियाँ बताते रहे कि उनमें से कुछ ऐसे हैं जो कौंसिल में जाकर यह नहीं समझ सकते कि क्या वाद-विवाद हो रहा है। केवल उपस्थित होना ही अपना कर्तव्य समझते हैं।

उस दिन शाम को हुजूर ने कबीर साहिब का शब्द 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है'¹⁵ लिया और उसको बड़े अच्छे ढंग से समझाया। हुजूर ने फ़रमाया कि दो प्रकार के फ़कीर होते हैं- दज़ाति सिफ़ली और दज़ाति उलवी। दज़ाति सिफ़ली वे हैं जो ज़िकरे क़लब (हृदय का ध्यान) पास-अन्फ़ास (प्राणायाम) और हब्से दम (कुम्भक) इत्यादि करके आँखों के नीचे के छः चक्रों में मन व रूह को इकट्ठा करते हैं, आँखों के ऊपर नहीं गये। कबीर साहिब के इसी शब्द के पहले भाग में उन्हीं छः चक्रों का वर्णन किया गया है। उसके बाद दज़ाति उलवी के फ़कीरों का रास्ता और मंज़िलों का वर्णन किया है जो आँखों से ऊपर सतलोक तक जाते हैं। उनके लिये मांस, शराब इत्यादि से परहेज़ आवश्यक है। दज़ाति उलवी के फ़कीर कम मिलते हैं। सत्संग से पहले हुजूर वर्कशाप देखने गये थे। सत्संग के बाद राय साहिब लाला अर्जुन दास, जोकि नहरों के अफ़सर हैं, की कार में बाहर सैर को गये।

11 अप्रैल को सरदार भगत सिंह पधारे। सुबह का सत्संग हुआ। खाना खाकर, आराम करके हुजूर तीन बजे के लगभग हाल बाज़ार में एक बीमार आदमी की ख़बर लेकर, राय साहब अर्जुन दास की कोठी में सरदार भगत सिंह के लिये एक घोड़ी देखने गये कि उसमें कोई नुक्स तो नहीं है। क्योंकि हुजूर अपनी नौकरी के सारे समय में घोड़े की सवारी करते रहे और घोड़े के अच्छे सवार थे। सरदार भगत सिंह वहाँ के एक-दो और व्यक्तियों को भी साथ लाये थे। एक ने घोड़े की पिछली टाँग में बेर हड्डी की शंका की। निश्चय किया कि किसी जानवरों के डॉक्टर को दिखाई जाये। वहाँ से ब्यास के रेलवे स्टेशन पर सरदार साहब को छोड़कर हम सब लोग शाम को छः बजे डेरे वापस आ गये। आते ही हुजूर ने डाक माँगी। उसके बाद सत्संग में चले गए। अमृतसर में चार बजे के आसपास बड़ी वर्षा हुई थी, परन्तु ब्यास में नहीं थी।

12 अप्रैल सुबह को फिर थोड़ी-सी वर्षा हुई जिस कारण गेहूँ की फ़सल की कटाई न हो सकी। इसलिये सुबह के समय भोग समाप्त किया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि मेरे हुओं को रोना वाहेगुरु की आज्ञा के विरुद्ध है। जैसे कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में गुरु रामदास जी की 'सद' से साफ़ ज़ाहिर है और कबीर साहिब ने भी कहा है :

कबीर संत मूए क्या रोईए जो अपने गृह जाय।

रोवो साकत बापुरे जो हाटे हाट बिकाय।¹⁶

दोपहर को हुजूर गेहूँ की फ़सल कटवाने चले गए। वहाँ मैं डाक लेकर पाँच बजे उपस्थित हुआ। डाक में किसी व्यक्ति ने शिकायत की थी कि मेरा मन एकाग्र नहीं होता, हालाँकि बहुत प्रयत्न करता हूँ। हुजूर ने फ़रमाया कि मन कैसे एकाग्र हो, दूसरा विवाह बुढ़ापे में किया हुआ है। डाक जब पढ़ चुके तो वर्षा ज़ोर से आ गई। कटाई बन्द कर दी गई और कटी हुई फ़सल के गट्टर बाँधकर एक जगह एकत्र करने लगे। आधे घण्टे के बाद वर्षा बन्द हो गई। फिर हुजूर रात के दस बजे तक बाहर खेतों में कटाई करवाते रहे। यहाँ तक कि सब खेतों की कटाई समाप्त हो गई और सारी फ़सल खलियान में आ गई। हुजूर को कड़े परिश्रम का अभ्यास है। आप परिश्रम से जी नहीं चुराते। न मौसम की ख़राबी की परवाह करते हैं। रात को सरदार भगत सिंह व आहलूवालिया साहिब लगभग 11 बजे पधारे। हुजूर के दर्शन को गये। हुजूर 12 बजे तक उनको समय देते रहे। अपने दिन-भर की थकावट व नींद की कोई परवाह नहीं की। सुबह 8 बजे फिर संगत को दर्शन देने और काम पर जाने को तैयार थे और मज़ा यह कि सुबह के भजन का भी नागा नहीं करते।

13 अप्रैल आज बहुत भीड़ है। लोग सब ओर से आ रहे हैं। हुजूर कार में बैठकर फ़सल की कटाई देखने बाहर गये परन्तु 12 बजे के लगभग वापस आ गये। अब लोगों को समय दे रहे हैं। शाम के साढ़े तीन बजे सत्संग आरम्भ हुआ। पहले मारू राग में से 'काम क्रोध परहर पर निंदा'¹⁷ लिया गया। इस शब्द में आन्तरिक रूहानी यात्रा की चर्चा है। पहले जिज्ञासु को काम, लोभ, अहंकार और निन्दा इत्यादि छोड़ने के लिये कहा गया है। जिससे कि वह आन्तरिक यात्रा के योग्य हो जाये और फिर कहा गया है कि भ्रम का संगल तोड़ दो। इसका

अर्थ है, बाहरी दुनिया व आँखों से नीचे के छः चक्रों से मन और सुरत को निकाल कर अन्दर ले जाओ। क्यों? इसलिये कि अन्दर हरि-रस मिलेगा। इसके बाद गुरु साहिब आन्तरिक यात्रा के बड़े-बड़े चिह्नों का वर्णन करते हैं। पहले बिजली की चमक का-सा प्रकाश। फिर तारा-मण्डल, सूर्य-मण्डल, चन्द्र-मण्डल को पार करके गुरु के अनूप स्वरूप का दर्शन मिलेगा। उसके आगे ज्योति का परदा फाड़ कर 'शश घर सूर'¹⁸ अर्थात् सगुण और निर्गुण ब्रह्म के देश आयेंगे। उसके बाद पारब्रह्म की मंजिल है। इन तीनों मंजिलों में अमृत है, जिसको पीकर मनुष्य निडर और पवित्र हो जाता है। ऐसे ही गुरु साहिब ने दूसरी जगह भी बताया है कि :

“पूर्व हो पश्चिम को आवे, रव शष दोहां इक्तर मिलावे।¹⁹ दक्खन से जो चढ़े सुमेर, आवे फिर दक्खन के फेर। पुरियाँ सात ऊपर कमलासन, तित्थे पारब्रह्म का आसन। जिन्ह हीरे रतने माल परोई, नानक कहे उदासी सोई।” यह भी आन्तरिक यात्रा की ओर संकेत है। हुजूर ने फ़रमाया कि नाम से तात्पर्य किसी शब्द से नहीं परन्तु उस नाद से है जो अन्तर में हर घड़ी हो रहा है और जो गुरु का असली रूप है। गुरु देह ही नहीं है। एक बार तुलसी साहिब ने हाथरस में यह शब्द उच्चारण किया, ‘रहूँ री बिदेह देह दरसाऊँ’।²⁰ बीबी फूलाबाई सत्संगिन वहाँ उस समय उपस्थित थी। कहने लगी कि साहिब जी आप तो भले-चंगे, हट्टे-कट्टे, सामने बैठे दिखाई देते हो। फिर बिदेह कैसे हो? साहिब जी महाराज ने उत्तर दिया कि अरी सुसरी! तू क्या जाने सन्तों की गति को। आ मुझको पकड़। उस समय बीबी ने दोनों बाँहें फैलाकर बहुत कोशिश की कि साहिब जी को बाँहों से पकड़ ले, परन्तु सफल नहीं हुई। साहिब जी बहुत हँसे और फूलाबाई चरणों पर गिर पड़ी। इस पर हुजूर ने फ़रमाया कि सतगुरु वह शक्ति है जो हर जगह उजाड़ों-पहाड़ों में अपने सेवक के साथ उपस्थित हैं, वरना अन्त समय सेवक की कैसे सँभाल करें। जो सत्संगी लोग आजकल फ़ौज में गये हुए हैं जब वे कष्ट में गुरु को याद करते हैं तो गुरु उनकी सहायता करते हैं। उनके चाहे लाखों सेवक हों, सबके संग रहते हैं। मुक्ति के लिये केवल दो ही चीज़ें आवश्यक हैं, नाम और गुरु! कबीर साहिब ने फ़रमाया है, ‘नाम बिना मुक्ति नहीं, सन्त बिना नहीं नाम’।²¹

14 अप्रैल को बहुत-से लोग जो वैशाखी मनाने आये थे, चले गए। फ़सल की कटाई चल रही है। शाम को हुजुरी वाणी में से ‘सुरत संग सतगुरु धोवत मन को’²² लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि सन्त दृष्टि से, सिर पर हाथ रख कर और वाणी-वचन द्वारा जीव पर दया कर सकते हैं। सरदार गुलाब सिंह जी ने बताया कि सूक्ष्म शरीर नौ तत्त्वों का होता है, पाँच सूक्ष्म तत्त्व और चारों अन्तःकरण। कारण शरीर केवल पाँच कारण तत्त्वों का होता है। सरदार बलवन्त सिंह रावलपिण्डी वाले ने सत्संग में बताया कि एक आदमी और उसकी पत्नी दोनों ने हुजूर से नाम ले रखा था, परन्तु अपने लड़के से चोरी जोकि देव-समाजी था। वे दोनों तो मृत्यु को प्राप्त हुए, परन्तु उस देव-समाजी के एक लड़का था जो गुज़र गया और उसको स्वभावतः बड़ा दुःख हुआ। एक दिन वह सरदार साहब के पास आया और कहने लगा कि रात को एक अद्भुत घटना देखी। रात को स्वप्न में क्या देखता हूँ कि एक सूने व पहाड़ी जंगल में अकेला भटक रहा हूँ और अपने लड़के का नाम लेकर पुकार रहा हूँ। वृक्षों से पूछ रहा हूँ कि तुमने मेरा लड़का देखा है। इसी दशा में भटकते-भटकते एक मैदान में जा निकला। जहाँ एक शामियाना लगा हुआ था और पण्डाल बन रहा था। कुछ लोग जो वहाँ थे उन्होंने कहा कि तुम ज़रा ठहरो। महाराज जी सत्संग के लिये आ रहे हैं। थोड़ी देर में हुजूर पधारे और मुझे नाम लेकर पुकारा और कहा कि तुम मेरी ओर देखो। जब आँखें उठाकर देखा तो महाराज जी के फैलाये हुए हाथ के बाजू में से बिजली का-सा प्रकाश निकल रहा था और उनकी आँखों के नूर से पण्डाल में प्रकाश ही प्रकाश था। उस प्रकाश को देखकर दिल से सारा मोह निकल गया।

महाराज जी ने फ़रमाया कि देखो अब सत्संग होनेवाला है। तुम सत्संग सुनकर जाना। इतने में मेरी आँखें खुल गईं। जो हुजूर का हुलिया वर्णन किया वह हुजूर महाराज जी से मिलता था और उस देव-समाजी ने हुजूर को पहले कभी नहीं देखा था।

15 अप्रैल को कर्नल सैंडर्स साहिब भी सत्संग में उपस्थित थे। शाम को छः बजे के लगभग श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से शब्द पढ़ा गया। भाषा के विषय में (राज़ी-ब-रज़ा रहने पर) मालिक की मौज़ में ही खुश रहने पर। हुजूर ने

फ़रमाया कि रोग, दुःख-सुख, गरीबी और अमीरी को सन्तोष, शान्ति व धन्यवाद के साथ भोग लेना चाहिये। सतगुरु सूली की सूल करके भुगतवाते हैं। अतः बाबा जी महाराज के समय में एक बीबी की दाढ़ में सख़ा दर्द हो रहा था। लोग बार-बार बाबा जी महाराज की हुजुरी में जाकर प्रार्थना करते थे परन्तु बाबा जी टस से मस नहीं होते थे। अन्त में एक प्रेमी सत्संगी के हठ करने पर उन्होंने फ़रमाया कि उस बीबी ने पहले जन्म में एक लड़का जेवर के लालच में मार डाला था। उसका बदला वह लड़का दाढ़ में कीड़ा बनकर ले रहा है। क्या यह गुरु की दया नहीं है कि उस बच्चे का पूरा-पूरा बदला नहीं दिलवाया गया ?

सत्संग के बाद हुजूर गेहूँ की फ़सल कटवाने खेतों में चले गए। वहाँ से आकर रात के दस बजे तक डाक देखते रहे।

16 अप्रैल से 22 अप्रैल तक मैं डेरे से अनुपस्थित रहा। 22 अप्रैल की शाम को हुजूर की सेवा में उपस्थित हुआ तो प्रोफ़ेसर जगमोहन लाल साहब अमेरिका की डाक सुना रहे थे। अमेरिका के किसी सत्संगी ने लिखा था कि वह शारीरिक रोगों का इलाज आत्मिक-शक्ति से कर रहा है। उसको उत्तर दिया गया कि ऐसा करने से आत्मिक उन्नति में बाधा पड़ती है। इसके बाद शाम को भोग डालने के बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से छोटा-सा शब्द लिया गया, जिसका तात्पर्य यह था कि यदि वाहेगुरु को मिलना है तो अहम् का नाश करो।

23 अप्रैल को हुजूर ने एक मेम को नाम दिया। फिर डाक देखी। शाम को स्वयं हुजुरी वाणी में से 'जग में घोर अंधेरा भारी' ²³ शब्द का सत्संग किया। हुजूर ने फ़रमाया कि पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और चारों अन्तःकरण अर्थात् मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, यह सब चौदह मनुष्य के शत्रु हैं। ये सब मनुष्य से बुरे कर्म करवा कर फिर धर्मराय के दरबार में उसके विपरीत गवाही देते हैं। यही बात श्री गुरु ग्रन्थ साहिब व मौलाना रूम की मसनवी में आई है। जिस संसार में जीव एक दूसरे को खा रहे हैं, वहाँ अँधेरा नहीं तो और क्या है ? क्योंकि अनाज के दानों, पौधों तथा जानवरों में भी आत्मा है। ईश्वर सर्वव्यापक है। लोगों ने इस परदेस को अपना देश समझ रखा है। इसलिये इसी के लिये लड़ते मरते हैं और मर कर यहीं पैदा होते हैं तथा दुःख-सुख भोगते हैं। सन्त कहते हैं कि इस परदेस को छोड़कर

सत्तलोक निश्चल धाम में चलकर बसो। आजकल हुजूर का स्वास्थ्य कुछ बिगड़ा-सा रहता है। कमजोरी मालूम पड़ती है। हुजूर ने फ़रमाया कि तुम मेरी बाहरी सूरत देखकर कहते होंगे कि अच्छा स्वस्थ पुरुष है, परन्तु मेरे अन्दर बिलकुल ताकत नहीं रही। जिससे हम सबको बहुत ही रंज और दुःख हुआ।

24 और 25 अप्रैल मासिक सत्संग के दिन थे। संगत बहुत कम आई क्योंकि लोग फ़सल काटने में व्यस्त थे। बादल छाये हुए थे। 24 अप्रैल शाम को सत्संग में 'गुरु गुरु मैं हिरदे धरती' ²⁴ पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि हज़रत बायजीद बुस्तामी जब कभी समाधि में जाते तो मस्ती में कह उठते - 'मैं खुदा हूँ, मैं खुदा हूँ'। इससे मौलवी लोग आग-बबुला हो गये। उनके शिष्यों ने उनका ध्यान इस ओर आकर्षित किया तो आपने फ़रमाया कि अब जब कभी मैं ऐसी बात मुँह से निकालूँ तो तुम मुझे अपनी मन-पसन्द सज़ा देना। सो एक बार मस्ती में उनके मुख से वही वचन निकलने लगा, 'मैं खुदा हूँ, मैं खुदा हूँ'। इस पर चेलों ने अपनी-अपनी लाठियों और चाकुओं से उन पर वार किये। किसी ने गर्दन पर, किसी ने सिर पर, किसी ने हाथ इत्यादि पर। दिन चढ़े जब हज़रत का ध्यान नीचे उतर आया तो देखा कि जिस शिष्य ने शरीर के जिस भाग पर छुरी मारी थी वह छुरी हज़रत बायजीद को न लगी बल्कि उस शिष्य के अपने ही उसी अंग पर लगी और वह ज़ख्मी हो गया।

25 अप्रैल को जेम्स परवुड जालन्धर छावनी में पधारे। 'नाम निर्णय' ²⁵ का शब्द लिया गया, 'काया कामण अत सुआल्यो पिर वसै जिस नाले।' ²⁶

26 अप्रैल को हुजूर ने नाम दिया। कोई 129 बीबियाँ थीं, जिनमें से लगभग 29 की आत्माएँ नाम देते ही सिमटकर प्रकाश में चली गईं। हुजूर ने फ़रमाया कि ये उनके हृदय की सादगी व पवित्रता का फल है।

27 अप्रैल को मेम साहिबा जाने से पहले हुजूर से विदाई की आज्ञा लेने गईं। मैंने अनुवादक के रूप में काम किया। मेम साहिबा को बताया गया कि सिमरन करते समय किसी बाहरी ध्यान की ज़रूरत नहीं। यदि मन सिमरन में नहीं लगता हो तो मन को ठहराने के लिये सतगुरु-स्वरूप का ध्यान दे दो। परन्तु किसी फ़ोटो, तस्वीर या मूर्ति का ध्यान मना है। क्योंकि बेजान जानदार को नहीं खींच सकता। जो महात्मा अन्दर खण्डों-ब्रह्माण्डों पर जाता है, उनके स्वरूप का

ध्यान करना चाहिये। उनकी मूर्ति या फोटो का ध्यान बिलकुल व्यर्थ है और पुराने गुजरे हुए महात्माओं जैसे राम चन्द्र जी, कृष्ण जी, कबीर साहिब, गुरु नानक देव जी, हज़रत ईसा मसीह के फोटो का ध्यान बिलकुल व्यर्थ है। उनकी तस्वीरें अलग-अलग देशों में अलग-अलग ढंग से बनती हैं और कलाकार अपनी कल्पना के अनुसार उनके नक्श व रंग इत्यादि बनाता है और यदि उन महात्माओं की असली तस्वीरें भी हों तो भी तस्वीर बेजान है, जानदार को आकर्षित नहीं कर सकती।

हुज़ूर ने फिर फ़रमाया कि मैं सारा उपदेश पाँच नाम का और शब्द सुनने का तरीक़ा एक ही बार इसीलिये बता देता हूँ और इसलिये कहता हूँ कि अभ्यासी को अपने अभ्यास में कुछ समय शब्द सुनने पर भी देना चाहिये ताकि यदि अभ्यासी की मौत आ जाये, तो मौत से पहले वह अष्ट-दल कमल में पहुँचकर खींचने वाले शब्द को सुने, तो फिर उसको जन्म न लेना पड़े, क्योंकि मुक्ति शब्द के निचले भागों में से ध्यान को निकालकर आँखों के पीछे जमा कर लेना चाहिये, फिर शब्द सुनना चाहिये ताकि शब्द साफ़-साफ़ और आकर्षित करनेवाला हो और आत्मा को ऊपर खींचे। चाँद लोक से नीचे शब्द रस तो देता है परन्तु आत्मा को ऊपर नहीं खींचता। जैसे कि एक गाय का बछड़ा बँधा हुआ है। यदि गाय को खोल भी दें तब भी वह कहीं भाग नहीं सकती, क्योंकि उसका प्यार बछड़े में है। इसी प्रकार जब तक मन का प्यार दुनिया के सामानों व रिश्तेदारों में है, शब्द उसको कैसे उठाये। जब सबका प्यार छोड़कर आत्मा सूक्ष्म देश को पार करेगी तो शब्द आत्मा व मन को उठाने लगेगा।

मेम साहिबा ने पूछा कि सुबह जब मैं सोकर उठती हूँ तो मुझे उदासी-सी मालूम होती है। मैंने तो डॉक्टरों विचार से कह दिया कि अवश्य किसी शारीरिक दुर्बलता या रोग के कारण होगा। परन्तु हुज़ूर ने बड़े पते की बात कही और तुरन्त कही। यह कि जब सांसारिक लोग नींद से जागते हैं तो उनका मन अपनी-अपनी उस चीज़ या सम्बन्धी का ध्यान करके तुरन्त मग्न हो जाता है, जिससे उसका लगाव और प्यार है। चूँकि मेम साहिबा सांसारिक लगावों से स्वतन्त्र हैं, उनके मन को जागने पर किसी ऐसे सहारे के न मिलने की वजह से सूनापन मालूम होता है।

इसलिये तबीयत में गिरावट यानी खुशी का अभाव रहता है। ज्यों-ज्यों अभ्यास करके अन्दर शब्द और गुरु से प्रीति लगती जायेगी यह दूर होता जायेगा। मेम साहिबा कल पहाड़ को खाना हो जायेंगी।

आज शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से गुरु राम दास जी का शब्द पढ़ा गया 'नाम मिलै मन त्रिपतीऐ बिन नामै धृग जीवास।' ²⁷ देखो गुरु साहिब के मन में नाम का कितना प्रबल प्यार था। हम लोग हैं कि संसार का प्यार मन से निकालना हमारे लिए अति कठिन हो गया है। आज एक सुनार ने, जो अमृतसर का रहनेवाला है, शिकायत की कि मेरा लड़का मेरी आज्ञा में नहीं रहता। हुज़ूर ने जवाब दिया कि तुम उसकी परवाह न करो। यह सांसारिक सम्बन्ध केवल धोखा व माया का जाल हैं। लेन-देन से पैदा हुए हैं। जब लेना-देना निपट गया तो कौन बाप कौन बेटा। इसी विषय में हुज़ूर ने एक वार्ता, शेर सिंह सवार की, जोकि रावलपिण्डी फ़ौज में नौकर था, बताई कि वह अपने वेतन का कुछ भाग फ़ौज के बनिये के पास जमा करा देता था। होते-होते यह रकम 2,000 के लगभग हो गई। उस समय शेर सिंह को एक लड़ाई में सीमा की ओर जाना पड़ा। वहाँ जाकर अचानक उसकी घोड़ी, जिस पर वह सवार था, ऐसी मुँहज़ोर हो गई कि दुश्मन की फ़ौज की ओर भाग निकली, जिसका परिणाम यह हुआ कि पठानों की गोलियों ने दोनों को छलनी कर दिया और दोनों वहीं ढेर हो गये। शेर सिंह के घर वालों को बनिये के पास रखी अमानत का पता नहीं था। वे बाक़ी सामान तो ले गये परन्तु अमानत बनिये के पास रही। उसने अपनी बहियों में जमा-खर्च कर ली कि वह लावारिस मर गया। उसके बाद 20-25 वर्ष का समय बीत गया। बनिया रावलपिण्डी के बड़े दुकानदार से सौदा इत्यादि खरीदा करता था। वह दुकानदार एक बार गंगा-स्नान को गया और वह बनिया वहाँ से काम समाप्त करके अपने ज़िले सहारनपुर में आ चुका था। दुकानदार रास्ते में उस बनिये से मिला। बनिया उसको बाग़ों की सैर करवाने ले गया। फिर घर ले आया और खीर इत्यादि उत्तम भोजन उसके आगे खाने के लिये रखे। अभी दुकानदार भोजन कर ही रहा था कि साथ वाले कमरे में से रोने-पीटने की आवाज़ आई। दुकानदार चौंका तो बनिये ने बताया कि उसका 18 वर्ष का लड़का चार-पाँच दिन पहले मर गया था और उसकी विधवा स्त्री रो रही है। उस पर दुकानदार बहुत क्रोधित हुआ कि तुमने ग़ज़ब किया। तुम बड़े पत्थर-दिल हो कि तुम्हारे जवान बेटे की मृत्यु हो जाये, पीछे विधवा छोड़ जाये और

तुम हमको ऐसे-ऐसे खाने खिलाओ। बनिया हँसा। उसने कहा, मुझे बेटे के मरने का ग़म नहीं है। जब मेरा बेटा बीमार हुआ तो मैंने उसका बहुतेरा इलाज किया। अन्त में जब वह मरने के करीब था तो एक मौलवी साहिब को धागा तावीज करने के लिये घर लाया गया। उसने तावीज करके दिया। मैंने उसको ढाई रुपये दिये तो लड़का हँसा। मौलवी ने कहा कि देखो, तुम्हें मेरे तावीज से फ़ायदा हो गया। इस पर लड़के ने कहा, हाँ, पक्का फ़ायदा हो गया। जब मैंने पूछा तो कहने लगा कि अब मेरी मौत का वक़्त करीब है, मुझे पहले जन्म का सारा हाल मालूम है। मैं वही शेर सिंह हूँ। जितना रुपया तुमने अमानत का खर्च किया था वह अब पूरा हो चुका है, केवल ढाई रुपये मौलवी जी को देने बाकी थे। यह जो मेरी पत्नी है, यह वही घोड़ी है जो मेरी मृत्यु का कारण बनी थी। अब यह सारी आयु विधवा होकर रोयेगी। न तुम मेरे बाप हो, न मैं आपका लड़का। मैं तो वहीं शेर सिंह सवार हूँ। इतना कहकर लड़के ने दम तोड़ दिया। सो दुनिया के सम्बन्धी लेन-देन के कारण आते हैं। लेना-देना पूरा हो गया, बिछुड़ गये, रिश्ता ख़त्म हो गया।

हुजूर ने फ़ैसला किया कि हर बुधवार को मौन व्रत धारण करेंगे। यह फ़ैसला उनके स्वास्थ्य के लिये बहुत ज़रूरी था और बहुत पहले से हो जाना चाहिये था। आज बुधवार है। हुजूर विश्राम कर रहे हैं। मैं अमृतसर डेरे का काम करके शाम के 7 बजे वापस आ गया। 29 अप्रैल को सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से गुरु अर्जुन देव जी का शब्द 'बिरखै हेठ सभ जंत इकट्ठे'²⁸ पढ़ा गया, जिसमें कर्म दार्शनिकता पर रोशनी डाली गई। सरदार गुलाब सिंह जी ने कहा कि सब शास्त्र, वेद और दूसरी धार्मिक पुस्तकें इस पर सहमत हैं कि कर्म का फल ज़रूर भोगना पड़ेगा। यह मनुष्य की ग़लती है कि वह सोचता है कि 'एह जग मिट्ठा अगला किन डिट्ठा।' भगवद् गीता में लिखा है कि सौ कल्प गुज़र जाने पर भी कर्म का फल भोगना पड़ता है। 998 चौकड़ी युगों का एक कल्प होता है। हुजूर ने फ़रमाया कि पहले जन्म के संस्कारों के कारण मनुष्य की बुद्धि भी भ्रष्ट हो जाती है। जब भीष्म पितामह अन्त समय में बाणों की शैल्या पर लेटे हुए ज्ञान की बातें कर रहे थे तो द्रोपदी देखकर हँसी। भीष्म ने पूछा कि हँसी की क्या बात है? वह बोली कि जब दुर्योधन की सभा में आपके सामने मुझे नंगा करने की कोशिश की जा रही थी तो आप चुप थे, उस समय आपका ज्ञान कहाँ गया था। भीष्म ने कहा कि बेटी! मैं दुर्योधन का अन्न खा-

खाकर बुद्धि भ्रष्ट कर चुका था। इसी तरह जब बुरे कर्मों का दौर आता है तब बुद्धि भी अपना असर नहीं करती। मनुष्य बुद्धि के तर्क को नहीं मानता, मन के कहे में आ जाता है। कर्म का फल अवतारों तक को भोगना पड़ता है। रामायण में आया है कि 'सिय रघुबीर कि कानुन जोगू। करम प्रधान सत्य कह लोगू'²⁹

सरदार गुलाब सिंह जी ने बताया कि राजा भोज ने ज्योतिषियों से पूछा कि उसने अपने पूर्व जन्म में कौन-कौन सा शुभ काम किया था जिसके बदले में उसको राज्य का सुख मिला? ज्योतिषियों ने कहा कि इस शहर में फलाँ एक शूद्र-स्त्री है, उससे जाकर पूछो। जब उस शूद्र-स्त्री के पास राजा गया तो उसने कहा कि अमुक पहाड़ी पर एक साधु धूनी रमाये बैठा है, उसके पास जाओ। अतः राजा साधु के पास गया। उस समय साधु ने अपना ध्यान विष्णुपुरी ले जाकर वहाँ से विमान उतारे और राजा को उसमें बैठा कर बैकुण्ठ में ले गया। वहाँ सुन्दर महल तैयार हो रहे थे। पूछने पर बताया गया कि यह महल राजा भोज के लिये बनाये जा रहे हैं। जब दोनों वापस उतरे तो साधु ने कहा, राजन्! पहले जन्म में मैं, तुम और वह शूद्र-स्त्री भाई-बहन थे और वह बुढ़िया जो पहाड़ों में नग्न पागल होकर घूम रही है, हमारी माता थी। हमारा पिता छोटी उम्र में ही गुज़र गया था। एक बार हम दो दिन से भूखे थे। बचपन का ज़माना था। हमारी माँ कहीं से आटा माँगकर लाई, जिससे उसने चार रोटियाँ पकाईं। जब एक-एक रोटी चारों में बँट गई तो एक साधु-महात्मा द्वार पर आकर भीख माँगने लगा। हमारी माता ने कहा हम स्वयं भूखे हैं तुम्हें रोटी कहाँ से दें और क्रोध में उसकी चादर खींचकर उसे नग्न कर दिया। साधु शान्ति वाला था, चुप रहा। फिर हमारी बहन ने कूड़े-करकट का टोकरा साधु पर फेंक दिया। मैंने चूल्हे में से जलती लकड़ी लेकर साधु को मारी। परन्तु तुमने सोचा कि यह साधु अवश्य बड़ा भूखा होगा जो डटकर खड़ा है। तुमने अपनी रोटी में से आधी रोटी उसको दे दी। उसका फल तुम्हें राज्य मिला। मुझे गर्म आग के सामने धूनी से शरीर को तपाने का, हमारी बहन को शूद्र का और माता जी को जंगलों में फिरने का काम मिला। सो कर्म का फल हर एक जन्म में असर करता है। मनुष्य-जन्म में अच्छे कर्म करने चाहिये।

सत्संग के बाद मौसम कुछ ठण्डा हो गया। हुजूर राय साहब के थड़े पर आकर बिराजमान हुए और अन्धेरा होने पर वहाँ से चले गए। हुजूर ने फ़रमाया

कि पाँच-पाँच, छः-छः जन्म पहले के सम्बन्ध वाले जीव लेन-देन के कारण उनके आसपास जमा रहते हैं।

30 अप्रैल से यह नियम लागू कर दिया है कि लोग हुजूर के दरवाजे के सामने सुबह जमा न हों बल्कि बाहर सत्संग हॉल में जमा हों और हुजूर वहाँ सुबह एक घण्टा पधारें, वहाँ दर्शन दें और लोगों की प्रार्थनाएँ सुनें। इस तरह सुबह की भीड़-भाड़ व शोर-शराबा रुक गया। शाम को 'कबीर साखी-संग्रह' में से 'सेवा' का अंग लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि पूर्ण सन्तों की प्रारब्ध नहीं रहती। केवल देखने के लिये प्रारब्ध रह जाती है। इसलिये ज्योतिषी उनकी जन्म-कुण्डली देखकर प्रारब्ध कर्म का अनुमान नहीं लगा सकते। फ़रमाया कि जब उनकी टाँग की हड्डी टूटी तो उनको पाँच वर्ष कष्ट उठाना था, जो केवल पाँच महीने में भुगतवा कर दूर किया गया। पहले तो आपके शरीर के रहने की कोई आशा न थी। डॉक्टर लोग निराश हो गये थे। परन्तु जब बाबा जी को तार दी गई कि आपका शरीर समाप्त होनेवाला है तो उन्होंने अन्तर-दृष्टि से देखकर फ़रमाया कि नहीं जाता। इसी प्रकार कई सत्संगियों ने अलग-अलग घटनाएँ वर्णन कीं कि किस प्रकार सतगुरु ने अपनी दया से कठिन समय में सांसारिक मामलों में भी उनकी सहायता की। हुजूर ने फ़रमाया कि एक बार बाबा जी महाराज महिमासिंहवाला, जिला लुधियाना में हुजूर के यहाँ पधारे और अपने कमरे में लेटे हुए थे। जैसे कोई नींद में बातें करता है। बातें कर रहे थे कि हुजूर उनके कमरे में आये और चुपके से एक कोने में बैठ गये। जब बाबा जी महाराज नींद में से उठे तो हुजूर ने पूछा कि आज हुजूर कहाँ गये थे और किससे बातें कर रहे थे। तो बाबा जी महाराज ने पूछा कि क्या तुमने सारी बातें सुन लीं? उनके जवाब देने पर कि हाँ सुन लीं, बाबा जी ने फ़रमाया कि किसी से कहना नहीं। आजकल हमारे फ़ौजी सेवक माला कुण्ड लड़ाई में धिरे हुए हैं उनको हौंसला देने के लिये गये थे। इसी प्रकार गुरु अर्जुन देव और काबुल के दुकानदार, जिसका तराजू का बट्टा पाँच पैसे भर कम था, उनकी चर्चा चल पड़ी।

हुजूर कल सुबह प्राईवेट कमरे में एक जाट से बातें कर रहे थे। हुजूर के पास हँसी की कहानियों का, जो न समाप्त होनेवाला भण्डार है, उसमें से यह कहानी सुनाई कि एक जाट ने अपनी दाढ़ी दो सौ रुपये में बेच दी और नाई ने वह दाढ़ी काट कर अलग रख दी। उसके बाद बनिये ने अपनी दाढ़ी बेचने का

सौदा 1,000 रुपये में किया और रुपया ले लिया। जब नाई उसकी दाढ़ी काटने लगा तो बनिया बोला कि अरे, यह तो बादशाह की दाढ़ी है यदि काटेगा तो बादशाह फाँसी पर लटका देगा। इस पर नाई डरा और बनिये को एक हजार रुपया भी हाथ लग गया और दाढ़ी भी रही। इस पर जाट को बहुत क्रोध आया। कहने लगा मेरी दाढ़ी का दो सौ और बनिये की दाढ़ी का एक हजार? मैं नहीं लेता, यह तो अपने रुपये और वापस करो मेरी दाढ़ी। अतः जाट ने दो सौ रुपये वापस कर दिये। दाढ़ी भी गई और रुपये भी।

1 मई को महन्त इन्द्र सिंह, जो ऐबटाबाद गाँव का था, का मृतक भोग था। महन्त इन्द्र सिंह का नियम था कि जाड़े के आरम्भ में ऐबटाबाद से आ जाता और सिरसे मिल में जाकर बेलनों में गन्ने देने का काम करता और इतनी मेहनत से करता कि सारा दिन सुबह से शाम तक अपनी जगह से न हिलता। हुजूर उससे प्रसन्न थे। उसकी मौत डेरे में हुजूर के चरणों में हुई। बीमारी से तंग आकर एक दिन उसके कहने पर उसकी चारपाई उठाकर हुजूर के द्वार के सामने रख दी गई। जब हुजूर सुबह को बाहर आये तो कहने लगा कि या मेरा इधर फ़ैसला कर दो या उधर। अतः एक-दो रोज़ में वह चल बसा। मृतक के भोग में पहले नवें गुरु का शब्द 'गुन गोबिंद गायो नही' ³⁰ पढ़ते हैं। उसके बाद गुरु अमरदास जी की 'सद' पढ़ते हैं, जोकि उनके ज्योति-ज्योत समाने के हाल के बारे में है। उन्होंने हुक्म दिया कि हमारे मरने पर कोई न रोये क्योंकि मैं अपने मित्र, सृष्टि के कर्ता को मिलने जा रहा हूँ, मुझे खुशी है। ऐसा सुना है कि हुजूर बाबा जी महाराज ने अपनी चढ़ाई से कुछ समय पहले फ़रमाया कि यदि कोई मनुष्य परदेस में बहुत-सा रुपया कमा कर घर को जानेवाला हो तो यदि कोई उसको रोके तो उसको कितना बुरा लगेगा। ऐसे ही हमने भजन-सिमरन की दौलत इकट्ठी कर ली है। अब हमारी अपने देश जाने की तैयारी है। कोई हमें यह न कहे कि और यहाँ रहो। 'सद' के बाद राग माला पढ़ी जाती है। जिसमें छः राग- भैरव, मालकौस, हिण्डोल, दीपक, श्री राग, मेघ राग और उनकी पाँच-पाँच रागनियाँ और आठ-आठ राग हैं।

आजकल सिरसा जाने की तैयारियाँ हैं, फिर देहली और पिसावा जायेंगे।

2 मई इतवार को फिर भोग का शब्द सरदार भगत सिंह जी ने पढ़ा। सरदार साहिब ने फ़रमाया कि यह शब्द नवीं पातशाही ने उस समय उच्चारण किये थे

जबकि उनके वध का हुक्म हो चुका था और एक तरह से वह स्वयं ही सिर देने के लिये गए थे। उनको मरने का कोई गम व डर मरने का नहीं था। हुजूर ने फ़रमाया कि सन्त किसी को, जो कि उनको हानि पहुँचाता है, शाप नहीं देते। इसी को स्पष्ट करने के लिये सरदार साहिब ने बताया कि हज़रत अली को लड़ाई में शत्रु के हाथों घातक ज़ख्म आया तो शत्रु को भी घातक ज़ख्म लगा था। उसको भी बन्दी बनाकर लाये। हज़रत अली को ज़ख्म के कारण बहुत प्यास लगी थी। उनके लिये शर्बत का प्याला लाया गया, तो उन्होंने कहा कि उसकी ज़रूरत मुझ से ज्यादा है, उसको पिला दो। सो वह प्याला उस व्यक्ति को पेश किया गया परन्तु उसने पीने से इनकार कर दिया। इस विचार से कि उसमें कहीं जहर न मिला दिया गया हो। जब हज़रत अली के पास प्याला वापस लाया गया तो हज़रत ने फ़रमाया कि यदि वह मर जाता तो मैं उसको पहले स्वर्ग में भेजकर स्वयं पीछे जाता। शेख़ सादी ने फ़रमाया है :

शुनीदम कि मरदाने राहे खुदा दिले दुश्मनाँ हम न करदंद तंग।

तुरा कै मुयस्सर शवद ई मुकाम कि बा दोस्तानत ख़िलाफ़ अस्तो जंग।¹¹

अर्थात्, सुना है कि गुरुमुख लोग शत्रुओं का भी दिल नहीं दुखाते परन्तु तुम्हें वह पदवी कैसे मिल सकती है जबकि तू मित्रों के भी विरुद्ध है और उनसे शत्रुता रखता है।

आज सत्संग जल्दी समाप्त कर दिया गया। एक सत्संगी ने लिखा कि एक अभ्यासी ने उसको बताया कि अभ्यास की सफलता के लिये ये तीन चीज़ें बड़ी ज़रूरी हैं। लंगर से रोटी न खाओ। किसी को न अपना कपड़ा दो न लो। किसी को अपने कमरे में न आने दो। हुजूर ने फ़रमाया कि है तो सच, परन्तु गृहस्थियों से यह बातें निभ नहीं सकती।

3 मई को हुजूर शाम को रेलवे स्टेशन ब्यास पर रेलवे ट्रक में सिरसा के लिये लकड़ियाँ लदवाने गए। वहाँ से नौ बजे आकर एक भोग की रस्म अदा की। फिर 10 बजे के बाद भोजन करके लकड़ियाँ लदवाते रहे। यहाँ तक कि ढाई बज गये, उस समय हुजूर ने विश्राम किया। परन्तु साढ़े चार बजे फिर जाग उठे क्योंकि सिरसा जाना था।

अध्याय 6

देहली के रास्ते सिकन्दरपुर और पिसावा के दौरे की घटनाएँ

हुजूर का सिरसा का सफ़र और वहाँ निवास

4 मई को सुबह साढ़े पाँच बजे मोटर कार में सवार होकर ठीक 1 बजे दोपहर को सिरसा के सत्संग-घर में पहुँच गये। रास्ते में दो-दो मिनट के लिये जालन्धर शहर, फ़िल्लौर व लुधियाना ठहरे। मलोट मण्डी साढ़े ग्यारह बजे पहुँचे तो गर्मी, धूप और लू सताने लगी। मलोट से आगे डबवाली और सिरसा तक सब रेगिस्तान है। पानी की कमी है। लोग धूप में फ़सलें काट रहे थे। अभी बहुत-सा अनाज बाहर खेतों में था जो जमींदारों के घरों में नहीं पहुँचा। सिरसा सत्संग-घर में दो-चार मिनट बातें करके, ग्रेवाल मिल्स में आये। वहाँ एक-दो साथी मिले, उनसे थोड़ी देर बातचीत करके सिकन्दरपुर आये। रास्ते में मल्हड़सर का इलाका आता है, जहाँ कमाद, गेहूँ और ज्वार की फ़सल काफ़ी होती है। वास्तव में मल्हड़सर संस्कृत शब्द मल-हर-सर होगा अर्थात् मैल दूर करनेवाला तालाब। मानो इस क्षेत्र में पूर्व काल में हिन्दुओं के समय में एक प्रसिद्ध तालाब था जिसका नाम मल्हड़सर था। तालाब तो अब कहीं दिखाई नहीं देता परन्तु नाम चला आता है।

सिकन्दरपुर में अच्छे, बड़े-बड़े और ऊँचे कमरे हैं, इसलिये गर्मी कुछ कम महसूस होती थी, परन्तु यहाँ लुधियाना, जालन्धर और अमृतसर की अपेक्षा गर्मी बहुत अधिक है। दोपहर को नौद का आना कठिन है। हम सब लोग स्नान व भोजन करके सो गये। हुजूर रात-भर के जागे हुए थे। ख़ूब सोये। रात को 9 बजे जागे।

5 मई, 1943 को हुजूर ने फ़रमाया कि मुझे यहाँ डेरे से अधिक आराम है। मैं स्वयं भी ऐसा ही महसूस करता हूँ। शाम को हुजूर आँगन में चौकी पर आ बिराजे। हम सब लोग उनके चरणों में दरी पर बैठ गये। इधर-उधर की बातें होती रहीं। इतने में लाला राम दास, जोकि सिरसा में कोर्ट इन्स्पेक्टर हैं और हुजूर के पुराने सेवक हैं तथा हुजूर के पोते सरदार चरन सिंह वकील, दोनों तौंगे में सिरसा से आये। उनसे उनके विभागों की बातें होती रहीं। सुबह सरदार पुरुषोत्तम सिंह अम्बाले से वापस आ गये और यह खुशखबरी सुनाई कि वह लेफ़्टिनेण्ट के ज़बानी इण्टरव्यू में पास हो गये हैं। 132 में से 11 उम्मीदवार चुने गए। अब सरकार को कमीशंड अफ़सरों की ज़रूरत कम होती जाती है। यह तो आरम्भिक बोर्ड था। अब अन्तिम बोर्ड शायद तीन-चार हफ़्ते में देहरादून में होगा।

आज सुबह 8 बजे हुजूर खिलवाड़े को देखने गये। वहाँ से वापस आकर बाहर के आँगन में शाम की तरह कुर्सी पर बिराजमान हुए। हुजूर के परिवार के लोग और उनके सुपुत्र सरदार बचिन्त सिंह उपस्थित थे। सरदार सतनाम सिंह का सबसे छोटा बालक खेलता-खेलता कभी हुजूर के जूते पर सिर रखता, कभी हुजूर के ऊपर चढ़ने की कोशिश करता। हुजूर उसे बड़े प्यार से देखते। हज़रत मुहम्मद साहिब के विषय में भी ऐसी ही कहानियाँ मशहूर हैं कि उनको अपने 'नवासों', हसन और हुसैन से बड़ा प्यार था। फिर सर कोलिन गारबेट का प्रेम-नामा हुजूर को सुनाया गया, जिसमें उन्होंने बताया है कि वह क्रदम-क्रदम पर महाराज जी की सहायता को महसूस करते हैं। यही हाल सब सत्संगियों का है। हर रोज़ ऐसे पत्र आते रहते हैं कि किस प्रकार हुजूर अपने सेवकों की सांसारिक तथा परमार्थी दुःख-तकलीफ़ में दूर-दूर के स्थानों पर सहायता व रक्षा कर रहे हैं। 12 बजे के लगभग यह सभा समाप्त हुई। महाराज जी अपने कमरे के अन्दर चले गए।

6 मई शाम को 5 बजे हुजूर सिरसा में संगत से मिलने जा रहे हैं। शाम के 6 बजे केरे से होकर हम लोग सिरसा सत्संग-घर पहुँच गये। हवा गर्म थी। वहाँ जाकर दूध सोडा पिया। इसके बाद मैं और सरदार चरन सिंह, एस. डी. ओ. साहिब से मिलने चले गए। वे बड़े प्रेम-भाव से मिले। जब वापस आये तो सत्संग

में 'धुन सुन कर मन समझाई' का शब्द पढ़ा जा रहा था। हुजूर ने फ़रमाया कि खुदा तो इनसान के शरीर में है, परन्तु वह उसको बाहर जंगलों, पहाड़ों और अरब देश के मैदानों में खोजता फिरता है। एक सैयद साहिब ठेकेदारी करते थे। महाराज जी, जोकि अफ़सर इंचार्ज थे, से प्रार्थना की कि मेरे बिल का शीघ्र भुगतान कर दिया जाये क्योंकि मैं हज़ यात्रा को जा रहा हूँ। हुजूर ने रुपया दे दिया तो वह ठेकेदार खुश होकर हुजूर से पूछने लगा कि मेरे लायक वहाँ की कोई सेवा हो तो हुक्म करें? हुजूर ने उत्तर दिया कि वहाँ के खुदा को मेरा सलाम कह देना। इस पर ठेकेदार ने हैरान होकर पूछा कि क्या वहाँ कोई और खुदा है? इस पर हुजूर ने फ़रमाया कि फिर तुम वहाँ क्या ढूँढ़ने जा रहे हो? जब सैयद साहब वहाँ से वापस आये तो उनसे पूछा कि क्या मक्के में खुदा मिला? उन्होंने कहा कि खुदा तो वहाँ कहीं नहीं देखा।

सत्संग के बाद हम सब लोग सिकन्दरपुर वापस आ गये। जहाँ पर हुजूर रात के साढ़े दस बजे तक आँगन में बैठे रहे। बन्दरों की चर्चा चल पड़ी। हुजूर ने फ़रमाया कि बन्दर पकड़ने का सबसे आसान ढंग यह है कि उसके सामने भंग के लड्डू, जिनमें खाने की वस्तु मिली हो, डाल दो। खाते जायेंगे और सोते जायेंगे। फिर कुछ भी उनसे कर लो।

सुबह 7 बजे के करीब हुजूर, सरदार हरबन्स सिंह, मैं और भाई शादी बकबोर्ड में सवार होकर दड़बी देखने गए। रास्ता बड़ा ऊबड़-खाबड़ था तथा मोटर कार के लायक न था। बहुत मोड़-तोड़ आते रहे। कई जगह से रास्ता तंग था। दड़बी, सिकन्दरपुर से पूर्व की ओर तथा थेहड़ी रसूलपुर से उत्तर की ओर है। हुजूर ने जो मकान खरीदा है, वह गाँव के इसी ओर के सिरे पर है और वहाँ बागड़ी हिन्दुओं का मोहल्ला है। मकान के अन्दर आँगन है। वहाँ चारपाइयाँ बिछी थीं। वहाँ कुछ ठण्डक थी, बाहर गर्मी और धूप थी। वहाँ से निपट कर हम सब बड़े भाई साहिब के साथ, जो हमसे पहले ही अपने तौंगे में सवार हो चुके थे, उनके घर पर गये। वहाँ जाकर खाना खाकर लेट गये। दोपहर को गर्मी व धूप बहुत थी परन्तु उनके कमरे ठण्डे थे। मैं तो वहाँ खूब सोया और शाम के 6 बजे हम सब वहाँ से चल कर वापस सिकन्दरपुर आ गये।

हुजूर की देहली की यात्रा और वहाँ निवास

7 मई को सुबह साढ़े पाँच बजे मोटर कार में सामान लाद कर मैं, हुजूर, सरदार पुरुषोत्तम सिंह व भाई शादी सिरसा को चल दिये और रास्ते में सत्संग-घर भी नहीं गये, बल्कि सीधे रेलवे स्टेशन पहुँचे। वहाँ गाड़ी लेट थी। वहाँ हुजूर प्लेटफार्म पर कुर्सी पर बिराजमान रहे। बीबियाँ और पुरुष आसपास इकट्ठे हो गये। मुझे कुर्सी पर बैठने का हुक्म दिया। लाला कुंज लाल, वकील भी हिसार से आये हुए थे। हमें सेकेंड क्लास का एक पूरा डिब्बा मिल गया। सिरसा में रेलवे स्टेशन पर मिस्टर सोहन सिंह भण्डारी और कृष्ण लाल, भटिण्डा से लकड़ी लदवा कर आ पहुँचे। लाला कुंज लाल तो हिसार में उतर गये। वहाँ बहुत-से सत्संगी दर्शनों को आये थे। वहाँ से सरदार जगजीत सिंह को नई देहली में एक तार भेजा गया कि शाम को गाड़ी पर देहली रेलवे स्टेशन पर हुजूर के लिये मोटर कार भेज दें। सरदार साहब और उनका सारा परिवार हुजूर से बड़ा प्रेम रखता है और हुजूर ने भी मुझसे स्वयं अपने मुखारबिन्द से कहा कि मुझे उनसे प्रेम है। रास्ते में भिवानी स्टेशन के क़रीब सबने अपने डिब्बे में ही खाना खाया। धूप बड़ी तेज़ थी और गर्मी तथा रेत का ज़ोर था। रेत छिद्रों में से अन्दर आकर गिर रही थी। हर एक-आध घण्टे के बाद तौलिये से सीट को झाड़ना पड़ता था। हुजूर लेट गये। मैं और पुरुषोत्तम दूसरी सीट पर एक-दूसरे की ओर टाँग करके लेटे रहे और सोने की कोशिश करते रहे। रास्ते में दादरी का स्टेशन आया, जहाँ कि मिस्टर डालमिया ने कुछ दिन पहले ही सीमेण्ट का कारखाना लगाया है और अब वहाँ चहल-पहल है। आखिर शाम के 3 बजे हमारी गाड़ी रिवाड़ी पहुँच ही गई।

वहाँ से एक गाड़ी देहली को 2 बजे जा चुकी थी। अब साढ़े चार बजे से पहले कोई गाड़ी न थी। सेकेंड क्लास में कुछ भीड़ मालूम होती थी, परन्तु एक टिकट कलेक्टर साहिब सौभाग्य से आ गये और इंटर क्लास के सब फ़ौजी निकाल दिये। डिब्बा खाली हो गया। गर्मी बड़ी थी। अन्त में रेल रिवाड़ी से चल दी। इस ट्रेन में एक सरदार साहिब गुड़गाँव जा रहे थे। रास्ते भर हुजूर से सवाल पूछते रहे। कहने लगे कि एक सिक्ख कहता था कि मुझे गुरु नानक साहिब के दर्शन होते हैं। हुजूर ने जवाब दिया कि गुरु नानक साहिब, प्रभु में समा कर, उसका रूप हो चुके हैं। उन्हें इस संसार में क्या करना है। उस सिक्ख से कह दो

कि अब गुरु नानक साहिब के दर्शन हों तो उनसे नम्रता से पूछे कि आपका कौन-सा धाम है ? मुझे कब वहाँ ले चलोगे ? मुझे क्या करना चाहिये ? यदि गुरु नानक साहिब उनके सवालों का जवाब दें तो वह समझ ले कि अवश्य वह बड़ा भाग्यवान् है कि उसको परम-सन्त गुरु नानक साहिब के दर्शन हुए। परन्तु यदि वे चुप रहें और उसके सवालों का जवाब न दें तो समझे कि मन का धोखा है। मन की कल्पित मूर्ति, जिसको वह गुरु नानक साहिब मानता है, उसके सामने आती है, गुरु नानक साहिब नहीं आते। चेतन के लिये चेतन का ध्यान ज़रूरी है, न कि जड़ का। जड़ चेतन को नहीं खींच सकता।

देहली छावनी से बाबू लोग सौदा इत्यादि लेने देहली जा रहे थे। कुछ के हाथों में थैले थे। हमारे डिब्बे में घुस आये। टिकट बाबू आ गया। उसने सबको चार्ज किया। हुजूर ने फ़रमाया कि इसी तरह जो परमार्थ नहीं कमाते, वे रास्ते में अटकेंगे। रेलवे स्टेशन पर सरदार साहिब की कार तैयार थी। वहाँ से हम सब सवार होकर नं. 7, दरियागंज पहुँच गये। बाबू हेमचन्द्र जी भार्गव के पाँव में सूजन थी, चल-फिर नहीं सकते थे। हुजूर भी जब सिरसा से चले तो पाँव में बड़ा ज़ख़्म था। देहली आकर अधिक हो गया। बाबू हेमचन्द्र जी को कुछ आराम हो गया। वह चल-फिर सकते थे। कुछ प्रेमी लोगों ने मुझे बताया कि हुजूर ने बाबू जी का बोझ अपने ऊपर ले लिया है। भगवान ही जाने। बाबू जी ने बड़ी आवभगत की। पीने को बर्फ़ का पानी, सरदाई, लस्सी, दूध, सोडा इत्यादि। खाने को देहली के रिवाज के अनुसार पक्का खाना व मिठाइयाँ। जिसको मालिक धन दे और साथ ही खर्च करने का दिल दे, वह बड़ा भाग्यशाली है। नहीं तो दुनियादार हर प्रकार के तरीक़े से दौलत इकट्ठी करके भोग-विलास तथा बुरे कामों में खर्च करते हैं। देहली में हर रोज़ सुबह व शाम को सत्संग होता रहा।

9 मई इतवार की शाम को हुजूर ने नामदान दिया। 100 के क़रीब स्त्री-पुरुषों ने नाम लिया। देहली के हिन्दू लोग या तो कामकाज में मस्त हैं या मूर्ति-पूजा में। नगर की जनसंख्या की अपेक्षा उनकी हाज़री इतनी नहीं थी जितनी कि उम्मीद हो सकती थी। सुबह 11 बजे सर श्रीराम साहिब देहली क्लाइथ मिल वाले आए। एक घण्टा हुजूर से परमार्थी बातचीत करके विदा हुए। उन्होंने कहा कि वे

अधिक समय जनता के कार्यों के लिये देते हैं, मिल का काम दूसरों को सौंप दिया है। यह विचार उनको मुबारक हो और पूरा हो। ऐसे पुरुषों की इस देश को बड़ी आवश्यकता है, जो सच्चे दिल से लोगों का भला करने की कोशिश करते हैं। उसी शाम को एक और मिल के मैनेजर साहिब अपनी धर्मपत्नी के साथ, हुजूर को मोटर कार में अपने निवास-स्थान पर ले गये। हुजूर ने वापसी पर फ़रमाया कि ये पति-पत्नी, दोनों प्रेमी और खोजी हैं।

हुजूर का पिसावा का दौरा

10 मई, 1943 को दरियागंज देहली से हमारा सामान ताँगों में लदवा कर, श्री अमर नाथ भार्गव की देख-रेख में 8 बजे रेलवे स्टेशन को रवाना कर दिया गया। हम सब लोग सवा नौ बजे के लगभग कार और ताँगों में, पिसावा जाने के लिये रेलवे स्टेशन पर आ गये। श्री अमरनाथ भार्गव ने हमारा सारा सामान फ़र्स्ट क्लास के रिज़र्व डिब्बे में लदवाया हुआ था, टिकट ले रखे थे। हम सब उनके प्रेम और मेहरबानी के बड़े आभारी हैं। हमें जाते ही आराम से जगह मिल गई, यद्यपि गाड़ी में बड़ी भीड़ थी। हमारे साथ दोनों भार्गव भाई व मेहता साहिब फ़ोटोग्राफ़र भी थे। इंटरक्लास में बीबी लाजवन्ती व बीबी रक्खी यात्रा कर रही थीं। परन्तु उनके डिब्बे में इतनी भीड़ थी कि तिल रखने को जगह न थी। बहुत-से सत्संगी स्त्री-पुरुष दर्शनों के लिये, प्लेटफ़ार्म पर उपस्थित थे। धूप तेज़ थी। महाराज जी ने आज्ञा दी कि हम यह नहीं सहन कर सकते कि हम लोग अन्दर छाया में बैठे रहें और तुम लोग धूप में खड़े रहो। सब अपने-अपने घरों को जाओ। सो बहुत-से लोग मत्था टेककर, घरों को लौट गये। मैंने रेलवे पुस्तक भण्डार पर जाकर ई.आई.आर. और बी.बी. एण्ड सी.आई. के टाईम टेबल माँगे, परन्तु सब ख़त्म हो चुके थे। उर्दू का समाचार-पत्र भी कोई नहीं मिला, क्योंकि पहले दिन इतवार था। अंग्रेज़ी समाचार-पत्र लिया और हुजूर को अखबार में से यह ख़ुशख़बरी सुनाई कि इंग्लैण्ड के बादशाह ने हमारी सरकार की अफ़्रीका में लड़ने वाली फ़ौजों को बधाई का सन्देश भेजा है कि उत्तरी अफ़्रीका जर्मनी से स्वतन्त्र करा लिया गया है।

खुरजा के स्टेशन पर पिसावा के रईस और ज़मींदार राव बहादुर शिवध्यान सिंह साहिब, हुजूर के स्वागत को आये हुए थे। एक हाथ में हरी-हरी ककड़ियाँ

का छोटा-सा बण्डल जिसमें पतली-पतली और नरम-नरम ककड़ियाँ, पतले-पतले साँपों की तरह, लटक रही थीं। दूसरे हाथ में बारीक लाहौरी नमक की पुड़िया थी। हुजूर को मत्था टेककर हमारे डिब्बे में आ बैठे। बहुत-सी संगत यहाँ उतर गई। उनके लिये दो-तीन हाथी व बैल-गाड़ियाँ उपस्थित थीं। पिसावा यहाँ से कच्ची सड़क के रास्ते 8 मील दक्षिण-पश्चिम को है। परन्तु हमें दो रेलवे स्टेशन और आगे जाना था क्योंकि सोमना से 14 मील पक्की सड़क पिसावा पहुँचा देती है। यह सड़क देहली से कलकत्ता जाने वाली ग्राण्ड ट्रंक रोड से निकलती है। हुजूर देहली से हम सबके लिये खाना साथ लाये थे। यह निश्चय किया गया कि भोजन सोमना के विश्राम-गृह में किया जाये, क्योंकि गाड़ी एक बजे सोमना पहुँच जाती है। जब सोमना पहुँचे तो हमारे लिए तीन मोटर कारें उपस्थित थीं, परन्तु सामान भी अधिक था। विश्राम-गृह में भोजन करने के लिये स्थान न था। अन्त में सामान कारों में रख कर और कुछ सामान नौकरों को देकर, कि ताँगों में रखकर ले आये, हम पिसावा को चल दिये।

जिस कार में हुजूर और मैं थे उसको ख़ुद राव साहब चला रहे थे। एक तो जनाब ने मोटर चलाने का अभ्यास कई दिनों से छोड़ा हुआ था, दूसरे हुजूर की मौजूदगी की वजह से, मस्त हो रहे थे। कुछ दूर जाकर पानी उबलने लगा और धुआँ निकलने की बू आने लगी। उतरे तो देखा कि बाल-बाल बचे। ब्रेक पहिये से जाम हो चुकी थी और पिछला बायाँ पहिया घसीटा जा रहा था। जनाब अपने प्रेम में हुजूर से बातचीत कर रहे थे और पहिया बाहर गिरनेवाला था। ऐसा गर्म था कि हाथ नहीं लगाया जा सकता था। आखिर दूसरी कार को ख़ाली करवा कर हुजूर, मैं और राव बहादुर चल पड़े ताकि जो लोग पीछे रह गये हैं उनके लिये यही कार दोबारा भेज देंगे। जब पिसावा की आबादी के करीब पहुँचे तो बड़ी भारी भीड़ थी। एक फाटक रेल का, लोगों ने जान-बूझ कर बन्द कर दिया था कि कार रुके और वे हुजूर के दर्शन कर सकें। उन लोगों के बीच में से निकलकर राव बहादुर के निवास-स्थान से परे दोनों ओर स्त्री और पुरुष हज़ारों की संख्या में खड़े थे। हर तरफ़ से 'राधास्वामी' तथा 'पा-लागन' की आवाज़ें आ रही थीं। मेहता साहिब उतर कर, अपना कैमरा ताने, फ़ोटो ले रहे थे। राव

*5 मील 8 किलोमीटर के बराबर होता है।

बहादुर मुगल बादशाहों के समय के, खानदानी रईस व ज़मींदार हैं। उनका निवास-स्थान एक बड़े क़िले की तरह है, जिसमें बहुत-सी इमारतें, मैदान, चबूतरे, बारादरियाँ, अतिथि-गृह व रहने के मकान हैं। अमीरी ठाठ हैं। हुजूर उतरते ही सत्संग में तशरीफ़ ले गए, जहाँ हज़ारों की संख्या में बच्चे, लड़कियाँ, स्त्रियाँ, पुरुष बैठे थे। मैं सामान सँभालता रहा। दूसरी कार जो बिगड़ गई थी, वह भी सौभाग्य से आ गई। यहाँ पंजाब से ज़्यादा तेज़ धूप व गर्मी है। हम सबने खाना खाया। हुजूर ने विश्राम किया।

मुझे राव बहादुर साहिब ने एक अकेला कमरा अपने गुड़खाने में रहने के लिये दिया और गुड़खाने के नीचे एक तहखाना है जिसमें मेरे बाकी साथी भी ठहराये गए। हुजूर के लिये दोपहर को बारादरी, जिसके चारों ओर बरामदा और ऊपर नीम की छाया है, निश्चित की गई और रात के लिये एक चौबारा जिसके सामने व दोनों ओर खुले-खुले सहन हैं, दिया गया। राव साहिब ने कृपा करके मेरे कमरे की खिड़की में खस की टट्टी लगवा दी, जिस पर नौकर कभी-कभी पानी छिड़कता रहता है। परन्तु मुश्किल यह है कि उसका एक द्वार उस कमरे की ओर खुलता है जिसमें गुड़ का गोदाम है। इसलिये गुड़ की हल्की-हल्की गन्ध हर वक़्त दिल व दिमाग को ताज़ा रखती है। दूसरे आजकल गर्मी के मौसम की मक्खियाँ गुड़ की गन्ध पर मस्त होकर इस कमरे में हर समय नाचती रहती हैं। जब मैं खाना खाकर चारपाई पर लेटता हूँ तो वे गलती से यह मान लेती हैं कि मैं गुड़ का ढेला हूँ।

जब मुझे इस कमरे में ठहरे दो घण्टे हो गये तो एक ब्राह्मण देवता हाथ में खद्दर का थैला, बगल में चादर दबाये, बिना झिझक अन्दर आ घुसे और कपड़े उतारने लगे। क्योंकि धूप का समय था, ऐसा मालूम होता था कि या तो उन्होंने मुझे देखा ही नहीं, यदि देखा है तो उन्हें कमरे में मेरी मौजूदगी की परवाह नहीं। मैंने धीरे से कहा कि महाराज, इस कमरे को ताला लंगेगा तो फिर आपको कष्ट होगा। परन्तु उन्होंने मेरी इस बात को नहीं समझा और न ही मेरी इस दलील को, कि उनको तकलीफ़ होगी, माना। क्योंकि शायद उन्होंने सोचा होगा कि यदि ताला अन्दर से लगा तो हम दोनों अन्दर होंगे। इस हालत में हम दोनों को एक-सी तकलीफ़ होगी और यदि ताला बाहर से लगा तो उनका सामान बड़ा

सुरक्षित रहेगा। मैं इसी उधेड़बुन में था कि किस तरह इस देवता को यहाँ से विदा करूँ कि मेरा नौकर आ गया। उसने जो दलील दी वह मेरी निसबत अधिक व्यावहारिक थी। मेरी दलील ज़बानी जमा-खर्च थी। उसने आव देखा न ताव, आते ही ब्राह्मण देवता का सामान बाहर रख दिया और बोला कि आपके लिये सामने स्थान है। क्योंकि ब्राह्मण देवता को सामान से जुदाई अच्छी न लगती थी, मेरी जुदाई उनके लिये सहनीय हो गई। परन्तु चलते हुए मेरे कम्बख़्त नौकर ने, ब्राह्मण देवता का सोटा न देखा। वह मेरे कमरे में रह गया जिसका बुरा परिणाम अभी तक भुगत रहा हूँ, क्योंकि वह देवता समझते हैं कि उनकी जायदाद इस कमरे में भी है और कभी-कभी अन्दर आ जाते हैं।

तीसरा गुण जो इस कमरे में है, वह यह कि इस कमरे में एक मोरी है, जिसके कारण मैंने इस मोरी वाले भाग को स्नानगृह बना लिया है और एक ठण्डे पानी की सुराही भी रख ली है। परिणामस्वरूप यह कमरा प्यासे लोगों का केन्द्र बन गया है। चूँकि इस कमरे में एक-दो फालतू चारपाइयाँ और कुछ अलमारियों में यात्रियों का कुछ सामान भी रहता है, इसलिये इस कमरे में अच्छी खासी चहल-पहल रहती है। यदि मक्खियाँ व गर्मी किसी कारण से अपने कर्तव्य का पालन करने में सुस्ती करती हैं तो दूसरे लोग उनकी कमी पूरा कर देते हैं। इस पर तुरा यह है कि राव साहिब आज दोपहर के बाद दो बजे के लगभग, जब मैं खाना खाने के बाद आराम के लिये लेटने को तैयार हो रहा था, कुछ लड्डू लेकर आ गये और उनको मेरे आराम के लिये कमरे में एक छोटी-सी चिमनी (शैल्फ) पर रख गये। यदि कोई कमी थी तो बिलकुल पूरी हो गई। मक्खियों के लिये कई सामान खाने-पीने व आनन्द के हो गये। खैर, इस सांसारिक स्वार्थ को छोड़कर आत्मिक कार्य, जिसके लिये हुजूर यहाँ पधारे हैं, उसका वर्णन करना भी ज़रूरी है। हर रोज़ सुबह 8 बजे और शाम के 6 बजे सत्संग रहता है। इसके इलावा जिज्ञासु लोग हुजूर से बाकी समय में भी मिलकर लाभ उठा सकते हैं। यहाँ श्री ग्रन्थ साहिब की वाणी पंजाबी में होने की वजह से हुजूर उसका पाठ नहीं करवाते। हुजुरी वाणी में से 'यह तन दुर्लभ तुमने पाया'¹², 'जग में घोर अंधेरा भारी'¹³ और कबीर साखी-संग्रह में से 'सुमिरन का अंग'¹⁴ पढ़े गए।

11 मई शाम को तुलसी साहिब के दोहे पढ़े गए। सब लोगों ने सुनकर लाभ उठाया। राव बहादुर साहिब ने प्रार्थना की कि उनके क़िले जैसे महल की

चारदीवारी में जो नीम के वृक्ष उगे हुए हैं, उनका भी उद्धार किया जाये। हुजूर ने दयालता से फ़रमाया कि उनके नीचे नाम दिया जायेगा तो फिर कैसे उनका उद्धार न होगा ? इसी प्रकार घोड़े, बैलों, आमों के वृक्षों इत्यादि का हुजूर निर्णय करेंगे। यहाँ आम बहुत होता है। ख़ूब फलता और फूलता है, क्योंकि यहाँ पर कुएँ का पानी पृथ्वी की सतह से केवल 20 फुट पर होगा। जमुना और गंगा नदियों के बीच में यह प्रदेश है और जमुना नदी यहाँ से 5-6 मील होगी। गंगा नदी की नहर की शाखा इस प्रदेश को सींचती है। अतः पानी की अधिकता है।

12 मई को हुजूर और उनका स्टाफ़, दो कारों पर सवार होकर पिंसावा की आबादी में से गुज़रा। मेहता साहब, कश्मीरी फ़ोटोग्राफ़र ने स्थान-स्थान पर फ़ोटो लिये। आदमी, बच्चे, बूढ़े सब अपने-अपने घरों से निकलकर, दर्शनों को भागे। कई एक ने फूल बरसाये। एक दुकानदार ने फूलों का हार हुजूर को पहनाना चाहा, जो हुजूर ने नियमानुसार उसी के गले में डाल दिया। थोड़ी देर में डेरे के सब्जी वाले भाई मिलखी राम वही हार गले में डाले, आ गये। कहने लगे कि हुजूर यह हार दुकानदार ने मुझे दे दिया। हुजूर ने चुपके से फ़रमाया कि दुकानदार को क्रोध नहीं। यह नुक्ता विशेषकर सत्संगियों के लिये नोट करने का है। मलिक राधाकृष्ण साहिब का तार मुलतान से कल आया। हुजूर ने हुक्म दिया कि उनको सारा हाल राव बहादुर साहिब के प्रेम-भाव का लिखो।

शाम के सत्संग में हुजुरी वाणी में से 'नाम निर्णय'⁵ का शब्द पढ़ा गया। हुजूर 13 मई की सुबह को यहाँ 6 बजे चल कर, 8 बजे की गाड़ी खुरजे से पकड़ कर, 11 बजे देहली पहुँच जायेंगे और वहाँ शाम को एक कारख़ाना देखेंगे।

शाम को वहाँ पूर्व के रिवाज के मुताबिक़ बुधवार के दिन देहाती बाज़ार लगा, जिसमें बिसाती का सामान, सब्जियाँ, खदर, धोती, साड़ियाँ इत्यादि बिकने के लिये आईं। बाज़ार शाम के साढ़े सात बजे समाप्त हो गया।

13 मई सुबह को हुजूर ने बुलन्दशहर से आये हुए लोगों को नाम दिया। मेहता साहिब ने हमारी कुटिया की, जहाँ हम ठहरे हुए थे, फ़ोटो ली। फिर रथ का फ़ोटो लिया गया। यहाँ के रथ पंजाब के रथों से ज़्यादा आराम देनेवाले हैं अर्थात्, रथ की सतह बड़ी खुली और आयताकार होती है, जिसमें दो आदमी लेट सकते हैं। रथ के नीचे गद्दा लगा होता है और करीब एक-एक फुट चारों

ओर तार-सा लगा होता है जिससे सवारी यदि सो भी जाये तो नीचे न गिरे। रथ चलाने वाला, इस पालकी से बाहर बैठकर, बैल हाँकता है। आज मेहता साहिब रावलपिण्डी लौट गये।

आज शाम को कबीर साहिब का शब्द 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है'⁶ लिया गया। मनुष्य के शरीर में जितने चक्र हैं, उनमें नीचे का चक्र अपने ऊपर के चक्र से ताक़त लेता है और सारे चक्र दिमाग़ से ताक़त लेते हैं अर्थात् सतलोक से। जैसे कबीर साहिब ने लिखा है कि सूर्य और चन्द्र मण्डल को पार करो, वैसे ही गुरु नानक देव जी ने लिखा है :

पूरब हो पच्छम को आवे। रवि शश दोहां इकतर मिलावे॥

दक्खन से जो चढ़े सुमेर। आवे पर-दखन के फेर॥

पुरियाँ सात उते कमलासन। तित्थे पारब्रह्म का आसन॥

जिन हीरे रतने माल पिरोई। नानक कहे उदासी सोई॥⁷

हुजूर ने फ़रमाया कि आत्मा की चार चालें हैं : 1. चिऊंटी चाल- जब तक आत्मा व मन सिमटकर सूर्य तथा चन्द्र को पार नहीं कर लेते 2. मकड़ी चाल- जबकि आत्मा शब्द को पकड़कर ब्रह्म तक जाती है 3. मछली चाल- पारब्रह्म से आरम्भ होती है। 4. विहंगम (पक्षी) चाल- जो सतलोक में है। पारब्रह्म में दो अक्षर हैं। एक को छोड़ना है। एक को पकड़ना है। गुरु नानक- 'जे तू पढ़या पण्डित बीना दुइ अक्खर दुइ नावा। प्रणवत नानक एक लंघाए जे कर सच समावां।'⁸ फिर कहा है कि 'बावन अच्छर लोक त्रै सभ कछु इन ही माहें। ए अक्खर खिर जाहेंगे ओय अक्खर इन मह नाहें।'⁹

एक व्यक्ति ने सत्संग में खड़े होकर पूछा कि तक्रदीर और तदबीर में से कौन बड़ा है ? जवाब दिया गया कि पहले जन्म में जो-जो कर्म तदबीर के सिलसिले में किये गए अब वही तक्रदीर बन गये हैं। उनको ज़रूर भोगना पड़ेगा। किसी तदबीर से उनको बदल नहीं सकते। हाँ, जब तदबीर पहले जन्म में की थी उस वक्त इख़्तियार था अच्छे कर्म करने का। जैसे, किसान का इख़्तियार है कि अपने खेत में गेहूँ बोये या जौ। मगर जब फ़सल पक गई तो वही उसकी तक्रदीर बन गई। जिसने जौ बोए हैं वह गेहूँ नहीं खा सकता। हाँ, आगे उसके हाथ में है कि जौ बीजे या गेहूँ। परन्तु उसको इस फ़सल में तो जौ ही खाने पड़ेंगे।

14 मई संक्रान्ति को पिसावा के लोगों को नाम दिया गया जिनमें बहुत-से राव साहब के सम्बन्धी थे। कुल 400 स्त्री-पुरुषों को नामदान दिया गया। एक आदमी ने प्रश्न किया कि इस प्रकार तो सारे संसार की आत्माएँ यहाँ से सतलोक चली जायेंगी और यह लोक खाली हो जायेगा। परन्तु यह हिसाब का सवाल है। यदि असीम में से सीमित घटायें तो बाक़ी भी असीम ही रहता है। शाम को हुजुरी पोथी में से शब्द पढ़ा गया। हुजुर ने फ़रमाया कि गुरु-भक्ति क्या है ? काम, क्रोध आदि पाँच विकारों को छोड़ना। रात को मैं व दूसरे लोग आम लंगर में खाना खाने गए। पहले मैं हुजुरी लंगर में खाना खा रहा था। वहाँ खाने का प्रबन्ध बहुत उत्तम था। आटे में घी डालकर तन्दूरी रोटियाँ पकाई जा रही थीं, जोकि पक कर रेशम की तरह से नरम होती थीं। उनके साथ कद्दू व आलू की सब्जी थी, जिनके बनाने में ख़ूब घी डाला गया था। उसके साथ शलगम व आम का आचार तथा मुरब्बा इत्यादि और लखनऊ के सफ़ेद ख़रबूजे भी मिलते थे। एक विशेष प्रकार की दही का मट्ठा भी शकोरों में दिया जा रहा था, जिसको सन्नाटा कहते हैं, क्योंकि उसमें काली मिर्च इतनी अधिक थी कि एक घूँट पीने से ही शरीर में सन्नाटा पैदा हो जाता था। मेरा शकोरा भी सन्नाटे से भरा गया। परन्तु जब मैंने अपने पास वाले को एक घूँट पीकर सन्नाटा लेते हुए देखा तो मेरी हिम्मत शकोरे को छूने की नहीं हुई और उसने भी दूसरा घूँट लेने की हिम्मत नहीं की। इस इलाक़े के लोग पीते होंगे। यह प्रदेश हिन्दू जाटों का है। राव बहादुर साहिब उच्चकोटि के ज़मींदार हैं और सुना है कि वह गाँव उनकी जायदाद है। आसपास के बड़े-बड़े ज़मींदारों से उनका बड़ा भाई-चारा तथा मेल-जोल है। स्वयं राव बहादुर के गाँव पिसावा में तीन पत्नियाँ हैं। दो पत्नियाँ राव साहिब के चचेरे भाइयों की हैं और उनकी पत्नी नहर से सिंचाई होने के कारण बड़ी उपजाऊ है। राव साहिब का व उनकी बिरादरी वालों का आपस में बड़ा भाई-चारा तथा मेल-जोल और प्रेम-प्यार है। राव साहिब के लंगर व मेहमानों की आवभगत व सत्संग का प्रबन्ध इत्यादि, सभी काम इनकी बिरादरी के लोग बड़े प्रेम से कर रहे हैं। यह सब राव साहिब की उदारता के कारण है। आपस में तनाव, दुश्मनी व ईर्ष्या-द्वेष नहीं है जैसे कि पंजाब के देहात में देखे

जाते हैं। बड़े आराम व शान्ति से जीवन व्यतीत होता है। बहुत-से सम्बन्धियों ने नाम ले लिया है। राव बहादुर साहिब ने खुले दिल से हज़ारों रुपये हुजुर की संगत की सेवा में खर्च कर डाले हैं। उनकी बीबी, बच्चे, सब ही प्रेम से भरपूर हैं। उनकी सुपुत्री बीबी कृष्णा ने हुजुर की महिमा में शब्द बना रखे हैं जो सत्संग में पढ़े जाते हैं और लोग खुश होते हैं।

15 मई, 1943 सुबह को कोई सत्संग न था। हुजुर का समय राव बहादुर साहिब के सम्बन्धियों व कुछ बचे हुए अभिलाषियों को नाम देने के लिये नियुक्त हो चुका था। 10-11 बजे के बीच में हुजुर को सारे हथियार, बन्दूक व पिस्तौल आदि दिखाये गए, जिनकी संख्या काफ़ी थी। सुना है राव साहिब का छोटा लड़का बड़ा निशानेबाज़ है। शाम को 6-7 बजे सत्संग किया। कई सन्तों, दादू दयाल, पलटू साहिब व तुलसी साहिब की वाणियाँ पढ़ी गईं। दादू दयाल का प्रसिद्ध शब्द 'जानै अंतरजामी अचरज अकथ अनामी'¹⁰ पढ़ा गया। 'नौ लख कैवल जुगल दल अन्तर द्वादस साहिब स्वामी' का अर्थ फ़रमाया कि नौ द्वारों को पार करके 'कैवल' अर्थात् आँखों के बीच से गुज़र कर सहस्र-दल कमल में पहुँचो जिसको द्वादस कैवल भी कहते हैं, अर्थात् दस आवाज़ें वहाँ की, मन और सुरत या ज्योति और निरंजन, इस प्रकार 12 कमल वहाँ हैं। पलटू साहिब की वाणी में से 'उलटा कूवा गगन में तिस में जै चिराग'¹¹ शब्द पढ़ा गया। ज्ञान समाधि, सुन्न समाधि और सहज समाधि, यह तीन प्रकार की समाधियाँ बताई गई हैं। इसके पश्चात् तुलसी साहिब के छन्द जो घट रामायण के आरम्भ में ही हैं, पढ़े गये। 'सम सील लील अपील पेलै'¹² का अर्थ यह है कि तीसरे तिल के ऊपर विष्णु-चक्र या नील-चक्र को, जो पहुँच से बाहर है, जीत ले। 'धरि गगन डोरि अपोर'¹³ का मतलब उस शब्द से है जो सहस्र-दल कमल से त्रिकुटी तक ले जाता है अर्थात् वह शब्द धरन और गगन के बीच डोर है। 'अतूल कैवला'¹⁴ का अर्थ पारब्रह्म का कमल है जो कि मानसरोवर के बीच में है जिसमें से होकर ऊपर को रास्ता जाता है। 'जब ठाट घाट वैराट कीन्हो मीन जल कमला कली' का अर्थ है कि जब तक मैंने विराट को पार नहीं किया था तो मैं समझती थी कि यही सबकुछ है और उस पर ऐसी आशिक़ थी कि जैसे मछली पानी पर और भँवरा कमल पर। परन्तु जब सतलोक पहुँची तो पता चला कि यह दुनिया यानी विराट संसार धोखा और स्वप्न है।

16 मई, 1943 को सुबह 9 बजे मोटर कार में बैठकर हुजूर पिमाया से सोमना को चल दिये। गाड़ी एक घण्टा लेट थी। हम सोमना के रेलवे स्टेशन पर 7 बजे पहुँच गये। हुजूर प्लेटफार्म पर कुर्सी पर बिराजमान हुए, मैं व भाई शादी-पूजा का इंतजाम करने लगे। इधर-उधर नजर दौड़ाई, पर स्टेशन पर न किसी हलवाई की और न ही किसी मेवा, फल बेचने वाले की दुकान थी। परन्तु स्टेशन के सामने एक हलवाई की-सी दुकान नज़र आई। वहाँ गये तो दुकान में केवल पेड़े थे जिनमें मीठा भरा हुआ था। हलवाई को मनाया कि हमारे लिए आटे की पूरी व आलू की सब्जी जिनमें मिर्च न हो, तैयार कर दो। अतः पुरियाँ तैयार हुई और सबको खिलाई गई। अच्छी खासी थीं। हुजूर ने भी दो पुरियाँ खाई। रास्ते में एक खरबूजे वाले से एक रुपये के खरबूजे लिये जो कि मेरे व भाई शादी के भाग्य में खाने नहीं लिखे थे, क्योंकि जिस टोकरी में वे रखे थे वह हमने फिर नहीं देखी। पता नहीं कहाँ गई। राव बहादुर साहिब खुरजा के स्टेशन पर उतर गये क्योंकि उनको सत्संग का सामान वापस ब्यास के लिये बिल्टी करवाना था। हमने खुरजा में एक-दो अखबार लिये और शर्बत पिया। सेकेंड क्लास में काफी भीड़ थी। देहली में सरदार जगजीत सिंह की कार में हुजूर दरियागंज पहुँचे क्योंकि सरदार साहिब से वायदा हो चुका था कि हुजूर दिन व रात उनके मकान पर, जो कर्जन रोड, नई देहली में है, विश्राम करेंगे, इसलिये हुजूर संगत को दर्शन देकर बीबी रक्खी और लाजवन्ती के साथ नई देहली को चल दिये। मैं और भाई शादी दरियागंज में रहे। हुजूर शाम को 6 बजे फिर वापस पधारे। मैंने डाक सुनाई। 7 बजे सत्संग हुआ। हुजूर 1 बजे के करीब वापस नई देहली चले गए।

17 मई, 1943 को मैं और सरदार साहिब, सुबह साढ़े छः बजे, ताँगों में सामान लाद कर देहली रेलवे स्टेशन को चल दिये। जब वहाँ सामान उतार रहे थे तो हुजूर भी आ पहुँचे। दोनों बीबियों को बम्बई एक्सप्रेस में सवार कराया गया। हमारी गाड़ी में सवा घण्टा बाक़ी था। इसलिये छोटी लाईन के प्लेटफार्म पर एक घण्टा कुर्सी पर बैठे हुजूर संगत को दर्शन देते रहे। मैं व भाई शादी दूसरे प्लेटफार्म पर खाने-पीने में मस्त रहे। वहाँ मिस्टर अमर नाथ की कृपा से हमें सैकिण्ड क्लास का पूरा डिब्बा मिल गया। मिस्टर भार्गव रिवाड़ी तक हमारे साथ

थे। यात्रा में कोई कष्ट नहीं हुआ। रिवाड़ी से गाड़ी बटननी से पान्तु पैकेंड क्लास में कोई जगह न थी। इसलिये हम फर्स्ट क्लास के डिब्बे में बैठ गये। रास्ते में खाना खाया। यात्रा में खाने का बड़ा आनन्द आया क्योंकि बबू हेमचन्द्र जी ने कई प्रकार की मक्खियाँ टोकरी में डालकर दी थीं। गर्मी ज़ोरों पर थी। रास्ते में जादू-साने पर एक सैकेंड क्लास का डिब्बा खाली हो गया। मैं और दुर्गबोधम सिंह उसमें चले गये। हुजूर फर्स्ट क्लास में टिकट बदलवा कर वहीं रहे। गर्मी ज़ोरों पर थी। कई बार लैमनेड पिया और खरबूजे भी खाये गये। खुदा-खुदा करके शाम को साढ़े छः बजे सिरसा के स्टेशन पर आ पहुँचे। वहाँ मंगल ने हमारा सामान उठाकर कार व ताँगों में लाद दिया। हुजूर सत्संग-चर पधारे। वहाँ बर्फ़ वाला दूध सोडा पीकर बड़ा आनन्द आया। वहाँ से सवार होकर शाम के 8 बजे सिकन्दरपुर आये, जहाँ हुजूर बाहर के सहन में कुर्सी पर बिराजमान हुए। हम आसपास नीचे दरी पर बैठ गये। बड़ा सुहावना मौसम था। गर्मी बिल्कुल न थी। ठण्डी हवा चल रही थी। चाँदनी रात थी। हुजूर काश्तकारों से काम-काज की बातें करते रहे लेकिन हम सब खाना खाकर सो गये।

18 मई, 1943— सुबह को यह निश्चय हुआ कि हुजूर मोगा व अम्बाला की बजाय, लाहौर के रास्ते जायें, क्योंकि हुजूर के दाँती में तकलीफ़ है। इसलिये डॉ. जलालुद्दीन साहब, डेंटिस्ट को जवाबी तार दिया गया कि हुजूर 20 मई को लाहौर जायेंगे और डेरे में भी खबर दे दी गई है। अब 10 बजे हुजूर खलियानों को देखने गए हैं। मैं डाक लिख रहा हूँ। शाम को 8 बजे के करीब हुजूर फिर खलवाड़े घानी देखने गए और कई लोग साथ थे। अनाज के गट्टरों से भूसा और अनाज को साधारण तरीके से अलग नहीं किया जाता। बल्कि एक ट्रैक्टर मिट्टी के तेल से चलता है, जैसे कि कंकर की सड़कों को बनानेवाला इंजन। उसके पहियों में थोड़े-थोड़े फ़ासले पर लोहे की छुरियाँ-सी लगी होती हैं जो भूसे को काटती हैं और अनाज को अलग करती हैं। इस ट्रैक्टर के पीछे जंजीर से एक लोहे की सलाख चलती है। इस सलाख में लोहे के पतले-पतले पहिये लगे हैं, जो फिरते हैं और भूसे को बारीक करते हैं। उनके पीछे एक फला बाँध देते हैं जो भूसे को बारीक करके बैठाता आये। इससे आठ दस घंटों में लगभग 80 गट्टरों में से अनाज को अलग किया जा सकता है। रात के दस बजे हुजूर

वहाँ से वापस लौटे। रात बड़ी चाँदनी और साफ थी, आसमान नीला था। बादल का एक टुकड़ा भी आसमान पर न था और यह समय इस शान्त गाँव में बड़ा सुहावना लगता था।

19 मई, 1943— सुबह 9 बजे हुजूर फिर खलवाड़े चले गए। मैं घर पर डाक निकालता रहा। पण्डित नत्थूराम जी शुक्ल कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। उन्होंने मुझे ब्राह्मणों की जातियों का व्योरा दिया जो बड़ा रोचक है। उनके कहने के अनुसार ब्राह्मण दो भागों में बँटे हुए हैं। यह उनके प्रान्तीय रहन-सहन के अनुसार है। दक्षिण देश में द्राविड़ी ब्राह्मण हैं। उत्तरी भारत में गौड़। द्राविड़ी ब्राह्मणों की पाँच जातियाँ हैं— गुजराती, मराठी, तिलंग, तामिल और दरावन। उत्तरी भारत के ब्राह्मणों की दो बड़ी जातियाँ हैं— सारस्वत और गौड़। सारस्वत शब्द सरस्वती नदी से निकला है जो किसी समय सिरसा के पास बहती थी। सरस्वती नदी के उत्तर में पंजाब और कश्मीर इत्यादि में जो ब्राह्मण लोग हैं उनको सारस्वत कहा गया।

फिर गौड़ ब्राह्मणों की दो बड़ी जातियाँ हैं— गौड़ और सनाड्य। सनाड्य ब्राह्मण अधिकतर मेरठ की कमिश्नरी में बसते हैं। गौड़ के चार भाग हैं— गौड़, कान्यकुब्ज, सीथल, उत्कल। गौड़ तो राजपूताना, बागड़, आगरा डिवीज़न, मेरठ डिवीज़न, रुहेल खण्ड में रहते हैं। कान्यकुब्ज ब्राह्मण लखनऊ से बनारस तक आबाद हैं। वाजपेयी, शुक्ल, पाठक, मिश्र, द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी सब कान्यकुब्ज की शाखाएँ हैं। वास्तव में कान्यकुब्ज की दो बड़ी शाखाएँ हैं, कान्यकुब्ज और सरजूपारी अर्थात् सरजू नदी के पार रहनेवाले। सीथल ब्राह्मण बिहार में रहते हैं। उनकी दो बड़ी शाखाएँ हैं, झा और ओझा। अतः पण्डित जनार्दन वैद्य लाहौरी झा ब्राह्मण थे। उत्कल उड़ीसा को कहते हैं। उत्कल के दो बड़े गोत्र ठाकुर, सानियाल बंगाल में हैं। 'ठाकुर' को बिगाड़ कर 'टैगोर' बना लिया। 12वीं शताब्दी में राजा लक्ष्मण सैन बंगाल वाले ने लखनऊ की ओर से पाँच कान्यकुब्ज ब्राह्मण बुलाकर यज्ञ के समाप्त होने पर उनको पदवियाँ दी— चटोपाध्याय, मुखोपाध्याय, बन्दोपाध्याय, चक्रवर्ती, और भट्टाचार्य। जो ब्राह्मण उन पाँचों में सबसे विद्वान था उसको चक्रवर्ती की उपाधि दी। जो सबका आचार्य अर्थात् पूज्य

था उसको भट्टाचार्य कहा गया। अब यह नाम बिगड़कर चैटर्जी, मुकर्जी और बैनर्जी बन गये। पेशवा महाराष्ट्री चितपावन ब्राह्मण थे। मोंजे, अन्ने, सावरकर, चायकर, गोखले, तिलक, यह सब महाराष्ट्री ब्राह्मण हैं। आयर, आयंगर, आचार्य, शास्त्री यह दक्षिण ब्राह्मण हैं।

शाम को 5 बजे हुजूर सिरसा सत्संग-घर सत्संग करने गये। मैं वहाँ पर राय साहब, लाला आत्मा राम रईस (सिरसा) की बारात का जुलूस देखता रहा जिसमें कि हाथी, घोड़े और बगियौ थीं।

अध्याय 7

डेरे में निवास का हाल

लाहौर के रास्ते वापसी यात्रा

20 मई को 5 बजे सुबह मोटर कार में बैठकर डेरे के लिये चल दिए। लाहौर होते हुए अमृतसर, डेरे जाना था। कोटकपूरा से फ़रीदकोट होते हुए फ़िरोजपुर पहुँचे, वहाँ से क़सूर मिलयानी होकर सीधे मालरोड पर डॉक्टर जलालुद्दीन, डेण्टिस्ट की दुकान पर गये। रास्ते में कोई सत्संगी न मिला क्योंकि किसी को हमारे इस प्रोग्राम का पता नहीं था। हुजूर ने दाँत निकलवाया। दाँत निकलवाने के बाद डॉक्टर साहब के यहाँ एक-आध घण्टा ठहरे, जिससे खून का बहना बन्द हो जाये। डॉक्टर साहब बड़े भले आदमी हैं। बड़े प्रेम से मिलते हैं। वहाँ ही मियाँ फ़ख़रुद्दीन साहब, जो मेरे भाई के अफ़सर हैं और नहर विभाग में सुपरिण्टेण्डिंग इंजीनियर हैं, पधारे। उनसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने बताया कि वह भी जून के पहले सप्ताह में डलहौजी जा रहे हैं और 'स्वास्तिका' में ठहरेंगे। डॉक्टर से होकर सीधे रावी रोड सत्संग-घर पहुँचे। वहाँ एक नया चौकीदार था। सब सामान धूल से भरा हुआ और सब कमरे मिट्टी से अटे पड़े थे। उनको जल्दी-जल्दी साफ़ किया गया। हुजूर ने पलंग पर विश्राम किया। हम लोग खाना सिरसा से लेकर आये थे, वहाँ खाया। क्योंकि रात के सब जागे हुए थे, खूब सोये। शाम के 4 बजे संगत लाहौर में आनी शुरू हुई। हुजूर उनको दर्शन देकर 6 बजे डॉक्टर साहब के मकान पर दाँत बनवाने गए। वहाँ से दाँत लगवा कर 7 बजे अमृतसर की ओर चल दिये। आजकल लाहौर में मोटर कार, लारी इत्यादि की बड़ी चैकिंग है। रावी रोड पर पुलिस ने हमारी कार को रोका और परमिट देखा। फिर बड़े डाक़खाने के पास पुलिस पेट्रोल की पड़ताल कर रही थी। अमृतसर में स्वर्गीय लाला दुनी चन्द नागपाल के मकान पर गए क्योंकि लाला साहब अमृतसर सत्संग के बड़े प्रेमी सेवादारों में से थे। उनका देहान्त

अचानक हुआ। किसी को उनकी बीमारी का भी पता न चला। वहाँ आधा घण्टा ठहर कर रात को 9 बजे डेरे आ गये। 20 मई को पहली बार इस गर्मी में दोपहर के समय सख़्त लू चली। भाव यह कि अब से गर्मी ज़ोरों से पड़ने लगी है।

हुजूर का डेरे में निवास

क्योंकि राय साहिब के दामाद और उनके शेष सम्बन्धी शादी के अवसर पर आये हुए थे, हुजूर ने 21 मई की शाम को हुजुरी वाणी में से 'जग में घोर अंधेरा भारी' श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से पाँचवीं पातशाही का शब्द 'पाठ पढ़यो अरु बेद बीचारयो' पढ़ाया और सत्संग किया। हुजूर ने फ़रमाया कि जग में यूँ तो देखने में सूर्य का उजाला है। अँधेरा सोचने वाले के लिये है क्योंकि इस सृष्टि में जीव जीवों को खा रहे हैं। पानी में नौ लाख प्रकार के जीव हैं। वहाँ उनके लिये कोई खुराक नहीं है। बड़े जानवर छोटे को खाते हैं और छोटे कीड़े-मकौड़ों को। इसी प्रकार पृथ्वी पर भेड़, बकरियाँ, गाय, भैंस इत्यादि घास-फूस वनस्पति खाती हैं, जिनमें जान है और शेर, भेड़िये उनको खाते हैं। चिड़ियाँ कीड़े-मकौड़े खाती हैं, चिड़ियों को बाज खा जाते हैं और मनुष्य सब को खा जाता है। जितने अनाज के दाने हैं, सबमें आत्मा है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में आया है, 'जेते दाणे अन्न के जीआं बाझ न कोय'। ऐसे ही श्रुति में आया है कि आत्माएँ इस संसार से शरीर को छोड़कर देवयान और पितृयान मार्ग को पार करके फिर सूर्य और चाँद की किरणों के रास्ते इस संसार में उतरती हैं और फलों तथा अनाज इत्यादि में प्रवेश करती हैं। रस इन्हीं के कारण है। जब पुरुष इन फलों तथा अनाज इत्यादि को खाते हैं और स्त्रियों के पास जाते हैं तो उनके वीर्य द्वारा वह रूह गुज़र कर माता के गर्भ में प्रवेश करती है। हर आत्मा अपने कर्मों के अनुसार पशु, पक्षी, घास, वृक्ष, हैवान या इनसान की योनि में जाकर पैदा होती है। मतलब यह है कि इस संसार में विचारशील व्यक्ति के लिये अँधेरा है। किसी जगह अमन-चैन नहीं। इनसान से नीची योनियों में तो शारीरिक आराम भी नहीं है। मनुष्य इस सृष्टि में सबसे उत्तम है। इसको निचली योनियों के मुकाबले में अधिक आराम है। परन्तु कौन मनुष्य है जो दावा करे कि वह इस संसार में सुखी है। किसी को कोई दुःख है किसी को कोई। मानो यह संसार दुःखों का घर है। यहाँ कर्म प्रधान है। जैसे-जैसे इस संसार के लोग काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के फन्दे में फँसकर, कर्म करते हैं, दुःखी होते जाते हैं। सुख

का रास्ता यह है कि इस संसार में फिर न आयें और वह पूरे गुरु और नाम की कमाई के बिना सम्भव नहीं है। तीर्थ, व्रत, दान-पुण्य, यज्ञ, जप-तप, धर्म-पुस्तकों को पढ़ना निस्सन्देह अच्छे कर्म हैं परन्तु उनका फल इस संसार के आवागमन से मुक्ति नहीं। उनका फल अगले जन्मों में इस संसार में या स्वर्ग इत्यादि में मिल जाता है परन्तु स्वर्ग से भी इस संसार में वापस आना पड़ता है। केवल नाम की कमाई ऊँचे रूहानी देशों को ले जाती है, जहाँ से कि फिर नहीं आना पड़ता।

22 मई को सुबह हुजूर ने कुछ स्त्री-पुरुषों को नामदान दिया। शाम को सत्संग हुआ 'सतगुरु का नाम पुकारो' और 'चरन भए संत बोहिथा तरे सागर जेत'।⁵ इसके बाद डाक सुनाई।

24 मई सोमवार को सुबह 9 बजे मोटर कार में मैं हुजूर के साथ अमृतसर गया। वहाँ हुजूर तो अपने कमरे में चले गए, मैं इम्पीरियल बैंक में काम करने गया। वहाँ से दो बजे वापस आया। खाना खाया। हुजूर ने 4-5 बजे के बीच अमृतसर के सत्संगियों को ऊपर छत पर दर्शन दिये। इसके बाद लाला दुनी चन्द नागपाल के भोग की रस्म पर कार में गये। वहाँ भोग-वाणी पढ़ी गई। वहाँ से रात के 9 बजे के करीब वापस आ गये। 25-26 मई को घुमान गाँव में सत्संग करने गये।

27 मई को 10 बजे के करीब हुजूर घुमान से वापस आये। थोड़ी देर बाद आराम करके बलोचिस्तान के स्त्री-पुरुषों को नामदान दिया। कई दिनों की डाक इकट्ठी हो गई थी, वह सुनी। उसके बाद पटवारी व ज़ैलदार के साथ ज़मीनों का बखेड़ा निपटारते रहे। शाम के छः बजे के सत्संग में पधारे। सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से राग रामकली से चेतावनी का शब्द 'ज्यों आया त्यों जावह बौरें ज्यों जनमे त्यों मरण भया' पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि जो आदमी बिना नाम के मरते हैं उनकी आत्मा बाई और काल के मुख में जाती है और काल उनको चबाता है तो आँखों में आँसू और कभी-कभी डर से दस्त निकल जाता है। परन्तु मरने वाला दुःख का वर्णन करने लौट कर नहीं आता। सतगुरु और शब्द, ब्रह्म तक तो अलग-अलग रहते हैं। परन्तु पारब्रह्म में सतगुरु और शब्द दोनों एक हो जाते हैं। शरण का अर्थ यह है कि नौ द्वारों से मन और आत्मा को समेटकर चन्द्रमा से परे ले जाना, जहाँ कि सतगुरु का सूक्ष्म स्वरूप है। सरदार

गुलाब सिंह साहिब ने फ़रमाया बिना 'सम' और 'दम' के न तो सुरत-शब्द योग और न ही कोई और योग सफल हो सकता है। 'सम' का अर्थ है मन को रोकना है और 'दम' का अर्थ है इन्द्रियों का दमन, जिससे वीर्य का तत्त्व निकलकर दिमाग में, माथे में, ओजस बनता है, जो कि हरएक अंग को ताकत और बल देता है तथा चेहरे और माथे को नूर देता है। जहाँ तक हो सके, वीर्य को सुरक्षित रखना चाहिये ताकि ओजस बने। हुजूर ने फ़रमाया कि ब्रह्मचर्य हर आयु में लाभदायक है। जवानी में रखा जाये तो कुन्दन है परन्तु बुढ़ापे में भी स्वास्थ्य और भजन के लिये लाभदायक है। फिर कहा कि स्कूलों और कॉलेजों में सच्चे गृहस्थ-मार्ग की शिक्षा नहीं दी जाती।

सत्संग के समाप्त होने पर एक सत्संगिन ने अपनी माँ की सँभाल के बारे में ज़िक्र किया कि किस प्रकार अन्त समय हुजूर ने उसको दर्शन दिये। लाला बिशन दास पुरी ने अपनी माता की मृत्यु का ज़िक्र किया जिनका हाल ही में स्वर्गवास हुआ था कि हुजूर ने उनको और उनके पिता को भी अन्त समय में दर्शन दिये अर्थात् दोनों का उद्धार हो गया। हुजूर ने फ़रमाया कि ऐसा अकसर हो जाता है।

शाम को मुझे बुलाया। मनीआर्डरों पर हस्ताक्षर करवाये गए। हुजूर ने फ़रमाया कि उनको पेट में जलन-सी रहती है। परन्तु काम इतना है कि दवाई करने का समय नहीं मिलता और यह फ़रमाया कि गुज़ारा चल रहा है, वक्त गुज़र रहा है। सरदार जोध सिंह ने बलवर्धक दवाई बताई। कल सुबह हुजूर जालन्धर शहर तशरीफ़ ले जा रहे हैं।

28 मई को 6 बजे सुबह हुजूर के साथ मोटर कार में जालन्धर गये। कार सरकारी न थी, बल्कि मुन्शीराम सैनी कपूरथला वाले के लड़के ने नई ख़रीदी थी। सीधे सरदार भगत सिंह वकील की कोठी पर गये। वहाँ से हंसराज गोयल, प्लीडर का मकान देखकर कन्या महाविद्यालय में बीबियों को मिलने गए। प्रिंसिपल साहिबा बड़ी नेक स्त्री हैं। हुजूर से बड़े प्रेम-भाव से मिली। वहाँ से बस्ती शेखाँ में, जहाँ कि कोई शादी थी, गये। वहाँ क़व्वाली सुनाई गई। क़व्वाल हुजूर के दर्शन से बहुत ख़ुश हुए। वहाँ से शहर में आकर, ज़मीन, जो सत्संग-घर के लिये ख़रीदी गई है, वह देखी। यह ज़मीन बस्ती शेखाँ और शहर के बीच मिशन अहाते के पास है। यह समतल नहीं है। समतल करने में भी लागत

आयेगी। परन्तु यह ज़मीन बड़ी मुश्किल से मिली, वरना डी. ए. वी. कॉलेज वाले ख़रीदना चाहते थे। वहाँ से सरदार साहिब के मकान पर पानी पीकर डेरे 12 बजे पहुँच गये। राय बहादुर लाला शंकर दास आये हुए थे। दर्शन करके शीघ्र ही लायलपुर लौट गये।

शाम को 6 बजे सत्संग हुआ जो सरदार कृपाल सिंह लाहौरी ने किया। सरदार साहिब ने फ़रमाया कि सन्त-सतगुरु कमिशंड अफ़सर की तरह होते हैं। हुजूर ने फ़रमाया, नहीं, स्टाफ़ अफ़सर की तरह होते हैं। सरदार साहिब ने फ़रमाया कि सन्त दर्शन से, हाथ सिर पर रख कर और वाणी-वचन से जीव पर दया करते हैं। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'दरसन भेटत पाप सभ नासह' पढ़ा गया था। सत्संग के बाद हुजूर सेवा में बैठे और उसके बाद रात के दस बजे तक डाक सुनते रहे।

29 मई को दोनों समय, सुबह व शाम, सत्संग हुआ। सुबह के वक़्त 'गुरु गुरु मैं हिरदे धरती' पढ़ा गया। 'आत्म-परमात्म नहीं मानूँ' आत्म से मतलब है सहस्र-दल कमल। परमात्म से मतलब है त्रिकुटी या पारब्रह्म। योगियों के अनुसार इनके यही अर्थ हैं। शाम के समय सत्संग हुआ 'काल ने जगत अजब भरमाया। मैं क्या क्या करूँ बखान ॥' हुजूर ने बताया कि दुनिया में तीन प्रकार के लोग हैं। बेवकूफ़, जो कि मूर्ति-पूजा व दरियाओं में नहाना मुक्ति समझते हैं। बुद्धिमान, जो पढ़ने-पढ़ाने को मुक्ति का साधन मानते हैं। तीसरे, बीच के लोग जो कभी मूर्खों से मिल जाते हैं, कभी विद्वानों से और जप, तप, संयम इत्यादि कर्मों में मुक्ति मानते हैं। यह सब धोखे में हैं। उनको कर्मों का फल ज़रूर मिलेगा, परन्तु फिर-फिर इस दुनिया में जन्म लेंगे। पूरे गुरु व नाम के बिना मुक्ति नहीं।

एक अहमदी साहिब ने सत्संग में उठकर सवाल किया कि आप कुरान मजीद को खुदा की किताब मानते हैं या नहीं। जवाब मिला कि खुदा के यहाँ तो कोई ज़बान नहीं। जितनी किताबें, ग्रन्थ, वेद, शास्त्र, इंजील, कुरान इत्यादि हैं सब इनसानों की बनाई हुई हैं। अधिक से अधिक यह कह सकते हैं कि उन्होंने खुदा के कहने के अनुसार उनको बनाया, परन्तु किताबों में खुदा नहीं, खुदा इनसान में है, न कि धर्म-ग्रन्थों या मन्दिरों, मसजिदों, ठाकुरद्वारों व गुरुद्वारों में।

30 मई को सुबह नौ बजे सत्संग हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'बिख बोहिथा लादया'¹⁰ और हुजुरी वाणी से भादों का महीना पढ़ा गया। जैसे कि भादों

में मलेरिया बुखार में इनसानों को प्यास और जलन लगती है वैसे ही दुनिया में तीन तापों- आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक और आशा-तृष्णा से लोग बीमार हैं। इच्छा रूपी प्यास कभी नहीं मिटती। जितना अधिक बुझाने का प्रयत्न करता है उतनी अधिक भड़कती है। इसी कारण जीव आवागमन के चक्र में फिर रहा है। कादियानी साहिब ने सवाल किया कि मैं इस आवागमन को इस तरह से नहीं मानता कि रूह आदमी से निकलकर हैवान या परिन्दों में जाती है। हुजूर ने फ़रमाया कि हमें अपने बहुत-से जन्मों का ज्ञान है और हमारा तजुर्बा है कि रूह आवागमन के घेरे में है। कुरान मजीद ने वेद की तरह 'ला इल्लाह' कह दिया, अर्थात् अल्लाह से परे कुछ नहीं। जैसे वेद ने 'नेति-नेति' कह दिया। सन्त कुरान व वेद से आगे गये हैं। मौलाना रूम ने अपनी मसनवी चौथी मंज़िल से शुरू की है। कुरान शरीफ़ पहली मंज़िल यानी अल्लाह तक का हाल बतलाता है।

30 मई शाम को एक हिन्दुस्तानी कर्नल साहिब अपनी बीवी साहिबा के साथ डेरे में तशरीफ़ लाये और सत्संग-हाल देखकर व हुजूर के दर्शन करके वापस चले गए।

31 मई को हुजूर ने 300 के करीब स्त्री-पुरुषों को नामदान दिया। बरखुर्दार सफ़र अल्ला ख़ाँ ने हरड़ खाने की तरकीब नीचे लिखकर भेजी है और बताया है कि किस-किस मौसम में किस-किस चीज़ और अनुपात के साथ हरड़ की ख़ुराक खानी चाहिये :

त्रिफला

मौसम का नाम	मात्रा	अनुमान
चैत्र, वैशाख	भुनी हुई काली हरड़ 6 माशे	शहद ख़ालिस 6 माशे
ज्येष्ठ-असाढ़	"	क्रन्द स्याह 6 माशे
सावन-भादों	"	नमक लाहौरी 6 माशे
आसोज-कार्तिक	"	मिश्री सफ़ेद 6 माशे
मगसिर-पोह	"	जंजील 6 माशे
माघ-फाल्गुन	"	फ़लाफल दराज़ 6 माशे

1 जून, 1943 शाम के छः बजे बहुत-से लोग अपने-अपने घरों को चले गए हैं। डेरे की आबादी पहले जितनी ही हो रही है। हुजूर की मेहनत को देखिये कि दोपहर के डेढ़ बजे जब नाम दे चुके तो उसके बाद कार में रेलवे स्टेशन ब्यास पर सड़क पर काम करनेवालों का निरीक्षण करने गये। वहाँ से आकर एक-दो सत्संगियों को विदा किया। फिर नहाये और खाना खाया।

2 जून सुबह हुजूर ने सत्संग किया। फिर डाक सुनी और फिर हुजूर ने एक सत्संगी की शादी की। शादी में केवल दो मिनट लगे होंगे। न कोई पोथी पढ़ी गई न मन्त्र। हुजूर ने दुल्हा-दुल्हन को अपने पास बुलाया और उनको प्रसाद दिया और फ़रमाया कि जाओ, तुम्हारी शादी हो गई। असल में शादी क्या है? अगर दुल्हा-दुल्हन एक-दूसरे से शादी करने में राज़ी हैं और उनमें प्रेम-प्यार है तो बस शादी है। बाक़ी सब बन्दोबस्त सोसाइटी ने इसलिये रखा है कि शादी का इश्तहार हो जाये और शादी जल्दी न टूट सके। बाक़ी सब रस्में हैं और धर्म के ठेकेदारों ने अपनी शान बढ़ाने के लिये तथा रुपया कमाने के लिये बना रखी हैं। शादी के बाद, एक और मियाँ-बीवी में, जो अपने माँ-बाप की बेवकूफी से आठ-नौ साल से अलग रह रहे थे, समझौता करवाया। मज़े की बात यह है कि मियाँ-बीवी में कोई ख़ास अनबन न थी। पति व पत्नी दोनों के पिता बड़े कटुभाषी अर्थात् बदज़बान थे। उन दोनों में अनबन होने के कारण पति-पत्नी दोनों सज़ा पा रहे थे।

शाम के पाँच बजे हुजूर कार में कपूरथला तशरीफ़ ले गये। वहाँ कई सत्संगियों के घरों में हुजूर ने चरण डाले। फिर लाला हीरानन्द के लड़के की शादी पर सेहराबन्दी से पहले श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से छोटा सा शब्द 'इस गुफा मह अखुट भंडारा'¹¹ पढ़ा गया। सेहराबन्दी हुई। भगत सिंह और मिस्टर आहलूवालिया बरखुर्दार गुरुद्वाल सिंह के साथ जालन्धर से कार में आये थे। सेहराबन्दी के बाद एक घोड़ी, जो सरदार साहिब ख़रीदना चाहते थे, उसको देखा। फिर सरदार साहिब हमारी कार में डेरे आ गये। सरदार साहिब ने रास्ते में हिन्दू औरतों की मोहब्बत का किस्सा सुनाया कि एक औरत का पति मर गया, लोग सहन में इकट्ठे हो गये। औरत की ज़िन्दगी दूभर थी। उसने सोचा कि यदि सहन में गिरती हूँ तो मुश्किल है, इसलिये घर की दूसरी ओर तीसरी

मंज़िल से छलाँग लगाकर जान दे दी। हुजूर ने फ़रमाया कि क्या पता धर्मराज उनको इकट्ठा रखेगा या कर्मों के अनुसार अलग-अलग जन्म देगा। ऐसा ही प्रेम-भाव मैंने एक मुसलमान औरत में भी देखा है। प्रेम किसी जाति की जागीर नहीं। प्रेमी रूहें हरएक जाति व देश में मिलती हैं।

मैं कल अमृतसर डेरे के काम से गया। शाम को साढ़े छः बजे वापस आया। हुजूर ने कल शाम सत्संग सरदार गुलाब सिंह से श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'सावन हरिया बन' करवाया कि अधिकारी पर ही नाम व सत्संग का प्रभाव पड़ता है। जो पात्र नहीं उनके ऊपर प्रभाव नहीं पड़ता है। जैसे सावन का बादल सब्ज़ी व पेड़-पौधों को हरा-भरा कर देता है, परन्तु आक इत्यादि सूख जाते हैं। हुजूर ने पंजाबी मुहावरा फ़रमाया, 'कर्म हीन जन जावे। रुस जावे या मक्खी खावे'। बिना भाग्य के कुछ नहीं मिल सकता।

4 जून शाम को हुजूर वाणी में से 'गुरुमता अनोखा दरसा'¹² शब्द पढ़ा गया। गुरु-मता मन-मत के विरुद्ध है। जब मन की मत को छोड़ दें तो गुरु-मत आ गई और गुरुमत कहाँ से शुरू होती है। वह बिन्दु जहाँ मन और सुरत जाकर शब्द को स्पर्श करते हैं, तीसरे तिल में हैं। अर्थात् गुरुमत तीसरे तिल से आरम्भ होता है। उसके आगे सहस्र-दल कमल है, जिसमें हज़ार बत्ती का प्रकाश है। जिसको वेदों में 'सहस्र शीर्षः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात' करके वर्णन किया है कि भगवान् के हज़ार सिर और हज़ार पाँव हैं और कुरान में 'ला इल्लाह इल इल्लाह' कहा गया है। वहाँ हज़ारों ऋषि-मुनि ज्योति पर मोहित हुए बैठे हैं और हज़ारों फुलवाड़ियाँ खिली हैं। वहाँ पहुँचकर अभ्यासी सात विलायत की बादशाहत पर ठोकर मारता है और वहाँ जाकर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार वश में होते हैं। उसके तीन भाग हैं। झंझरी दीप, सहस्र-दल कमल और सेत सुन्न। उससे आगे बंकनाल में से गुज़र कर ब्रह्म का देश आता है। दोनों के बीच बड़ी भारी रचना है, जिसके वर्णन के लिये अनेक ग्रन्थ चाहियें। ब्रह्म के भी तीन भाग हैं। गगन, त्रिकुटी और गुरु-पद। गुरु-पद की शोभा अनन्त, अपार है। ब्रह्म के देश में हरएक जीव के संचित कर्मों का खज़ाना जमा रहता है और जब तक गुरु से शब्द का खज़ाना न मिल जाये तब तक ब्रह्म से आगे पार जाना सम्भव नहीं। इसलिये ब्रह्म के देश में हरएक जीव को बहुत समय तक ठहरना

पड़ता है। इसलिये कहा है, 'ज्यों फेरत पान तमोली, यों धुन घट सूरत रोली।'¹³ जैसे गले हुए पान को पनवाड़ी काट-काट कर अच्छा भाग रख लेता है वैसे ही रूह के सब कर्म वहाँ कट जाते हैं।

सत्संग के बाद हुजूर रात के डेढ़ बजे तक डेरे के प्रबन्ध के विषय में बातचीत करते रहे। कल शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से सत्संग हुआ। उसके बाद हुजूर सेवादारों को जो सड़क पर रख डाल रहे थे, दर्शन देने गए, क्योंकि डेरे की सड़क बैलगाड़ियों, ताँगों, मोटर कारों के लिये बिलकुल खराब हो गई है। हुजूर ने सत्संग में बीबियों को कहा कि जब मैं कहीं अपने काम में बैठा होऊँ तो उस समय मेरे आसपास मत जमा होना। इससे मुझे कष्ट होता है और मुझे नाराज होकर तुम लोगों को हटाना पड़ता है। क्या तुम चाहती हो कि मेरे क्रोध की किरणें तुम्हें लगें? सत्संग में मैं प्रेम-भाव में लीन होता हूँ और प्रेम से सत्संगत को देखता हूँ। उस समय मेरे दर्शन करो, उसमें सबका लाभ है।

एक सत्संगी को उसके पत्र के उत्तर में कहा गया कि यदि मन सिमरन में लगता हो तो ध्यान या शब्द की ओर आकर्षित होने की जरूरत नहीं। यदि मन सिमरन को छोड़कर बाहर जाता हो तो सतगुरु के कल्पित स्वरूप का ध्यान करो। यदि फिर भी बाहर जाता हो तो साथ शब्द भी दे दो।

एक सत्संगी ने कहा कि गैर-सत्संगी कहते हैं कि जो शब्द तुम सुनते हो यह नाद नहीं बल्कि खून के दौरों की सरसराहट या हवा की गूँज है। हुजूर ने जवाब दिया कि यदि यह दोनों बातें ठीक मान भी ली जायें तो भी चिदाकाश के परे प्राण नहीं जाते। इसलिये वहाँ के शब्द के विषय में यह नहीं कहा जा सकता कि वह प्राणों की सरसराहट या हवा की गूँज है।

6 जून की सुबह इतवार होने के कारण अमृतसर, जालन्धर तथा लाहौर से बहुत-से सत्संगी दर्शनों के लिये आए। सुबह आठ बजे हुजुरी वाणी में से 'राधास्वामी धरा नर रूप जगत में'¹⁴ पढ़ा गया। सरदार भगत सिंह ने कहा कि जपजी साहिब में भी गुरु के वचन मानने की बड़ी महिमा की गई है। 'मंने की गत कही न जाय। जे को कहै पिच्छै पछुताय'¹⁵ जब तक रूह अन्दर जाकर सतगुरु के नूरी स्वरूप को न देख ले, चन्द्र चकोर जैसी प्रीत नहीं आ सकती। किसी ने पूछा कि क्या मेसमरेज़म वाले सत्संगी आत्माओं को बुला सकते हैं?

उत्तर मिला, नहीं। बल्कि भूत-प्रेत, देवी-देवता भी उन्हीं कमज़ोर जीवों को सता सकते हैं जो उनसे डरते हों। जो उनसे न डरे उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। मुहावरा- 'भूत-प्रेत परौहना जो मंने उसको मारे'। इसी प्रकार कहावत है कि एक व्यक्ति भैरों की पूजा किया करता था। उसके भाई ने भैरों को बहुत-सी गालियाँ दीं। दूसरे दिन पूजा में भैरों ने अपने सेवक को कहा कि तुम्हारे भाई ने मुझे बहुत-सी गालियाँ दी हैं। मैं तुम्हारे बच्चों को मार डालूँगा। सेवक ने नम्रता से कहा कि मेरा क्या दोष है, मेरे भाई को मारो, जिसने तुम्हें गालियाँ दी हैं। भैरों ने कहा कि वह तो हमसे डरता नहीं, इसलिये हम तुमसे बदला लेंगे।

आज हुजूर बड़े व्यस्त रहे। उन्होंने अपने मोटर ड्राइवर को छुट्टी दे दी। इसके बाद उनके निजी मेहमान लुधियाना से तशरीफ़ लाये। शाम को उनको सत्संग सुनाया क्योंकि वे बे-सत्संगी थे। सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का शब्द 'जगजीवन साचा'¹⁶ पढ़ाया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि कभी-कभी अवतारों को भी कर्मों का हिसाब देना पड़ता है। केवल गुरु ही इस हिसाब से बचा सकते हैं। सतगुरु सूरमा हैं और शहंशाह हैं। हुजूर ने स्वर्गीय बाबा काहन, पेशावर वाले की लम्बी कहानी सुनाई कि बाबा साहिब मस्ती की हालत में रहते थे और उनको अपने शरीर की परवाह न थी। चादर के एक कोने में रोटी बँधी होती, दूसरे में विष्टा लगी होती। एक बार बाबा काहन की हुजूर के साथ नौशहरा से पेशावर जाने की इच्छा थी। परन्तु 12 बज गये और बाबा काहन स्टेशन को जाने का नाम नहीं लेता। बार-बार कहने पर कहता कि मैं जरनैल हूँ जब तक मैं नहीं जाऊँगा, गाड़ी नहीं आयेगी। जब गाड़ी के समय के बाद रेलवे स्टेशन पर पहुँचे तो पता लगा कि गाड़ी लेट है। गाड़ी में टिकट लेकर बैठ गये। पेशावर छावनी पर उतरना था। हुजूर के मिस्तरी के पास, जो दूसरे डिब्बे में बैठा था, सबके टिकट थे। वह तो उतर गया परन्तु बाबा काहन न तो स्वयं उतरे और न हुजूर को उतरने दिया। बार-बार कहते कि मैं जरनैल हूँ। मेरी फ़ौज आयेगी तो उतरूँगा। अभी मेरी फ़ौज नहीं आई। इस तरह बातें होते-होते गाड़ी चल दी और पेशावर का स्टेशन आ गया। सब लोग उतर गये। परन्तु बाबा काहन डिब्बे के दरवाज़े के सामने रास्ता रोककर खड़े हो गये कि न तो मैं स्वयं उतरूँगा, न मैं तुमको उतरने दूँगा क्योंकि अभी मेरी फ़ौज नहीं आई। जब सब यात्री उतर चुके तो सफ़ाई वाले कुली आ गये। अंग्रेज़ लोग बाबा जी के बहुत श्रदालु थे।

स्टेशन मास्टर वगैरह को पता लगा, वह भी आ गये। अच्छी खासी दो सौ के करीब भीड़ इकट्ठी हो गई। तब बाबा जी ने कहा कि मेरी फ़ौज आ गई, अब उतरूंगा। अतः रेलवे स्टेशन से क्राबली दरवाजे को चल पड़े, रास्ते में बाबा जी और हुजूर की तक़ार हो गई। बाबा कहने लगा कि जाओ मैं तुम्हारे साथ नहीं जाता और अलग रास्ते चल दिये। हुजूर आगे गये। विचार आया कि महात्मा को बिना किसी बात के नाराज़ किया। चलो लौटकर मना लायें। देखते क्या हैं कि बाबाजी सामने से यह कहते आ रहे हैं कि सिक्ख कहता है कि बाबा को मना लायें। बाबा कहता है कि चलो सिक्ख को मना लायें। हुजूर हैरान थे कि यह तो दूसरे रास्ते से गये थे यदि तौंगे में भी आते तो आधा घण्टा लगता, यह कैसे यहाँ पहुँच गये? खैर, बाज़ार में फिरते रहे। पानी पिया, इतने में वापस नौशहरा को जानेवाली अन्तिम गाड़ी का समय हो गया तो हुजूर ने कहा कि बाबा मुझे जाने दो। गाड़ी निकल जायेगी, कोई तौंगा भी स्टेशन तक नहीं मिलेगा। बाबा ने कहा कि फ़िकर मत करो, एक तौंगा केवल तुम्हारी इन्तिज़ार में अड्डे पर खड़ा है। जब तक तुम न जाओगे, न जायेगा। हुजूर अड्डे पर आये। वहाँ केवल एक ही तौंगा था। उस पर सवार होकर स्टेशन पर आ गये।

रात को सरदार हरबन्स सिंह की सुपुत्री की सगाई की रस्म सरदार इन्द्र सिंह के सुपुत्र के साथ, जो फ़ौज में लैफ़्टिनेण्ट हैं, हुई। सुबह 7 बजे राव बहादुर शिवध्यान सिंह पिसावा के रईस की सुपुत्री की मंगनी सरदार चरन सिंह जी के साथ हुई। उपस्थित जन तथा हुजूर महाराज जी प्रसन्न थे और दोनों घरानों को बधाई दे रहे थे। हुजूर ने कहा कि जैसे इन दो की पत्रियाँ आपस में मिलती हैं, वैसे बहुत कम मिलती देखने में आई हैं। सरदार साहब ने कहा कि जैसे यह मोतियों की जोड़ियाँ हैं वैसे ही उनको सेहरा देना। हुजूर ने उत्तर दिया कि जो मौज मालिक की। 'कीता लोड़ीए कम सो हर पह आखीए।' हुजूर का कल लाहौर सत्संग के लिये जाने का विचार है। वहाँ से बुधवार या वृहस्पतिवार को वापस आयेंगे। मैं वृहस्पतिवार दस जून को लुधियाना से वापस आ गया। हुजूर अभी तक वापस नहीं आये।

11 जून नौ बजे के करीब हुजूर लाहौर शेखपुरा होकर वापस पधारे। आते ही न तो आराम किया न पानी पिया। डाक माँगी, डाक तीन-चार दिन की

इकट्ठी हो गई थी, उसमें काफ़ी समय लग गया। शाम को 7 बजे सत्संग सरदार गुलाब सिंह ने रामायण के उत्तरकाण्ड में से किया। कल्याण पत्रिका जोकि गोरखपुर में छपती है, उसमें उत्तरकाण्ड रामायण में से शत पाँच चौपाई टीका करके छपवाई है, जोकि अच्छी धार्मिक चीज़ है। उसमें से मानसिक रोगों का वर्णन पढ़ा गया। बड़े-बड़े रोगों, काम, क्रोध आदि के अतिरिक्त, गोस्वामी जी फ़रमाते हैं कि पराये सुख को देखकर जलना और पराई निन्दा, वैर, विरोध यह सब मानसिक रोग हैं। बहुत-से सांसारिक जीवों को तो इनका पता ही नहीं, फिर उनको इनके इलाज का ख़याल कैसे आये। जिनको पता है वे इलाज जानते हैं। विषयों की आशा छोड़नी चाहिये और आशा, मनसा, तृष्णा त्याग देनी चाहिये। गुरु-भक्ति से असाध्य रोग दूर हो जाते हैं और मन के स्वास्थ्य के ये लक्षण हैं कि दिन पर दिन वैराग्य बढ़ता जाये और विषय-वासना कम होती जाये। हुजूर ने फ़रमाया कि औरतों में ईर्ष्या की बीमारी आम है। एक और नुक्स औरतों में यह भी है कि जब उनकी रूहें अभ्यास में तरक्की करके अन्दर जाने लगती हैं तो किसी प्यारे की मौत या किसी सांसारिक हानि को दिल में रखकर चिन्तामग्न हो जाती हैं और दिल के घाट पर उतर आती हैं। सारा किया-कराया नाश हो जाता है और चीखती हैं। यह ठीक नहीं। जब हम गृहस्थ हैं और ब्याह शादी में खुशी से फूल-फूल कर बैठते हैं तो हमें यह भी समझना चाहिये कि गृहस्थ में मरना, रोग, बीमारी, हानियाँ भी होंगी। उनको दिल में जगह नहीं देनी चाहिये। मालिक का हुक्म मान कर सब्र करना चाहिये। यह महकमा और है तथा भजन-सिमरन का महकमा और है। यह नहीं हो सकता है कि जो व्यक्ति नेक-पाक हो और भजन करता हो उसको दुनियावी दुःख न आयें, वह तो पिछले जन्म के कर्मों के कारण आयेंगे ही। हाँ आगे इस जन्म के अच्छे कर्म फल देंगे।

डलहौज़ी जाना एक सप्ताह के लिये स्थगित हो गया है क्योंकि डेरे के बहुत-से काम अभी बाक़ी हैं। उनको समाप्त करके जाना होगा। आजकल गर्मी बहुत है। डलहौज़ी जाने के दिन यही हैं, परन्तु हुजूर डेरे के लाभ को सबसे प्रथम रखते हैं।

12 जून शाम को शनिवार होने के कारण अमृतसर, लाहौर, जालन्धर के सत्संगी, सत्संग के समय आ गये और हुजूर वाणी में से यह शब्द लिया गया

'कहाँ लग कहूँ कुटिलता मन की।'¹⁸ हुजूर ने स्वयं व्याख्यान फ़रमाया। अपने अवगुणों को दूर करने के दो तरीक़े बतलाये गए हैं। या तो सतगुरु की दया का आसरा लेकर उनसे प्रार्थना करे कि मेरे में अमुक-अमुक अवगुण हैं, उनसे मेरा पीछा छुड़ाया जाये या विवेक विचार से स्वयं उनको मन से निकाल दे। हुजूर ने फ़रमाया कि कुछ सत्संगी, सत्संगिनें यह सोचती हैं और शेखी मारती हैं कि देखो तुम्हारे कहने से हुजूर ने अमुक काम नहीं किया बल्कि मेरे कहने से किया अर्थात् सतगुरु को मूर्ख समझती हैं, जबकि सतगुरु हमेशा अपनी मौज से काम करते हैं। किसी के कहने-सुनने में नहीं आते। उनके साथ हर एक सत्संगी का सम्बन्ध अलग-अलग है। वह एक का भेद दूसरे से नहीं कहते। फिर फ़रमाया कि अगर हम सत्संगियों के अवगुण और पाप उनके मुँह पर कहने लगें, जैसे कि बीबी हरीपुर वाली कहा करती थी, तो कोई भी नज़दीक न आये। सतगुरु भोले बनकर गुज़ारा करते हैं। सबकुछ जानते हुए भी अनजान बन जाते हैं। जीवों को चाहिये कि उनके साथ ऐसा बर्ताव करें जैसे कि दाता के सामने महागरीब कंगाल भीख माँगने वाला करता है। दाता उसको बार-बार गालियाँ दे-देकर इनकार करता है, परन्तु वह गालियों की परवाह न करता हुआ वही गरीबी धारण किये हुए, खड़ा रहता है। बार-बार माँगता है, तो दाता को कुछ न कुछ देना ही पड़ता है। फिर फ़रमाया कि जो सत्संगी सन्तों की हुजुरी में रहते हैं यदि वे सन्तों के प्रति मनुष्य भाव न लायें तो उनका बेड़ा पार हो जाता है। 'सगे हुजुरी बह ज़ बिरादरे दूरी' यानी सेवा में उपस्थित रहनेवाला पशु दूर रहनेवाले सम्बन्धी से अच्छा। यदि नज़दीकी के कारण अभाव आ जाये तो दूर वालों से भी बदतर हो गये और खाली रह गये। इसलिये जो लोग सन्तों की संगति में रहते हैं उनके लिये सावधानी से रहना ज़रूरी है।

13 जून को हुजूर महाराज जी सारा दिन काम में लगे रहे। डेरे के हिसाब-किताब की पड़ताल की। सुबह को पत्र इत्यादि लिखवाते रहे। शाम को सरदार गुलाब सिंह जी ने सत्संग किया और फ़रमाया कि कृपा या दया तीन प्रकार की है। एक ईश्वर की कृपा, जिसने मनुष्य शरीर प्रदान किया, फिर गुरु की कृपा, जिसने अन्दर जाने का रास्ता बताया, तीसरी आत्मा की दया अर्थात् इनसान का नेक चलन रह कर भजन-सिमरन करना। इस तीसरी दया के बिना पहली दो

दया काम पूरा नहीं कर सकती, जब तक स्वयं इनसान पुरुषार्थ न करे। इसके बाद हुजूर पधारे और फ़रमाया कि जो शब्द मामूली आता है वह खींच नहीं सकता जैसे गाय के बच्चे को रस्सी से बाँधकर गाय को खुला छोड़ दें तो भी वह कहीं नहीं जा सकती, क्योंकि अपने बच्चे के प्यार की जंजीर से बँधी है। इसी तरह यह रूह दिमाग से उतर कर आँखों में से होती हुई शरीर के रोम-रोम में व्यापक है और इतने पर ही बस नहीं। शरीर से बाहर स्त्री, बेटे, यार-दोस्त, रिश्तेदार, जायदाद, रुपया, पैसा, देश, घर इत्यादि हज़ारों मुहब्बतों में जकड़ी हुई है। जो मनुष्य इतनी जंजीरों में जकड़ा हो, वह कैसे आज़ाद हो? इसलिये शब्द रूह को कैसे खींचे, जब तक कि वह इन जंजीरों को तोड़कर आँखों में इकट्ठी न हो। फिर कबीर साहिब की वाणी में से 'विरह' का अंग लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि सन्तों को हुक्म है कि जो जीव प्रेमी और विरही है, उसको लाओ, बाकियों को छोड़ दो। फिर फ़रमाया कि चार सन्तों की वाणियाँ पढ़ने के योग्य हैं, गुरु नानक साहिब, कबीर साहिब, तुलसी साहिब और स्वामी जी महाराज की वाणी, आजकल के हालात को देखते हुए, सब वाणियों से ऊँची और सरल हैं।

14 जून को वर्षा हुई। मौसम ठण्डा हो गया। हुजूर 'गुरुमत सिद्धान्त' का मसौदा ठीक करने में लगे रहे। चार बजे ढिलवाँ डिपो में सिरसा सत्संग-घर के बरामदे के लिये दयार की लकड़ी, स्लीपर देखने गये। वहाँ दयार का स्लीपर 9' x 10' x 5" फुट का 22-23 रुपये से कम नहीं मिलता था। वह भी बहुत कम मात्रा में। इसलिये जगाधरी आदमी भेजा कि वहाँ से लेकर सीधा सिरसा पहुँचा दे। वहाँ से 9 बजे के लगभग वापस आकर फिर 'गुरुमत सिद्धान्त' का मसौदा देखने लगे। कल संक्रान्ति है, अमृतसर जाना है।

15 जून संक्रान्ति को सुबह 8 बजे सत्संग हुआ। सत्संग के बाद डाक सुनी। एक ने पत्र में लिखा था कि वह रिश्वत नहीं लेता, परन्तु अफसर उससे खुश नहीं। उत्तर दिया गया कि भजन करते रहो। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से पाँचवीं पातशाही का शब्द लिया गया :

पाणी पक्खा पीस दास कै तब होह निहाल।

राज मिलख सिकदारीआं अगनी मह जाल।

संत जनों का छोहय तिस चरणी लाग।
मायाधारी छत्रपति तिनह छोडी त्याग।
संतन का दाना रुखा सो सरब निधान।
गृह साकन छतीह प्रकार ते बिखु समान।
भगत जना का लुगय ओढ नगन न होई।
साकत सिरपाओ रैसमी पहरत पन छोई।
साकत स्यों मुख जोरिऐ अथ बीचों टूटे।
हर जन की सेवा जो करे इत उतहि बूटे।
सभ किछ तुम्ह ही ते होआ आप बजत बणाई।
दरसन भेटत साध का नानक गुण गाई।⁹⁹

शाम के 4 बजे अमृतसर को रवाना हुए। रास्ते में जंडियाला से आगे जाकर मोटर कार के अन्दर के पंखे का चमड़े का पट्टा टूट गया। मालूम हुआ कि गर्मी के कारण चमड़ा खुश्क हो गया और टूट गया। उसकी जगह रस्सी लगाकर कार को चलता किया और शाम को साढ़े पाँच बजे सत्संग-घर में पहुँच गये। मैं पट्टा लेने चला गया। जो पट्टा दो रुपये में आता था, उसके 45 रुपये दुकानदार ने माँगे। वहाँ से आकर सत्संग सुना। फिर हुजूर सत्संग-घर में सेवा में बैठे। अन्त में रात के साढ़े दस बजे डेरे वापस आये।

16 जून को सुबह 8 बजे हुजूर एक मुसलमान साहिब, रेलवे इंजीनियर की ख़बर लेने गए क्योंकि उनका सन्देश आया था कि वह बीमार है। वह बड़े जवान, मजबूत और प्रभावशाली अफ़सर थे। बड़े सभ्य और हमदर्द। जब उनसे मिले तो उनकी टाँगें इतनी कमजोर थीं कि चल नहीं सकते थे। चेहरे पर उदासी, होश-हवास कम। कहने लगे चार महीनों से बीमार हूँ, पहले डॉक्टरों इलाज किया, फिर देहली गया। देहली में एक हकीम का इलाज किया, वहाँ भी कुछ आराम नहीं हुआ, तो यहाँ वापस आ गया। डॉक्टर को हम डेरे से अपने साथ ले गए थे। उन्होंने ध्यान से देखा और फ़रमाया कि आपको उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रैशर) है, आपके लिये दूध की लस्सी लाभकारी होगी। परन्तु आपकी टाँगें काँपती हैं, फिर भी आप गर्म मसाला, पालक और टमाटर न खायें। आपको पेशाब में सफ़ेदी आती होगी, यह रगों, पट्टों की बीमारी है। इलाज मुश्किल है। हाँ, यदि हुजूर दया कर दें तो और बात है। एक बनिया होती-मरदान से अपने पागल लड़के को लेकर

आया हुआ है। हुजूर ने मेरे सामने फ़रमाया कि दया हो गई तो ठीक हो जायेगा, फ़िकर न करें। अब डॉक्टर साहिब दवाई कर रहे हैं। ख़ास है कि रोग दूर हो जायेगा। ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं कि डॉक्टरों ने जवाब दे दिया, परन्तु हुजूर ने दया कर दी।

हुजूर आज भी 'गुरुमत सिद्धान्त' को पढ़ रहे हैं और बड़े मग्न हैं। ख़ान के छः बजे डाक सुनी और उसके बाद 7 बजे के लगभग सत्संग में तज़रीक ले गये। हुजूर ने फ़रमाया कि मैं अपना भजन-सिमरन छोड़कर साध-संगत की सेवा करता हूँ परन्तु हमेशा यह हालत नहीं रहेगी। वह समय आयेगा जब तुम लोग मेरे से बात करने के लिये कठिनाई से वक़्त पा सकोगे। फिर भाई हुक्म सिंह का क्रिस्सा सुनाया कि उसने प्रेम में आकर बीबी-बच्चे छोड़ दिये और स्वयं डेरे में रह कर भजन-सिमरन करने लगा और जब अन्दर दृश्य देखता तो बाहर जोश में आकर कहने लगता। कई बार हुजूर बाबा जी महाराज ने उसको समझाया कि यह खुशी अपने अन्दर हज़म करो, परन्तु उससे न हो सका। अन्त में उसके दृश्य बन्द कर दिये गए मगर वह भजन बराबर करता गया। 1918 में जब इन्फ़्लुएंज़ा की बीमारी फैली तो वह बीमार हो गया। हुजूर से विनती की कि मुझे चरणों पर मत्था टेकने की इजाज़त दी जाये, परन्तु हुजूर ने जवाब दिया कि मैं किसी से चरणों पर मत्था नहीं टिकवाता। इस पर उसने कहा कि यदि यह आपके चरण हैं तो मत्था नहीं टेकता, यदि बाबा जी महाराज के चरण हैं, तो मैं मत्था टेकता हूँ। हुजूर लाजवाब हो गये और मत्था टेकते ही उसके अन्दर के नज़ारे खुल गये। फिर कहने लगा कि शब्द पढ़ो। बस लोग शब्द पढ़ने लगे, उसने चोला छोड़ दिया। जैसे कि बाप अपने लड़के की कमाई, रुपया-पैसा उसको नहीं देता, ऐसा न हो कि कहीं खो दे या फैंक दे। इसी तरह सतगुरु अपने सेवकों के भजन-सिमरन को जमा करते हैं, ताकि वह उसको कहीं खो न दें, अन्त समय देते हैं। सत्संग के बाद हुजूर राय साहब के थड़े पर आकर बिराजमान हुए और बातें करते रहे।

कल डाक में एक लड़के का ख़त आया कि वह परीक्षा में तीसरी बार फ़ेल हो गया है। हुजूर ने उत्तर लिखवाया कि उसको चाहिये कि मेहनत करता रहे, कभी-न-कभी ज़रूर सफल हो जायेगा। फिर फ़रमाया कि यही हाल परमार्थ में है। सत्संगी को चाहिये कि लगा रहे। मालिक देख रहा है कि मेरा बन्दा मेरे

इन्तिज़ार में है, कभी तो दरवाजा खोलेगा। सतगुरु शिष्य की कमाई जमा रखते हैं, ताकि वह कहीं खो न दे। अन्त समय देते हैं।

17 जून को शाम के सत्संग में दो शब्द हुजूरि वाणी के पढ़े गए। 'चुनर मेरी मैली भई। अब का पै जाऊँ धुलान ॥'²⁰ मन मैला है, जब तक मन सफ़ेद न हो जाये मालिक का दीदार न कर सकेगा और जब तक दीदार न हों, चौरासी लाख योनियों में फिरना बन्द नहीं हो सकता। रूह घाट-घाट पर चुनरी धुलाने के लिये गई अर्थात् तीर्थ, व्रत, पूजा, पाठ, तप, यज्ञ, हवन, सबकुछ करके देखा, परन्तु मन मैले का मैला रहा। अन्दर में रोशनी न हुई। तुलसीदास जी ने भी रामायण में यही लिखा है कि रूह अविनाशी ईश्वर की अंश है, परन्तु माया के हवाले कर दी गई है। माया ने इसको तन-मन के पिंजरे में कैद कर लिया है। काल ने काम, क्रोध, लोभ इत्यादि में फँसा दिया है, जिनका मैल मन पर चढ़ने से रूह अपवित्र हो गई है। धोने वाला केवल सतगुरु है। उसके धोने का और कोई उपाय नहीं, सिवाय इसके कि जहाँ कहीं पूरे सतगुरु का सत्संग हो, वहाँ जाकर रूह और मन को धुलाया जाये। दूसरे शब्दों में धोने की विधि बताई है कि रूह और मन को सतगुरु के चरणों में रख दिया अर्थात् रूह व मन को नौ द्वारों से समेटकर अन्तरी सतगुरु के चरणों तक पहुँच गये। वहाँ शब्द से मिल गये और धीरे-धीरे ऊपर को चढ़ते गये। यहाँ तक कि 'सेत सुन्न' अर्थात् पारब्रह्म में पहुँचकर चुनरी सफ़ेद हो गई। जब चुनरी सफ़ेद हो गई तो मालिक से मिलने के योग्य हो गई। हुजूर ने फ़रमाया कि सन्तों को हुक्म नहीं कि ज़बरदस्ती रूहों को यहाँ से सतलोक में ले जायें, क्योंकि काल ने सत्पुरुष से कई युगों की भक्ति करने के बाद तीन वर प्राप्त किये हुए हैं। पहला यह कि किसी को अपने पहले जन्म की खबर न हो, यदि पहले जन्म की खबर हो कि कौन-कौन से बुरे कर्म की क्या-क्या सज़ा अब इस जन्म में भुगत रहे हैं तो कोई भी पाप न करे। सब लोग ईश्वर से जा मिलें। दूसरे यह है कि सन्त करामात न दिखायें, वरना सन्तों के लिये क्या कठिन था कि किसी जगह मुर्दे को ज़िन्दा किया, दूसरी जगह अंधे को सुजाखा कर दिया। इस प्रकार हजारों-लाखों आदमी उनके पीछे लग जाते हैं। तीसरे यह है कि जहाँ भी मैं किसी रूह को रखूँ वहाँ ही वह खुश रहे अर्थात् एक मोरी का कोड़ा भी मरना नहीं चाहता, अपने हाल में खुश है।

फिर फ़रमाया कि जिसके हृदय में सन्तों ने नाम का बीज बोया, वह अवश्य एक-न-एक दिन सतलोक पहुँचेगा। किसी की ताक़त नहीं कि उसको रोक सके। हाँ, जल्दी या देर से पहुँचना उसके शौक़ व मेहनत पर निर्भर है, क्योंकि सन्त किसी को ज़बरदस्ती खींचकर नहीं ले जाते, जब तक उसकी अपनी इच्छा वहाँ जाने की न हो। सत्संग का क्या मतलब है ? यही कि जीवों में वहाँ जाने का शौक़ पैदा हो और इस संसार से वैराग्य पैदा हो।

18 जून को हुजूर महाराज हिसाब इत्यादि को देखने में तल्लीन रहे। इसके बाद डाक सुनी, शाम को सत्संग हुआ। साधु दरबारी दास ने भाई गुरदास जी की वारां में से शब्द सुनाये 'जे गुरु सांग वरतदा सिक्ख सिदक न हारे।'²¹ हुजूर ने फ़रमाया कि परीक्षा के वक्त कोई विरला ही पास होता है, जैसे कि स्वयं भाई गुरदास जी बिलकुल पूरे न उतर सके, जब गुरु हरगोबिन्द साहिब ने उनको घोड़े खरीदने के लिये काबुल भेजा। उन दिनों नोट नहीं होते थे, मोहरें और रुपये खच्चरों पर लाद कर ले गये। काबुल में ख़ेमे लगा दिये और जब घोड़ों वाले पठानों से सौदा करके ख़ेमे में से रुपये निकालने गये तो क्या देखते हैं कि रुपयों की बजाय ईंटें और रोड़े भरे हैं। डरे कि पठान लोग मार डालेंगे। इसलिये ख़ेमे के दूसरी तरफ़ से भाग कर काशी (बनारस) पहुँच गये। हुजूर ने फ़रमाया कि यदि वह भरोसे वाले होते तो उन्हीं ईंटों और रोड़ों को रुपये की तरह गिन कर पठानों को दे देते।

इसी प्रकार वेद व्यास जी के सेवक जैमिनी जी, जो 'पूर्व-मीमांसा दर्शन' के लेखक हुए हैं, उन्होंने व्यास जी से अपनी किताब की तारीफ़ की। व्यास जी ने कहा कि अच्छी है, परन्तु अमल करना कठिन है। जैमिनी जी ने उत्तर दिया कि कोई मुश्किल नहीं। तब व्यास जी ने फ़रमाया कि परीक्षा लेकर देख लेंगे। इस प्रकार एक रात जवान औरत बन कर जैमिनी जी की कुटिया के पास रोने-पीटने लगे। ऋषि जैमिनी जी से कहा कि मैं रास्ता भूल गई हूँ, मुझे रात अपनी कुटिया में रहने दो। उसने उत्तर दिया कि मैं तो औरतों की शक्ल तक नहीं देखता। तुम यहाँ नहीं ठहर सकती। औरत ने जवाब दिया कि यदि मुझे जंगली जानवर रात को खा गये तो पाप तुम्हारे सिर पर आयेगा। इस पर ऋषि ने कहा कि अच्छा, तुम इस कमरे में चली जाओ और अन्दर से कुंडी लगा लो। यदि मैं भी आऊँ तो भी न खोलना। रात को ऋषि जी की आँखों के आगे उसी औरत की शक्ल आने

लगी। मन ने कहा कि उससे बातें करने में क्या हरज है, बुरा काम नहीं करेंगे। चुनांचे मन को बहुत रोका, पर न रुका। उसके कमरे का दरवाजा खटखटाया, उसने कहा कि मैं नहीं खोलूँगी। ऋषि ने पुकारा कि मैं जैमिनी हूँ, तो औरत ने कहा कि इस वक्त तुम जैमिनी नहीं हो। अन्त में ऋषि के मन ने इतना जोर मारा कि वह छत फाड़कर कमरे के अन्दर कूद पड़ा। देखा तो वहाँ कोई औरत नहीं थी, बल्कि स्वयं व्यास जी महाराज बिराजमान थे। बहुत शर्मिन्दा हुआ। गुरु ने कहा कि किताब लिखनी और बात है, उस पर अमल करना और बात है।

इस व्याख्यान के बाद हुजुरी वाणी में से 'सतगुरु का नाम पुकारो। सतगुरु को हियरे धारो' ²² का शब्द पढ़ा गया। हुजुर ने खुद खोलकर समझाया। सतगुरु का नाम पुकारो से मतलब है, जो नाम सतगुरु ने बताये हैं, उनका सिमरन करो। सतगुरु जो वर्णात्मक नाम सिमरन करने के लिये सेवक को बताते हैं, वे निजी नाम हैं अर्थात् सतलोक तक जितनी मंजिलें रास्ते में आती हैं, उनके धनियों के निजी नाम हैं। जब किसी को उसके अपने नाम से आवाज दी जाती है तो वह आकर्षित होता है। वैसे ही जब निजी पाँच नामों का सिमरन किया जाता है तो अन्दर के देशों के मालिक (अधिष्ठाता) आकर्षित होते हैं और धीरे-धीरे सिमरन करनेवाले की आत्मा को अन्दर आकर्षित कर लेते हैं। यह लाभ सिफ़ाती (गुण प्रकट करनेवाले) नामों के जपने में नहीं है। राम, रहीम, गिरधारी, मुरारी इत्यादि सब सिफ़ाती नाम हैं। यदि किसी व्यक्ति को उसके सिफ़ाती नाम से पुकारा जाये तो वह आकर्षित नहीं होता। 'सतगुरु को हियरे धारो' का तात्पर्य है कि सिमरन जब पूर्ण हो जाये तो ध्यान करो। वैसे ही तुलसी साहिब जी ने फ़रमाया है :

छछछ छिन छिन सुरति सँवार लार दूग के रहौ।

तन मन दर्पण माँज साज सुरति से गहौ।

लगन लगै लख पार सार तब पाइआ।

अरे हौं रे तुलसी संत चरन की धूर नूर दरसाइआ। ²³

अर्थात् हर समय रूह को आँखों में इकट्ठा करने का यत्न करो। जब टकटकी लग जायेगी, तो असलियत का पता लग जायेगा। फिर ध्यान के विषय

में तुलसीदास जी ने रामायण में फ़रमाया है कि 'श्री गुरु पद नख मन गन जोती। सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती' ²⁴ अर्थात् गुरु के चरणों के नाखून का ध्यान भी जब अन्दर आ जाये तो अन्दर प्रकाश ही प्रकाश हो जाता है। सत्संग के समाप्त होने के बाद जो मिस्तरी, मजदूर इत्यादि डेरे की नालियाँ बना रहे हैं, उन्हें मजदूरी दी गई। सरदार साहिब, सरदार भगत सिंह व वैद्य जी भी आज दोपहर तशरीफ़ लाये थे। रात के दस बजे वापस चले गए।

20 जून इतवार की शाम को हुजुर ने स्वयं सत्संग फ़रमाया और हुजुरी वाणी में से 'तुम साध कहावत कैसे। मैं पूछूँ तुम से ऐसे' ²⁵ शब्द पढ़ा गया। हुजुर ने फ़रमाया कि साधु को चाहिये कि यदि किसी के यहाँ सत्संग करने जाये तो उससे केवल किराया व रोटी ले। यदि यूँ ही फिरता हुआ जाये तो उसका कोई हक़ नहीं कि सत्संगियों से किराया ले। फिर फ़रमाया कि साधुओं को चाहिये कि छः घण्टे हर रोज़ भजन करें। इससे उनका अपना भी बनेगा और जो दूसरों का खाना पड़ता है उस कर्जे का भी भुगतान होता जायेगा। सरदार गुरबचन सिंह साहिब, रिटायर्ड स्टेशन मास्टर ने फ़रमाया कि हुजुर ने बड़ी दया करके सात जन्म का कोढ़ सात रातों में उनको स्वप्न की हालत में भुगतवा दिया।

अध्याय 8

डलहौजी के दौरे का हाल

हुजूर का डलहौजी का सफ़र और वहाँ निवास

21 जून, 1943 सुबह पौने पाँच बजे हुजूर कार में नहर के रास्ते डलहौजी रवाना हुए। अजीज काका रघुवीर सिंह, हुजूर महाराज जी का पड़पोता भी मेरे साथ कार में बैठा था। जब जी. टी. रोड़ रईया पर पहुँचे, जहाँ से कि नहर की पटरी की तरफ़ मुड़ना था, तो सरदार भगत सिंह जालन्धर से कार में आ पहुँचे। कहने लगे कि कल शाम को पेट में दर्द हो गया था, नहीं तो कल ही आ जाता। उन्होंने हुजूर को खमीरा गाओज़बान अम्बरी पेश किया कि रोज़ चार माशे ख़ाली पेट खाकर, ऊपर से दूध पी लिया करें। वहाँ से नहर की पटरी पर हो गये। रास्ते में धरदेव, महता, घुमान, वण्डाला की संगतों को दर्शन देते हुए सात बजे गुरदासपुर के सामने पटरी पर पहुँच गये। हुजूर ने कह रखा था कि गुरदासपुर की संगत को दर्शन देंगे। इसलिये पटरी से बाँये हाथ को चल पड़े। मौसम अच्छा था। उजाला हो गया था। रास्ते में सड़क पर वृक्ष थे और उनमें आमों के वृक्ष भी थे, जिनमें ख़ूब हरे-हरे आम लदे हुए थे। मालूम होता था कि अब के यहाँ आम की फ़सल अच्छी है। गुरदासपुर बड़ा हरा-भरा व ठण्डा शहर है। हमें लाला ईशरदास, एडवोकेट की कोठी पर जाना था। विचार था कि वहाँ संगत जमा होगी। मैं गुरदासपुर दस माह रहा हूँ। कई बार एडवोकेट साहिब की कोठी देखी होगी, परन्तु रास्ता भूल गया। अन्त में पूछते-पूछते वहाँ पहुँच गये। वहाँ तो सन्नाटा छाया हुआ था। दरवाज़ा खटखटाय़ा तो बीबी जी ने कहा कि वकील साहिब के बड़े भाई का देहान्त हो गया। वह तो अमृतसर गये हैं और हुजूर के आने का यहाँ किसी को पता नहीं। इसलिये वहाँ से पठानकोट को रवाना हो गए और चक्की की चौकी पर पूरे पौने आठ बजे पहुँच गये। अभी

सर्विस के जाने में डेढ़ घण्टा बाक़ी था। शंकर सिंह के साथ जवाली, ज़िला काँगड़ा से बहुत-से मर्द व बीबियाँ दर्शनों को आये हुए थे। सड़क वही थी। इसलिये हुजूर को क़रीब के मैदान में कुर्सी पर बैठा कर सारी संगत आस-पास बैठ गई। मैं और ड्राइवर दामोदर पीछे कार के पहरे पर रहे। मैं तो पास की दुकान पर कुछ खाने चला गया। हुजूर पौने नौ बजे उठकर कार के क़रीब आ गये। अन्त में सवा नौ बजे फाटक खुला, मगर सिवाय हमारी कार के न कोई लारी, न कोई दूसरी कार डलहौजी की तरफ़ जा रही थी। हुजूर ने फ़रमाया कि आज सवा लाख ही जायेंगे। रास्ते में दुनेरे से ज़रा इधर बरखुर्दार का जी मितलाने लगा। कार खड़ी की गई। फिर आगे चले। मैं भी ऊँघता था और काका तो कभी सोता था कभी जागता। अन्त में दुनेरे पहुँचे। लैमनेड पिया। यहाँ गर्म-गर्म जलेबियाँ और बेसन सबने पसन्द किया। यहाँ शहरों के मुकाबले घी की मिठाई अच्छी मिलती है, क्योंकि विलायती घी का इस्तेमाल नहीं करते। वहाँ से साढ़े दस बजे चल पड़े। रास्ते में मैं व हुजूर, बरखुर्दार का ध्यान चील के वृक्षों, पहाड़ियों के घरों, उनकी छोटी-छोटी गाय-बकरियों की ओर दिलाते गये, जिससे कि उसका जी न मितलाये। अन्त में वह सो गया। न उसने पहाड़ों के नज़ारों की परवाह की, न पहाड़ियों के घरों की। बनीखेत के पास सर्दी सुहावनी महसूस हुई। डाक़खाने पर बहुत-सी संगत जमा थी। एल्समेयर में ख़ूब ख़ामोशी और ठण्डक थी। यह मौसम हमें, जोकि नीचे की गर्मी से आये हुए थे, बड़ा अच्छा लगा। कोठी की ख़ामोशी दिल को खींचने वाली थी। अभी तक डलहौजी में गहमागहमी नहीं हुई। सब सड़कों पर ख़ामोशी है। दोपहर को लू नहीं, केवल शाम को नवम्बर जैसी सर्दी होती है।

शाम को कर्नल मार्टन भी पधारे। वह बनारस से पन्द्रह दिन की छुट्टी पर ग्रेंडव्यू होटल में ठहरे हुए हैं। उन्होंने अर्ज़ की कि काम की अधिकता की वजह से और काम नया होने की वजह से इनको मन के एकाग्र करने में मुश्किल होती है। हुजूर ने फ़रमाया कि जब मन ख़ाली हो, सिमरन किया करो और यह जो मुश्किल है उस वक़्त तक मुश्किल है जब तक तुम ज़रा अन्दर जाकर सतगुरु के स्वरूप का दर्शन नहीं करते, क्योंकि उस समय तक तुम्हें अकेले सफ़र करना पड़ता है। उसके बाद सफ़र आसान हो जायेगा और अन्तर में रस आयेगा,

क्योंकि वह दुनिया यद्यपि मायामय है फिर भी इस दुनिया से हजारों गुना ज्यादा सुन्दर है। यहाँ यह हाल है कि यदि यहाँ से कलकत्ता जाना हो तो शरीर को उठाकर रेल या हवाई जहाज में ले जाना पड़ता है। वहाँ सूक्ष्म मण्डल में केवल ख्याल की धार से एक जगह से दूसरी जगह पहुँच जाते हैं। वहाँ की रचना में इस तरह जल्दी-जल्दी तबदीली अर्थात् परिवर्तन नहीं है और मरते समय यहाँ का कोई मसाला साथ नहीं जाता। केवल भजन-सिमरन ही साथ जाता है।

कर्नल साहिब ने बताया कि जो फ़ौजी जापान की कैद में हैं, उनसे पत्र-व्यवहार करने में बड़ी मुश्किल होती है और ब्रिटिश सरकार उसका बदला नहीं ले सकती, क्योंकि ब्रिटिश सरकार के पास जापानी कैदी बहुत ही कम हैं और जापानी सिपाही के पास अपना सामान इतना भारी नहीं होता। वह हमारे सिपाहियों की अपेक्षा जल्दी-जल्दी चल फिर सकता है और खाने में चावलों के एक पैकेट पर सात दिन निकाल लेता है। यदि हिन्दुस्तान में मोटर कार और रेलगाड़ियाँ बनाने के कारखाने पहले से बने होते तो अंग्रेजों को लड़ाई में बड़ी सहायता मिलती। सत्संग की किताब, 'द पाथ ऑफ़ द मास्टर्स', जो कि फ़्रांस की लड़ाई से पहले छपवाई गई थी, अभी तक उसकी बहुत-सी कॉपियाँ फ़्रांस में हैं। मैंने विनती की कि लड़ाई में किताबें बरबाद हो गई होंगी। हुजूर ने फ़रमाया शायद लड़ाई के बाद मिल जायें।

हुजूर डलहौजी की कोठी की खामोशी और मौसम के सुहावनेपन से बहुत खुश हैं और फ़रमाया कि यहाँ शब्द जोरों पर है। यहाँ दो-चार दिन तक सत्संग बिलकुल नहीं करेंगे, आराम करेंगे। इसके बाद भी सप्ताह में दो बार सत्संग किया करेंगे।

22 जून की सुबह हुजूर चम्बे की सड़क पर थोड़ी दूर सैर करने गये। फिर वापस आकर कोठी के बरामदे में अखबार पढ़ते रहे। मैंने सन्देह प्रकट किया कि मिस्टर चर्चिल का जनरल वेवल को भारत का वायसराय नियुक्त करना, यह जाहिर करता है कि यदि अंग्रेज इस लड़ाई में जीत गये तो काँग्रेस और उसके साथ ही हिन्दुओं का मलियामेंट कर देंगे। हुजूर ने फ़रमाया यह मुमकिन नहीं। 11 बजे कर्नल मार्टन साहिब पधारे। उससे पहले हुजूर सिन्धियों को नामदान देते रहे।

कर्नल साहिब ने बताया कि उनका खानदानी घर पश्चिमी आयरलैण्ड में था, जो उनके खानदान ने प्रसिद्ध प्रिन्स रंजी के पास बेच दिया था। अब लड़ाई के बाद पेंशन लेकर उत्तरी आयरलैण्ड में आबाद होंगे। उनकी बीबी विलायत में हैं और 'नाम' लेना चाहती है। एक लड़का इटली में कैद है। दूसरा फ़ौज में लेफ्टिनेंट है। कुछ ज़ख्म बर्मा और अराकान में आये थे, जिसकी वजह से वह छुट्टी लेकर बम्बई के सूबे में पहाड़ पर है। कर्नल साहिब ने बताया कि इंग्लैण्ड में आजकल एक आदमी के लिये एक मुर्गी का अण्डा और एक बालिशत से कम भेड़ का मांस तथा थोड़ा-सा और मांस मिलता है। यदि चार-पाँच लोग इकट्ठे होकर रहें तो गुजारा कर लेते हैं, वरना अकेले आदमी को पेट-भर खाना नहीं मिल सकता। विलायत में जिस व्यक्ति की आय 45 हजार पौण्ड वार्षिक है, उसको 40 हजार पौण्ड वार्षिक इनकम टैक्स में देने पड़ते हैं, जो आय का 90 प्रतिशत है। भारत में आय का 93 प्रतिशत टैक्स देना पड़ता है। यदि लड़ाई तीन साल तक चलती रही तो लोगों का क्या हाल होगा? कुछ भूख से मर जायेंगे और कुछ लड़ाई से।

दोपहर को लाला रला राम जैनी, रिटायर्ड सीनियर सब-जज तशरीफ़ लाये। उनके जाने के बाद दो साधु आ गये, जो कि अच्छे-ज्ञानी मालूम होते थे। एक माई ने अर्ज की कि मेरा जवान लड़का (जो उपस्थित था) एक साल से बीमार है, कोई दवा असर नहीं करती। हुजूर ने कहा, मालिक की मौज पर रहो और मालिक के चरणों का ध्यान करो और फिर हुजुरी बाणी में से 'गुरु की मौज रहो तुम धार' का शब्द पढ़कर सुनाया कि हर हालत में मालिक का धन्यवाद करना चाहिये। कुछ लोग मुसीबत में खुदा को गालियाँ देने लग जाते हैं। क्या उससे मुसीबत टल जाती है? उल्टे बुरे बनते हैं। हुजूर ने फ़रमाया कि मन बड़ा दुश्मन है और यह शब्द सुनाया :

जब धार त्रिदंड फिरे नगना मुख ऊपर सीस जटान धरे।

अथवा गिरि कन्दर बीच सिल पै थित होइ थित विरछ तले।

तत वेद पुराण सिद्धान्त पठे उपवास धरे तीर्थों बिचरे।

मन में जब भोगन की रति है तब ए सभ किंचित नाहि करे।

मुल्तान के एडवोकेट मलिक राधा किशन ने अपने पत्र में विरह के शब्द

लिखकर भेजे। हुजूर ने हुक्म दिया कि अपनी तरफ से यह शब्द लिखकर भेज दो :

हम तरसत तुम दरस को तुमरो हियो कठोर,
शौघ कृपा तुम करो मिलि बैठ एक ठौर।

दूसरा शब्द जरा कठिन है :

आवन कह गये बीजना, आये न बाज आहार,
अजाभक्ष भेजो नहीं, द्वादस करें आहार।

यह इसी तरह है जैसे फ़ारसी जानने वाले कहते हैं—‘यारे मन दर आवे इरज़त रफ़ता अस्त। मन गरीबम दर ज़मिस्ताने हिसार’।

23 जून को सुबह ग्यारह बजे मैं हुजूर के ड्राईंग रूम में डाक पढ़ रहा था। कर्नल मार्टन साहिब पधारे। उन्होंने कहा कि उनकी दो लेडी रिश्तेदार नाम लेना चाहती हैं, परन्तु विलायत में होने की वजह से नहीं आ सकतीं।

कर्नल साहिब ने बताया कि इंग्लैण्ड में मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर और नवम्बर के महीनों में ऐसा सुहावना मौसम होता है कि सारी दुनिया में नहीं पाया जाता। यहाँ पंजाब में नवम्बर से मार्च तक अच्छा सुहावना मौसम होता है।

शाम के छः बजे वृन्दावन के सोबती-हरी-जी अपने पाँच-छः सेवकों के साथ पधारे। उनका ज़ाहिरी-व्यवहार सच्चे साधुओं और महात्माओं जैसा पाया गया। उन्होंने अपनी मान-बढ़ाई की कोई परवाह न की और अपने सेवकों की उपस्थिति में हुजूर को नम्रतापूर्वक प्रणाम किया और बड़ा प्रेम-भाव प्रकट किया। साथ कुछ फल-फूल लाये थे। हुजूर ने यह कहकर मना किया कि मैं गृहस्थ हूँ, आप त्यागी हैं। गृहस्थ का धर्म है कि साधुओं की सेवा करे, न कि उल्टा साधुओं से ले। खैर हुजूर ने भी उनको आम इत्यादि पेश किये, जोकि वे प्रसाद के रूप में अपने साथ ले गये। उनकी इच्छानुसार हुजूर ने कबीर साहिब का शब्द ‘कर नैनों दीदार महल में प्यारा है’ पढ़ाया और खूब व्याख्यान किया। फ़रमाया कि संस्कृत को देववाणी इसलिये कहते हैं कि संस्कृत वर्णमाला के बावन अक्षर पिण्ड के निचले छः चक्रों में मिलते हैं। गुदा चक्र में चार, स्वाद चक्र में छः, नाभी चक्र में आठ, हृदय चक्र में बारह और कण्ठ चक्र में सोलह, दो छोटे चक्र में, बाकी चार अन्तःकरण के

चार दल कमल में। मगर, क्योंकि पिण्ड स्वयं नाशवान है, प्रलय में नष्ट हो जायेगा, इसलिये यह बावन अक्षर भी नाशवान हैं। इसलिये कबीर साहिब ने फ़रमाया है, ‘बावन अच्छर लोक त्रै सभ कछु इन ही माहें। ए अक्खर खिर जाहेंगे ओय अक्खर इन मह नाहें’ वे दो अक्षर पारब्रह्म में हैं, जिनमें से एक तो निचली सृष्टि का इन्तिज़ाम करता है, दूसरा ऊपर के देशों को ले जाता है। सब सन्तों ने अपने-अपने कलाम में इन दो अक्षरों का वर्णन किया है।

हुजूर ने बताया कि जब वे गलीयू में नौकरी करते थे, तो एक बार उनको बहुत अच्छी सुगन्ध आने लगी, जिससे उनका मन मोहित हुआ जाता था। आगे चल कर देखा कि एक कश्मीरी महात्मा रास्ते पर बैठे थे। हुजूर, अदब से, घोड़े से उतर कर उनके पास गये। वह महात्मा खिलखिला कर हँस पड़ा और बोला कि खुशबू लेनेवाली नाक भी कोई-कोई होती है। फिर फ़रमाया कि काल और माया ने यह धोखा किया है कि ब्रह्माण्ड के छः चक्रों का अक्स अण्ड में और अण्ड के छः चक्रों का अक्स पिण्ड में बना कर, लोगों को उनमें भटका दिया। आँखों से ऊपर नहीं जाने दिया। हुजूर ने स्पष्ट करके बताया मगर यहाँ उसको लिखने की ज़रूरत नहीं कि कौन-कौन से चक्र का अक्स, कहाँ-कहाँ है।

सत्संग के बाद लाला अर्जनदास, एक्जीक्यूटिव इंजीनियर, अमृतसर निवासी भी तशरीफ़ लाये और हुजूर के साथ सैर को गए। रास्ते में हुजूर ने फ़रमाया कि इस दुनिया के जाल से निकलना बड़ा मुश्किल है। पहले तो लोगों को दुनियावी धन्धों से ही फुसत नहीं कि विचार करें कि कहाँ से आये हैं और कहाँ जायेंगे। यदि किसी ने विचार किया भी हो तो फिर मज़हब की जंजीरें तैयार हैं। जिस धर्म में कोई पैदा हुआ, उसी को सच्चा समझकर मरने के बाद मुक्ति का विश्वास करके बैठ गया। आगे रूहानी तलाश की ज़रूरत नहीं समझी। जो बिरले भाग्यशाली कामिल फ़कीरों की संगत में आये, उनको असली भेद का पता लगा। वे चौरासी से छूटकर अनन्त खुशी में जा समाये।

24 जून को ग्यारह बजे रियासत चम्बा की कौंसिल के मेम्बर साधु राम साहिब व कर्नल मार्टन तशरीफ़ लाये। दीवान साहिब ने बताया कि उनका नया जन्म हुआ, क्योंकि उनको मैनिनजाईटिस हो गया था। उसके बाद सात बजे हुजूर बीबी कमल, जोकि डेरा इस्माइल खाँ की रहनेवाली हैं, की कोठी पर तशरीफ़

ले गये। वहाँ एक बीबी ने ग्रामोफोन के रिकार्ड लगाये। पहला कबीर साहिब का था 'आज प्रीतम मेरे घर आये, कहत कबीर धन भाग हमारे।' दूसरा शब्द 'पिया मिलन को जाना, पी की नगरिया, कठिन डगरिया, पल-पल पग फिसलाना। पिया मिलन को जाना'। तीसरा शब्द 'घूँघट के पट खोल री' चौथा शब्द 'जादू' है।

इसके बाद हुजूर ने बीबी के पति से, जोकि अभी तक सत्संगी नहीं हैं, मगर बड़े शरीफ़ व मिलनसार व्यक्ति हैं, फ़रमाया कि कोई वस्तु हमारे साथ नहीं जाती, अन्त समय केवल तमाशा ही पल्ले रह जाता है। इसका मतलब यह नहीं कि इनसान को यदि परमात्मा ने धन-दौलत व पदवी दी है, तो उनको छोड़ दे, बल्कि उनसे फ़ायदा उठाये। आराम करे, मगर दिल में यह ज़रूर याद रखे कि चार दिन का खेल है, यहाँ छूट जाना है। अपना परलोक भी सुधारे, वरना अन्त समय यमदूत आकर जान निकालेंगे और धर्मराज के दरबार में पकड़ा जायेगा। वहाँ कौड़ी-कौड़ी का हिसाब लिया जायेगा—जैसे हज़रत ईसा ने ईजील में कहा है कि हिसाब पाई-पाई का होगा। यदि नाम व सतगुरु की शरण इस ज़िन्दगी में ली होगी तो धर्मराज के पास नहीं जाना पड़ेगा। उसके कर्मों का लेखा धर्मराज की कचहरी से सतगुरु के हाथों में चला जाता है। हुजूर ने बताया कि उनका अपना नज़दीकी रिश्तेदार, जिसकी धर्मपत्नी सत्संगिन थी, बिना नाम के गुज़र गया। बेचारा पुलिस में अफ़सर था। कई बार उसकी पत्नी ने उसको सत्संग में ले जाने की कोशिश की, मगर मन्द भाग्य से यही कहता, "अभी धोबी ने कपड़े धोकर नहीं दिये, अभी कोट सिल कर नहीं आया"। अन्त समय यमदूतों ने आ घेरा। लगा चीखने, 'काके की माँ यह देख, मेरे हाथ जला दिये। ओह! मुझे न मारो, मैं कमज़ोर हूँ, मर जाऊँगा।' मगर अब क्या होना था, जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।

यह दुनिया शहद की कटोरी के समान है। जो मक्खी शहद के बीच में लालच करके आन उतरी, उसके पंख चिपक गये, शहद भी न खा सकी और मर भी गई। जो मक्खी शहद के किनारे बैठी, वह शहद भी खा गई और उड़ भी गई। यही हाल सत्संगी का होना चाहिये। दुनिया में ज़्यादा आसक्त न हो।

वापसी पर रास्ते में पहाड़ी औरतें नये-नये पहाड़ी ढंग के कपड़े पहने, काली जाकेट पहने, चाँदी के जेवर से लदी हुई मिलीं। मालूम हुआ कि आज

बनीखेत में मेला हो रहा है। ये लोग वहाँ से वापस आ रहे हैं। भाई शादी जो औरतों से शुरू से ही नफ़रत करता है, मज़ाक़ के अन्दाज़ में फ़रमाने लगे, पुरुषों ने स्त्रियों को क़ाबू करने के लिये उनकी नाक में नथ और कान में मुर्कियाँ डाल दी हैं, ताकि अगर ज़रा अकड़ें तो फ़ौरन नाक या कान दुःखा दिया। बागड़ में पाँव में भारी-भारी कड़े डालते हैं, जिससे कि औरत कहीं भाग न जाये और अंग्रेज़ लोग 3 इंच ऊँची एड़ी की जूती पहनाते हैं, जिससे कि आज्ञादी से चल फिर भी न सके। एक गाँव का रहनेवाला, अपनी नौजवान बीबी के साथ, लाहौर शहर की सैर के लिये आया। उसने देखा कि जवान-जवान लड़कियों के पाँव में ऊँची-ऊँची एड़ी के सैंडल हैं। चुनांचे अपनी बीबी को भी इसी तरह की पोशाक पहनाई। अनारकली में बीबी लड़खड़ाती चली जा रही है। रास्ते में केले का एक छिलका किसी दुष्ट ने ज़मीन पर फेंक दिया था। उस पर बीबी का पाँव पड़ा और कमर के बल गिरी। एक भला-मानस सिक्ख पास से गुज़रा और बोला—बीबी मालूम होता है कि तुम तो शहर की रहनेवाली नहीं, पहले ऊँची एड़ी की जूती से चलना सीखो। बीबी ने जवाब दिया कि यह तो इन्होंने (पति) ज़बरदस्ती पहना दी। यह सब क़सूर इनका है।

25 जून को ग्यारह बजे कर्नल साहिब विदा लेने आये। हुजूर से समय लेकर अभ्यास की बातें पूछते रहे। तुलसी साहिब ने कहा है कि 'गगन द्वार दीसे इक तारा, अनहद नाद सुने झंकार'।¹⁰ उस तारे में ध्यान जमाना है। जब वह तारा फटता है तो आत्मा अन्दर तारा-मण्डल में प्रवेश करती है।

हुजूर ने शाम को फ़ारसी के चुने हुए पदों में से कुछ पद स्वयं अपने मुखारबिन्द से पढ़कर लोगों को सुनाये जोकि मौलाना रूम की मसनवी में से थे, जिनका मतलब यह था कि दुनिया एक कुआँ है और शब्द उस कुएँ में रस्सी है। आत्मा को चाहिये कि रस्सी को पकड़कर कुएँ से बाहर आ जाये और काम-क्रोध से बचे।

हुजूर ने फ़रमाया कि डोंगा गली में बारक मास्टरी का एक चौकीदार था। उसने बताया कि एक मशहूर संन्यासी (जड़ी-बूटियों का जानकार) आया, उसने कहा कि मेरी मदद करो। चौकीदार मान गया तो संन्यासी ने पचास गज़ लम्बी रस्सी और एक कुतिया मँगवाई और उसका एक सिरा एक पौधे के तने से बाँध

दिया और पास कुतिया बाँध दी। दूसरे सिरे को तान कर जोर से झटका दिया तो बेल उखड़ गई। उसकी जड़ में से फन वाला साँप अचानक फन ताने हुए निकला, फिर नीचे बैठ गया। संन्यासी का मतलब था कि साँप काटे तो कुतिया को काटे न कि संन्यासी को। संन्यासी बूटी लेकर कहने लगा कि एक हजार रुपये का काम कर चला हूँ। वैसे भी गलियों में चिरायता, इसबगोल, रत्नज्योत और कठ आम होते हैं। मच्छरों को मारने का पाउडर, जो शरीर पर छिड़कते हैं, तम्बाकू व कठ को महीन पीस कर बनाते हैं।

26 जून शाम को सर गुज्जरमल, अमृतसर वाले, तशरीफ लाये और कुछ साधु-महात्मा भी आये। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'पाठ पढ़यो अर बेद बीचारयो'¹¹ और मारू राग में से भी एक शब्द 'गुरु गोपाल गुरु गोबिंद'¹² पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया जो महात्मा अन्दर खण्डों-ब्रह्माण्डों पर जाता हो, वही दूसरे को ले जा सकता है। उसी को ही गुरु कहते हैं। लेकिन ऐसे महात्मा बहुत कम मिलते हैं और हमें उनकी पहचान भी नहीं है।

हुजूर ने फ़रमाया कि देवी व देवताओं को पूजना ऐसा ही है, जैसा कि कोई आदमी अपने नौकर की सेवा में लग जाये। यह सब देवी-देवता आत्मा की सेवा के लिये नियुक्त किये गए हैं, न कि आत्मा के पूजने के लिये। आत्मा के पूजने के लिए केवल परमात्मा है, पूर्ण गुरु के बिना परमात्मा का मिलना असम्भव है।

शाम को हुजूर सर गुज्जरमल के साथ सैर को गये। सर गुज्जरमल ने पूछा कि ज्योतिष-शास्त्र कहाँ तक ठीक है? हुजूर ने जवाब दिया कि यह भी एक साईंस है। इसमें तीन तरह से गलती होने की संभावना है। एक तो जन्म का समय अधिकतर ठीक मालूम नहीं होता, कुण्डली ही गलत बनती है। दूसरे, इस ज्ञान के माहिर, जो लालच न करें, कम मिलते हैं। तीसरे, पण्डित लोग पैसे के लालच से लोगों की तसल्ली के लिये, कुण्डली को ठीक नहीं पढ़ते और कह देते हैं कि फ़लां ग्रह का फ़लां उपाय करो। अमुक जाप कराओ या अमुक दान-पुण्य करो। यह केवल तसल्ली है। ग्रह का प्रभाव नहीं हट सकता। ग्रह तो वृक्ष, घास-फूस, फल, पौधे, जानवर इत्यादि सब पर असर करते हैं। उनका असर भजन-सिंमरन से ही कुछ कम होता है। वरना सबको कर्मों का नतीजा, जिसके ग्रह केवल इशारा या ज़ाहिर करने वाले हैं, भोगना पड़ेगा। ग्रह-चाल सही है।

27 जून सुबह हुजूर लाला अर्जुन दास, इंजीनियर की कोठी पर गये। वहाँ शेख़ फ़ज़लुद्दीन भी आ गये। इधर-उधर की बातें होने लगी। वहाँ एक घण्टे तक रहे। लाला अर्जुन दास को उनकी कोठी की मरम्मत के विषय में और नई कोठी की नींव के विषय में सलाह देते रहे कि लकड़ी के तख्ते- जो कमरों के फ़र्श में लगते हैं- के जो जोड़ होते हैं, उनके नीचे पत्थर के रोड़े ज़रूर होने चाहियें ताकि जोड़ गलें नहीं। वरना फ़र्श की नमी से यह जोड़, विशेषकर पहाड़ों में, गल जाते हैं। लकड़ी के तख्ते के पास हवा आने-जाने का इन्तिज़ाम ज़रूर करना चाहिये ताकि दुर्गन्ध न फैले। फिर फ़क़ीरों का ज़िक्र चल पड़ा। हुजूर ने फ़रमाया कि ज़िन्दा हकीम, ज़िन्दा हाकिम और ज़िन्दा फ़क़ीर फ़ायदा देता है। लोग मरे हुए फ़क़ीरों की क़ब्रों पर सिर-माथा रगड़ते हैं और आशीर्वाद लेने जाते हैं। यह सब भूल है, 'जिये पित्र न पूजई मोये श्राद्ध कराई'¹³

भाई शादी ने फ़रमाया कि हुजूर जब सक्कर व सिरसा इत्यादि को जाते थे, तो वहाँ के मस्त फ़क़ीर बड़े खुश होकर हुजूर को सलाम करने आते। रास्ते में मिलते तो कहते कि रब्ब की मोटर कार आ रही है। खुशी में नाचते। गोया फ़क़ीर सब एक हैं। उनमें दुनियादारों की तरह मज़हबों के पक्षपात का भेदभाव नहीं होता। हुजूर ने फ़रमाया कि रीति-रिवाज (कर्मकाण्ड) हर एक मज़हब के भिन्न-भिन्न हैं, परन्तु रूहानियत सबकी एक हैं, फ़क़ीर शरीयत (कर्मकाण्ड) को नहीं तोड़ते।

शाम को सत्संग हुआ। 'जग में घोर अंधेरा भारी'¹⁴ शब्द हुजुरी वाणी में से लिया गया। जगत में अंधेरा इसलिये है कि जल और थल दोनों में जीवों का भोजन जीव है। 'जेते दाणे अन्न के जीआं बाझ न कोय'¹⁵ जीवों को मारने का पाप उनके तत्त्वों के कम व अधिक होने के अनुसार होता है। आदमी में पाँच तत्त्व हैं। उसको मारना सबसे बड़ा पाप है। उससे नीचे जानवर चार तत्त्व वाले, फिर पक्षी तीन तत्त्व वाले, फिर कीड़े-मकौड़े दो तत्त्व वाले, फिर सन्झियाँ एक तत्त्व वाली। सन्झियों का खाना पाप तो है, परन्तु सब से कम और उनके बिना गुज़ारा नहीं हो सकता।

28 जून की सुबह को हुजूर सैर करने नहीं गये। फ़रमाया कि हाज़मा खराब हो रहा है। एक बार फ़रमाया कि ज्योतिषी लोगों का कहना है कि मेरा हाज़मा

हमेशा कमजोर रहेगा। एक रानी साहिबा सत्संगिन को लिखवाया कि तुम बड़ी भाग्यशाली हो कि राजा के घर होते हुए भी तुम्हें भजन-सिमरन, भक्ति का शौक है। यह श्लोक लिखा गया, 'ऊँट मुनारे ते चढ़े गेंद गुम्बद ठहराय। राजा होके हर भजे अचरज कहा न जाय'¹⁶ नहीं तो तप से राज्य और राज्य से नरक, कहावत प्रसिद्ध है। शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब से मारु राग का शब्द पढ़ा गया। 'संगी जोगी नार लपटाणी'¹⁷ नार से मतलब यहाँ माया या शरीर है। शरीर आत्मा रूपी पति को कहता है कि मुझे छोड़कर न जाना। आत्मा उत्तर देती है कि मैं परमात्मा के हुक्म का बन्दा हूँ, जब हुक्म आयेगा तो छोड़ दूँगा। शरीर उसके इस वचन को केवल हँसी समझता है। अन्त में जब धुर से हुक्म होता है तब आत्मा शरीर को छोड़ जाता है। मनमुख नरकों में जाते हैं, गुरुमुख सदा अमर जीवन पाते हैं।

इन्हीं दिनों में दो पत्र हुजूर को आये हैं, एक वज्जीराबाद से दूसरा फ़िरोज़पुर से, जिनमें दो बीबियों के अन्त समय का हाल लिखा है कि किस तरह हुजूर ने दया से उनकी अन्त समय सहायता की। हालाँकि उन्होंने कुछ भजन-सिमरन नहीं किया था, क्योंकि छोटी उम्र थी। एक बीबी ने कहा कि सतगुरु आ गये हैं। जब उसके रिश्तेदारों ने कहा कि हमको दिखाई नहीं देते तो बहुत हँसी। लोग बड़े हैरान हुए। यह कैसी रूह है कि मौत आ गई और हँसती है।

आजकल हुजूर सार बचन वार्तिक को पढ़ रहे हैं और बड़े ध्यान से उसको पढ़ते हैं। जल्दी-जल्दी पृष्ठ नहीं उलटाते। फ़रमाया कि बहुत वर्षों के बाद यह पुस्तक पढ़ने का अवसर मिला है। डेरे में तो अवसर नहीं मिलता।

30 जून की शाम को हुजूर कुछ भेखी साधुओं के साथ सतधारा की ओर सैर को तशरीफ़ ले गए। सतधारा पर जाकर एक पत्थर पर बैठ गये और कहने लगे कि आप लोग साधु हैं और वाणी में आया है 'साधु चरण अठ-सठ से उत्तम। भूमि पवित्र जहाँ पग धरते'¹⁸। एक साधु ने कहा कि भक्ति के बिना ज्ञान ऐसा ही है जैसा कि एक सुन्दर औरत, बिना वस्त्र-जेवर के। हुजूर ने उत्तर दिया कि यह ठीक है। परन्तु भक्ति गुरु से मिलती है। पहले गुरु-भक्ति, फिर नाम-भक्ति और नाम-भक्ति का फल ज्ञान है। तुलसी साहिब ने कहा :

राम कृष्ण से को बड़ो, तिन्हीं भी गुरु कोन।

तीन लोक के नायका, गुरु आगे आधीन॥¹⁹

साधु ने कहा कि गृहस्थ मार्ग भी उत्तम हैं, जैसा कि गुरु नानक देव जी ने कहा है :

गृहस्थ में जो रहे उदास, कह नानक हम ताके दास।²⁰

हुजूर ने जवाब दिया कि यह तो ठीक है, परन्तु यह बड़ा कठिन है, सतगुरु की बख्शीश के बिना नहीं हो सकता। गृहस्थ काजल की कोठरी है। किसी बुद्धिमान ने कहा है, "काजल की कोठरी में कैसी ही सयानो बड़ो। काजल की एक रेख लागत पर लागत है"।

फिर हुजूर ने रास्ते में फ़रमाया कि जब सन्त धुर-धाम पहुँच जाते हैं तो जैसे कोई सिपहसालार मुल्क फ़तह करके खुशी का नारा लगाता है, कभी-कभी सन्त भी धुर-धाम पहुँचकर नारा लगाते हैं। जैसे पलटू साहिब ने कहा है:

कोटिन जुग परलय गई हमहीं करनेहार।

हमहीं करनेहार हमहिं करता के करता।²¹

और गुरु नानक देव जी ने फ़रमाया :

रूप हमारा अचरज कहिए, हम होत अचरज बानी।

किरन हमारी सब घट पसरी, कला सकल घट तानी।²²

फिर हुजूर ने रूस के ज़ार पीटर का उदाहरण दिया कि जब वह इटली में जहाजों का काम सीखने गया तो मजदूरों का भेष बना लिया और रूस से निकाले हुए रूसी उसकी असलियत को न जानते हुए उसके दोस्त बन गये। जब वह काम सीख कर रूस वापस जाने लगा तो वे मजदूर कहने लगे कि जाना तो हमें भी था, मगर क्या करें, बादशाह ने हमें देश से निकाला हुआ है। पीटर ने कहा कि तुम मेरे साथ चलो, मेरी बादशाह से जान पहचान है। मैं तुम्हें बचा लूँगा। जब वहाँ गये तो देखा कि पीटर मजदूर स्वयं बादशाह है। यही हाल सन्तों का है।

1 जुलाई शाम को हुजूर ने कचहरी वाले मैदान में अंग्रेज़ी काँट पर वज्रन किया। हुजूर का वज्रन 1 मन 23 सेर के लगभग था। हुजूर ने फ़रमाया कि बहुत साल हुए तब वज्रन लिया था। पाँच सेर वज्रन कम हो गया है। पिछले साल डलहौज़ी में बेहद बरसात थी। उस समय हुजूर की सेहत कमजोर हो गई थी। सैर के बाद हुजूर अपनी कोठी के मैदान में कुर्सी पर बिराजमान हो जाते हैं और

सत्संगी बेंचों पर बैठ जाते हैं। आज हुजूर ने बताया कि विद्यार्थी जीवन में उन्होंने 'मण्डली' नाम की एक हिन्दी पुस्तक पढ़ी थी, जिसमें मौसमों की बाबत भविष्यवाणी करने का ढंग दर्ज था कि फ़लों वक्त फ़लों दिन ऐसी शक्ति का बादल फ़लों दिशा में हो तो उसके बाद फ़लों समय ऐसा मौसम होगा। हुजूर ने उस ग्रन्थ में से दो-एक दोहे सुनाये, उनमें से एक यह था :

तितर खम्भी बददली रंन मलाई खाय।

ओह बरसे ओह उधले कदी न खाली जाय।²³

हुजूर ने हुक्म दिया कि उस पुस्तक की तलाश करो और गिरधर कवि की कुण्डिलयाँ भी मँगवाओ। दयालबाग के एक सत्संगी ने कहा कि राधास्वामी मत ऐसा-ऐसा है इत्यादि। हुजूर ने फ़रमाया कि मैं राधास्वामी मत को मज़हब नहीं बनाना चाहता। यदि मज़हब बना दिया जाये तो दूसरे मज़हब वाले हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, जैनी, यहूदी इत्यादि इससे लाभ नहीं उठा सकेंगे। जैसे वे मज़हब हैं वैसे ही यह हो जायेगा। रूहानी मत तो रूहानी फ़िलासफ़ी है और मज़हब हैं वेसे ही यह हो जायेगा। रूहानी मत तो रूहानी फ़िलासफ़ी है और कुदरती साईस है, जोकि हर एक मज़हब की जड़ है और हर एक मज़हब इस फ़िलासफ़ी का अपना है। इसलिये सब मज़हब वाले इससे लाभ उठा सकते हैं। इस तरीक़े को अपनाने से किसी का धर्म नहीं बिगड़ता। हिन्दू-हिन्दू रहकर, मुसलमान मुसलमान रहकर, ईसाई ईसाई रहकर सुरत-शब्द का अभ्यास कर सकता है। हर एक मज़हब के कर्मकाण्ड रीति-रिवाज अलग-अलग हैं और इसीलिये मज़हबों में आपस में शत्रुता है। राधास्वामी मत का कोई कर्मकाण्ड या रीति-रिवाज नहीं है। इसी तरह सिक्ख मत, जैसे कि गुरु साहिबान ने अपने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में प्रकट किया है, एक रूहानी फ़िलासफ़ी और कुदरती साईस है। हम लोगों ने उसको मज़हब बना लिया और रूहानी तरक्की रुक गई। गुरु साहिबान के समय में हिन्दू, मुसलमान उनकी रूहानी शिक्षा से बराबर लाभ उठाते थे। सुरत-शब्द के अभ्यास की तरफ़, जिसकी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में शिक्षा है, अब हमारा ध्यान कम हो गया है।

4 जुलाई को सुबह 8 बजे हुजूर सैर को तशरीफ़ ले गये। रास्ते में भाई शादी ने कहा कि एक बूढ़े पण्डित का लड़का आर्य-समाजी हो गया। जब वह घर आया तो उसका बूढ़ा बाप ठाकुरों की पूजा कर रहा था। लड़के ने कहा कि

पत्थरों को क्यों पूजते हो। ये ठाकुर कैसे हैं कि न इनका सिर न इनका पैर। इस पर बूढ़ा पण्डित बड़ा नाराज़ हुआ :

पण्डित-मुल्ला-मशालची तीनों बेईमान।

लोकां भेजन चानने आप अंधेरे जान।²⁴

इसी तरह सुथरे फ़क़ीर ने कहा :

माला लक्कड़ ठाकुर पत्थर तीर्थ सभ्ने पानी,

नामे बाज़ों सुथरया चारों वेद कहानी।²⁵

शाम को सवा छः बजे सत्संग हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से गुरु अमर दास जी का शब्द पढ़ा गया। इसके बाद हुजूर सैर को तशरीफ़ ले गये और आकर कोठी के सहन में कुर्सी पर बिराजमान हुए। सत्संगी सामने दरी बिछाकर बैठ गये। वहाँ से सवा नौ बजे, रेडियो पर ख़बरें सुनने, अन्दर आ गये। कई सत्संगी नीचे मैदानों से आज यहाँ आये।

एक सत्संगी बहुत सख्त बीमार है। उसके बचने की आशा नहीं है। किसी ने आज शाम की सैर के समय हुजूर से कहा कि वह इस बात का गुस्सा करता है कि उसकी जान हुजूर महाराज जी ने क्यों नहीं बचाई। हुजूर ने फ़रमाया कि अगर गुस्सा करेगा तो आगे जाकर भी दुःख उठायेगा। "ऐ बुलबुल तू नालां दम दर गुलो फ़रो बन्द-नाजुक मिजाजे शाहां ताबे सुखुन नदारद"।²⁶ नादान बुलबुल, तू क्यों रोती है? दम साध ले क्योंकि बादशाहों का मिजाज नाजुक होता है और बात बदरश्त नहीं कर सकता।

5 जुलाई को सुबह हुजूर रोज़ की तरह सैर को नहीं गये। फ़रमाया कि सुस्ती-सी मालूम होती है। मैं अकेला सैर करके दस बजे के लगभग लौटा तो हुजूर के पास बरामदे में एक जटाधारी बाबा जी, जो पहले भी आया करते थे तथा कुछ सत्संगी भाई-बहनें भी उपस्थित थे। हुजूर आजकल चरनदास जी का ग्रन्थ भक्तिसागर पढ़ रहे हैं। हुजूर ने फ़रमाया कि चरनदास जी ने योग-मुद्रा, प्राणायाम आदि साधनों का वर्णन किया है, जो बहुत कठिन हैं, क्योंकि योगियों ने आत्मा के साथ मन व प्राणों को भी ऊपर ले जाने की कोशिश की है। हालाँकि प्राण जड़ हैं, उनको ऊपर खींचने की ज़रूरत नहीं थी, परन्तु मन व आत्मा की गाँठ बँधी है, मन व आत्मा को इकट्ठे साथ ले जाना है। हुजूर ने

महात्मा चरनदास जी की वाणी में से चाचरी मुद्रा यानी तीसरी मुद्रा पढ़कर सुनाई, जिसमें लिखा था, अभ्यासी को चाहिये कि नाक के अगले भाग से चार उँगल आगे ध्यान जमाये। धीरे-धीरे उसको तत्त्वों के रंग दिखाई देने लगेंगे। फिर ध्यान का पीछा करता-करता नाक के अगले भाग तक ले आये तो तारा मण्डल, सूर्य, चाँद दिखाई देंगे। इस मुद्रा से सख्त मेहनत करके योगी सहस्र-दल कमल तक जाता है। हालाँकि हुजूर ने फ़रमाया कि सुरत-शब्द के अभ्यास से सगुण ब्रह्म यानी सहस्र-दल कमल में पहुँचना आसान है। वहाँ एक हजार बत्ती की ज्योति जल रही है। बीच में बड़ी ज्योति है। नीचे अमृत है। बड़ी ज्योति में से गुजरना पड़ता है। गुरु की सहायता के बिना सहस्र-दल-कमल को पार करना असम्भव है, क्योंकि वहाँ बहुत-सी ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ और माया इसको रोकने के लिये तैयार हैं। उसको पार करके बंकनाल में भी माया का सख्त जाल है। उसके पार ब्रह्म में युगों-युगों से ऋषि-मुनि पड़े हैं। वहाँ सारे संचित व क्रियमान कर्म काटकर आगे जाने का रास्ता मिलता है। पारब्रह्म से बराबर अखण्ड ध्यान लग जाता है और वहाँ से सतलोक दिखाई देता है। ऐसे, जैसे कि एल्समैयर के बरामदे से खड्डों के पार बर्फ वाले पहाड़ सफेद-सफेद नज़र आते हैं। जब सन्त अनामी में जा समाते हैं तो फिर खुशी का नारा लगाते हैं। चुनांचे, हुजूर ने घट रामायण में से तुलसी साहिब का शब्द 'अमर बूटी मोरे यार, प्यारे पिया ने दई'¹²⁷ पढ़वा कर सुनवाया। अमर बूटी से तात्पर्य शब्द है। फिर उसके बाद तुलसी साहिब का एक और शब्द चौपाइयों में पढ़वा कर बताया कि सन्तों में कैसी दीनता और विनम्रता होती है। 'तुलसी तुच्छ कुछ नहीं जाने, चरण शरण सतगुरु रते माने'¹²⁸ इत्यादि। इसके बाद पलटू साहिब का शब्द 'कोटिन जुग परलय गई हमही करनेहार। हमही करनेहार हमहिं करता के करता'¹²⁹ इसी विषय पर पढ़ा। 'देवतन की नानी' से तात्पर्य है, माया। इसके बाद दादू दयाल का शब्द 'जाने अंतरजामी अचरज अकथ अनामी'¹³⁰ पढ़ा गया। अन्तर्यामी का अर्थ है, जो अभ्यासी अन्दर जाता है वही जानता है। दादस कमल से तात्पर्य सहस्र-दल कमल है, जिसमें दस आवाजें, ज्योति और ब्रह्म हैं। एक सत्संगी ने कहा कि आज तो बहुत-से शब्द पढ़े गए। तो हुजूर ने उत्तर दिया कि भाई, जब कोई सर्राफ़ आता है तब ही जौहरी हीरे-जवाहरात निकाल कर दिखाता है। खदर के ग्राहक को मखमल कौन दिखाता है ? (बाबा जी की तरफ़ इशारा था।)

शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'बिखे बन फोका त्याग रो सखीऐ नाम महारस पीओ'¹³¹ पढ़ा गया। शब्द में जो रस है, वह दुनिया के किसी पदार्थ में नहीं। इस बात का सुनना आसान है पर विश्वास आना मुश्किल। जब विश्वास हो गया तो सच्चा परमार्थी बन गया।

इसके बाद सैर में एक सिक्ख सज्जन भी शामिल हो गये। हुजूर रास्ते में फ़रमाने लगे कि अभी तो सिक्ख क्रौम देश के मामलों और पार्टी-बाजी में लगी है। जब सत्संग फैलेगा तो उनकी आँखें खुलेंगी और वह देख सकेंगे कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की फ़िलासफी कितनी ऊँची है, सैर से आकर फिर नौ बजे तक हुजूर चरनदास जी की पुस्तक का अध्ययन करते रहे।

7 जुलाई को शाम के सात बजे महात्मा चरनदास जी की वाणी में से 'शील का अंग'¹³² लिया गया। उनके अनुसार शील बाकी सब सत्गुणों की जननी है। ब्रह्मचर्य के बिना न जप, न तप, न यज्ञ, न दान फल देते हैं। इन्द्रियों का दमन करना भजन-अभ्यास की बाड़ है। जब बाड़ ही न रही तो खेती उजड़ जायेगी। ब्रह्मचर्य हर आयु में लाभदायक है। यदि जवानी में रखा जाये तो अकसीर है, परन्तु बड़ा मुश्किल है। इसके बाद कबीर साहिब की वाणी में से भी 'शील का अंग' लिया गया। जो आठ तरह के काम से मुक्त हो, वह जितेन्द्रिय है। अर्थात् पहले औरत का ध्यान आना, दूसरे औरतों की बातें करना, तीसरे औरतों की बातें सुनना, चौथे एकान्त में बात करना, पाँचवे उससे हँसना, छठे उससे खेलना, सातवें उसको छूना और आठवें उससे भोग करना। मानो, औरत का ध्यान आना भी काम में शामिल है। परन्तु ब्रह्मचर्य की पदवी उसको मिलती है, जिसको मालिक स्वयं दे। हर एक के लिये यह मुमकिन नहीं। 'ई सआदत बजोरे बाजू नेस्त। ता न बख़्शाद खुदाए बख़्शांदा'¹³³ यह गुण खुद नहीं आ सकता, जब तक कि दाता दयाल दया न करे। 'साचे साहिबा क्या नाहीं घर तेरै। घर त तेरै सभ किछ है जिस देह सो पावै'¹³⁴

हाफ़िज़ साहिब ने कहा है :

दर कुए नेक नामी मारा गुज़र न दादन्द,
गर तू नमे पसन्दी तगीर कुन क्रजारा।¹³⁵

मैंने नेकनामी के कूचे में कदम नहीं रखा, अगर तुझे यह बात पसन्द नहीं तो मेरी मौत को टाल दे।

सत्संग के समाप्त होने पर एक क्लर्क ने, जो ऐबटाबाद से आया था, प्रार्थना की कि हुजूर मुझको बाक़ी क्लर्कों ने दुश्मनी करके लड़ाई में समुद्र पार भिजवाने का हुक्म करवा दिया है और मैं जल्दी ही जज़ीरा साईंप्रेस को जाने वाला हूँ। हुजूर ने फ़रमाया कि ज़रूर जाओ। डरो मत। लड़ाई में जाओगे तो शायद तरक्की का मौका मिल जाये और यह कहावत भी है कि 'कुबड़े को लात मारी गुन आ गई'। मौत का वक़्त निश्चित है। उस वक़्त चाहे कहीं भी हो, मौत नहीं टल सकती। महाराजा रणजीत सिंह के समय में एक सिक्ख ने, जो ज़िला हज़ारा में पठानों के साथ लड़ाई करने गया था, ज्योतिषी से पूछा कि मेरी मौत कहाँ आयेगी। ज्योतिषी ने कहा कि समुद्र में। वह हज़ारा में एक नाले के पास जख्मी हो गया और बचने की आशा न रही। उसने साथियों से पूछा, इस नाले का क्या नाम है? वह बोले, 'समुद्र' बस मर गया।

सैर में हुजूर ने एक भैंस को देखकर फ़रमाया कि भैंस बहुत जल्दी मनुष्य से प्यार करने लग जाती है। शादी ने कहा कि हुजूर आपका काला घोड़ा, सिरसा में जब आप उस पर से उतरते थे तो आपके पीछे-पीछे जाया करता था। जब आप धीरे-धीरे चलते, वह धीरे-धीरे चलता। हुजूर ने जवाब दिया कि कई बार ऐसा भी हुआ है कि सवार लड़ाई में मारा गया, परन्तु घोड़ा वहीं उसके पास खड़ा रहा।

आगे जाकर एक खेत को देखकर फ़रमाया कि साँगली में ज्वार, चरी हर मौसम में बो देते हैं। एक खेत से ज्वार काट रहे हैं, दूसरे में बो रहे हैं। जब वर्षा हो, ज्वार बो देते हैं। वहाँ की ज्वार लेसदार होती है। इसलिये उसकी रोटी पतली भी पक जाती है। वैसे पहाड़ की मक्की भी लेसदार होती है। इसलिये उसका आटा ठण्डे पानी से गूँध लेते हैं। पहाड़ पर गेहूँ आठ-दस माह में पकता है। सर्दी में बो देते हैं। ऊपर से बर्फ पड़ जाती है। जब बर्फ पिघल जाती है तो गेहूँ के पौधे ज़मीन से फूट-फूट कर निकल आते हैं।

9 जुलाई को सुबह धुन्ध ज़्यादा थी। कपड़े भीग रहे थे। इसलिये कोई भी सैर को नहीं जा सका। ग्यारह बजे के करीब एक जैनी साधु मुँह पर पट्टी बाँधे

हुजूर से मिलने आया। ये लोग दरी या मूँज के फ़र्श पर नहीं बैठते। अतः इस महात्मा के लिये दो छोटे-छोटे लकड़ी के फट्टे मँगवाकर उनको बिराजमान करवाया गया। उनकी बातों से मालूम होता था कि वे पहले से हुजूर को जानते हैं। बोली, बागड़ या देहली के आसपास की है। हुजूर डाक सुनते रहे। महात्मा बैठे रहे। अज़ीज़ रघुवीर ने कभी भी मुँह पर पट्टी वाला साधु नहीं देखा था। वह बड़े ध्यान से देखता और मुझसे पूछता कि यह कौन है? मैं कहता चुप, फिर तशरीफ़ लायेंगे। शाम को महात्मा चरनदास जी की वाणी में से भक्तों की महिमा और भक्तों के लक्षण पढ़े गए। हुजूर ने फ़रमाया कि साधु ऐसे होते हैं "सौ साँठ गाँठ कुपीन में साध न मानें संक, आत्म रस माते फिरें गिनैं इन्दर को रंक"।¹⁶ फिर कहा कि पोठोहार के इलाके का एक निहंग पोहूसिंह कहा करता था कि तड़के उठकर भजन करनेवाला, बिच्छू होता है। कभी डंक भी मार देता है। एक जटाधारी साधु जिसका पहले भी जिक्र आ चुका है, हुजूर के सामने कुर्सी पर बैठा, वाणी सुन रहा था। कहने लगा कि कहावत है कि भगवान की बाँधी तो उसके भक्त छुड़ा देते हैं। परन्तु भक्तों की बाँधी भगवान भी नहीं छुड़ाता। इस पर हुजूर ने गुरु अर्जुन साहिब का क्रिस्सा सुनाया कि एक बार गुरु साहिब लाहौर में संगत के साथ भाई बुद्ध जी के घर खाना खाने तशरीफ़ ले गए। खाने पर एक सिक्ख देर से पहुँचा। बाहर का दरवाज़ा बन्द था, उसको किसी ने नहीं खोला, वह बाहर ही रहा। जब खाना खत्म हो चुका तो गुरु साहिब ने ग्रन्थी को हुक्म दिया कि अरदासा साधो। तो भाई बुद्ध ने प्रार्थना की कि मेरा आवा ईंटों का पक जाये, तो इतने में वह सिक्ख भी आ धमका, जो दावत से वंचित रह गया था। बोला, जो आवा नहीं पकेगा। गुरु साहिब ने फ़रमाया कि "अच्छा भाई, कच्चा ही पक्के के भाव बिक जायेगा" मानो गुरु साहिब ने अपने भक्त के वचन को रद्द नहीं किया।

फिर फ़रमाया कि मुक्ति चार प्रकार की है- सामीप्य, सालोक्य सारूप्य सायुज्य। मगर सन्त किसी मुक्ति को नहीं माँगते। संसार में चार पदार्थ हैं- धर्म, अर्थ, काम, तथा मोक्ष। सन्त इनको भी नहीं माँगते। पलटू साहिब ने कहा है, 'संत न चाहें मुक्ति को नहीं पदार्थ चार'।¹⁷

11 जुलाई को मलिक साहिब मुलतान से तशरीफ़ लाए। कल महात्मा चरनदास जी की वाणी में से त्वचा और मन का अंग लिया गया। त्वचा का स्वाद अधिकतर काम पर आधारित है। त्वचा का स्वाद छोड़ना एक कठिन काम है। मन हमेशा एक-रस नहीं रहता; कभी जोगी है, कभी मस्त, कभी दुःखी है, कभी सुखी, कभी लालच में, कभी क्रोध में, कभी काम में, कभी अहंकार में, कभी लोभ में। उसको बिना अभ्यास के एक-रस रखना, असम्भव है। जब तक ऊपर के देशों का स्वाद नहीं आयेगा, इस संसार के भोग मन को खींचकर उसकी हालत बदलते रहेंगे।

कल गुजरात के ज़िले धानावाली से एक बीबी का खत आया कि एक सत्संगी की मौत पर हुजूर ने भली प्रकार सँभाल की और सत्संगी ने मौत से पहले सब सत्संगियों को बुलाकर विदा ली और कहने लगा कि सतगुरु आ गये हैं, अब मेरी तैयारी है।

आज शाम सरदार बहादुर मक्खन सिंह की चाय, हुजूर के यहाँ थी। फिर छः बजे सत्संग हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'बिख बोहिथा लादया दीआ समुंद मंझार'³⁸ का शब्द और हुजुरी वाणी में से 'धन्य धन्य धन धन्य पियारे। क्या कहूँ महिमा शब्द की॥'³⁹ पढ़े गए। दोनों शब्दों का मतलब नाम अर्थात् धुनात्मक नाम पर जोर देना है, जिसको श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में और सन्तों की दूसरी वाणियों में भी शब्द कहकर वर्णन किया गया है। वही जटाधारी महात्मा भी सत्संग में आये हुए थे। फ़रमाया कि फ़कीर चार प्रकार के होते हैं— रेख, भेख, देख और लेट अर्थात् पहले वे जिनके भाग्य में धुर-धाम जाना लिखा होता है। दूसरे उदासी संन्यासी इत्यादि साधु। तीसरे वे जो गृहस्थ आश्रम को छोड़कर दर-दर माँगने लग जायें। एक दरवाज़ा छोड़कर सौ दरवाज़े देखें। चौथे वे जो खा-पीकर लेट जाते हैं।

हुजूर सत्संग के बाद सैर, सैर के बाद नौ बजे रेडियो की खबरें सुनते हैं। हुजूर ने फ़रमाया कि "दुख सुख कहिए मित्र पास, रोग वैद्य के पास। दुश्मन पास गरजिए, तीनों आयें रास"।

13 जुलाई को कबीर साहिब के साखी-संग्रह में से 'सत्संग की महिमा'⁴⁰ का शब्द पढ़ा गया। जैसे नदी नालों का गन्दा पानी गंगा से मिलकर गंगा-जल

बन जाता है। इसी तरह अच्छी संगति का अच्छा असर होता है। शेख़ सादी ने फ़रमाया है :

गिले खुशबूए दर हमाम रोज़े, रसीद अज़दस्ते महबूबे बदस्तम्।

ब गुफ़तम कि मुश्की अंबरे या अबीरी, कि अज़बूए खुशबूए तू मस्तम।

गुफ़ता मन गिले नाचीज़ बूदम, व-लेकिन मुद्ते बा गुल निशस्तम।

जमाले हम-नशीं दर मन असर कर्द, वगरना मन हमा खाकम कि हस्तम।⁴¹

एक दिन स्नानालय में एक सुगन्धित मिट्टी का टुकड़ा मेरे प्रियतम के हाथों से मेरे हाथ में आया। मैंने उससे पूछा कि तू अम्बर है या कोई और इत्र, क्योंकि तेरी मनमोहक सुगन्धि से मैं मस्त हुआ जाता हूँ। उसने जवाब दिया कि मैं तो तुच्छ मिट्टी का टुकड़ा था, परन्तु कुछ दिन मुझे फूल के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरे साथी के गुणों का प्रभाव मुझ पर पड़ा, नहीं तो मैं वहीं तुच्छ मिट्टी हूँ जो कि था।

आज दोपहर को डाक देखी। उसके बाद शाम को छः बजे गुरु राम दास जी का शब्द 'हर कीआं कथा कहाणीआं गुर मीत सुणाईआं'⁴² पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि आत्मा मृत्यु के समय शरीर से स्वयं नहीं निकल सकती, या तो उसको यमदूत निकालते हैं या सतगुरु। नाम वालों के बिना, सबकी आत्माएँ यमदूत निकालते हैं और बड़ी तकलीफ़ होती है। जटाधारी बाबा जी सत्संग में मौजूद थे, पूछने लगे कि मौत के समय अक्सर लोगों के या तो आँखों से पानी आता है या दस्त निकल जाता है। इसका क्या कारण है? हुजूर ने जवाब दिया जब रूह को काल कब्जे में लेता है तो डर के मारे कुछ लोगों के दस्त निकल जाते हैं, कुछ के आँसू। काल त्रिलोकी नाथ अथवा तीनों लोकों का मालिक है। 'जगत चबेना काल का कुछ मुख में कुछ गोद'।⁴³

सैर के बाद हुजूर सहन में कुर्सी पर बैठ गये। गीता की चर्चा चल पड़ी कि हिन्दुओं में गीता की बहुत महिमा है। हुजूर ने फ़रमाया कि गीता जो कहती है कि दोनों आँखों के बीच में देखो, उस पर अमल कोई नहीं करता। ध्यान की पाँच मुद्राएँ— भूचरी, खेचरी, चाचरी, गोचरी इत्यादि हैं। इन में से तीसरी मुद्रा अर्थात् चाचरी सबसे बेहतरीन है और चरनदास जी के ग्रन्थ में से चाचरी मुद्रा का हाल निकलवा कर पढ़ाया कि इस तरह ध्यान जमाने से, तत्त्वों का रंग, तारा, सूर्य इत्यादि नज़र आ जाते हैं। यही आरम्भ में सन्तमत का भी तरीका है।

15 जुलाई आजकल डलहौजी एजेन्सी वाले सरदार साहिब मक्खन सिंह जी हुजूर से अक्सर मिलते रहते हैं। सैर में भी उनसे मुलाकात हो जाती है। बड़े उदारचित्त पुरुष हैं। कल शाम सैर में मिल गये। हुजूर को और हुजूर के सत्संगियों को अपने घर चाय के लिये बुलाया। बड़ी ज़िद की, अन्त में हुजूर को मानना पड़ा। 20-22 तारीख के करीब उनके निवास-स्थान पर चाय के लिये जाना होगा।

आज शाम को वह सत्संग में तशरीफ लाये और लुधियाना के एक सरदार साहिब और जैन मत के एक पूज्य महात्मा जी भी, जिनका जिक्र पहले आ चुका है, आये। हुजूर ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से दो शब्द 'काया कामण अत सुआल्यो'⁴⁴ और 'रामा रम रामो सुन मन भीजै'⁴⁵ पढ़कर खूब व्याख्यान किया कि सबकुछ इन्सान की काया में ही है। बल्कि सारी सृष्टि और स्वयं परमात्मा भी इन्सान के अन्दर मिलेगा। यह श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का मूल सिद्धान्त है। आज सुबह सैर में एक सरदार साहिब अपनी दुनियावी बातें करते रहे। जब वह चले गए तो एक सत्संगी ने शिकायत की कि देखो इन्होंने सिवाय दुनियावी बातों के कोई रूहानी बात नहीं की। हुजूर साहिब ने फरमाया कि यह सच है परन्तु उसको फ़ायदा तो हो गया।

कल शाम हुजुरी वाणी में से बारहमाहा, माह आसाढ़ व सावन पढ़े गए। सावन माह में सत्संगी और गैर-सत्संगी की मौत में अन्तर बताया गया है कि सत्संगी मौत के समय गुरु के साथ जाते हैं और गैर-सत्संगी यमदूतों के साथ दुःख उठाते हैं। आसाढ़ माह में स्वामी जी महाराज ने वर्णन किया है कि जब जवान आदमी की शादी हो जाती है तो वह औरत के प्यार में, माँ-बाप को भूल जाता है। हुजूर ने फ़रमाया, "पैसा पीर, रन्न गुर, जिधर आखे उधर दुर"।

16 जुलाई को संक्रान्ति थी। शाम को छः बजे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से बारहमाहा, गुरु अर्जुन देव जी, का पाठ पढ़ा गया। डलहौजी से सरदार बहादुर व कुछ सिक्ख भाई आये हुए थे। हुजूर ने खूब जोर से व्याख्यान किया और फिर एक रानी साहिबा व सरदार बहादुर साहिब हुजूर से उनके ड्राईंग रूम में, रात के नौ बजे तक, बातचीत करते रहे और हुजूर को 18 जुलाई रात्रि के पाँच बजे, सारी संगत के साथ, अपने मकान पर सत्संग करने के लिये, आमन्त्रित कर गये।

17 जुलाई को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से राग मारू महला तीसरा 'जगजीवन साचा एको दाता'⁴⁶ तथा हुजूर स्वामी जी महाराज की वाणी में से 'गुरु क्यों न सम्हार। तेरा नर तन बीता भर्म में'⁴⁷ लिये गए। इसके बाद वर्षा के कारण हुजूर सैर को, सवा आठ बजे तशरीफ ले गए। आकर खबरे सुनीं।

आज शाम को सवा पाँच बजे हुजूर एल्समेयर से सरदार बहादुर मक्खन सिंह की कोठी पर तशरीफ ले गए। सारी संगत वहाँ पहुँच गई थी और भी लोग बुलाये गए थे। लाहौर हाईकोर्ट के जज सरदार तेजा सिंह और दीवान बहादुर माधो राम, चम्बा वाले इत्यादि। पहले तो शब्द-कीर्तन रागियों ने किया। दो हारमोनियम, एक सारंगी, तबले वाला। पहले तो श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'सुण सखीए मेरी नौद भली मैं आपनड़ा पिर मिलया। भ्रम खोयो सांत सहज सुआमी परगास भया कौल खिलया'⁴⁸ गाया। फिर रागियों के लीडर, गद्य में व्याख्यान भी देने लगे। पहले एकादशी के व्रत व करवा चौथ के व्रत के बारे में चर्चा की। बेशक सच्ची एकादशी, हरि-नाम की धुन जो अन्तर में हो रही है, उसको सुनना ही है। उसके बाद 'मोहन घर आवो करौं जोदरीआ'⁴⁹ सुनाया। फिर 'कोई आण मिलावै मेरा प्रीतम प्यारा हौं तिस पह आप वेचाई'⁵⁰ शब्द की दो-तीन कड़ियाँ गाईं। बीच में गुरु गोरखनाथ व उसके चेलों, झंगड़नाथ वगैरह का, गुरु नानक साहिब से संवाद, छेड़ दिया। हालाँकि गुरु गोरखनाथ, गुरु नानक साहिब के समय से, बहुत पहले हो चुके थे और इन दोनों महात्माओं का आपस में संवाद जो ग्रन्थों में दर्ज है वह अन्तरी स्थानों पर हुआ न कि इस भौतिक संसार में, मगर रागी जी ने उसको इस संसार में बयान किया। इसके बाद राजा शिवनाथ के सतगुरु नानक देव जी के दर्शनों के प्रति वैराग्य व तड़प का वर्णन करते हुए बीच में विरह व प्रेम के राग भी गाये गए। "मोह लागती तालाबेली, बछड़े बिन गाय अकेली" और पाँचवीं पातशाही का दोहा 'तू चौ सज्जन मेंडया डेई सिस उतार। नैण महिजे तरसदे कद पसी दीदार।'⁵¹ इसको मिर्जा-साहिबाँ की तर्ज पर गाया। जैसे देहाती लोग मिर्जा-साहिबाँ गाते हैं, लम्बी आवाज़ से, मगर अच्छा गाया। इसके बाद जब राजा शिवनाथ को गुरु नानक के दर्शन हुये तो विसाल का वही शुरू वाला शब्द गाया, 'सुण सखीए मेरी नौद भली।' राग के अन्त में सारंगी वाले रागी ने वायलिन बजाई और खूब बजाई। मैंने वायलिन कई बार लाहौर में सुनी मगर रस नहीं आया। या

तो यहाँ यह बात थी कि यहाँ वायलिन के साथ-साथ हारमोनियम व तबले भी बजते थे और वहाँ अकेला वायलिन सुना था। बम्बई में ताजमहल होटल में भी वायलिन सुना, मगर आनन्द नहीं आया।

इसके बाद हुजूर ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से दो शब्द लिये। 'इस गुफा मह अखुट भंडारा। तिस विच वसै हर अलख अपारा'⁵² और 'पाठ पढ़यो अर बेद बीचारयो निवल भुअंगम साधे'⁵³ और शब्द-धुन की खूब व्याख्या की और गुरु की जरूरत का वर्णन किया। इनसान सारी सृष्टि से उत्तम हस्ती है। इसके लिये अपने से निचले जीव-जन्तु जैसे गाय, गरुड़, साँप, तुलसी, पीपल इत्यादि पूजना, बड़ी मूर्खता है और हानिकारक है क्योंकि जो जिसको पूजेगा उसी का रूप हो जायेगा, "जहाँ आसा तहाँ बासा"। उसके बाद बताया कि इनसान दूसरे इनसान को पूजे तो क्यों पूजे, जब सब इनसान बराबर हैं। मगर जो इनसान अपना परदा अन्तर में खोलकर कुल मालिक से मिल चुका हो, वह सब इनसानों से उत्तम है, वही हमारा आन्तरिक परदा खोलकर, हमें परमात्मा से मिला सकता है। फ़ारसी लेखकों मौलाना रूम, शम्स तबरेज़ की उक्तियाँ दीं। दूसरे शब्द में हुजूर ने बताया कि कर्म-धर्म से जीव की मुक्ति नहीं होती। सिवाय साध-संगत और आन्तरिक शब्द-धुन के मुक्ति का और साधन बिलकुल नहीं है।

सत्संग के बाद सरदार बहादुर जी के होनहार साहिबजादों ने फ़िल्म दिखाई। पहले तो चम्बा के रावी नदी के निकलने के स्थान, मणि-महेश के सफ़र के नज़ारे दिखाये। चम्बे से परे रावी नदी का पानी साफ़-सुथरा और चमकदार दिखाई देता है और रावी के ऊपर दो-तीन जगह रस्सियों के पुल हैं। आगे जाकर दो नाले मिलकर रावी नदी बन जाती है और कई छोटी-छोटी नदियाँ भी आ मिलती हैं। कई झरने भी दिखाये। मणि-महेश से आगे कैलाश पर्वत, 19 हजार फुट की ऊँचाई पर है। उसका रस्ता भी दिखाया। दस हजार फुट की ऊँचाई से ऊपर वृक्ष नहीं थे। केवल घास वाली चट्टानें थीं। मगर कुछ स्थान मनोहर व सुन्दर थे। कमल के फूल बड़े-बड़े लाल रंग के इस तरह लगे हुए थे कि ज़मीन नज़र नहीं आ रही थी। मानो लाल फूलों की क्यारियाँ थीं। कैलाश से बीस मील इधर, दो शिवजी के मन्दिर हैं, जोकि बारह सौ साल पहले के बने हुए हैं। वहाँ शिवजी महाराज का

नन्दी बेल धातु का बना हुआ, मन्दिर के आगे खड़ा दिखाई देता है। भेड़ें, बकरियाँ चरती दिखाई देती हैं। एक पुजारी मन्दिर के दरवाज़े के बाहर खड़ा घड़ियाल बजा रहा है। वहाँ सब सुनसान मालूम होता है, कोई आबादी दिखाई नहीं देती। बर्फ़ के बड़े-बड़े पहाड़ (Glacier) या काली चट्टानें, सर्दी से जली हुई, दिखाई देती हैं। कैलाश के नीचे एक साफ़-सुथरी चमकदार झील हैं, जिसको मानसरोवर कहते हैं और जहाँ साधु-महात्मा स्नान करने जाते हैं लेकिन बड़ी सर्दी है क्योंकि जो लोग वहाँ चलते-फिरते नज़र आये, उन सबने ऊनी लबादे, ऊनी पायजामे, टोपे पहने हुए थे। मणि-महेश के परे, गढ़ियों की फ़िल्म भी देखी। जहाँ गद्दी मर्द, औरतें अपने अद्भुत पहनावे में दिखाई दिये। लड़कियों, औरतों, मर्दों की कमर में काली ऊनी डोरी लिपटी हुई थी। उन्होंने लम्बे-लम्बे ऊनी कोट पहने हुए थे। पास भेड़ें चर रही थीं। इसके बाद लड़ाई की फ़िल्म दिखाई। हवाई जहाज़ों का हवा में उड़ना, उनके द्वारा शहर डैनज़िग पर बमों का गिराया जाना, पोलैण्ड व जर्मनी की हद व लड़ाई के शुरू में हदबन्दी; डैनज़िग शहर के पास समुद्र में पोलैण्ड वालों का क़िला, जिस पर सात दिन तक जर्मनी हवाई जहाज़, बमबारी करते रहे; तारपीडो का जहाज़ में लगना और जहाज़ का फटना, सब दिखाया। रात के 11 बजे हम सब वहाँ से वापस आए।

19 जुलाई को वर्षा का जोर रहा। शाम को सवा छः बजे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से मारू शब्द में से 'जहं देखा तहं दीन दयाला'⁵⁴ पढ़ा गया। जिसका संक्षेप में मतलब यह है कि जब तक अपने अन्तर में उस परमात्मा को न देख लें, हमारा बाहर का यह कहना बेकार है कि परमात्मा सर्वव्यापक है। जिसको अन्तर में परमात्मा के दर्शन हुए, वह कह सकता है कि यद्यपि परमात्मा सब जगह है और हर एक इनसान के अन्दर युक्ति से उपस्थित है, फिर भी मनुष्य जन्मता-मरता है। परमात्मा उसके अन्दर होता हुआ भी, उससे अलग है। फिर सवाल पैदा हुआ कि परमात्मा है क्या? जवाब- वह निर्मल ज्योति जो सब जीव-जन्तुओं को जीवन देनेवाली है, वह शब्द अथवा अनहद शब्द है यानी आत्मा उसको सुन सकती है। 'सबद रसाल रसन रस रसना'⁵⁵ रसाल का अर्थ है मीठा। शब्द ऐसा स्वादिष्ट है कि उसका स्वाद, ज़बान बयान नहीं कर सकती या यूँ कहो कि वह सब रसों से मीठा रस है। उसका रस लेना चाहिये। आगे

ब्रह्म के दस अवतारों के मिशन से बिलकुल अलग है। सन्त इस संसार से रूहें ले जाने के लिये आते हैं और अवतार इस दुनिया की मर्यादा, रस्मों, नियमों तथा प्रबन्ध को ठीक करने आते हैं, जिससे कि इस संसार के जीव खुशी से यहाँ आबाद रहें।

इसके बाद तुलसी साहिब जी फ़रमाते हैं कि पिण्ड प्रधान यानी बुद्धि तन में रहती है और हर बुद्धि कर्म-सारणी है यानी कर्मानुसार बनती है। जैसे जिसके पहले जन्मों के संस्कार हैं वैसे ही उसकी बुद्धि है। जीव बुद्धि के अधीन है। मौत के समय बुद्धि घबराहट में समाप्त हो जाती है। जब सार आभास अर्थात् रूह सिमटकर आकाश में जाती है तो काल उस पर बुद्धि छोड़ देता है। कई लोगों का अनुभव होगा कि किसी समय जब हम सोये हुए अचानक जागते हैं तो पता नहीं लगता कि हम कहाँ हैं और क्या समय है ? यह क्यों है ? रूह पहले जागी, बुद्धि पीछे रह गई। स्मरण-शक्ति खो गई। फिर धीरे-धीरे बुद्धि जागती है तो याद आती जाती है। आदमी को पता लगता जाता है कि मैं कहाँ हूँ। इस प्रकार होता है, जब रूह मरने के बाद आकाश में जाती है। जब रूह को बुद्धि मिलती है तो साथ ही इस जन्म के कर्मों का प्रभाव आ जाता है और उसके अनुसार मरने वाले में संकल्प यानी इच्छा पैदा होती है। यदि उसको बाल-बच्चों का मोह है तो उसको विचार आता है कि चलूँ, मेरे बाल-बच्चे तो रोते होंगे, उनके पास जाऊँ। परिणाम यह है कि मर कर फिर वहाँ ही दूसरे रूप में जन्म ले लेता है मानो आशा-तृष्णा के बस होकर बुद्धि मलीन यानी सांसारिक संकल्प पैदा हो गया। मौत के बाद अन्तर में अँधेरा होता है और अँधेरे में रास्ता नहीं मिलता। काल अष्ट-दल कमल की पंखुड़ी में से आवाज़ देता है कि इधर आ जाओ। रूह उधर जाती है तो सीधी काल के मुँह में। वह उसे चबा डालता है तो डर के मारे, दस्त निकल जाते हैं या आँसू निकल आते हैं। घर वाले पास बैठे होते हैं परन्तु वापस आकर बता नहीं सकता। इस डर से केवल सन्त ही बचा सकता है। इसी विषय पर मौलाना रूम ने अपनी मसनवी में लिखा है :

आवाज़ें गूलां शुद आवाज़े आशना,
आशनाए को कशद, सूए फ़ना।
आवाज़े दारद कि ए फ़लां,
सूए मन आईद, ईनक कारवाँ।⁹

अर्थात्, यह काल की आवाज़ होती है जो किसी जाने पहचाने 'मित्र या सम्बन्धी' की-सी लगती है और मृत्यु की ओर खींचती है। आवाज़ आती है 'ऐ भाई, इधर आ बाक़ी सब भी यहीं हैं'।

इसके बाद उसको खींचते हुए नरक में ले जाते हैं। बहुत सारे नरकों में से तीन नरक, तुलसी साहिब ने वर्णन किये हैं। अग्न खम्ब (अग्नि खम्ब) नरक, कुम्भी (कुम्भी पाक) नरक, अघोर (रौरव) नरक। इन नरकों में लोग कल्पों तक पड़े रहते हैं। नौ सौ अठानवें चौकड़ी युग का, एक कल्प होता है। वहाँ से सन्त ही निकालते हैं या जब सजा की मियाद ख़त्म हो जाती है तो उसके कर्मों के अनुसार उसको वृक्ष, कीड़ा, मकोड़ा, पक्षी इत्यादि का जन्म दे देते हैं।

24 जुलाई को कल की दावत की तैयारियाँ हो रही हैं। कल हुजूर का जन्मदिन डलहौजी में मनाया जायेगा, जिसमें लगभग 50 मेहमान खासतौर पर बुलाये गए हैं और शेष सब सत्संगियों और सत्संगियों को भोजन दिया जायेगा। आज हुजुरी वाणी में से भादों और आसोज के महीने लिये गए। कल श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'जो तुध करणा सो कर पाया। भाणे विच को विरला आया'⁶⁰ और परसों कबीर साहिब की वाणी में से 'कर नैनो दीदार महल में प्यारा है'⁶¹ पढ़े गए थे। डाक में आजकल 20-25 पत्रों से कम पत्र नहीं आते। मेरा बहुत-सा समय पत्रों को लिखने में लग जाता है। आज हुजूर को एक घण्टा केवल डाक सुनने में लगा। सत्संग के बाद हुजूर सैर को तशरीफ़ ले गये और रास्ते में किसी ने कहा कि यहाँ के मन्दिर की मूर्ति एक हजार रुपये की आयेगी। हुजूर ने फ़रमाया :

पाहन केरी पुतरी, ताको नाम जगदीश।

मोल लिया बोले नहीं, खोटा बिसवे बीस।⁶²

हुजूर मूर्ति-पूजा के विरुद्ध हैं, फ़रमाया कि छः शास्त्रों में से किसी में भी मूर्ति-पूजा का आदेश नहीं। छः शास्त्र फ़िलासफ़ी के ग्रन्थ हैं। फ़रमाया कि सन्तों-महात्माओं की एक घड़ी की संगति, सौ साल की मन-बुद्धि की पूजा से अच्छी है क्योंकि यदि रास्ता पूर्व को है और वह पश्चिम को दौड़ता है तो जितना दौड़ेगा उतना ही मंज़िल से दूर होता जायेगा। यदि सीधे रास्ते पर क़दम-क़दम भी चलेगा तो कभी न कभी पहुँच जायेगा। किसी सत्संगी ने कहा कि मैं

नाम लेने से पहले हर रोज दो-ढाई घण्टे दरवाजा बन्द करके मूर्ति-पूजा किया करता था। हुजूर ने उत्तर दिया कि यह नाम मिलना, उसी करनी का फल है।

25 जुलाई को हुजूर का जन्मदिन, डलहौजी में मनाया गया। पहले तो सूर्य खूब जोर से निकला हुआ था, परन्तु फिर दस-ग्यारह बजे के लगभग वर्षा शुरू हो गई। इसलिये अन्दर बरामदे में संगत के भोजन का प्रबन्ध किया गया। सत्संगी और सत्संगिनें सब खाना खाकर, साढ़े बारह बजे दोपहर तक निपट गये थे। उनके इलावा, डलहौजी के कुली, सौ के करीब आ गये। उनको भी भोजन दिया गया। इतने में जो मेहमान बुलाये गए थे, वे आने शुरू हो गये। उनकी संख्या पचास के लगभग थी। तीन जगह उनके खाने का प्रबन्ध किया गया। एक मेरे दफ्तर में, दूसरा हुजूर के भोजन के कमरे में, तीसरा बड़ा प्रबन्ध कोठी के बाहर बरामदे में किया गया। मेहमानों में लाहौर हाईकोर्ट के जज सरदार बहादुर तेजा सिंह, सरदार मकखन सिंह व दीवान बहादुर माधो राम चम्बा निवासी भी शामिल थे। भोजन बड़ा स्वादिष्ट था। भोजन के बाद, अंगूर और कलमी आम भी थे। सब मेहमान प्रसन्न होकर हुजूर से आज्ञा लेकर, शाम के तीन बजे विदा हो गये। इसके बाद छः बजे शाम को सत्संग शुरू हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'जगजीवन साचा एको दाता। गुर सेवा ते सबद पछाता'⁶³ लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि गुरु नानक साहिब का मत सुरत-शब्द अभ्यास का था और यही हुजूर राधास्वामी दयाल का मत था। चुनांचे, इसके बाद हुजुरी वाणी में से 'धन्य धन्य धन धन्य पियारे। क्या कहूं महिमा शब्द की'⁶⁴ पढ़कर बताया गया कि वह भी शब्द की ही महिमा करते हैं, जोकि हर समय इनसान के अन्दर हो रहा है। 'छिन छिन रक्षा हो रही' का अर्थ यह है कि जब शब्द की धार पीछे हट जाती है तो तुरन्त मृत्यु हो जाती है। यह शब्द ही है जिसने पाँच तत्त्वों को मनुष्य के शरीर में मिलाकर रखा हुआ है। मिट्टी का शत्रु पानी, पानी का शत्रु अग्नि, और अग्नि का शत्रु हवा और हवा का शत्रु आकाश है। 'बिन शब्द फिरें भरमातियाँ'⁶⁵ का अर्थ है कि शब्द के बिना चौरासी लाख योनियों में जाना पड़ता है। हुजूर ने जोगियों का सवाल, गुरु नानक देव जी की वाणी में से पढ़कर सुनाया :

कित बिध पुरखा जनम वटाय। काहे कौ तुझ एह मन लाया।

कित बिध आसा मनसा खाई। कित बिध जोत निरंतर पाई।⁶⁶

गुरु नानक साहिब ने जवाब दिया कि :

सतगुर कै जनमे गवन मिटाय। अनहत राते एह मन लाया॥

मनसा आसा सबद जलाई। गुरुमुख जोत निरंतर पाई॥⁶⁷

सत्संग के बाद माछीवाड़ा निवासी राम प्रताप ने एक फ़ारसी गज़ल पढ़ी जोकि सब लोगों ने पसन्द की। हुजूर बहुत खुश हुए और नकदी के अतिरिक्त उसको विशेष रूप से प्रसाद दिया गया। उसके बाद सैर को तशरीफ़ ले गये।

रास्ते में फ़रमाया कि 'नानक गुरु न चेतनी मन आपणै सुचेत। छुट्टे तिल बुआड़ ज्यों सुंजे अंदर खेत'⁶⁸ बुआड़ तिल वह पौधा है जिसमें फल नहीं आते और जिसको ज़मींदार खेत में छोड़ देते हैं, काटते नहीं। इसी तरह जो मनुष्य बिना गुरु के अपने मन-बुद्धि से भजन-सिमरन करता है, उसको कोई लाभ नहीं। वह बुआड़ तिल की भाँति है।

26 जुलाई को, क्योंकि बे-सत्संगियों को नाम के विषय में समझाना था, इसलिये हुजुरी वाणी में से 'नाम निर्णय'⁶⁹ लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि जो शब्द ज़बान से या गले से या नाभि से बोला जा सके, वह सब वर्णात्मक ही होगा। जो धुनात्मक है, वह इनसे ऊपर है। वह इस दुनिया की ध्वनियों की भाँति, हवा का गुण नहीं।

अध्याय 9

डेरे में निवास का हाल

हुजूर की डेरे को वापसी और वहाँ निवास

27 जुलाई को सुबह 8 बजे कार से हुजूर पठानकोट व अमृतसर के रास्ते डेरे की ओर चल दिये। रास्ते में बकलोह, पठानकोट की संगत को दर्शन देते हुए हुजूर गुरदासपुर के एडवोकेट लाला ईशर दास नागपाल की कोठी में तशरीफ़ ले गए थे। वहाँ सब सत्संगी इकट्ठे हो गये थे। वहाँ सबसे मिलकर धारीवाल मिल के क्लर्कों इत्यादि को, जोकि एक वृक्ष के नीचे सत्संगियों के साथ बैठे थे, दर्शन देकर बटाला में लोहारों की दुकानों पर आकर ठहरे। वे मुसलमान हैं परन्तु हुजूर से भाई शादी के नाते प्रेम रखते हैं। भाई शादी तो लोहे का सामान खरीदने के लिये उनके गोदामों को देखता रहा। हुजूर उनके ऊपर के कमरों पर, जहाँ कि हवा अच्छी आती थी, तशरीफ़ ले गये। मैं मोटर कार के पास रहा। वहाँ से कुछ सामान खरीद कर, हम ढाई बजे के करीब, अमृतसर की ओर चल दिये। वहाँ सत्संग-घर में बाजा बज रहा था। पता लगा कि सत्संगी स्वयं बाजा बजा रहे हैं। बीन बाजा था। वहाँ बड़ी गर्मी थी और हमें, जोकि डलहौज़ी की ठण्डी हवाओं से आये थे, विशेषकर अधिक लगी। मैं तो कपड़े उतार कर नहाया और बाद में भोजन करके लेट गया। हुजूर भी मेरे सामने वाले कमरे में निचली मंजिल में ही बिराजमान रहे। भोजन के बाद आधा घण्टा आराम किया। फिर शहर से सत्संगी आ गये। पाँच बजे सत्संग आरम्भ कर दिया। मैं तो लेटा ही रहा, बहुत गर्मी लग रही थी। परन्तु हुजूर ने लेटने का नाम नहीं लिया, न गर्मी को ही महसूस किया। रास्ते में, मैं और भाई शादी तो दो बार कार से उतर कर पेशाब करने गये और डेरे में भी खाते-पीते रहे। परन्तु हुजूर ने न तो खाया-पिया, न पेशाब की ज़रूरत महसूस की, न अमृतसर आकर आराम किया। इस प्रकार के परिश्रम ने हुजूर के सत्संग को वर्तमान प्रतिष्ठा तथा मान्यता तक पहुँचाया है। हुजूर के परिश्रम का अनजान व्यक्तियों को तो क्या,

बहुत-से सत्संगियों को भी पता नहीं। वहाँ डेढ़ घण्टा सत्संग करके फिर हुजूर सेवा पर बैठ गये। वहाँ से आठ बजे चले। बड़ी भीड़-भाड़ थी। अमृतसर पर हुजूर की विशेष दया है। डेरे आकर हुजूर राय साहिब के बाग के दालान में पधारे और वहाँ भी करीब एक घण्टा बातचीत करते रहे। कोई थकावट महसूस न की। रात के दस बजे के बाद वहाँ से गये।

28 जुलाई की सुबह को हुजूर ने तीन दिन की डाक सुनी। लोग बड़ी संख्या में आ रहे हैं। शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'सूरत देख न भूल गवारा। मिथन मोहारा झूठ पसारा' शब्द पढ़ा गया।

29 जुलाई को जन्म-दिन है। आज सुबह 6 बजे, एक घण्टे से अधिक देर, आँधी और वर्षा रही। सुबह साढ़े नौ बजे के करीब जब वर्षा रुक गई तो सत्संग हाल के अन्दर सत्संग आरम्भ हुआ। लोग ब्यास रेलवे स्टेशन से पैदल आ रहे थे, क्योंकि वर्षा के कारण कोई तौगा स्टेशन पर नहीं मिलता था। शब्द था 'सतगुरु का नाम पुकारो'।¹ तात्पर्य यह है कि सतगुरु जो नाम देते हैं, उसका सिमरन करो। हुजूर ने फ़रमाया कि केवल सिमरन से ही सूर्य व चन्द्र-मण्डल पार करके रूह तीसरे तिल पर पहुँच जाती है और बहुत-सी सिद्धि शक्ति प्राप्त हो जाती है। सत्संग के बाद बलसराय की रागी पार्टी ने शब्द सुनाये, 'डंडौत बंदन अनिक बार सरब कला समरथ। डोलन ते राखो प्रभु नानक दे कर हत्थ'।² फिर 'मोरी रुण झुण लाया भैणै सावण आया।'³ फिर 'हीनड़ी जात मेरी नादम राया। छीपे के जनम काहे कौ आया।'⁴

रागियों की दूसरी पार्टी वड़ाइच गाँव से थी। उन्होंने 'गुरु गरीब निवाज निमानयों के मान', 'सा धरती भई हरआवली जित्थै मेरा सतगुरु बैठा आय।'⁵ 'भई परापत मानुख देहुरीआ। गोबिंद मिलण की एह तेरी बरीआ।'⁶ 'नाल प्यारे दे नेहं लगो मेरा' फिर एक शब्द 'जित्थै जाय बहै मेरा सतगुरु सो थान सुहावा राम राजे।'⁷ पढ़ा। अच्छा होता अगर यह लोग श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के शब्दों को जिस राग में गुरु साहिब जी ने अलापा है, उसी राग में सुनाते। मगर उसके लिये राग विद्या की जानकारी ज़रूरी है, जोकि लोगों में नहीं है।

शाम को 5 बजे सत्संग शुरू हुआ। फिर कवि-दरबार लगा। भिन्न-भिन्न व्यक्तियों ने अपनी-अपनी कविताएँ सुनाईं। उनमें से एक नारोवाल के सरदार

साहिब का पंजाबी शब्द बहुत पसन्द किया गया, क्योंकि उसका स्वर बहुत अच्छा लगा। उसने यह शब्द 'आया आप करतार सावन सिंह सरदार' की लय पर गाया। उसके बाद लाला राम प्रताप माच्छीवाड़ा वाले ने रिन्द कवि की एक फ़ारसी की ग़ज़ल पढ़ी। उसके पढ़ने का ढंग बहुत पसन्द किया गया। उसके बाद सरदार काहन सिंह जी ने ख्वाजा हाफ़िज़ की ग़ज़ल 'तालबे इश्क़ मरा-ब दरदो बार दरमा चेहकार। चूँकि अन्दर हर दो आलम यार मी बाइद मरा-बा बहिश्तो दोज़ख़ो वा हुरो वा गुलमां चेहुकार' पढ़ी। यह सभा अँधेरा होने से थोड़ी देर पहले ख़त्म हो गई।

30 जुलाई शाम को सत्संग में तीसरे गुरु साहिब की वाणी 'दुनीआ न सालाहे जो मर वंजसी। लोक न सालाहे जो मर खाक थीई' पढ़ी गई। हुजूर ने फ़रमाया कि जिज्ञासु को चाहिये कि न दुनिया से प्यार करे, न दुनिया वालों से, बल्कि सतगुरु से प्रेम करे। नहीं तो दुनिया की मोहब्बत से नर्क-स्वर्ग और आवागमन के चक्कर में पड़ेगा। किसी मरने वाले के सारे काम कभी पूरे नहीं हुए। जो काम अधूरे रह जाते हैं उनका ख़याल लेकर मरने से, फिर उनको पूरा करने के लिये जन्म लेना पड़ता है।

31 जुलाई को सुबह साढ़े सात बजे सत्संग आरम्भ हो गया। भादों का महीना हुजुरी पोथी में से पढ़ा गया। 'दौ' का अर्थ है बुखार में जो प्यास और भड़क महसूस होती है। भादों में मलेरिया बुखार का जोर होता है। इसी तरह मनुष्य-जन्म में तीन ताप-आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक और पाँच दोष-काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि का जोर है। 'कलजुग कर्म धर्म नहीं कोई। नाम बिना उद्धार न होई'¹⁰ अर्थात्, धुनात्मक नाम या शब्द के बिना, इस आवागमन के चक्कर से नहीं छूट सकते।

शाम के साढ़े छः बजे फिर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से चौथे गुरु साहिब की वाणी से 'हर कीआं कथा कहाणीयां गुर मीत सुणाईआं'¹¹ लिया गया। हुजूर ने ख़ानख़ाना की कहानी सुनाई और फ़रमाया कि वह गुरु तेग़ बहादुर से बड़े प्रेम से मिलते थे। इसी प्रकार गुरु अर्जुन देव जी और मियाँ मीर में बड़ा प्यार था क्योंकि जो लोग सतलोक में जाते हैं, चाहे वे किसी धर्म के हों उनमें आपस में प्रेम-भाव होता है। 'गुरुमुख सखी सहेलीआं'¹² साध संगत की महिमा का वर्णन करते हुए हुजूर ने फ़रमाया कि एक लाला जी किसी आसामी से क़र्ज़ा प्राप्त करने गये, बड़ी

कठोरता से क़र्ज़ा वसूल किया। इसलिये आसामी ने लाला जी का बिस्तर गाँव से उसके घर तक ले जाने से इनकार कर दिया। एक महात्मा ने लाला जी की धवराहत देखी और कहा कि मैं ले चलता हूँ। लाला जी ने पूछा कि क्या मजदूरी लोगे, तो महात्मा ने कहा कि मजदूरी कुछ नहीं लूँगा। केवल यह शर्त है कि या रास्ते में तुम हरि-कथा करना, मैं सुनूँगा या मैं हरि-कथा करूँगा, तुम सुनना। लाला जी ने कहा अच्छा मैं सुन लूँगा। मन में सोचा कि चलो बिस्तर तो घर तक पहुँच जायेगा। इसकी बक-बक भी सुन लूँगा। क्या हानि है? रास्ते में महात्मा लाला जी को हरि-कथा सुनाते रहे। बिस्तर घर छोड़कर वापस लौटकर आ रहे थे कि फिर विचार आया कि वह भी क्या याद करेगा। फिर लौट गये और लाला जी को कहा कि तुम्हारी मौत आठ दिन में हो जायेगी। तुम्हें यम के दूत 'धर्मराज' की कचहरी में ले जायेंगे। वहाँ तुम्हारे लेखे में कोई अच्छा काम नहीं निकलेगा। केवल यह दो घड़ी की 'हरि कथा' जो मैंने तुम्हें सुनाई है, निकलेगी। तुमसे पूछा जायेगा कि तुम्हें इसका फल पहले लेना है या पहले नर्क भोगना है। तुम हरि-कथा का फल पहले माँग लेना और कहना कि सूक्ष्म देश में, जहाँ आकर महात्मा भजन करते हैं, वहाँ ले चलो। अतः ऐसा ही हुआ। यमदूत धर्मराज की आज्ञा से उसको महात्मा के पास छोड़ आये और यह कह आये कि दो घड़ी में हम आयेंगे तुम आ जाना। दो घड़ी के बाद लाला जी को यमदूतों ने दूर से संकेत करके बुलाया। परन्तु महात्मा ने कहा कि मत जाओ। वे यहाँ हमारे पास नहीं आ सकते। जैसे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में फ़रमाया है :

जह साधु गोबिंद भजन कीरतन नानक नीत।

णा हौं णा तूं णह छुटह निकट न जाईयो दूत।¹³

बस वे यमदूत निराश होकर चले गए। लाला जी नरकों से बच गये। यह दो घड़ी के सत्संग का फल था।

इसी प्रकार हुजूर ने फ़रमाया कि सांसारिक जीव कैसी अज्ञानता में सोये हैं। जबकि उनको अपने घर से दूसरे शहर में जाना हो तो पहले से यात्रा की तैयारियों, खाने आदि के इन्तिज़ाम के लिये, सोचते हैं और परदेस में जहाँ जाकर सराय, होटल इत्यादि में ठहरना होता है, उसका प्रबन्ध कर लेते हैं। परन्तु परलोक यात्रा की कोई चिन्ता नहीं करते। जैसे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में लिखा है:

जो घर छड़ गवावणा सो लगा मन माहें।
जित्थे जाय तुध वरतणा तिस की चिंता नाहें।¹⁴

1 अगस्त को सुबह नौ बजे सत्संग आरम्भ हुआ। अब की बार लोगों की भीड़ 30-40 हजार के करीब होगी। लोगों का समुद्र-सा प्रतीत होता था लेकिन सत्संग सभी शान्ति से सुनते रहे, जिससे प्रगट होता था कि हर वर्ग व हर प्रकार के स्त्री-पुरुषों को सत्संग सुनने का चाव है। हुजूर भी देख-देख कर प्रसन्न होते हैं कि धीरे-धीरे लोग धर्म की ओर आ रहे हैं, मांस व शराब छोड़ रहे हैं, और धर्म-कर्म का चाव रखते हैं। हुजूर महाराज जी के ऊँचे व सच्चे उपदेश से, सत्संगियों की संख्या हर महीने बढ़ती जा रही है। अब की बार एक हजार स्त्री-पुरुषों ने नाम लिया।

पहले हुजुरी वाणी में से 'शब्द बिना सारा जग अंधा'¹⁵ लिया गया। शब्द-अभ्यास के बिना बुद्धिमत्ता, चतुराई तथा सब उपाय, बेकार हैं। संसार में आकर वही बुद्धिमान, वही भाग्यशाली, वही इज्जत वाले हैं जो पूरे गुरु से नाम लेकर, अन्तर में आत्मा व मन को समेटकर, शब्द को पकड़ते हैं। बाकी सब काल, कर्म व आवागमन के जाल में फँसे हैं और मरने के बाद यमदूतों के हाथों से बेइज्जत किये जायेंगे। जैसे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में आया है 'विण नावें कैसी पत सारी'।¹⁶

आजकल उस परमेश्वर, कुल मालिक की इतनी दया है कि न केवल शब्द अभ्यासियों की अन्त समय रक्षा की जाती है बल्कि प्रेमी-भक्तों के निकट सम्बन्धियों को भी सहायता मिलती है। भिन्न-भिन्न स्थानों से हर रोज पत्र आते हैं, उनसे यह बात बिल्कुल साफ है कि जब किसी प्रेमी-सत्संगी का लड़का, बाप, माता इत्यादि बिना नाम के मरने लगते हैं, तो मालिक अन्त समय उनकी सहायता करता है और मरने वाला स्वयं इसके बारे में बताकर जाता है। इस सम्बन्ध में लाहौर के वकील खलीफ़ा निहमत राय ने मेरे सामने बताया कि प्रोफ़ेसर गुलशनराय के देहान्त के समय हुजूर ने उनको दर्शन दिये और प्रोफ़ेसर साहिब ने खलीफ़ा साहिब को बताया कि उनको हुजूर महाराज जी के दर्शन हो रहे हैं। क्या वजह? उन्होंने हुजूर से उपदेश नहीं लिया था, परन्तु उनकी स्त्री हुजूर की सेविका थी। उससे उसके पति को भी लाभ हुआ। हुजूर ने फ़रमाया

कि सन्तों के ही नहीं प्रेमी भक्तों के माता-पिता, सम्बन्धियों, उनके मित्रों आदि को भी उनकी भक्ति का लाभ पहुँचता है।

इसके बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से मारू राग में से पाँचवें गुरु साहिब का शब्द 'आद निरंजन प्रभ निरंकार'¹⁷ लिया गया। इस शब्द में सन्तमत के नियमों व कर्म के सिद्धान्त पर अच्छी तरह व्याख्यान किया गया।

2 अगस्त को हुजूर चार बजे तक नामदान देते रहे। भोजन तक नहीं किया। फ़रमाया कि जब इन लोगों (नाम लेनेवालों) ने नहीं खाया तो मैं कैसे खाना खाऊँ। हुजूर ने ऐसे कड़े परिश्रम द्वारा सत्संग की उन्नति की है और आम लोगों के लाभ के लिये अपने आपको कष्ट दिया है इसका दुनिया को कुछ पता नहीं है। दुनिया राजनैतिक नेताओं, समाज-सुधारकों, दानी लोगों, गुणी-ज्ञानियों को तो जानती है, परन्तु हुजूर की मौन-सेवा का, जिससे आत्माओं को वास्तव में लाभ पहुँचाया जा रहा है, दुनिया को पता नहीं।

3 अगस्त मंगलवार को शाम के छः बजे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब से मारू राग का शब्द 'काम क्रोध परहर पर निंदा'¹⁸ लिया गया। 'भ्रम का संगल तोड़ निराला'¹⁹ का तात्पर्य है कि मनुष्य के शरीर में जो आँखों से नीचे छः चक्कर हैं, जिनमें योगी लोग प्राणायाम के द्वारा जाते हैं, वे अक्स का भी अक्स हैं, यानी ब्रह्माण्ड के छः चक्रों का अक्स पिण्ड में पड़ता है और पिण्ड के छः चक्रों का अक्स अण्ड में पड़ता है। इसी भ्रम के संगल को मौलाना रूम ने अपनी मसनवी में 'बदन का सन्दूक' कहा है। और परमात्मा से प्रार्थना की है, 'ऐ खुदा बगुमार कौमे रहम-मन्द। ताज़ सन्दूके बदन मारा खंरद'। अर्थात् ऐ मालिक तू अपने दयाल सन्तों को भेज जोकि हमें इस शरीर के बन्धनों से मुक्त करें। सन्त सत्संग सुनाकर और सिमरन करा कर मनुष्य को इस 'शरीर के सन्दूक' से निकालते हैं। सत्संग द्वारा वैराग्य पैदा करके सांसारिक बन्धनों को ढीला करते हैं और सिमरन से मन को एकाग्र करके आँखों के पीछे इकट्ठा करवाते हैं। इसी प्रकार धीरे-धीरे अभ्यास द्वारा ध्यान की धारणें शरीर को छोड़कर आँखों में इकट्ठी होने लगती हैं। सत्संग के बाद लैम्प जला कर, तीन दिन की डाक सुनाई गई। रात के साढ़े नौ बज गये। पहले हुजूर का विचार 5 अगस्त को आठ बजे, डेरे से डलहौजी को चल देने का था, परन्तु सरदार भगत सिंह साहिब को कुछ कागज़ों की खोज थी, जोकि ज़रूरी थे। इसलिये विचार बदलना पड़ा।

अध्याय 10

डलहौजी की यात्रा का हाल

हुजूर की डलहौजी-यात्रा और वहाँ निवास

6 अगस्त, 1943 सुबह के 5 बजे जबकि भारी वर्षा हो रही थी तथा बड़ा अँधेरा था, हम सब अमृतसर के गस्ते डलहौजी की ओर चल दिये। रास्ते में ब्यास स्टेशन से निकलकर खाली मैदान जो पुल के सामने आता है, उसमें घुटनों से ऊपर तक पानी था। बड़े जोर से बह रहा था और बड़ा अँधेरा था। हाफिज के कथनानुसार, 'शबे तारीक व बीमे मौज व गर्दाबे चुर्नी हाइल' अर्थात् काली रात, लहरों का डर और सिर पर तूफान मँडराता हुआ। वहाँ से रईया तक बहुत वर्षा हो रही थी। परन्तु हुजूर ने फ़रमाया कि हमने नहर के एस. डी. ओ. को वचन दिया था कि उसके घर होकर जायेंगे। वहाँ से उनके बँगले पर गये। वहाँ सब सो रहे थे। अन्त में दो स्त्रियाँ निकलीं। पता लगा कि साहिब बहादुर तो बाहर हैं। कहीं नहर का नाका टूट गया है। वहाँ पाँच मिनट ठहर कर सीधे अमृतसर की ओर चले। अमृतसर पहुँचते-पहुँचते कुछ उजाला हो गया परन्तु वर्षा हो रही थी। वहाँ कोई नहीं मिला। वहाँ से आगे बटाला की सड़क पर गये तो चारों ओर खेतों में पानी ही पानी देखा। ज्यों-ज्यों पहाड़ के निकट होते जाते थे, वर्षा का जोर अधिक होता जाता था। गुरदासपुर से निकलकर चारों ओर पानी ही पानी था। पठानकोट में तो वर्षा की कोई सीमा न थी। वहाँ सवा आठ बजे पहुँच गये। पता लगा कि आठ बजे की सर्विस डलहौजी से सकुशल आ चुकी है। जान में जान आई कि अब सीधे बिना किसी रुकावट के बारह बजे तक डलहौजी पहुँच जायेंगे। परन्तु 'मा दर चेह ख्यालेम व फ़लक दर चेह खयाल' अर्थात् हम कुछ और सोचते हैं और भगवान कुछ और ही। चक्की पर गये तो वर्षा बराबर हो रही थी। वहाँ और कोई लारी या कार ऊपर जानेवाली दिखाई नहीं दी। ठीक नौ

बजे हम आगे निकल कर दुनेरे दस बजे पहुँच गए। वहाँ वर्षा नहीं थी परन्तु पता चला कि चौतीसवें मील पर सड़क पर बड़े-बड़े पत्थर गिरे पड़े हैं। एक मजदूर नंगे सिर वहाँ से बारूद लेने आया। बारूद से पत्थरों को टुकड़े-टुकड़े करके सड़क को साफ़ किया जायेगा। बारूद दुनेरे डाकखाने के पीछे, खड्ड से पार, एक कुटिया-सी में रखते हैं। हम वहाँ दो घण्टे रुके।

वहाँ से बारह बजे, सड़क साफ़ होने पर सर्विस शुरू हो गई। अभी ऊपर की सर्विस नहीं आई थी। जब चौतीसवें मील पर पहुँचे, वहाँ की सड़क साफ़ हो चुकी थी और दोनों सर्विस एक-दूसरे के पास से गुज़र रही थीं। वहाँ हमारे साथ की दो लारियाँ तो गुज़र गई परन्तु हमारी मोटर फेल हो गई। वहाँ बड़ी चढ़ाई है। मोटर बजाय आगे के, पीछे को जाती है। पहाड़ के मजदूर खड़े हैं, लेकिन हमारे बुलाने की परवाह नहीं करते। हम कहते हैं कि ज़रा आकर मोटर कार को धक्का लगाओ पर उनको परवाह ही नहीं। वे लोग पैसे के बिना कोई काम करने को तैयार नहीं होते, क्योंकि उनको कश्मीरी मजदूरों की तरह सब काम पैसे के लिये करने की आदत पड़ गई है। उनके विचार में हमदर्दी के लिये काम करना मूर्खता है। जैसे कि किसी कश्मीरी मजदूर को, जो कि धूप में बैठा था, किसी ने कहा कि मियाँ! यहाँ छाया में आ जाओ। बोला, क्या मजदूरी दोगे। सो वहाँ हमें एक घण्टा रुकना पड़ा। खैर, मोटर कार को समतल स्थान पर ले जाकर फिर जोर से ऊपर चढ़ाया तो चल पड़ी। अब यह बात भाई शादी के लिये बहुत चिन्ता का कारण हुई कि कहीं ऊपर से सर्विस हमारी कार से न टकरा जाये। बहुतेरा भाई शादी को विश्वास दिलाया कि वह तो डेढ़ बजे चलेगी। तब तक हम बनीखेत पहुँच जायेंगे। परन्तु उसकी घबराहट दूर न हुई। आँखें हरएक मोड़ पर ऊपर को देखती हैं। अन्त में भाग-दौड़ करके बनीखेत की चौकी पर आ गये। वहाँ अभी सर्विस आई भी न थी। ऊपर जाकर हमें रास्ते में मिली। वहाँ से एजेन्सी से गुज़र कर अंग्रेज़ी कब्रिस्तान के पास पहुँचे तो फिर इंजन ने जवाब दे दिया। अब तो ऐसा लगता था कि चलेगा ही नहीं। इस समय सवा दो बज चुके थे। स्कूल के लड़कों की छुट्टी हो चुकी थी। वे भी तमाशा देखने के लिये इकट्ठे हो गये थे। दो-तीन पथिकों को मनाया कि भाई कार को धक्का लगाओ। इंजन कुछ दूर खींचता, फिर बन्द हो जाता और मोटर नीचे को सरकती तो हम पत्थर लेकर दौड़ते कि उसके पहियों

के नीचे रखें, जिससे सरकने न पाये। उन स्कूल के विद्यार्थियों ने, जो कि आठ-आठ, दस-दस साल के थे, इस तरह हमारी बड़ी सहायता की। तुरन्त पत्थर नीचे दे देते थे। लड़कों का मन साफ़ होता है, उनको तमाशा चाहिये, पैसों से मतलब नहीं। यह तमाशा तीन बजे तक चलता रहा और हम मोटर कार को आगे धकेलते रहे। अभी मेयर होटल के पिछली तरफ़ भी नहीं पहुँचे थे कि हुजूर के सत्संगी सूचना पाकर, भागते हुए आये। हम मेयर होटल के नीचे मोटर गैरिजों के पास ठहर गये और वे लोग कुली लेकर मोटर को धकेलने लगे। अब उसको चलाने की आवश्यकता न थी। हुजूर से प्रार्थना की कि आप घर जाकर विश्राम करें, परन्तु वह न मानें। अन्त में लोग कार को धकेल कर गैरिज में ले आये तो वहाँ कार को छोड़कर, सामान को निकालकर, हम एल्समेयर आ गये। चार बज चुके थे। वहाँ आकर मैंने स्नान किया, कपड़े बदले और भोजन किया। अभी भोजन कर ही रहा था कि हुजूर ने सत्संग आरम्भ कर दिया। जबकि मेरा विचार था कि आज सत्संग नहीं करेंगे क्योंकि सब थके हुए आये थे। किसी ने भोजन नहीं किया था। सत्संग के बाद हुजूर तो अपने कमरे में विश्राम करने चल दिये। हमने अपनी-अपनी राह ली। मैं घूमने चला गया।

7 अगस्त, 1943 को हुजूर ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के श्री राग महला 5 में से बड़ा कठिन शब्द लिया। इस शब्द में आन्तरिक रूहानी यात्रा की तुलना सावन के महीने में किसानों के हल जोतने और पहलवानों के दंगल-जिसको पंजाबी में छिंझ कहते हैं- से की गई है :

पै पाय मनाई सोय जीओ।

सतगुरु पुरख मिलाया तिस जेवड अवर न कोय जीओ।

गोसाईं मिहंडा इठड़ा। अंम अब्बे थावो मिठड़ा।

मेरा मालिक प्यारा, माँ-बाप से भी अधिक प्यारा है। 'तैरै हुकमे सावण आया' अर्थात् तेरी आज्ञा से मुझे मनुष्य-जन्म मिला तो मैंने शब्द-अभ्यास किया और नाम का बीज बोया, इस आज्ञा पर कि भगवान् दया करके इसे बोहल यानी खिलवाड़ा अथवा फ़सल का बड़ ढेर बना देंगे।

'गुर दीबाण कवाय पैनाईओ' अर्थात् गुरु ने मुझे अपनी दीवानी की पदवी वरिष्ठी। 'हौं होआ माहर पिंड दा बंन आंदे पंज सरीक जीओ' अर्थात् मैं गाँव का

चौधरी बन गया और पाँचों शरीकों यानी शत्रुओं को बाँधकर ले आया। तात्पर्य यह है कि मैं अपने पिण्ड यानी शरीर का ज्ञाता बन गया और काम, क्रोध इत्यादि पाँचों शत्रुओं को कैद कर लिया।

हौं आया साम्है तिहंडीआ। पंज किरसाण मुजरे मिहंडीआ।

साम्है तात्पर्य सावन या शरन यानी तेरी शरण में आया। पाँच विकार मेरे मुजारे अथवा आज्ञाकारी बन गये, अब कोई कान नहीं हिला सकता और सारा गाँव सुख से बस रहा है। 'नौ निध नाम निधान हर मैं पल्ले बद्धा छिक जीओ' यानी मैंने नाम को कस कर पल्ले बाँध लिया, फिर आगे, 'पै कोय न किसै रजाणदा' यानी अब कोई विकार आक्रमण करके नहीं सताता। 'पियालया' यानी पातालों में।

हौं गोसाईं दा पहलवानड़ा। मैं गुरु मिल उचदुमालड़ा।

मैं खुदा का पहलवान हूँ। गुरु की कृपा से मेरी कलगी लम्बी हो गई। 'सभ होई छिंझ इकट्ठीआं दयु बैठा वेखे आप जीओ' अर्थात् आन्तरिक लोकों में सब पीर, पैगम्बर, औलिया, अवतार, ऋषि-मुनि इकट्ठे हैं और वह कुल मालिक उनको देख रहा है। 'मल लत्ये लैंदे फेरीआं' मल से तात्पर्य पीर-पैगम्बर इत्यादि जो कि अन्तर में चक्कर लगा रहे हैं। 'निहत्ते पंज जुआन मैं गुर थापी दित्ती कंड जीओ' जब मैंने पाँचों विकार जीत लिये तो गुरु ने मेरी पीठ ठोकी। 'मै जुग जुग दयै सेवड़ी। गुर कटी मेहडी जेवड़ी।' सेवड़ी अर्थात् मैं परमात्मा की सेवा करता हूँ। गुरु ने मेरी चौरासी की जंजीर काट दी है। अब मैं दुबारा जन्म न लूँगी। 'हौं बाहुड़ छिंझ न नचऊ....'।¹²

8 अगस्त, 1943 को कुछ प्रोफ़ेसर व सरदार बहादुर तशरीफ़ लाये। उनके लाभ के लिये हुजूर ने 'नाम निर्णय करूँ'¹³ शब्द और 'रामा रम रामो सुन मन भीजै'¹⁴ और 'जिन तुम भेजे तिनै बुलाए'¹⁵ पढ़वाये। इस प्रकार शाम के साढ़े आठ बजे तक उनको बतलाते रहे। हुजूर ने फ़रमाया :

चतुर चुप कर रहे, चतुर के बचन पछाने,

चतुर चुप कर रहे, सभा बेगानी जाने।

चतुर चुप कर रहे, चतुर जब होए अकेला,

चतुर चुप कर रहे, गुरु के आगे चेला।

(कुछ व्यक्ति अकेले बोले चले जाते हैं या बैठे-बैठे बातें करते रहते हैं।)

एक तरखान निचली कोठी में ठहरा हुआ है। जब इंजीनियर साहिब उसको निकालते हैं तो कहता है कि मैं बीबी जी की आज्ञा से ठहरा हुआ हूँ जब बीबी जी निकालती है तो कहता है कि इंजीनियर साहिब की आज्ञा से मैं यहाँ हूँ। हुजूर ने यह कहानी सुनाकर फ़रमाया कि एक ठगनी अच्छे वस्त्र पहन कर, राजा के महलों में गई। कहने लगी, मैं बुआ जी हूँ। राजा के दरबारों को बुआजी को रोकने का साहस न हुआ। रानी जी ने विचार किया कि राजा साहिब की बुआजी होगी। राजा ने समझा कि रानी साहिबा की बुआ जी होंगी। बुआ जी का आदर-सम्मान होने लगा। कई वर्ष मजे करती रही। एक बार घर से बुआ जी का सन्देश आया कि मंगलू मर गया। इस पर राजा ने शोक प्रकट किया, इस पर मन्त्री ने पूछा कि यह मंगलू कौन था ? अन्त में बुआ जी से पूछा गया तो कहने लगी कि वह तो मेरा गधा था।

9 अगस्त, 1943 शाम के सत्संग के बाद हुजूर सैर को गये और उनका काँट पर वजन किया गया। शाम के सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब से 'काया कामण अति सुआल्यो पिर वस्सै जिस नाले' पढ़ा गया। सुआल्यो का अर्थ है सुन्दर। गुरु साहिब का मतलब है कि मनुष्य के शरीर में परमात्मा रहता है और मनुष्य की रूह भी उसके अन्दर ही है। कहने का अभिप्राय यह है कि पति-पत्नी एक ही सेज पर लेटे हैं, परन्तु युग बीत गये, पति-पत्नी का मिलाप नहीं हुआ। इसके बाद हुजुरी वाणी में से कार्तिक का महीना पढ़ा गया, जिसमें लिखा है कि प्राणी के शरीर में बारह बड़े स्थान हैं यानी कमल हैं। हुजूर ने फ़रमाया कि मनुष्य को अपनी क्रूर नहीं, यह तो सत्पुरुष का पुत्र है। जब आत्मा पारब्रह्म में जाकर मन व माया के परदों से स्वतन्त्र होती है तो आत्मा का अपना प्रकाश बारह सूर्य का होता है। उस समय उसको गुरुमुख कहते हैं और उसे हंस गति प्राप्त हो जाती है। जैसे सुन्दर कवि ने कहा है :

एक समय वन में बसते मृगराज की नार ने केहर जायो।

कै कारण पाली के हाथ पड़ियो उन लाय के मेडी के सँग रलायो।

भूल गयो कुल के पराक्रम को हंडू भयो हरी दूब चरायो।

ऐसे ही सुन्दर आत्मा आपको भूल संग शरीर के जीव कहायो।

हुजूर ने फ़रमाया कि दुनिया, फ़क्रोरों से माया के भोग और पदार्थ माँगती है, जबकि फ़क्रोरों से ऊँचे रूहानी स्थानों की यात्रा का मार्ग यानी उस यात्रा के लिये सहायता माँगनी चाहिये, जिससे इनसान दुनिया से छुटकारा पा सके, वरना दुनियादारों का यह हाल है कि दुनिया में पैदा हुए, दुनिया खाई, दुनिया भोगी, दुनिया से प्यार रहा और मर कर फिर दुनिया में ही पैदा हो गए।

एक सत्संगी ने कहा कि मुझे कारोबार की अधिकता के कारण, सत्संग में आने का समय नहीं मिलता। हुजूर ने फ़रमाया कि दुनिया के काम तो ख़त्म नहीं होंगे, हम ख़त्म हो जायेंगे। 'कारे दुनिया कसे तमाम न कर्द' यानी संसार का काम किसी ने ख़त्म नहीं किया 'धन्धा किने न जितया सब धन्धे जितौ' सत्संगी को चाहिये कि दुनिया का काम करता हुआ सत्संग व भजन के लिये समय निकाले। जैसे कि एक सवार घोड़े को पानी पिलाने के लिये रहट पर ले गया। घोड़ा रहट की चीं-चीं की आवाज़ से घबराता और पानी के पास न जाता या जब रहट बन्द हो जाता तो पानी न आता था। इसलिये घोड़े को ज़बरदस्ती रहट की चीं-चीं में पानी पिलाना पड़ा। ऐसे ही दुनिया के कामों का हाल है।

कल से वर्षा दिन-रात बड़े जोरों से हो रही है। डलहौज़ी वाली सड़क बड़ी जल्दी रुक जाती है। आज डाक शाम के पाँच बजे आई। हुजूर ने कल से हुजुरी वाणी में से 'सुरत-संवाद' आरम्भ करा रखा है जिसका सार यह है कि किसी समय सारे संसार को रूहें कुल मालिक में समाई हुई थीं। जब सृष्टि रची गई तो जो रूहें इस समय त्रिलोकी में हैं, यह काल भगवान् के हवाले कर दी गई क्योंकि चेतन के बिना काल की सृष्टि वीरान पड़ी थी, अर्थात् इस त्रिलोकी में पहाड़, समुद्र, पृथ्वी इत्यादि तो काल ने बनाए परन्तु वृक्ष, पशु, पक्षी, हैवान, मनुष्यों के बिना सारी सृष्टि बिना आबादी के पड़ी थी। इस त्रिलोकी को बिना रूहों के कैसे आबाद करता। अब यह मूल्यवान् पूँजी जो कुल मालिक दयाल ने काल को दी, काल ने बड़े प्रबन्ध व चतुरता से ऐसी घेर कर रखी है कि कोई रूह लौटकर दयाल में न जा सके, क्योंकि यदि ऐसा हो तो उसकी त्रिलोकी में चहल-पहल कम हो जाये। काल ने दयाल का पता ही नहीं दिया। सबको अपनी भक्ति में लगा दिया। इस प्रकार सारी दुनिया का खुदा काल भगवान् ही है। सन्तों ने आकर दयाल का पता दिया है।

'सुरत-संवाद' में यह चर्चा है कि समय के सतगुरु और सुरत-शब्द के अभ्यास के बिना इस त्रिलोकी से निकलकर जाना असम्भव है और शेष जितने कर्म-धर्म, नमाज़, रोज़ा, संध्या, यज्ञ, तप, दान, तीर्थ, मूरत, व्रत इत्यादि हैं, इनसे चौरासी का चक्कर नहीं छूट सकता। हाँ, अच्छे कामों का बदला काल भगवान् स्वर्ग या इस दुनिया में राजा, महाराजा, सेठ-साहूकार, आलिम-फ़ाज़िल, गुणी-ज्ञानी बनाकर दे देता है। परन्तु अपने दायरे से बाहर नहीं निकलने देता। सन्त ही जीव को इस दायरे से बाहर कर सकते हैं।

'सुरत-संवाद' के अन्तिम भाग में स्वामी जी महाराज ने पाँचों रूहानी मंजिलों की, जोकि प्राणी के अन्दर हैं, चर्चा की है। दूसरी मंजिल त्रिकुटी है जिसमें महाकाल ने अपना अंश रखा हुआ है क्योंकि इससे नीचे की सारी त्रिलोकी को उत्पन्न करना और प्रलय में समेट लेना उसका काम है। त्रिकुटी में गुरु का रूप शब्द होता है। इसलिये कहा है कि "गुरु ने बताया गुरु का नाम"। सृष्टि की उत्पत्ति त्रिकुटी से होती है और उसी में समा जाती है। हुजूर ने फ़रमाया कि जो ऊपर के रूहानी देशों के हंस हैं यानी जो रूहें उन देशों में हैं, उनको अधिकार नहीं कि सतलोक या उससे परे जा सकें, क्योंकि वे हंस उन देशों की रौनक के लिये रखे हुए हैं। हाँ, जो रूहें इस दुनिया में सुख-दुःख उठाकर ऊपर जाती हैं, वे अनामी तक जा सकती हैं। यह उनका विशेष अधिकार है।

12 अगस्त, 1943 को 'सुरत-संवाद' का शेष भाग समाप्त किया गया। वर्षा कल रात, आज सारा दिन और आज रात जोरों से हो रही है। सब कमरे टपक रहे हैं। कहीं-कहीं अंश, कहीं-कहीं बंस। अंश से मतलब है रूहें जोकि इस दुनिया से अभ्यास करके सतलोक पहुँची। बंस वह रूहें जो हमेशा सतलोक में रही और रहेंगी।

15 अगस्त, 1943 को राय साहिब अपने बेटे के साथ पंज पुल व बकलोह के रास्ते दो घोड़ों या टट्टूओं पर सवार होकर डलहौज़ी से पठानकोट जा रहे थे कि पंज पुल के बाद टट्टू से गिरे या जैसा कि वह स्वयं बतलाते हैं कि टट्टू छतरी से डर कर नीचे फिसल गया। ऊपर से वर्षा, पास में खड्ड, सड़क पर पत्थर, बहुत ही शुक्र हुआ कि केवल बाजू में चोट आई जोकि दो-चार दिन तक

ठीक हो जायेगी। हुजूर की दया, कौतुक चर्चा के योग्य है। राय साहिब तो नी बजे के करीब रवाना हो गये थे। हुजूर इसके थोड़ी देर बाद सैर को निकले। दिन साफ़ था, परन्तु अभी कोठी से बीस क़दम पर गये होंगे कि लौट आये और स्नानगृह में चले गए। सबने सोचा कि पेट में गड़बड़ी है और यह कह गये थे कि पाँच मिनट के बाद चलते हैं। परन्तु बाद में स्वयं तो भजन पर बैठ गये और सैर पर जाने के लिये मना कर दिया। बहुत-से सत्संगी व सत्संगिनें दर्शनों के लिये प्रतिदिन की तरह बरामदे में इकट्ठे हो गये थे और प्रतीक्षा कर रहे थे कि हुजूर पहले की तरह बाहर आकर दर्शन देंगे, परन्तु हुजूर बाहर बजे तक भजन में बैठे रहे और अन्त में सब संगत को अपने कमरे में बुलाकर दर्शन देकर विदा किया। इसी बीच में राय साहिब चोटें खाये हुए, वापस पहुँच गये। हुजूर ने दो बजे के बाद कुछ खाया-पिया होगा। अन्त में शाम को फ़रमाया कि सूली की मूल कर दी गई है। ऐसी दया हुजूर सब पर करें जैसी राय साहिब पर की गई है।

कल शाम को महात्मा चरनदास जी के 'भक्ति सागर' में से शील का अंग लिया गया। जिसका संक्षिप्त वर्णन यह है कि तीस सदगुणों में से चरित्रवान होना सबसे उत्तम है और यदि कोई चरित्रवान है तो शेष सब सदगुण उसमें स्वयं ही आ जायेंगे। अन्त में लिखा है :

शील गया तो सब गया, शील गया सब झाड़।

भक्ति खेत कैसे बचे, टूट गई जब बाड़॥¹⁷

हुजूर ने फ़रमाया कि काम आठ प्रकार के है :

नारी स्मरण, श्रवण, पुनः दृष्टि सम्भाषण होय।

गुह्यवार्ता हास्य रित पुनः स्पर्शन सोय॥¹⁸

आज इतवार को बहुत-से लोग सत्संग में जमा थे। हुजूर ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'दुनीआ न सालाहे जो मर वंजसी'¹⁹ शब्द पढ़वा कर बड़ा प्रभावजनक व्याख्यान दिया और फ़रमाया कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की फ़िलासफी बहुत ऊँची, सम्मान के योग्य और धर्मों की क़ैद से छुटकारा दिलाने वाली है। फिर फ़रमाया कि कर्मों का नियम बड़ा पेचीदा है। कभी-कभी कर्म

स्वप्न में भी भुगतये जाते हैं और जो कर्म दयाल के हैं वे तो सन्त बाख़ा देते हैं परन्तु जो कर्म काल के हैं उनका सन्त कुछ नहीं कर सकते। काल का क़र्ज़ा देना पड़ता है।

16 अगस्त, 1943 शाम को वर्षा न थी, हुजूर वाणी में से 'गुरु गुरु में हिरदे धरती' ²⁰ पढ़ा गया। शब्द लम्बा था। आठ बज गये। हुजूर ने फ़रमाया कि सन्तमत में आदि और अन्त सबकुछ गुरु ही है। इसके बाद सैर को तशरीफ़ ले गये। कल सुबह भी हुजूर ने पोथी में से 'गुरु मोहि अपना रूप दिखाओ' ²¹ पढ़ाया था। हुजूर आजकल भजन बहुत कर रहे हैं। सारा समय भजन पर देते हैं। कल रात डाक सुनी जो तीन दिन के बाद आई थी। बहुत-सी थी। आजकल रावलपिण्डी से बहुत-से पत्र आ रहे हैं कि हुजूर स्वयं पधार कर रावलपिण्डी को निहाल करें। हुजूर का सितम्बर के दूसरे सप्ताह में उधर जाने का विचार है। इस सारी डाक से यह पता चलता है कि दुनिया के लोग किस प्रकार दुःखी हैं। एक मुसलमान साहब का पत्र लाहौर से आया है, जो हुजूर का सत्संगी नहीं है। उसकी दर्द-भरी कहानी सुनकर सभी ने हुजूर से प्रार्थना की कि उसकी सहायता करें।

17 अगस्त, 1943 को भादों की संक्रान्ति थी। पहले तो प्रातः नौ बजे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से गुरु अर्जुन देव जी का बारहमाहा पढ़ा गया। फिर स्वामी जी महाराज की वाणी में से भादों का महीना पढ़ा गया। इसके बाद शाम के चार-पाँच बजे के बीच श्री चड्ढा फ़िरोजपुरी, श्री प्यारे लाल तथा महन्त जी ने, जोकि डलहौजी में रेडक्रॉस की संगीत पार्टी में आए थे, संगत को अपने जौहर दिखाये। पहले श्री सूद ने रूहानियत के गीत हारमोनियम पर गाये, जिनमें से केवल एक शेर याद है।

लाख की मैंने जहनुम की तदबीर,
तेरी रहमत ने गवार न किया।

इसके बाद श्री महन्त ने हँसी और रोने के विषय पर बड़ी टिप्पणी की और क्रियात्मक ढंग से हँस और रोकर अपनी थ्योरी को प्रमाणित किया। उनकी थ्योरी पौष्टिकपूर्ण है और वह यह है कि दुनिया में संस्कृत के अतिरिक्त किसी

भाषा की वर्णमाला के अक्षर हँसने और रोने को नियमानुसार प्रगट नहीं करते। हँसने में अ, आ से लेकर संस्कृत के सारे स्वर और सारे व्यंजन प्रयोग में आये हैं। जैसे हँसी कभी-कभी आ हा ऊ हू इत्यादि से शुरू होती है। कहकहा लगा कर हँसने में, क्योंकि जोर ज्यादा लगता है, यह सिर्फ़ जवानों का काम है। कहकहा क से शुरू होता है। क, ख के पाँच शब्द निकालने में सबसे अधिक जोर लगता है और यह जोर बाक़ी वर्णों को निकालने के लिये कम होता चला जाता है। अन्त में प वर्ण के अक्षर बोलने में सबसे कम जोर लगता है। बूढ़े अधिकतर हँसी और बोल-चाल में प वर्ण के अक्षर इस्तेमाल करते हैं। इसलिये बूढ़ों को फूसट कहते हैं और बुढ़िया को फ़ा-फ़ाँ क्योंकि वह फ़ा-फ़ाँ करके बोलती हैं। मुँह में दाँत नहीं होते। बूढ़े हँसने में भी यही अक्षर इस्तेमाल करते हैं और दूध पीता बच्चा भी जिसके मुँह में दाँत नहीं होते, पहले पहल माँ का शब्द मुँह से निकालता है क्योंकि यह शब्द बोलना उसके लिये सबसे आसान है परन्तु उसकी माँ सोचती है उसको याद कर रहा है। हँसी में अ-आ स्वर से आरम्भ करके श प स ह पर समाप्त होते हैं। परन्तु रोने में उसका उल्टा होता है। जब कभी किसी को बुरा समाचार मिलता है तो हाय इत्यादि कहता है।

श्री महन्त ने बड़ी अच्छी तरह क्रियात्मक ढंग से अपनी थ्योरी को प्रमाणित करके दिखाया और यह भी कहा है कि कुछ शक्लें जन्म से ही रोनी होती हैं। वह खुशी को भी रोने की तरह प्रगट करती हैं। इसी प्रकार श्री महन्त ने भी क्रियात्मक ढंग से दिखाया कि किस प्रकार कुछ रोनी सूरतें जब किसी मित्र से मिलकर खुशी को भी प्रगट करती हैं तो उनके चेहरे पर रोने के चिह्न दिखाई पड़ते हैं। कुछ सूरतें जन्म से मुस्कान लिये होती हैं और जब कभी किसी की मृत्यु या दुर्घटना की चर्चा भी करती हैं तो ऐसा लगता है कि हँस रही हैं।

श्री महन्त के बाद श्री चड्ढा ने चार भाषाओं यानी अंग्रेज़ी, उर्दू, संस्कृत और पंजाबी के वर्णमाला के अक्षरों को को अच्छी तरह गाने में सुनाया, फिर मिठाइयों और फलों के नाम, जोकि गावन विद्या में कभी नहीं आते, वह भी गाकर सुनाये। अन्त में मुकलावा (गौणा) सुनाया कि किस प्रकार पुराने समय में जबकि लड़कियों की शादी छोटी आयु में की जाती थी और मुकलावा (गौणा)

शादी के तीन-चार साल बाद किया जाता था; दुल्हन नायन, देवर, ससुर के साथ अपनी सुसगल जाने से इनकार करती थी परन्तु जब बाबू यानी पति लेने आता था तो कैसे बनाव-सिंगार करके जाती थी। सुनने वाले बड़े खुश हुए। फिर अंग्रेजी गाना जिसमें कोई अक्षर नहीं आता था केवल 'स्वर' ही था, सुनाया। उसके बाद श्री मूद ने 'सुथरे का माँगने का' खेल दिखाया। सब सुनने वाले बड़े खुश हुए। हुजूर ने उनको आत्मिक विषय पर कुछ व्याख्यान दिया और अन्त में प्रसाद देकर विदा किया।

18 अगस्त, 1943 की शाम को सत्संग में घट रामायण में से संवाद प्रियलाल पढ़ा गया। तुलसी साहिब ने प्रियलाल को कहा कि गुरु दो प्रकार के होते हैं। जगत-गुरु और सन्त-गुरु या यूँ कहो कि दयाल-गुरु और देह-जात या कर्म-गुरु। जगत-गुरु तो सांसारिक सम्बन्ध हैं, जैसे माँ-बेटे का या ससुर-दामाद का। इससे कोई रूहानी लाभ नहीं होता। हाँ, गुरु जो चले का धन माल लेता है, उसको अगले जन्म में बेटा, गधा, बैल, ऊँट इत्यादि बनकर देना पड़ता है। ऐसा गुरु कर्मों के घेरे में है। इसलिये शिष्य की मुक्ति कैसे कर सकता है। दूसरे सन्त, गुरु या दयाल-गुरु जोकि स्वयं कर्मों के चक्कर से बाहर होते हैं और दूसरों को उस चक्कर से निकाल सकते हैं। वास्तव में गुरु का रूप शब्द है और चेला आत्मा है। गुरु तो साक्षात् भगवान् हैं।

'सतगुरु सत्पुरुष आप है स्वामी' जिसका पता केवल सन्त देते हैं। वरना सारी दुनिया का परमात्मा निरंकार निर्वाणी या काल है, जिसकी तीन कला ब्रह्मा, विष्णु और शिव हैं और जिसको ज्योति-स्वरूप भगवान् कहा है। उसके दस अवतार आये हैं। उसको शिवशक्ति या पुरुष प्रकृति कहा है। इस दुनिया की सब रूहें उसके सुपुर्द हैं। वह उनको अलग-अलग देहों में डाल कर, सुख-दुःख दे सकता है परन्तु नाश नहीं कर सकता। सन्त या कामिल फ़क़ीर उन रूहों को ज्योति-स्वरूप भगवान् से छुड़ाने के लिये आते हैं।

सत्संग के बाद इधर-उधर की बातें होती रहीं। हुजूर ने फ़रमाया कि स्वामी जी की आयु तीस वर्ष की थी, जब हुजूर साहिब जी महाराज तुलसी साहिब ने चोला छोड़ा। स्वामी जी की माता और दादी, तुलसी साहिब की प्रेमी-सेविकाएँ थीं और तुलसी साहिब अक्सर स्वामी जी के घर आया-जाया करते थे। एक बार हुजूर ने एक बीबी धनवन्ती को, जोकि अस्सी-नब्बे साल की थी, देखा। उसने

बताया कि बचपन में उसने तुलसी साहिब को स्वामी जी के घर आते देखा था। परन्तु उस समय उसको यह समझ नहीं थी कि यह कोई सन्त-महात्मा हैं। तुलसी साहिब ने स्वामी जी की माता को यह वर भी दिया था कि तुम्हारे घर परम सन्त पैदा होंगे, जिनसे संसार को बड़ा लाभ होगा।

19 अगस्त, 1943 को 'घट रामायण' में मे गुमाई प्रियलाल जी का प्रसंग चलता रहा। प्रियलाल जी ने कहा कि मैं तो कृष्ण का उपासक हूँ और ठाकुरों के बिस्तर, बर्तन-भोजन, जिनसे ठाकुरों को भोग दिया जाता है, किसी को छूकर, अपवित्र नहीं करने देता। तुलसी साहिब ने फ़रमाया कि जब तुम जानते हो कि परमात्मा सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान है तो जो तुम्हारे अन्दर परमात्मा है उसको मूर्ति के अन्दर वाले परमात्मा से अलग व नीचा समझकर, परमात्मा का अपमान करते हो क्योंकि तुम कहते हो कि हम किसी प्राणी को, ठाकुरों के खाने-पीने की चीजों को छूने नहीं देते। इसका मतलब यह है कि मनुष्य मूर्ति से निकृष्ट सिद्ध हुआ। मूर्ति पवित्र, मनुष्य अपवित्र। यह तुम्हारी कैसी भूल है। फिर जड़ को चेतन से बड़ा मानते हो। मूर्ति-पूजा तो किसी वेद या शास्त्र में नहीं बताई गई। यह तो नीच निकृष्ट धर्म है। इसको प्राणी ही बनाता है, प्राणी ही पूजता है। प्राणी में ही पाँच तत्त्व पूर्ण हैं, मूर्ति में केवल एक तत्त्व है। तुम पाँच तत्त्व वाले का अपमान करके एक तत्त्व वाले का आदर करते हो। वेदों-शास्त्रों में लिखा है 'जो ब्रह्मण्डे सोई पिण्डे' यानी जो सृष्टि में है वही मनुष्य के शरीर में है। इस प्रसिद्ध नियम को झूठा ठहराते हो। स्वयं परमात्मा मनुष्य के शरीर में रहता है परन्तु मूर्ति जड़ है। असली मन्दिर या ठाकुरद्वारा मनुष्य का शरीर है। उसको अपवित्र ठहरा कर मूर्ति की पूजा करते हो। अपने अन्दर से परमात्मा को नहीं खोजते। मूर्तियों में परमात्मा को ढूँढते हो। इसके बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से एक शब्द पढ़ाया गया जो कि मैंने पहले कभी नहीं सुना था :

ना भैणां भरजाईआं ना से ससुड़ीआंह।

सच्चा साक न तुटई गुरु मेले सहीआंह ।¹⁷

संसार के सब सम्बन्धी नाव में बैठने वाले यात्रियों की तरह हैं। पहले तो नाव में बड़ी चहल-पहल होती है। परन्तु जब किनारा आया तो सब अपने-अपने रास्ते चले जाते हैं। इसी प्रकार दुनिया के सब सम्बन्धी अपने-अपने समय पर साथ

छोड़कर चले जाते हैं। परन्तु गुरु और शब्द से मृत्यु के बाद भी जुदाई नहीं होती। 'पतन कूके पातणी वंजो धुक विलाड़'²³ यानी मल्लाह पुकारता है कि जल्दी दौड़ के चले आओ। 'पार पवंदड़े डिट मैं सतगुरु बोहिथ चाढ़'²⁴ यानी मैंने देखा है जो सतगुरु की नाव पर बैठ गये वे पार हो गये जैसे कि गुरु मल्लाह की तरह घाट पर खड़ा हुआ, आवाज़ दे रहा है : आओ जल्दी करो, जिसने पार जाना है। मैंने देखा है कि जो सतगुरु की नाव पर सवार हो गये, वे पार हो गये।

हिकनी लदया हिक लद गए हिक भारे भर नाल।

जिनीं सच वणंजया से सच्चे प्रभ नाल।²⁵

कोई मर गया, कोई मरने की तैयारी कर रहा है, कोई बोझ से दबा हुआ है। जिन्होंने सच यानी, शब्द और नाम की कमाई की वे सच्चे खुदा के पास गये। तुलसी साहिब का प्रसंग फिर जारी रहा। प्रियलाल ने कहा था कि मेरा इष्ट 'राधाकृष्ण' है। उसके जवाब में हुजूर तुलसी साहिब ने फ़रमाया कि भाई देख, भागवत् पुराण में लिखा है कि चार पाण्डव नरक में गये और युधिष्ठिर को स्वर्ग मिला। स्वयं ऊधो जी ने भी जब कृष्ण से मुक्ति माँगी तो ऊधो को क्या जवाब मिला कि जाकर तप करो। अतः कहते हैं कि ऊधो जी ने बद्रीनारायण में जाकर तप किया परन्तु किसी पुस्तक में नहीं आया कि उसके बाद ऊधो जी की क्या गति हुई। तुमने तो कृष्ण जी को देखा भी नहीं। तुम उनकी मूर्ति से मुक्ति की आशा कैसे करते हो ? भक्ति करके अन्दर शब्द को पकड़ो तो मुक्ति होगी।

22 अगस्त, 1943 को वर्षा होती रही।

23 अगस्त, 1943 को कड़ी वर्षा और ठण्ड है।

25 अगस्त, 1943 को वर्षा अभी हो रही है। सूर्य कई दिनों से दिखाई नहीं दिया। कल से सत्संग में कबीर साहिब के 'अनुराग सागर' की कथा आरम्भ की गई, जिसको हर धर्म के रूहानियत के इच्छुक लोगों को पढ़ना चाहिये। इसके बिना सन्तमत तथा काल और दयाल के भेद की पूरी तरह समझ नहीं आ सकती। इस भेद के ज्ञान से संसार के लगभग सब धर्म, सिवाय सन्तमत या मज़हबे फ़ुकरा के, ख़ाली नज़र आते हैं। सब मत-मतान्तर काल को सम्पूर्ण भगवान् और कुल मालिक मानकर उसकी पूजा कर रहे हैं।

उनको उस दयाल का भेद मालूम नहीं। न यह पता है कि काल भगवान् का दुनिया से व उसकी रूहों से क्या सम्बन्ध है और न ही यह कि दयाल का इनसे क्या सम्बन्ध है।

कबीर साहिब ने इस पुस्तक में अपने गुरुमुख शिष्य धर्मदास को सम्बोधित करके समझाया है। पहले तो आरम्भ में कामिल मुर्शिद यानी सतगुरु की स्तुति और प्रार्थना की है। फिर धर्मदास के प्रश्न पर अनुरागी यानी दयाल के प्रेमियों की विशेषताएँ बताई गई हैं। उदाहरणतया वे सती या परवाने की तरह होते हैं जो तन, मन और धन, कामिल मुर्शिद पर बलिदान कर देते हैं। फिर कहा है कि मुरीद को मुर्दे की तरह होना चाहिये, तब सफलता मिलेगी। जैसे पृथ्वी या धरती है वैसे ही मुरीद को होना चाहिये। धरती पर चाहे कोई चन्दन लगाये या उस पर थूके, वह किसी का सुख या दुःख नहीं मानती। ऐसे ही मुरीद को होना चाहिये कि दुनिया का भय व आशा छोड़कर, जो गुरु या मुर्शिद आज्ञा दे, उस पर चले। जैसे हुजूर स्वामी जी महाराज ने प्रेमियों के विषय में कहा है :

जैसे जग में महा भिखारी, दीन गरीबी उन सब बिधि धारी।

कोई उसको कुछ कह लेवे, मन को अपने ज़रा न देवे।

तुम सत्संग कर क्या फल पाया, उनका सा भी मन न बनाया।

बिल्कुल ऐसे ही गुण कबीर साहिब ने सच्चे सेवक में बताए हैं। कबीर साहिब की साधु यानी साधना करने वाले जिज्ञासु लोगों के लिये यह हिदायत है कि उनको पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँचों कर्मेन्द्रियाँ अपने वश में रखनी चाहियें और विशेषकर काम-इन्द्रि, जिस के बिना अन्दर आत्मा की रसाई नहीं हो सकती।

27 अगस्त, 1943 को राय साहिब लाला गुलबन्त राय जी 17 दिन ठहरने के बाद चले गए। वर्षा लगातार हो रही है। आज क्योंकि सत्संग में शाम को कई गैर-सत्संगी सज्जन पुरुष आये थे जिनको 'अनुराग सागर' की कथा से अधिक लाभ होने की आशा नहीं थी, इसलिये हुजुरी वाणी में से 'सतगुरु का नाम पुकारो'²⁶ पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि नाम तो सब जपते हैं और न करने से कुछ करना अच्छा है क्योंकि मनुष्य जन्म दुर्लभ है, बार-बार हाथ नहीं आता।

मगर सतगुरु से उसका कमाया हुआ नाम प्राप्त करके उस नाम का सिमरन करना चाहिये। सिमरन ऐसा कि मन बाहर न जाये और ध्यान दोनों भवों के बीच रहे (जैसा कि गीता में भी बताया है)। इसी विषय में हुजूर ने एक कहानी कही कि एक व्यक्ति, एक महात्मा की बारह वर्ष तक सेवा करता रहा। बारह वर्ष के बाद, उन्होंने एक नाम सिमरन करने के लिये दिया। जब वह वापस जा रहा था तो देखा कि दूसरे व्यक्ति भी वही नाम जप रहे हैं। उसने दिल में कहा कि मेरे साथ उस महात्मा ने बड़ा धोखा किया कि बारह वर्ष सेवा की और अन्त में वही नाम दिया जो ये लोग जप रहे हैं। वह लौटकर गया और महात्मा से शिकायत की। महात्मा ने कहा कि जाओ, अन्दर लोहे के सन्दूक में पारस पड़ा है, उसको उठा लाओ। इस पर वह व्यक्ति बोला कि यह और धोखा है, क्योंकि यदि पारस लोहे से छू जाये तो लोहा सोना बन जाना चाहिये। लोहे का सन्दूक पारस को छूकर सोना क्यों नहीं हुआ। अन्त में, वह व्यक्ति अन्दर से सन्दूक उठा लाया तो देखा कि अन्दर पारस दो तीन कागजों में लिपटा पड़ा है। बस, महात्मा ने कहा कि यही अन्तर है। तुम्हें अपना कमाया हुआ नाम दिया है। जो लोग बिना गुरु के यही नाम जप रहे हैं, खाली रहेंगे।

फिर फरमाया कि प्राणायाम से मन को कैद करना ऐसा ही है जैसे कि एक बदमाश को हथकड़ी लगाकर लाना। जब हथकड़ी खोल दी, बदमाश भाग गया। सन्त बदमाश को समझा-बुझा कर वश में लाते हैं और फिर वह सदा के लिये क़ाबू में आ जाता है।

28 अगस्त, 1943 को भी वर्षा हुई। केवल दोपहर को एक-दो घण्टे वर्षा रुकी। शाम को हुजूर ने 'अनुराग सागर' की कथा फरमाई। इस कथा का वर्णन करने से पहले यह बताना जरूरी है कि सुनने वाले, इन रूहानी बातों को अपनी स्थूल देह व सीमित बुद्धि से समझने का प्रयत्न न करें। सन्त कबीर ने सृष्टि के बनने का आँखों देखा इतिहास वर्णन किया है। उसको वेदों तथा दूसरी धार्मिक पुस्तकों से मिलाने का प्रयत्न भी निष्फल रहेगा क्योंकि ये सब किताबें, जिनको दुनिया के धर्म आसमानी और इलहामी कहते और समझते हैं, माया के देशों-स्थूल, सूक्ष्म, कारण तक पहुँचकर समाप्त हो जाती हैं। उनको, उनसे परे पवित्र

रूहानी देशों की उत्पत्ति और वहाँ के जीवों आदि की रचना का पता नहीं। इसलिये जिन लोगों ने वे रूहानी देश देखे नहीं उनका उन रूहानी देशों की रचना व वहाँ रूहों की बनावट आदि को, अपनी स्थूल देह पर लागू होने वाले क़ानूनों से तुलना करने की कोशिश करना व्यर्थ होगा।

कबीर साहिब कहते हैं कि देखो, धर्मदास! काल और माया रूपी ठगिनी ने बहुत भारी जाल बिछाया हुआ है। इन ठगों ने सारा संसार ठग लिया है। जीवों को आशा दे-देकर रोक रखा है। संसार में बड़े-बड़े बहादुर, सूरमा, दानी, त्यागी इत्यादि हुए, सब काल के जाल में रहे। सब लोग संसार के भोगों में उलझ गये और कोई उलट कर अपने घर नहीं पहुँचा। उसके बाद माया ने पक्षी, ब्रह्मा ने झिल्ली से लिपटकर पैदा होनेवाले यानी चौपाये, इनसान इत्यादि, विष्णु ने कीड़े, मकोड़े इत्यादि बनाये और शिवजी ने वृक्ष वनस्पति इत्यादि बनाई तथा इस दुनिया का काम चलने लगा। नौ लाख प्रकार के पानी के जीव, चौदह लाख प्रकार के पक्षी, सताईस लाख प्रकार के कीड़े-पतंगे, तीस लाख प्रकार के वृक्ष, घास, फूस और चार लाख प्रकार के इनसान, जानवर, देवी-देवता इत्यादि बनाये। मनुष्य में पाँचों तत्त्व पूरे हैं। जानवरों में आकाश तत्त्व नहीं है। पक्षियों में मिट्टी और आकाश तत्त्व नहीं है। कीड़े-मकोड़ों में मिट्टी, आकाश और पानी नहीं है और वनस्पति में सिवाय पानी के और कोई तत्त्व नहीं है।

इनसानों की शक्तों और आदतों में इसलिये अन्तर है कि जो इनसान जिस योनी या खानी से आता है उसकी आदतें साथ लेकर आता है। अतः जो पक्षियों से मनुष्य बनते हैं, उनका मन पक्षियों की तरह चंचल होता है। वे कामी, क्रोधी, दरिद्री, आलसी और नौद के प्यारे होते हैं। उनको चोरी और निन्दा पसन्द है। घर में झाड़ियों को आग लगाते हैं और भूत-प्रेतों को पूजते हैं। न ज्ञान-ध्यान की परवाह, न गुरु की। कपड़े मैले कुचैले पहनते हैं। नहाते नहीं, आँखों में नौद और मुँह से राल टपकती है। जो कीड़े-मकोड़ों से मनुष्य का जन्म पाते हैं, उनको शिकार खेलना, मांस खाना, सभा में झूठ बोलना, दान-पुण्य व दया-धर्म से घृणा, माथे पर टीका लगाना पसन्द होता है। उनके दाँत लम्बे होते हैं। जो वनस्पति से मनुष्य योनि में आते हैं वे चिड़चिड़े स्वभाव वाले होते हैं। राजा की नौकरी

करना, सिपाही बनना, तुर्रदार पगड़ी बाँधना, घोड़े की सवारी करना, पराई औरतों से ताक-झाँक करना पसन्द होता है। वे खाते-खाते सो जाते हैं। जो जानवरों से मनुष्य योनि में आते हैं वे धर्म वाले, तीर्थ और भजन के चाहने वाले, गुरु के भक्त, धार्मिक पुस्तकों को मानने वाले, संसार के धन व स्त्री का सुख भोगने वाले, अच्छा भोजन, साफ पोशाक, दान-पुण्य करनेवाले होते हैं। उनकी आँखों में रोशनी होती है। अधिकतर गाय के पेट से उत्पन्न होने के बाद मनुष्य जन्म पाते हैं। इसलिये हिन्दू शास्त्रों में गाय को पवित्र कहा है। मनुष्य से जो मनुष्य-जन्म में आते हैं वे बहादुर, निर्भय, मोह-माया से स्वतन्त्र, निंदा, चुगली से मुक्त, ज्ञान-अज्ञान के अन्तर को जानने वाले होते हैं।

2 सितम्बर से 19 सितम्बर, 1943

हुजूर की तबीयत दो-तीन दिन से बहुत खराब है। 2 सितम्बर के बाद सत्संग में नहीं पधार सके। 2 सितम्बर को तबीयत बहुत खराब थी, फिर भी सत्संग करते रहे। इसके बाद रात को बुखार हो गया, जो अभी तक नहीं उतरा। बलगम भी है और रात को बुखार ज्यादा रहा। डॉक्टर का कथन है कि फ्लू का हमला है। मुझे भी ऐसा ही लगता है। एक बीमार सत्संगी की खबर लेने गये थे शायद वहीं से ले आये। प्रतिदिन रोग बढ़ता जा रहा है। डॉ. ओम प्रकाश साहिब बड़े प्रेम और श्रद्धा से इलाज कर रहे हैं। दिन-रात में तीन-चार बार फेरा डालते हैं। हुजूर को खाँसी हो रही है। बोल भारी है; गले में खराश है; नाक में साँस रुक कर आता है और बुखार है। दो और तीन सितम्बर को बुखार 103 डिग्री तक हो गया और उस पर पेट में जलन की वही पुरानी शिकायत भी बहुत बढ़ गई। ऐसा मालूम होता है कि जैसे हुजूर के पेट में बहुत सख्त दर्द है और रात को बेचैनी में कभी लेटते हैं, कभी पलंग पर उठ कर बैठ जाते हैं। बुखार सौ दर्जे से नीचे होता ही नहीं। डॉक्टर साहिब बहुत कोशिश कर रहे हैं। हुजूर फ़रमाते हैं कि भादों का सारा महीना, उनकी सेहत के लिये खराब है। हुजूर की बर्दाश्त हद से ज्यादा है। डॉक्टर साहिब सोडा बैइकार्ब के पानी से गरारे करवाते हैं तो हुजूर पानी को गले तक भी नहीं जाने देते। जब कहा जाता है कि गले में गरारे करो तो फ़रमाते हैं कि पानी अन्दर नहीं जाता है। जब Tinc. Benzoine (लोबान अरिष्ट) की भाप देते हैं तो दम

घुटने लगता है परन्तु तकलीफ़ को सहन करने की आदत कमाल की है। पेट में बहुत दर्द होता है परन्तु कभी मुँह से हाय की आवाज़ नहीं सुनी। हाँ, इतना कहते हैं कि जुकाम और बुखार से इतना कष्ट नहीं होता जितना पेट दर्द से होता है। लाहौर के योग्य डॉ. महाराज कृष्ण ने देखा और रक्त-चाप (Blood Pressure) को देखकर कहा कि इसके अनुसार आपकी आयु 60 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिये। दिल की धड़कन भी ठीक है। 693 नम्बर की गोलिएँ देते हैं जिससे फेफड़े ठीक रहें। फेफड़े बिलकुल साफ़ हैं। डॉक्टर साहिब छाती, पीठ और पेट पर मालिश करते हैं। हुजूर ने फ़रमाया कि हमें जुशांदा उबाल कर दो, जिसकी हमें पहले से आदत है। अतः बनफशा छः माशे, मूलहटी तीन माशे, बीदना तीन माशे, उन्नाव तीन दाने उबाल कर देते हैं, दूध में ग्लूकोज खौंड डालकर देते हैं और पानी में भी ग्लूकोज डालते हैं। जुशांदा ने अपना प्रभाव दिखाना शुरू कर दिया है। सुबह को पाखाना अच्छी तरह आने लगा है। 6 सितम्बर को बुखार भी 100 डिग्री से अधिक नहीं हुआ। पेट के लिये कैल बिसमा पानी में घोलकर देते हैं।

7 सितम्बर, 1943 को सुबह हुजूर का बुखार 98.5 डिग्री हो गया। सारी रात नींद भी आई और सुबह दस्त भी खुलकर आया। आज सब सत्संगी खुश हैं। हुजूर बिस्तर छोड़कर मुलाक़ात के कमरे में, सोफे पर बिराजमान हैं। ज्यादा बोलना डॉक्टरों ने बन्द कर रखा है। राधाकृष्ण मलिक साहिब खूब सेवा कर रहे हैं। रात के ग्यारह-बारह बजे अपने घर जाते हैं। सुबह नौ बजे आ जाते हैं। आज हुजूर ने आज्ञा दी कि डेरे में सत्संग बन्द कर दिया जाये और सब सत्संगियों को पत्र डाल दिये जायें कि कोई भी 26 सितम्बर के सत्संग पर, डेरे आने की तकलीफ़ न करे। न कोई नाम लेने के लिये आए। हुजूर की सेहत अत्यधिक कमजोर है। मेरा विचार है कि अभी ज्वर एक दर्जा और गिरना चाहिये। हुजूर का पहले जैसा स्वास्थ्य होने के लिये काफ़ी समय लग जायेगा।

9 सितम्बर, 1943 सुबह को हुजूर का बुखार 98 डिग्री पर था और सब लोग खुश थे। सरदार साहिब सरदार भगत सिंह जी और वैद्य साहिब जालन्धर से शाम के तीन बजे पधारे। शाम को पाँच बजे में हुजूर को जरूरी डाक सुनाने गया तब सरदार साहिब हुजूर को उर्दू का समाचार-पत्र पढ़कर सुना रहे थे। उस समय हुजूर ने कहा कि सदी महसूस हो रही है। हमारे पलंग वाले कमरे में

अँगोठी जला दो ताकि कमरा गर्म हो जाये। अतः हुजूर कमरा गर्म होने पर अपने पलंग पर लेट गये, परन्तु सर्दी की सख्त शिकायत करते रहे। उनके शरीर को सेक भी दिया गया और गर्म पानी की बोतल भी रखी गई परन्तु सर्दी है कि किसी तरह रुकती ही नहीं। अन्त में शाम के लगभग आठ बजे किसी तरह शरीर गर्म हुआ तो पता चला कि 103 डिग्री का बुखार धीरे-धीरे 100 डिग्री से थोड़ा ऊपर रह गया।

10 सितम्बर, 1943 सुबह को बुखार 98 डिग्री था मगर कमजोरी हद से ज्यादा थी। हुजूर स्वयं मनीऑर्डरों पर हस्ताक्षर न कर सके। दोपहर के बाद मुझे बुलाया कि हमें अभी आसौज की संक्रान्ति तक तकलीफ़ रहेगी। वहाँ मलिक राधाकृष्ण और सरदार भगत सिंह जी भी थे। इसके बाद डॉक्टर बीड़ामल साहिब ने नब्ज देखी तो चिन्ता हुई। अमृतसर से एक योग्य डॉक्टर को भी सलाह के लिये बुलाया गया। उन्होंने दिल को ताक़त देने के लिये दवाई बताई। हुजूर को रात के बारह बजे तक तो आराम रहा, परन्तु दो बजे से चार बजे तक बेचैनी रही। कई बार लेटे और कई बार बैठे। लेटे-लेटे भी करवट बदलते रहे। अन्त में चार बजे के लगभग उठकर बैठ गये। उसके बाद हालत कुछ सुधर गई और लेट गये। हाँ, हुजूर ने कल शाम फ़रमाया कि मेरे दिल में न बेटों का मोह है न किसी और का, जब बुलावा आये, मैं जाने को तैयार हूँ, बल्कि मैं तो जाना चाहता हूँ। हम सबने विनती की कि ऐसा नहीं होना चाहिये। आप सौ वर्ष की आयु तक तो इस दुनिया में रह कर, हम लोगों को लाभ पहुँचावें। मौलाना रूम ने कहा है :

मरग कि अज़ ऊ जुमला, ब-हैबत दर अन्द,
मे-कुनन्द ई, क़ौम बर ऊ रीशख़न्द।

यानी मौत जिससे सब डरते हैं, सन्त उस पर हैंसते हैं।

यह आँखों देखा है कि केवल सन्तों ने ही मौत पर विजय पाई है, वरना सब इस दुनिया से रोते हुए गए हैं। रात को 11 बजे हुजूर स्वामी जी महाराज के सार बचन में से 'दर्शन की प्यास घनेरी। चित तपन समाई'²⁷ सरदार भगत सिंह से पढ़वाई। रात का समय था, शोर बिलकुल नहीं था, इसलिये बड़ा आनन्द आया। यह विरह और वियोग की उच्चकोटि की वाणी है।

12 सितम्बर, 1943 को हुजूर को कुछ आराम रहा। रात को हुजुरी वाणी में से 'मैं सतगुरु संग करूँगी आरती'²⁸ और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'अंदर सच्चा नेहों लाया प्रीतम आपणै'²⁹ पढ़ा गया। अभी तक पूरा-पूरा आराम नहीं हुआ। सरदार भगत सिंह ने रात हुजूर को जो गज़ल स्वयं पढ़कर सुनाई, नीचे इसलिये लिखी जाती है कि उसमें रास्ते का भेद और मारफ़त के नुक्ते मिलते हैं :

करके पैदा महफ़िले अरज़ो समा,
खुद खुदाए पाक रहता है जुदा।
उसके मिलने की है गो सबको उम्मीद,
पर नहीं होती मुयस्सर उसकी दीद।
जब वह इनसानों को अजरोह अता,
साथ अपने है मिलाना चाहता।
पैकरे खाकी में होकर आशकार,
करता है मुर्शिद की सूत अख़्तयार।
शक्ले इन्सां में वह आता है नज़र,
पर नहीं होता हक़ीक़त में बशर।
पत्थरों को पूजता है इक जहाँ,
तीर्थों पर है फ़िदा खुदों कलाँ।
ग़ैर मुमकिन है मगर उसका विसाल,
कोई उसको देख पाए क्या मजाल।
फिर रहे हैं सैकड़ों फ़ाज़िल व पीर,
दहर में मिलती नहीं जिनकी नज़ीर।
देख लें उसको बहुत दुश्वार है,
लाख वह कोशिश करें बेकार है।
हाँ वह खुद चाहे तो क्या मुमकिन नहीं,
उसकी दीद और वसल ना मुमकिन नहीं।

आदमी के भेस में हो गर खुदा,
 सख्त मुश्किल है उसे पहचानना।
 गरचे होता है वह जाते किब्रिया,
 खुद को हरगिज भी नहीं कहता खुदा।
 खुद जो मालिक रूप होता है सदा,
 रूहों को मालिक से देता है मिला।
 देता है रूहों को उल्फत का सबक्र,
 उनके मालिक की मुहब्बत का सबक्र।
 आँखों के पीछे जो इक खिड़की है तंग,
 खोलने का उसको सिखलाता है ढंग।
 यह जो हैं जीनत तराजें आसमाँ,
 मेहरो माहो अज्जमो सय्यारगाँ।
 उनके पीछे होता है उसका वजूद,
 है पसे परदा उसी की बस नमूद।
 जब कभी रूहें पहुँचती हैं वहाँ,
 रहनुमा बनता है उनका बे गुमाँ।
 हल वही करता है उनकी मुश्किलें,
 तै कराता है वही सब मंजिलें।
 जब हजारों बत्तियों की रोशनी,
 सर बसर बनती है मशअल राह की।
 रूहों को सूरज में ले जाता है वह,
 सरमदी पैगाम दे जाता है वह।
 करता है उस चाँद को उनका मर्की,
 रोशनी का जिसकी अन्दाज़ा नहीं।
 जिस जगह पर आबे कौसर है रवाँ,
 साफ़ रूहें पाक होती है वहाँ।

साथ ले चलता है फिर जुलमात को,
 दिन जहाँ कहते हैं आधी रात को।
 रोशनीए पीरे कामिल के सिवा,
 उस जगह होती नहीं कोई ज्या।
 उस जगह काफ़ी नहीं खुद रूह की,
 बारह सूरज के बराबर रोशनी।
 रूहें तै करती हैं जूँ जूँ रास्ता,
 उनकी अपनी बढ़ती जाती है ज्या।
 खत्म हो जाती है जब राहे तलब,
 जा पहुँचती हैं मुकामें हक्र में सब।
 उस जगह होती है रूहें पाक की,
 सोलह सूरज के बराबर रोशनी।
 उस जगह सूरज से लाखों आफ़ताब,
 ला नहीं सकते ज्याए हक्र की ताब।
 होती है ऐसी हक़ीक़त आशकार,
 शकले हक्र करता है मुशिद अख़्तयार।
 उस जगह आता है यह दिल को यर्की,
 फ़क्र कुछ हक्र और मुशिद में नहीं।
 मुशिदें कामिल छुपाता है भला,
 अपने दीवानों से अपना रास्ता।
 ज़िक्र से रहती हैं रूहे मुन्तशिर,
 आँख की पुतली के पीछे मुन्तज़िर।
 और मुशिद के तसव्वर से दवाम,
 होती है आदत ठहरने की मदाम।

मुर्शिदे कामिल जो आए हैं कभी,
होके जीनत महफिले आफ़ाक की।
रूहों को दिखला के इक राहे अमल,
खुद मिला देते हैं हक़ से बर महल।
मज़हबों से कुछ नहीं मतलब उन्हें,
होते हैं यक़साँ मज़हब सब उन्हें।
वह न मज़हब गर हैं न मज़हब शिकन।
मज़हबे मौला है उनका पैरहन।

आज 16 सितम्बर, 1943 को भादों का अन्तिम दिन है। सरदार हरबन्स सिंह और सरदार पुरुषोत्तम सिंह दो दिन से तशरीफ़ लाये हुए हैं। अभी भी हुजूर को बुखार 99 डिग्री तक हो जाता है। खाँसी भी है। सिवाय हॉर्लिंग्स दूध, गाय का दूध या ग्लूकोस के शरबत के, कुछ और खाने को नहीं दिया जाता। जो लोग दर्शन करने आते हैं, उन्हें बातचीत करने का हुक्म नहीं। डाक में आये आवश्यक पत्रों का खुलासा जुबानी बताया जाता है। मौसम अभी तक बादलों वाला है। सर्दी बढ़ती जा रही है। डलहौजी में आजकल जुकाम, इन्फ़्लुएंजा और मलेरिया की बहुत शिकायत है। लोग कहते हैं कि अगले साल हुजूर को यहाँ नहीं आना चाहिये, जोकि मेरे विचार से भी ठीक है। हुजूर को 5000 फुट की ऊँचाई से अधिक ऊँचे पहाड़ व अधिक वर्षा वाले पहाड़, मेरी राय में ठीक नहीं रहेंगे। महाराज जी की बीमारी के विषय में लोगों के पत्र धड़ाधड़ आ रहे हैं। लाला बालकराम जज भी अमृतसर से पधारे हैं जो डलहौजी आने को लिखते हैं। उनको मना कर दिया गया है।

17 सितम्बर, 1943 को हुजूर ने फ़रमाया कि एक राजा का अहलकार था जिसका काम था देश-विदेश की रिपोर्ट बादशाह को सुनाना। एक बार वह बादशाह की हुजूरी में रिपोर्ट पढ़ रहा था कि एक बिच्छू उसके कपड़ों पर से उसकी कमीज के अन्दर उतर गया और डंक मारता गया, परन्तु अहलकार ने उफ़ तक न की। उसी तरह रिपोर्ट पढ़ता चला गया। जब काम समाप्त हो गया तो

बादशाह को पता लगा। उसने कहा कि यह बात मुझसे पहले क्यों नहीं कह दी। अहलकार ने विनती की कि हुजूर, यदि मैं डंकों की तकलीफ़ के कारण अपना फ़र्ज पूरा करना छोड़ देता तो लड़ाई के मैदान में तलवार के आगे कैसे ठहरता। बादशाह बहुत खुश हुआ। सो इन चीज़ों की वहाँ उस दरगाह में कद्र होती है। हुजूर को अब बुखार 98.4 डिग्री है यानी, बुखार क़रीब नॉर्मल है। रात को बारह बजे के क़रीब हुजूर ने करतार सिंह पाठी को आदेश दिया कि कोई शब्द सुनाओ। उन्होंने कबीर साहिब की वाणी में से पढ़ा 'मैं कैसे सोई री पिया मेरा जागे, पाँच सखी मेरे संग की सहेली उन संग मेल मिली'³⁰। पाँच सखी का अर्थ पाँच ज्ञान-इन्द्रियाँ हैं। सास, ससुर, ननद इत्यादि से मतलब आशा, तृष्णा, माया, लोक-लाज इत्यादि हैं जो रूह को मालिक से मिलने से रोकती हैं। इसके बाद 'गुरु से लगन कठिन है भाई। जैसे पपीहा प्यासा बूँद का, पिया पिया रट लाई'³¹ पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि शब्द तो बीबी रुक्को पढ़ा करती थीं। अब तो हमारी बीबियाँ शब्द पढ़ने से कतराती हैं। फिर फ़रमाया और पढ़ो। अतः फिर पढ़ा 'चढ़ तरुवर दोऊ पंछी बैठे, इक गुरु एक चेला' और 'मेरी नज़र में मोती आया है'³¹। यह शब्द पढ़ रहे थे कि हुजूर अन्तर्ध्यान हो गये और उनको जगाना ठीक न समझा। हम सब चले आये।

19 सितम्बर, 1943 की दोपहर को हुजूर का बुखार पूरी तरह उतर चुका था यानी 97.6 डिग्री था। दिल की धड़कन कुछ तेज़ थी। इसलिये डॉक्टर साहिब ने दिल की धड़कन कम करने के लिये डीजोक्सिन दवाई दी। अभी फुलका खाने को नहीं दिया जाता। केवल मूँग की दाल, सब्जी व दूध दिया जाता है। हुजूर 25 सितम्बर को डेरे जाने का विचार कर रहे हैं।

हुजूर की सेहत अब दिन-प्रतिदिन अच्छी हो रही है। कल से एक-आध फुलका खाने लगे हैं और रात को नींद भी आ जाती है। परन्तु चल-फिर नहीं सकते। रात को बारह बजे तक पलटू साहिब की कुण्डलियाँ सुनते रहे। कल रात सरदार साहिब सरदार भगत सिंह ने हुजूर से विनती की कि आप ने इस तरह सांसारिक लोगों के लिये बीमारी अपने ऊपर क्यों ली? दुनियादारों का क्या है? उनको दस दिन बुखार इत्यादि न आया, बीस दिन आ गया या कोई

मर गया तो मर जाये, आपको क्यों इस प्रकार कष्ट उठाना पड़े। हुजूर ने जवाब दिया कि कुछ लोगों की मुसीबतें इतनी दर्दनाक होती हैं और इस तरह दर्दनाक ढंग से वर्णन की जाती हैं कि स्वाभाविक तौर पर ही दिल में दया आ जाती है। अवश्य, यह मेरा अपना तजुर्बा है कि कुछ पत्र जो हुजूर को दुःखी लोगों के आते हैं वे ऐसे दर्द भरे होते हैं कि बरबस रोना आता है।

कोई आदमी अपनी बीबी के भाग जाने की मुसीबत, कोई औरत अपने पति की बेवफाई की कहानी, कोई गृहस्थ बाल बच्चेदार अपनी गरीबी की कहानी, इस ढंग से वर्णन करता है कि जिससे पता लगता है कि यह दुनिया दुःखों का घर है और लोग बहुत दुःखी हैं, फिर सन्तों के नम्र व नाजुक दिल पर, ऐसी आँसू भरी कहानियाँ, क्यों न असर करें।

अध्याय 11

डेरे में निवास का हाल

हुजूर की डेरे की ओर वापसी और वहाँ निवास

25 सितम्बर, 1943 सुबह नौ बजे की सर्विस में हुजूर, भगत सिंह व वैद्य जी के साथ डलहौजी से मोटर कार में खाना हो, गुरदासपुर व अमृतसर के रास्ते शाम को पाँच बजे डेरे पधारे। डेरे में बहुत-से लोग जमा थे। हुजूर के दर्शन करके हुजूर के स्वस्थ होने की खुशी में फूले न समाये।

26 सितम्बर, 1943 को हुजूर सत्संग में तशरीफ लाये। परन्तु सत्संग स्वयं नहीं किया। अब केवल सुबह-शाम ऊपर बालकनी में से दर्शन देते हैं। कमजोरी के कारण नीचे नहीं आ सकते। कोई आदमी उनके पास जाकर बातचीत नहीं कर सकता।

28 सितम्बर, 1943 आजकल सरदार गुलाब सिंह जी शाम के पाँच बजे से साढ़े छः बजे तक सत्संग करते हैं। सत्संग लालाजी की कोठी के आगे, थड़े पर होता है, जहाँ कि कीड़ों के घरोंदे हैं। उनको हटाने के लिये यह सुझाव दिया गया है कि घरोंदों को खोद कर बड़ा सारा गड्ढा कर दिया जाये और वहाँ से चिकनी मिट्टी निकालकर, दरिया की सूखी रेत से गड्ढा भर कर, बराबर कर दिया जाये।

5 अक्टूबर, 1943 शाम को मैं साँगली के राजा साहिब का तार लेकर हुजूर के पास गया। हुजूर ने फ़रमाया कि अब आराम है। राजा व रानी साहिबा साँगली से, जनरल राजवाड़े अपनी रानी साहिबा के साथ ग्वालियर से, कर्नल सेन्डर्स शिमला से व श्रीमती डे हावड़ा से, ग्यारह अक्टूबर के बाद, जल्दी आनेवाले हैं। कर्नल साहब नौकरी छोड़कर विलायत जा रहे हैं। उससे पहले दर्शन करना चाहते हैं।

6 अक्टूबर, 1943 को सुबह दस बजे के करीब हुजूर पहली बार ऊपर की मंज़िल से उतर कर, नीचे राय साहिब लाला हरनारायण के कमरे तक,

तशरीफ लाये। पाँच-सात मिनट बैठकर वापस चले गए। सब लोग प्रसन्न हुए। परन्तु सात अक्टूबर को नहीं आ सके। कहते हैं कि जीना चढ़ने-उतरने से कुछ नाफ़ हो गई (धरन पड़ गई) है। आजकल जरूरी डाक शाम को छः बजे के बाद सुनाई जाती है।

8 अक्टूबर, 1943 को दशहरे का दिन था। हुजूर सुबह दस बजे के करीब सत्संग-हाल के बाहर, पन्द्रह मिनट के लिये कार में सवार होकर, तशरीफ लाये। प्रसाद बाँटा गया।

अमेरिका से मिस्टर मायर्स ने पूछा कि यदि किसी अमेरिकन जिज्ञासु को उनकी प्रार्थना पर, नाम दिये जाने की स्वीकृति सतगुरु दे दें, परन्तु नाम दिये जाने से पहले सतगुरु चोला छोड़ दें, तो क्या उसको नाम दे देना चाहिये? जवाब हाँ, क्योंकि सतगुरु शरीर नहीं है। सतगुरु वह शक्ति है जो कभी नहीं मरती, केवल स्वरूप बदलती है। इसलिये ऐसे प्राणी को नाम दे दिया जाये और उसकी सँभाल होगी। अमेरिका से दो सत्संगियों के पत्र आये कि हमें दुनिया की किसी चीज़ व सम्बन्धियों से प्रेम नहीं रहा। जवाब दिया गया कि यदि तुम्हें दुनिया की किसी चीज़ से प्रेम नहीं तो फिर तुम्हें मरने के बाद, कोई ताक़त इस दुनिया में दुबारा जन्म नहीं दे सकती।

11 अक्टूबर, 1943 को सुबह साँगली की रानी साहिबा, सर जोशी इत्यादि तशरीफ लाये। शाम को साढ़े पाँच बजे सरदार गुलाब सिंह जी ने सत्संग किया। हुजूर स्वयं भी अन्त में पन्द्रह मिनट के लिये तशरीफ लाये। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का शब्द 'चकवी नैन नौद नहिं चाहै बिन पिर नौद न पाई' पढ़ा गया, जो ऊँचे दर्जे के प्रेमियों की अवस्था का वर्णन करता है। हुजूर ने फ़रमाया कि आजकल लोग चाहते हैं कि गुरु उनकी दुनियावी तकलीफ़ें दूर करें और उनके सुखी जीवन के जिम्मेदार हों। जबकि सन्त केवल भक्ति-मार्ग की शिक्षा देते हैं और परमात्मा की इच्छानुसार रहने का उपदेश देते हैं परन्तु सांसारिक जीवों का यह हाल है कि यदि लड़का मर गया, मुकद्दमा हार गये, गरीबी आ गई, हानि हो गई या बीमारी लम्बी हो गई तो कहते हैं कि छोड़ो ऐसे गुरु को। मतलब यह कि जिस दुकान पर मखमल बिकती है वहाँ से खदर खरीदना चाहते हैं। यह सौदा सन्तों के पास नहीं है।

13 अक्टूबर, 1943 आजकल हुजूर शाम के 6 बजे के लगभग पन्द्रह-बीस मिनट के करीब, हर रोज सत्संग में बिराजमान होते हैं। आज श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से एक शब्द 'भली सुहावी छापरी जा मह गुन गए' का व्याख्यान स्वयं हुजूर ने किया कि उस अमीरी से जो कि विषयों-विकारों में फँसा दे, वह गरीबी अच्छी है जिसमें परमात्मा का नाम जपा जाये।

14 अक्टूबर, 1943 की शाम को हुजूर पोथी में से दो शब्द लिये गये 'गुरु मेरे जान पिरान, शब्द का दीन्हा दाना' और 'खोजत रही पिया पंथ, मर्म कोई नेक न गाया'। हुजूर ने स्वयं व्याख्या की। एक सत्संगी ने विनती की कि जो गुरु उसने, हुजूर से नाम लेने से पहले धारण किया हुआ था, वह उसको सत्संग में आने से मना करता है। उस गुरु ने उसको धुनात्मक शब्द का उपदेश नहीं दिया था, केवल वर्णात्मक शब्द का जपना बताया था। जैसे 'ओऽम् नमः भगवते वासुदेवाय' या गायत्री मन्त्र इत्यादि-इत्यादि। हुजूर ने जवाब दिया कि गुरु की निन्दा तो कभी नहीं करनी चाहिये। जो जहाँ तक जानता है, वह वहाँ तक ही बता सकता है। फिर फ़रमाया :

एक अक्खर दाता जो गुरु जो सेवत नहिं तास।

पाय जनम सौ स्वान के बहुर सुपच घर वास।

यदि किसी उस्ताद ने हमें एक अक्षर भी बताया है तो उसकी भी निन्दा नहीं करनी चाहिये क्योंकि ऐसा करने से सौ जन्म कुत्ते के लेकर, फिर भी शूद्र के घर जन्म होता है। यदि वह गुरु डरावे तो नहीं डरना चाहिये क्योंकि सन्त-सतगुरु शेर हैं। उनकी शरण में आकर गीदड़ों, भेड़ियों का क्या डर? यदि कोई बीमारी, मौत, तकलीफ़ इत्यादि आ जाये तो उसको उस गुरु की ओर से न समझो बल्कि अपने पिछले कर्मों का खेल समझो। एक सत्संगी के बारे में कहा गया कि वह घर-बार छोड़कर ऋषिकेश चला गया। रात को स्वप्न में हुजूर ने उसे कहा कि मुफ्त की रोटियाँ खाकर भजन नहीं बनेगा। अतः वह वहाँ से डरे आ गया। यहाँ हुजूर ने उसे समझाया कि जो पराया खाता है उसका भजन-सिमरन नहीं बनता। तुम अपने घर जाओ, अपने लड़कों की कमाई खाओ। वह तुम्हारा अधिकार है। मौलाना रूम ने कहा है : 'दस्ते पीर अज गायबों कोताह नेस्त'। गुरु का हाथ प्रभु के हाथ से छोटा नहीं है।

15 अक्टूबर, 1943 को जब हुजूर सत्संग में बिराजमान हुए तो साधु दरबारी दास जी गुरु महिमा में से सहजोबाई का शब्द पढ़ रहे थे। 'राम तजुँ पै गुरु न बिसरुँ। गुरु के सम हरि कूँ न निहारुँ'। हुजूर ने सारा शब्द पढ़वा कर फ़रमाया कि यह बिल्कुल ठीक है कि यदि परमात्मा नाराज़ हो जाये तो सतगुरु उसे मना लेगा, परन्तु सतगुरु ही नाराज़ हो जाये तो उसे कौन मनायेगा? परमात्मा ने तो चौरासी लाख योनियों में डाल दिया। गुरु ने मुक्त कर दिया। परमात्मा ने अपना आप छिपा लिया परन्तु गुरु ने उसे दिखा दिया। इसके बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से बाबू गुलाब सिंह जी ने सत्संग करते हुए फ़रमाया कि मन के विकार दो प्रकार से पैदा होते हैं, संस्कार-दोष और संग-दोष से, यानी कुछ बुरी आदतें हम जन्म-जन्मान्तरों से साथ लाते हैं, कुछ बुरी संगत से प्राप्त कर लेते हैं। इन सबको दूर करने के लिये महात्मा पुरुषों की संगति करनी चाहिये। सत्संग द्वारा मन से बुरी संगति व बुरे संस्कारों का प्रभाव, निकल जाता है और जब तक मन में कोई विकार उदाहरणतः काम, क्रोध, राग, द्वेष इत्यादि बाक़ी हैं, धुनात्मक नाम की प्राप्ति नहीं हो सकती, न गुरु-भक्ति पूरी हो सकती है। हुजूर ने फ़रमाया कि जब तक पारब्रह्म के हौजे कौसर (मानसरोवर) में स्नान न किया जाये तब तक कर्मों की मैल दूर नहीं होती।

16 अक्टूबर, 1943 को सारी संगत ब्यास दरिया के पार, किशतियों में सवार होकर ईंधन के लिये सरकण्डा काटने गई और शाम को अँधेरा होने के बाद यहाँ पहुँची। उसके बाद थोड़ा-सा सत्संग हुआ। हुजूर ने फ़रमाया कि सेवा का दर्जा, भजन से कम नहीं है। कल फिर जायेंगे। सुबह सात बजे जाते हैं और वहीं रोटी पहुँच जाती है। आज छः किशतियाँ लाये, यानी एक हजार मन के करीब ईंधन आ गया। कल को यदि इतना ही आ जाये तो वर्ष भर का निर्वाह हो जायेगा।

17 अक्टूबर, 1943 को छः किशतियाँ और लाई गई। हुजूर स्वयं दरिया के पार, ढाई बजे, तशरीफ़ ले गये। शाम के छः बजे वापस आये। अमृतसर आदि के सत्संगी, संक्रान्ति के लिये, आये हुए थे। शाम को 7 बजे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से कार्तिक का महीना पढ़ा गया और हलवा बाँटा गया।

18 अक्टूबर, 1943 की शाम को सत्संग में 'गुरु कहें जगत सब अंधा' और कबीर साहिब का शब्द 'मै कैसी सोई री, पिया मेरा जागे' लिये गए। हुजूर ने स्वयं व्याख्यान दिया और फ़रमाया कि जिनके कर्म मन्दे हैं, वे सन्तों के वचन सुनते हुए

भी नहीं सुनते। अंधाधुंध कर्म किए जाते हैं। मौत के समय पछताते हैं और धर्मराज उनको उनके कर्मों के अनुसार किसी और योनि में धकेल देता है। इस प्रकार जन्म-जन्म दुःख भोगते हैं। वास्तव में इस जीव का, सिवाय सतगुरु और शब्द के, कोई भी अपना नहीं। सम्बन्धी-मित्र तो मौत होते ही साथ छोड़ देते हैं। इन्द्रियाँ, नाक, कान आदि धर्मराज के सामने जाकर उसी के विरुद्ध गवाही देती हैं कि हमारा इसने बड़ी बुरी तरह प्रयोग किया और पाप किये। सतगुरु और शब्द के सिवाय इसका भला चाहने वाला और कोई भी नहीं परन्तु इसको उनकी कोई परवाह नहीं, झूठे रिश्तेदारों की परवाह है। न ही यह चिन्ता है कि मर कर क्या हाल होगा, कहाँ जाऊँगा? जबकि दस दिन के लिये भी कहीं सफ़र में जाना हो तो उसके लिये सौ प्रयत्न करता है परन्तु अपने अन्तिम सफ़र की ओर से उदासीन है। उसकी कोई चिन्ता नहीं। न दान, न पुण्य, न भजन और न अभ्यास। फिर फ़रमाया कि आध घण्टे का अभ्यास सौ रुपये दान देने से अच्छा है। यदि दान किसी अधिकारी को दिया जाये तो उससे अन्तःकरण निर्मल होता है, बीमारियाँ दूर होती हैं और पाप कर्म नाश होते हैं।

दूसरे शब्द में फ़रमाया कि पाँच सखी से अभिप्राय पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ हैं, जिनके भोगों में फँसकर रूह अपने असली मालिक से उदासीन है। सास, ननद, देवरानी से अभिप्राय आशा, तृष्णा और बुद्धि है। यार से अभिप्राय मन से है। द्वादस का अर्थ सहस्र-दल कमल है जिसको बारह दल भी कहते हैं। वहाँ की दस आवाजें, सुरत और शब्द, कुल बारह हैं।

19 अक्टूबर, 1943 को शाम के 6-7 बजे के लगभग बीबी रली जी की माता जी का देहान्त डेरे में हुआ। हुजूर उससे थोड़े समय पहले, उसे देखने गए थे। जब लौटे तो उसी समय से उसकी रूह खिंचनी शुरू हो गई और ऐसे लगा जैसे कोई धीरे-धीरे सो जाये। हुजूर स्वयं उसका संस्कार के लिये गये।

20 अक्टूबर, 1943 को कर्नल साण्डर्स व मिस रुग, शिमला और कश्मीर से आये। शाम को हुजूर ने सत्संग में फ़रमाया कि जिस प्रकार बच्चे को मिठाई दो तो दोनों हाथों से परे धकेलता है परन्तु जब उसके मुँह को लगा दो तो फिर मिठाई को हाथ फैलाकर लेता है। इसी प्रकार शुरु में मन भजन-सिमरन से घृणा करता है परन्तु जब उसको रस आने लगता है, फिर दुनिया के कामों का नुक्सान होने पर भी भजन-सिमरन नहीं छोड़ता। एक बार स्टेशन मास्टर स्वर्गीय पण्डित

बूआदिता मल भजन-सिमरन में बैठे थे कि रस आ गया और छोड़ने को जी नहीं किया। उधर ट्रेन के आने का समय था। उनकी ड्यूटी थी कि ट्रेन आने से पहले सिगनल गिरा दे और फिर रवाना कर दे। वह भजन के आनन्द में था। ट्रेन आई और चली गई। उनको पता भी नहीं चला। अन्त में जब उठे तो डर लगा कि अब नौकरी से निकाला जाऊँगा परन्तु मालिक ने सब काम ठीक कर दिया। फिर फ़रमाया कि तीन घण्टे में तो मन अपनी भाग-दौड़ ही छोड़ता है। जिसको भजन-सिमरन का रस लेना है, उसको चाहिये कि छः घण्टे बैठे। पहले-पहले तीन-चार महीने जब तक सिमरन का रस नहीं आता, कठिन है। जब सिमरन का रस आने लगे तो काम चल पड़ता है।

22 अक्टूबर, 1943 को रात साढ़े नौ बजे राजा साहिब अपने परिवार सहित मिस्टर मेहता का बाईस्कोप का रिकार्ड जिसमें सत्संग के चलचित्र हैं, हुजूर महाराज जी के साथ देख रहे हैं। आज दोपहर को सिन्धी इंजीनियर दीवान साहिब मिस्टर भवनानी के यहाँ उनका तथा कुछ सत्संगियों का खाना था। सब मेहमान उनके यहाँ एक बजे दोपहर को पहुँच गये थे। उनमें राजा साहिब, उनके परिवार के अतिरिक्त कर्नल सेंडर्स, रानी लक्ष्मीबाई, मिस कॉलिंग्स, शेख निजामुद्दीन साहिब आदि भी शामिल थे। हुजूर डेढ़ बजे व्यास रेलवे स्टेशन से माल लदवा कर वापस आ गये परन्तु अभी तक स्नान नहीं किया था इसलिये कुछ मिनट बैठकर तशरीफ़ ले गये। खाना स्वादिष्ट व्यंजनों से भरपूर था। वहाँ ढाई बज गये। दीवान साहिब स्वयं मेहमानों के सत्कार में लगे हुए थे। भोजन पर कर्नल सेंडर्स से हवाई जहाज़ की यात्रा के विषय में बातें चल पड़ीं। कर्नल साहिब विलायत जा रहे हैं। उन्होंने फ़रमाया कि हवाई जहाज़ों पर केवल उन लोगों को यात्रा करने की स्वीकृति मिलती है जो सरकारी काम पर जा रहे हैं। इसीलिये कर्नल साहिब समुद्र के रास्ते जायेंगे। मैंने कहा कि आजकल तो सुअेज़ नहर (बराहे रूम) का रास्ता भी खुला हुआ है। जवाब मिला कि हमारा जहाज़ दक्षिणी अफ़्रीका के पास से गुज़रेगा। जहाज़ चलने में जब तक बहुत कम समय न रह जाये, किसी को पता नहीं लगने दिया जाता कि जहाज़ कब जायेगा। जो अफ़सर लोग विलायत जाते हैं उनको सामान ले जाने में ज्यादा पाबन्दियाँ नहीं हैं परन्तु रेशमी कपड़ों पर 50 प्रतिशत ड्यूटी देनी पड़ती है। जो रेशमी जुराबें बीस रुपये की आती हैं वहाँ जाकर

उन पर दस रुपये महसूल (कर) के और देने पड़ते हैं। इसलिये कर्नल साहिब कोई ऐसा सामान साथ नहीं ले जा रहे। उन्होंने बताया कि मुर्गी का अण्डा बहुत कम मिलता है। मगर गवर्नमेंट की आज्ञा से हर घर के ख़ाली आँगन में सब्जियाँ उगाना ज़रूरी है। इसलिये सब्जियाँ मिल जाती हैं और कपड़ा भी राशन में मिलता है। एक वर्ष में एक आदमी को बीस कूपन मिलते हैं। गर्म ओवरकोट सिलवाना हो तो बारह कूपन उसी में ख़र्च हो जाते हैं। इस दृष्टि से भारत में बड़ा आराम है। कर्नल साहिब का भाग्यशाली कुत्ता 'साइमन', रानी साहिबा को दे दिया जायेगा, क्योंकि जहाज़ में ले जाने की इजाज़त नहीं है। कर्नल साहिब ने बताया कि वायसराय लिनलिथगो को भी अपने सारे कुत्ते यहाँ छोड़ जाने पड़े। फिर मैंने उनसे पूछा कि हवाई उड़ान में जब हवाई जहाज़ नीचे उतरता होगा तो दिल बैठता मालूम होता होगा। उन्होंने कहा कि यह बात नहीं है। जहाज़ का नीचे पृथ्वी की ओर आना महसूस नहीं होता। उसे धीरे-धीरे लाते हैं और ऊपर जाता हुआ भी महसूस नहीं होता। फिर मैंने पूछा कि जब जहाज़ ऊपर चढ़ जाता होगा तो नीचे पृथ्वी की ओर देखकर डर लगता होगा। जैसे कुतुब की लाट पर चढ़कर नीचे देखें तो डर लगता है और आदमी का सिर चक्कर खा जाता है। उन्होंने बताया कि हवाई जहाज़ पर ऐसा डर नहीं लगता क्योंकि जब हम किसी ऊँची इमारत से नीचे की ओर देखते हैं तो दीवार की सीधी गहराई देखकर डर लगता है परन्तु हवाई जहाज़ पर ऐसा नहीं होता क्योंकि वहाँ इमारत की ऊँचाई नहीं है, जो हमारा ध्यान ऊँचाई की ओर ले जाये।

24 अक्टूबर, 1943 को राजा साहिब अपने परिवार के साथ सिन्ध देश को तशरीफ़ ले गए। रानी लक्ष्मीबाई साहिबा ग्वालियर को तशरीफ़ ले गईं।

28 अक्टूबर, 1943 को रात को आठ बजे दीवाली का सत्संग, डेरे में सत्संग-हाल के पश्चिम में हुआ। हुजूर के ऊपर शामियाना लगा था और बिजली के कई प्रकार के रंग-बिरंगे बल्ब रोशनी दिखला रहे थे। कार्तिक का महीना 'सार बचन' नज़म में से पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि दीवाली तो हमने हजारों बार कई जन्मों में देखी परन्तु जब आँखें बन्द करते हैं तो अन्दर अँधेरा है। सन्तों की दीवाली अन्दर हर स्थान पर हो रही है। यदि सतगुरु का स्वरूप देखना हो तो त्रिकुटी में जाकर देखो, जहाँ सेवक की रूह मन और माया के गिलाफ़ों से आज्ञाद

29 अक्तूबर 1943

होकर, बारह सूर्यो की चमक दिखा रही है। सतगुरु सतलोक में जाकर, सत्पुरुष का रूप धारण कर लेते हैं बेशक इस दुनिया में इनसान मालूम होते हैं।

मेजर बुकेनन और उनकी मेम साहिबा भी दर्शनों के लिये तशरीफ लाये थे। श्री चाँदवानी, डिप्टी चीफ, नार्थ वैस्टर्न रेलवे भी आजकल यहाँ सत्संग के लिये आए हुये हैं।

29 अक्तूबर, 1943 को शाम छः बजे के सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'काया कामण अत सुआल्यो' शब्द लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि मनुष्य का सृष्टि में सर्वोच्च स्थान है। मनुष्य का शरीर बड़ा ही मूल्यवान है क्योंकि उसमें स्वयं परमात्मा रहता है परन्तु आश्चर्य है, यद्यपि आत्मा और परमात्मा दोनों एक ही स्थान पर हैं, फिर भी युग गुज़र गये, दोनों का मिलाप नहीं हुआ, क्योंकि मनुष्य परमात्मा को अपने अन्दर खोजने की बजाय बाहर पुस्तकों, जंगलों, पहाड़ों, तीर्थों, मूर्तियों, समुद्रों, मन्दिरों, मसजिदों और गुरुद्वारों में तलाश करता फिरता है। यदि अन्दर का भेदी गुरु मिले तो अन्दर तलाश करने का ढंग बतला दे।

30 अक्तूबर, 1943 सुबह सवा नौ बजे हुजूर सेवा में बैठने के लिये तशरीफ लाये। ग्यारह बजे तक यही काम रहा। शाम को थोड़ी-सी डाक सुनी और फिर सत्संग में तशरीफ ले गये। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से मारू राग में से शब्द 'काया कंचन सबद वीचारा। तित्थै हर वसै जिस दा अंत न पारावारा'¹⁰ पढ़ा गया। जो मनुष्य शरीर पाकर पूरे गुरु से शब्द का भेद लेकर अपने अन्तर में शब्द को नहीं पकड़ता, वह अपना जन्म बरबाद कर लेता है और जब कोई सीढ़ी के डंडे से गिर जाता है तो फिर चौरासी लाख योनियों में मारा-मारा फिरता है। शब्द के बिना मन वश में नहीं आता। 'हौमै गणत गुरसबद निवारे'¹¹ किसी का मन कभी भी निचला नहीं बैठता। हर समय विचार उठता ही रहता है। इन विचारों को सिमरन, ध्यान और शब्द के द्वारा रोकना चाहिये। यही 'हौमै गणत' है यानी हमेशा मैं और मेरी के विचार उठते रहना। जब ये विचार एक मिनट के लिये भी बन्द हो जायें तो अन्दर रोशनी दिखाई देती है। रज्जब जी ने कहा 'मन मूसा पिंगल भया, पी पारा हरि नाम'। फिर फ़रमाया कि सतगुरु शिष्य को नाम देकर

31 अक्तूबर 1943

रूहानी डायरी भाग 1

215

निश्चिन्त नहीं हो जाते। सतगुरु की असली सेवा शब्द अभ्यास है। यदि शब्द पकड़कर अन्तर में गुरु को प्रकट कर लिया तो जीवन में ही सतगुरु से प्राप्त होने वाली रक्षा की सच्चाई का पता लग जाता है, वरना गुरु तो सदैव इसके साथ शब्द-स्वरूप में रहते हैं।

31 अक्तूबर, 1943 को सुबह नौ बजे सत्संग शुरू हुआ। पहले श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से पूरे गुरु की पहचान का शब्द 'घर मह घर देखाय देय सो सतगुरु पुरख सुजाण'¹² पढ़ा गया। जिसको समझाते हुए हुजूर ने फ़रमाया कि देवी-देवता सब आत्मा से नीचे हैं। स्वयं परमात्मा ने उनको शरीर का काम चलाने के लिये नियुक्त कर रखा है। मनुष्य का इन देवी-देवताओं को पूजना ऐसा ही है जैसे कोई राजा अपने नौकरों को पूजे। मनुष्य के पूजने के योग्य केवल वही महापुरुष है, जो जीते-जी परमात्मा से मिलाप कर लेता है। मनुष्य परमात्मा को नहीं देख सकता, इसलिये यह जरूरी है कि उन महात्माओं के पास जाकर पूछे कि तुम्हें परमात्मा कैसे मिला? हमें भी वह साधन बताओ जिससे हमें भी परमात्मा के दर्शन हों। मौलाना रूम साहिब ने कहा है :

गोयन्द आँ सगाँ कि न रफ्तन्द राहे रास्त,

राह नेस्त बन्दा रा बजनाबे खुदा-दरोश।¹³

अर्थात् उन अनजान लोगों का, जो सच के रास्ते पर गये नहीं, यह कहना झूठ है कि मनुष्य के लिये मालिक से मिलने का कोई रास्ता नहीं है।

मनुष्य जीवन का उद्देश्य यही है कि परमात्मा को मिलने की कोशिश की जाये वरना यदि यह अवसर खो दिया तो फिर पता नहीं कब मनुष्य शरीर मिलेगा। सन्त-महात्मा क्या बताते हैं? यही कि पाँच शब्दों को पकड़कर परमात्मा तक रसाई प्राप्त करो। शब्द-अभ्यास के बिना, परमात्मा तक रसाई प्राप्त करना असम्भव है। इस शब्द के बाद 'सार बचन' नज़म में से 'सतगुरु का नाम पुकारो। सतगुरु को हियरे धारो'¹⁴ पर व्याख्यान किया गया।

1 नवम्बर, 1943 को बहुत-से लोग वापस चले गए। पंजाब के डायरेक्टर ऑफ़ इण्डस्ट्रीज़, श्री वीरभान, आज शाम को यहाँ तशरीफ लाये परन्तु आज सत्संग नहीं था।

अमेरिका के एक सत्संगी ने लिखकर पूछा कि वह गाय, बैल आदि पालता है और पाल कर फिर उनको क़साइयों के पास बेच देता है। क्या वह भी पाप का भागी है या केवल वही जो उससे गाय आदि ख़रीद कर, मांस के लिये मारता है ? जवाब दिया गया कि यह काम छोड़ दो। हाँ, यदि पशुओं को हल आदि के काम के लिये बेचने की नीयत से पालते हो तो कोई पाप नहीं।

अध्याय 12

सिकन्दरपुर का दौरा

6 नवम्बर, 1943 को सुबह छः बजे से थोड़ा पहले मैं, शादी, प्रिय रघुवीर सिंह और हुजूर कार में डेरे से सिरसा की ओर चल दिये। रास्ते में वकील सरदार भगत सिंह से खड़े-खड़े कुछ बात करके लुधियाना आये। वहाँ कई पम्पों से मोबिल ऑयल लेना चाहा परन्तु सब पम्प बन्द थे। उनके मालिक उनको ताला लगाकर चले गए थे। यद्यपि साढ़े आठ बज गये थे परन्तु अभी तक नहीं आये थे। मोगा में डॉ. प्रेमनाथ जी से मिले। डाक्टर साहिब बड़े प्रेम से मिले और हुजूर के स्वास्थ्य के विषय में बातचीत करते रहे। हुजूर ने फ़रमाया कि शरीर पर खुजली की बड़ी तकलीफ़ है, तो डॉक्टर साहिब ने सलाह दी कि सलफ़र बिटर खायें या होम्योपैथिक दवाई का प्रयोग करें जिसमें गन्धक ज़रूर हो। वहाँ से सरदार प्रेमसिंह के घर गये। वहाँ कुछ मिनट ठहर कर मोगा से दो-तीन मील दूर ही थे कि वह लारी, जो हमने सामान मशीनरी आदि से लाद कर 5 नवम्बर की रात को ग्यारह बजे रवाना कर दी थी, टूटी-फूटी हालत में मिली। उसके टायरों के बीच के लोहे के पहिये टूट गये थे और पिछले टायर भी फट गये थे। कारण यह लग रहा था कि मशीनरी का भार, लारी के पिछले पहियों पर ज्यादा था। इसलिये जब लारी को ठीक करवा कर चले तो मालूम होता था कि लारी के बोझ का झुकाव पीछे की ओर अधिक है और भार की अधिकता के कारण झोल खाती थी। कभी दायें हाथ, कभी बायें हाथ कच्ची सड़क पर उतर जाती थी। हमने अपनी कार सावधानी की दृष्टि से लारी के पीछे लगा दी। कोटकपूरा में रियासत के ठेकेदारों ने लारी का टैक्स लिया। मुक्तसर से आठ-नौ मील पर, जहाँ कि बड़ी नहर है और जहाँ नहर के महकमे वालों के बाँगले हैं, हम सबने मिलकर रोटी खाई। वहाँ से बारह बजे के बाद चल कर मलोटा आ गये। वहाँ पेट्रोल लिया। उस इलाके में नहर है और हरियाली है परन्तु आगे जाकर यहाँ से बीस मील पर डबवाली रेगिस्तान का

इलाका है। वहाँ न पीने का पानी है न कोई सब्जी, हरी घास तक नहीं थी। रेत के टीले और बिल, जिनमें अजवायन डालते हैं, काफ़ी देखने में आये। तेज़ धूप, पानी की कमी, गर्म हवा और मिट्टी थी। वहाँ से सिरसा छत्तीस मील है। सिरसा से चार मील परे नाला है जो किसी समय में बड़ा दरिया था। शायद इसी को संस्कृत की पुस्तकों में सरस्वती कहते हैं, जिसके किनारे बड़े-बड़े शहर बसे हुए थे। दरिया सूख गया और शहर उजड़ गये। केवल एक नाला है परन्तु आजकल यह भी सूखा है। उसके दोनों किनारों पर कुछ हरे-भरे खेत दिखाई दिये। वहाँ से सिरसा, शाम के छः बजे पहुँच गये। शुक्र किया कि लारी सही-सलामत पहुँच गई वरना क्रदम-क्रदम पर खतरा था। वहाँ से चाय आदि पीकर और संगत को दर्शन देकर, हुज़ूर सिकन्दरपुर आ गये। लारी का सामान केरे में उतरवाया। अँधेरा होते-होते घर पहुँच गये और हुज़ूर घर के आँगन में चबूतरे पर हमेशा की तरह बिराजमान हो गये। हम सब लोग दरी पर बैठे और बातें होती रही।

7 नवम्बर, 1943 सुबह हुज़ूर खराद की मशीन केरे में लगवा रहे हैं। आजकल हुज़ूर सिरसा में सुबह नौ बजे बकबोर्ड पर सिकन्दरपुर शान्ति आश्रम से कारखाने में, जो यहाँ से दो मील पर है, तशरीफ़ ले जाते हैं। यहाँ राज और मिस्त्रियों का काम देखते हैं। फिर डेढ़ बजे प्रसाद बाँट कर, भोजन करके, आराम फ़रमाते हैं। शाम को पाँच बजे के बाद अपनी इच्छानुसार बाहर निकलते हैं। इस आराम के समय में कोई भी आदमी उन्हें नहीं बुलाता। डेरे की अपेक्षा उन्हें यहाँ बहुत आराम है। शाम को साढ़े छः बजे तक कभी काम देखते हैं व कभी सिरसा या अन्य स्थानों से आये हुए सत्संगियों को दर्शन देते हैं। फिर साढ़े छः बजे के लगभग घर वापस आ जाते हैं और चबूतरे पर विराजमान हो जाते हैं। आसपास सत्संगी दरी पर बैठ जाते हैं और आठ-साढ़े आठ बजे तक बातचीत होती रहती है।

9 नवम्बर, 1943 को हुज़ूर ने फ़रमाया कि ज़मींदार वे ही हैं जो अपने घर की गऊओं के बछड़ों को बैल बनाते हैं और बाहर से ख़रीदने के अधीन नहीं हैं। पंजाब में एक कहावत है कि 'बड़े लाने उनके जिनके अपने हुक्के' मगर यह ग़लत है। ठीक यह है कि 'बड़े लाने उनके जिनके अपने हिक्के' यानी बड़े लाने वाले अथवा मालदार ज़मींदार वे हैं जो अपने घर में ही हल चलाने वाले पशु पाल लेते हैं।

यहाँ के अराइयों ने शहर की उत्तरी दिशा में कमाद (गन्ना) की फ़सल इतनी बो दी है कि आजकल की गुड़ व खाँड की क्रीमत देखने से प्रतीत होता है कि ये लोग मालामाल हो जायेंगे। पहले यही अराई, खेती से अनजान, गन्ने का नाम तक नहीं जानते थे, भूखे और क़र्ज़दार थे। आजकल गिरवी रखी हुई ज़मीनों को छुड़वा रहे हैं, पैसे वाले हैं। यह सब स्वयं हुज़ूर की स्थापित की हुई मिसाल का असर है। हुज़ूर ने अपने पड़ोसी ज़मींदारों को अपनी मिसाल से, खेती करके अमीर होने का ढंग सिखला दिया है। सरकार ने हर एक ज़िले में बड़े ख़र्च से जो माडल फ़ार्म स्थापित किये हैं, उनका इतना लाभ नहीं होता, जितना कि एक मेहनती, कम ख़र्च करनेवाले, तज़ुर्बेकार ज़मींदार के उदाहरण का, अपने गाँव के कृषकों पर होता है। लायलपुर कृषि महाविद्यालय में जो विद्यार्थी पढ़ रहे हैं वे अधिकतर सरकारी नौकरी के इच्छुक होते हैं। यदि उनका आदर्श अपने गाँव में कृषि के नये साधनों का प्रयोग करके पैसे कमाना हो तो इससे न केवल उनका अपना लाभ होगा बल्कि सब ज़मींदारों का भी लाभ होगा।

10 नवम्बर, 1943 को पण्डित नत्थू राम शुक्ल, सिरसा वाले से जंत्रियों के विषय में बातचीत चल पड़ी। उन्होंने बताया कि काशी में दस साल की जंत्री विद्वान ज्योतिषी लोग इकट्ठी बना लेते हैं। फिर हर साल के शुरू होने से पहले सावन महीने के क़रीब अगले साल की जंत्री अलग छाप देते हैं। जो दूसरे शहरों के ज्योतिषी अपनी जंत्रियाँ छपवाते हैं, वे उनसे सहायता लेते हैं। कुछ तो इतना भी ख़र्च नहीं करना चाहते, क्योंकि साठ वर्ष के बाद वही दिन और वर्ष आ जाते हैं। इसलिये साठ वर्ष पहले की जंत्री निकालकर उस में अदल-बदल कर छाप देते हैं। इन साठ वर्षों में बीस वर्ष ब्रह्मा के, बीस वर्ष विष्णु के और बीस वर्ष शिव के माने जाते हैं। पाँच प्रकार के कैलण्डर हैं सूर्य, चाँद, नक्षत्र, बृहस्पति और सावन। सूर्य तो प्रविष्ट संवत है जिसमें प्रत्येक महीना संक्रान्ति से शुरू होता है और साल चैत्र की पड़वा को यानी चैत्र सुदी एकम् से शुरू होता है। चाँद का महीना एकम् वदि से शुरू होता है। परन्तु साल चैत्र वदि एकम् से ही शुरू होता है। सूर्य का साल 365 दिन का और चाँद का 355 दिन का होता है। मुसलमानों में क्रमरी (चन्द्रमा पर आधारित) साल की प्रथा है, इसलिये उनके त्योहार हर साल दस दिन पहले आते हैं। छत्तीस सालों के बाद फिर वही महीने और मौसम आ जाते हैं। हिन्दुओं में हर अट्ठाईस या बत्तीस महीनों के बाद

लोन्द के कभी उनतीस, कभी तीस, कभी इक्कीस दिन क्रमरी साल में डालकर क्रमरी साल को शमसी (सूर्य पर आधारित) साल के बराबर ले आते हैं। इसी तरह से मौसम व क्रमरी महीनों का मिलाया जाता है। अरब में मौसमों का अदल-बदल ऐसा नहीं जैसा कि हिन्दुस्तान में है, इसलिये वहाँ के विद्वानों ने लोन्द के दिन डालने की जरूरत नहीं समझी। नक्षत्र का साल अश्वनी नक्षत्र से चैत्र में शुरू होता है और बृहस्पति जब मेष राशि में आता है यानी चैत्र के महीने में, तब से बृहस्पति साल शुरू होता है। ये सब विचार भागवत पुराण के पाँचवें स्कन्ध में दिये हुए हैं। सूर्य सिद्धान्त, ब्रह्म सिद्धान्त और वशिष्ट सिद्धान्त ग्रन्थों में भी जंत्रियाँ बनाने का ढंग दिया हुआ है।

11 नवम्बर, 1943 को डॉ. बलवन्त सिंह व मिस्टर राम चन्द मेहता श्रीनगर से तशरीफ लाये। शाम को हुजूर प्रतिदिन की भाँति चबूतरे पर पधारे तो बातचीत होने लगी। उन्होंने कश्मीर के भिन्न-भिन्न प्रकार के सेब दिखाये। एक तो मीठे अमरी सेब जो बाजारों में बिकते हैं। दूसरे क्वीन एपल जो खट्टे-मीठे होते हैं। तीसरे वे सेब जो बही अर्थात् नाख व सेब के पैवन्द से पैदा किये जाते हैं, जिनका क्रद अमरी सेब से बड़ा होता है और छिलका पीला और बही से मिलते-जुलते हैं। खाने में मीठे होते हैं। उनके अतिरिक्त कुल्लू के सेब खट्टे-मीठे और शिमला के कोटगढ़ के सेब मीठे होते हैं।

एक सत्संगी ने विनती की कि लड़ाई तो लम्बी हो गई। हुजूर ने फ़रमाया कि अभी तो जापान ने रौला डालना है। आशा नहीं कि इस जाड़े में चीजों के भाव कम हों। किसी ने पूछा कि दुनिया के इन्तिज़ाम में सन्तों का कहाँ तक दखल है? जवाब मिला कि दुनिया का सारा काम काल और उसके कारिन्दों के हाथ में है। परन्तु सन्त शहंशाह होते हैं। जब कोई मुसीबत किसी जगह होती है तो वे कारिन्दे सन्तों से पूछ लेते हैं, सन्त दखल नहीं देते। सो एक बार हुजूर बाबा जी महाराज की पलटन एक छावनी में ठहरी हुई थी कि तड़के कुछ फ़रिश्ते उनके पलंग के पास हाथ बाँधे खड़े थे। कहने लगे कि हमें आदेश दिया गया है कि इस शहर में प्लेग फैलायें और साथ ही यह भी हुक्म हुआ है कि पहले आपसे पूछ लें। हुजूर बाबाजी महाराज ने फ़रमाया कि जिस तरह मर्जी हो करो, परन्तु हमारी छावनी को छोड़ देना। अतः ऐसा ही हुआ। आजकल की लड़ाई में, हुजूर के जो सेवक दूर-

दूर देशों में गये हुए हैं, हुजूर उनकी भली-भाँति रक्षा कर रहे हैं। प्रतिदिन ऐसे लोगों के पत्र आते रहते हैं, जिनसे यह साफ़ जाहिर हो जाता है। फिर हुजूर ने फ़रमाया कि मनुष्य की आयु का एक-एक मिनट हिसाब में है। बीमारी आदि पहले से ही निश्चित है। अतः मैंने पहले ही बताया था कि भादों के महीने में बीमारी आयेगी (यह क्रिस्सा मेरे सामने का है, परन्तु उस समय मैंने अधिक ध्यान नहीं दिया था) और जब तक उस बीमारी की मियाद खत्म न हो जाये कोई दवाई, जो उसको लाभ देती हो, नहीं मिलेगी। या तो कोई ऐसा हकीम अथवा डॉक्टर ही नहीं मिलेगा या उसकी समझ में नहीं आयेगा। इसी तरह देहात में कोई योग्य इलाज करनेवाला नहीं होता। जिनको आराम आना होता है वे कुछ समय तक कष्ट सह कर बच ही जाते हैं। हुजूर ने फ़रमाया कि जो कुछ हो रहा है बिलकुल ठीक हो रहा है। यदि यूरोप में लड़ाई और खून-खराबे का बाज़ार गर्म है, बंगाल में भूख से स्त्री-पुरुष व बालक मर रहे हैं, ये सब लोग उस काल भगवान् के आदेश से अपने पहले जन्मों के किये हुए कर्मों का फल भोग रहे हैं। किसी को यह शिकायत नहीं करनी चाहिये कि परमात्मा बे-इनसाफ़ या बे-दर्द है।

जनवरी-फरवरी के महीने में राव बहादुर शिवध्यान सिंह साहिब ने फ़रमाया था कि मालटे के पेड़ों की जड़ों के आसपास की मिट्टी खोद कर, झाड़-झंकाड़ साफ़ करके, शीरे में नई मिट्टी मिलाकर, जड़ें ढाँप दी जायें तो खूब बड़े-बड़े मालटे आते हैं और गिनती भी ज़्यादा होती है।

डॉ. बलवन्त सिंह जी ने बताया कि ग्रेप फ़्रूट, जोकि चकोतरे जितना बड़ा, मालटे जैसा खट्टा-मीठा होता है और उसमें गूददा भी ज़्यादा होता है। मलेरिया की बीमारी में कुनीन का आधा काम करता है, परन्तु देसी लोग उसकी खटाई के कारण उसको खाना पसन्द नहीं करते, क्योंकि अधिकतर पंजाबी लोग मीठे फल पसन्द करते हैं। आजकल अमेरिकन लोग हिन्दुस्तान में आये हुए हैं। वे एक-एक के आठ-आठ आने देते हैं।

12 नवम्बर, 1943 को एक साहिब ने, जोकि एक किताब लिखना चाहते हैं, हुजूर से डेरे के विषय में पूछा तो हुजूर ने नीचे लिखा हुआ जवाब, मुझसे लिखवा कर, उनको भिजवा दिया।

डेरा बाबा जैमल सिंह जी का इतिहास

राधास्वामी मत कोई धर्म नहीं, राधास्वामी नाम वाहेगुरु अकालपुरुष कुल मालिक का है। सो हर एक सन्त ने 'स्वामी' पद की बड़ाई की है कि यदि दुनिया में रूहानियत का कोई ऊँचे से ऊँचा दरजा है तो वह स्वामी पद का है। 'स्वामी' पद पर पहुँचे हुए महात्मा को परम-सन्त कहा जाता है। उस कुल मालिक के अनगिनत नाम हैं। धुर-धाम पहुँचे हुए महात्माओं ने, चाहे वे किसी जाति व धर्म के क्यों न हुए हों, अपनी-अपनी ज़बान में कुल मालिक के वर्णात्मक नाम रखे हैं, जैसे कि गुरु गोबिन्द सिंह साहिब ने बारह-चौदह सौ नाम जाप साहिब में रखे हैं, उनमें से कई नाम कई ग्रन्थ-शास्त्रों में नहीं मिलते। इसी तरह अलग-अलग महात्माओं ने अपनी-अपनी ज़बान में मनुष्य के अन्दर जो रूहानी मंजिलें हैं, के नाम रखे हैं। प्रायः हिन्दुस्तान या पंजाब में जो महात्मा हुए, उनके रखे हुए नाम संस्कृत में हैं और जो ईरान या अरब में हुए हैं, उनके रखे हुए नाम फ़ारसी या अरबी में हैं। इसी तरह हुजूर महाराज शिवदयाल सिंह जी, जो आगरे में परम-सन्त हुए हैं, उन्होंने मालिक का नाम 'स्वामी' रखा है और रूह यानी आत्मा का नाम 'राधा' रखा है। उन्होंने 'सार बचन' नज़म में फ़रमाया है 'राधा आदि सुरत का नाम। स्वामी आदि शब्द निज धाम। सुरत शब्द और राधास्वामी। दोनों नाम एक कर जानी' भाव आत्मा ने परमात्मा से मिलना है या बूँद ने समुद्र से मिलकर समुद्र होना है। सन्तमत सारी दुनिया के पहुँचे हुए महात्माओं का साँझा मत है। यह प्राकृतिक विज्ञान, प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर पूर्ण रूप से है, चाहे वह किसी देश व किसी जाति या किसी धर्म का क्यों न हो। जब अकालपुरुष एक है, हमारे हाथ, नाक, कान आदि सब अंग एक से हैं, तो यह कैसे हो सकता है कि हिन्दुओं के लिये परमेश्वर कोई और, मुसलमानों और ईसाईयों के लिये कोई और हो ? जो पहुँचे हुए सन्त हैं यद्यपि इनके लेख भिन्न-भिन्न ज़बानों में हैं पर उनका मतलब एक ही है यानी जो धुर-धाम पहुँचे हुए सन्त हैं, वे किसी धर्म के क़ैदी नहीं, वे परमात्मा के भेजे हुए आते हैं। उनका उद्देश्य मज़हब बनाना नहीं, बल्कि उनका उद्देश्य चौरासी लाख योनियों के क़ैदियों को, नाम जपा कर, सचखण्ड पहुँचाने का है। यदि उनकी शिक्षा को हम ध्यान से पढ़ें तो वह धर्मों से ऊँची होती है और वह हमें मज़हबों की क़ैद से आज़ाद करती है।

वह हमें महा-आनन्द देती है जोकि अविनाशी है। इसमें सन्देह नहीं कि उनके वेद-शास्त्र, ग्रन्थ-पोथियाँ लिखित रूप में होते हैं परन्तु उनका असली मार्ग, जिस पर वे अपने शिष्यों को ले जाते हैं; लिखने, पढ़ने और बोलने में नहीं आता। जैसा कि श्री गुरु अंगद देव जी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में फ़रमाते हैं :

अकखों बाझों वेखणा विण कंन सुनणा।

पैरां बाझों चलणा विण हत्थां करणा।

जीभै बाझों बोलणा इयों जीवत मरणा।

नानक हुकम पछाण कै तौ खसमै मिलणा।

वह सच्ची वास्तविकता न तो इन बाहरी आँखों से देखी जाती है, न इन स्थूल कानों से सुनी जाती है, न स्थूल ज़बान से बयान की जा सकती है। वह बोलने में नहीं आती। जो नाम मुक्ति देता है वह अलिखित (Un-written) तथा अनबोला (Unspoken) है। वह लिखने, पढ़ने और बोलने में नहीं आता। दूसरे शब्दों में यह कह लो कि नाम किसी ग्रन्थ, पोथी, वेद-शास्त्र में नहीं है। यह सब नाम की महिमा करते हैं और नाम जपने का तरीका बताते हैं। नाम के लाभ बतलाते हैं परन्तु उनमें नाम की चर्चा है, नाम स्वयं नहीं है। नाम मनुष्य के अन्दर है, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब पढ़कर देखो:

देही अंदर नाम निवासी। आपे करता है अबिनासी।

नाम निधान अपार भगतां मन वस्सै॥

और

सभ किछ घर मह बाहर नाहीं। बाहर टोलै सो भरम भुलाही।

सन्तों की शिक्षा जन्म-जन्मान्तर से क़ैदी रूहों को परमात्मा से मिलाती है और उनको जाति व धर्मों की क़ैद से निकालकर एक न मिटने वाली खुशी में, जोकि कभी ख़त्म न हो, ले जाती है।

अब मैं स्वामी जी महाराज की चर्चा करता हूँ। हुजूर स्वामी जी महाराज, आगरा शहर, पन्नी गली में 25-8-1818 में पैदा हुए। आपका असली नाम शिव दयाल सिंह था। आप बैजल सेठ खत्रियों के एक प्रसिद्ध खानदान से थे, जो लगभग दो सौ वर्ष पहले, लाहौर से देहली और देहली से आगरा आ गये थे। आपके पिता का नाम सेठ दिलवाली सिंह जी था। उनके दादा साहिब सेठ मलूक

चन्द जी, रियासत धौलपुर में दीवान थे। आपके परिवार में शुरू से गुरुवाणी का प्रचार चला आता था। सारे मिलकर बड़े प्रेम से हर रोज गुरु नानक साहिब की वाणी का पाठ किया करते थे। हुजूर स्वामी जी महाराज ने जितना समय सत्संग किया गुरु नानक साहिब, कबीर साहिब और अन्य सन्तों की वाणी का प्रचार किया; विशेषकर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणी का उपदेश मुख्य था। आगरा और यू. पी. के लोग पंजाबी वाणी नहीं समझ सकते थे, बल्कि यह कहना चाहिये कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणी इतनी गूढ़ है कि पंजाबी लोग भी इसके भेदों को कठिनाई से समझते हैं। इसलिये बहुत-से प्रेमी, स्त्री-पुरुषों ने बड़े प्रेम से प्रार्थना की कि हमें अपनी देसी भाषा से ग्रन्थ रच कर समझाओ और उन्होंने अपनी वाणी 'सार बचन' छन्द-बन्द अपने परम धाम जाने से करीब तीन वर्ष पहले रची थी, जिसमें सन्तमत के छिपे हुए भेदों को सरल भाषा में समझाकर वर्णन किया है परन्तु फिर भी जब तक अन्दर के पाँच शब्दों से मनुष्य परिचित न हो तब तक पूरा भेद न श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से समझ सकता है न स्वामी जी महाराज की वाणी से।

परम सन्त तुलसी साहिब जी, पूना-सतारा की गद्दी छोड़कर, हाथरस में आकर रहे। उनकी वाणी बड़ी प्रभावशाली और मशहूर है तथा रूहानी अभ्यास को बयान करती है। वह प्रायः आगरा में स्वामी जी महाराज के पास आकर ठहरते थे। दोनों का आपस में मेलजोल था। स्वामी जी महाराज के सत्संगी तो हजारों की संख्या में थे, परन्तु मुख्य गुरुमुख, जिन्होंने स्वामी जी के बाद उनके विचारों का प्रचार किया है, वे तीन महात्मा हुए हैं। उनमें से राय बहादुर सालिगराम साहिब आगरा में, बाबा गरीबदास जी देहली में और महाराज बाबा जैमल सिंह जी पंजाब में प्रचार करते रहे।

बाबा जैमल सिंह जी महाराज 1839 में गाँव घुमान, तहसील बटाला, ज़िला गुरदासपुर में पैदा हुए। आपके पिताजी का नाम स. जोध सिंह जी था। आप जाट खानदान के थे। आपको छोटी आयु से ही साधुओं की संगत का शौक था। बचपन में बाबा खेमदास, एक वेदान्ती साधु से, जो उनकी बिरादरी के थे और उनके गाँव में रहते थे, वेदान्त पढ़ते रहे। उन्हीं के पास श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणी पढ़ी। जब वाणी को ध्यान से पढ़ा तो यह पता लगा कि वाणी बार-बार

नाम ही नाम और शब्द ही शब्द पुकारती है तथा स्थान-स्थान पर पाँच शब्द की चर्चा उसमें आती है। यह भी निश्चित हो गया कि वे गाने, बजाने और बोलने वाले शब्द नहीं हैं। वे सारे ब्रह्माण्ड की जानों की जान हैं। उन्होंने बाबा खेमदास जी से प्रश्न करने शुरू किये। बाबा साहिब, वेदान्ती थे और शब्द-अभ्यासी नहीं थे, उन्होंने कह दिया, हमें मालूम नहीं। थोड़े समय बाद आपके पिता परम-धाम चले गए। आप महात्माओं की खोज में घर से निकले और जगह-जगह, जहाँ-जहाँ महात्मा की खबर सुनते, वहाँ-वहाँ जाकर उनसे पाँच शब्दों के विषय में पूछताछ करते। लेकिन किसी ने आपकी सन्तुष्टि नहीं की। फिर इसी तरह खोज करते-करते लाहौर पहुँचे, जहाँ आप कई हिन्दू और मुसलमान फ़कीरों से मिले। लेकिन जिस चीज़ की आपको तलाश थी, वह नहीं मिली। वहाँ से निराश होकर ननकाना साहिब गये। वहाँ जाकर भाई जोता सिंह से बाबा बालक सिंह जी, हुजूर निवासी की महिमा सुनकर हुजूर जिला अटक में पहुँचे। बाबा बालक सिंह जी से भी पाँच शब्द की बाबत वार्तालाप होता रहा। उस समय बाबा राम सिंह जी, भैणी साहिब वाले भी बाबा बालक सिंह जी की सेवा में थे। क्योंकि बाबा बालक सिंह जी साफ़-दिल महात्मा थे, उन्होंने कहा कि हम तो 'वाहेगुरु, वाहेगुरु' का सिमरन करते हैं। हमें पाँच शब्दों का भेद मालूम नहीं। बाबा राम सिंह जी ने कहा कि तुम इनसे उपदेश लेकर नहीं चले, खाली जा रहे हो। बाबा बालक सिंह ने कहा कि यह ऊँचे सौदे के ग्राहक हैं। आप इनके दिल को ठेस न लगाओ। वहाँ से नौशहरा-पेशावर होते हुए, मरदान के इलाक़े में, एक गाँव में पहुँचे। वहाँ की धर्मशाला में एक ग्रन्थी रहते थे, जोकि अच्छे अभ्यासी थे। जब उनसे बात हुई तो उन्होंने बताया कि मुझे मेरे सतगुरु ने दो शब्दों का भेद दिया है, जिनका मैं अभ्यास करता हूँ परन्तु बाकी तीन का अभी नहीं दिया। बाबा जी यह सुनकर बड़े प्रसन्न हुए कि पहले मेरा यह विचार था कि पाँच शब्द मेरा भ्रम है। अब पता लगा कि मेरा विचार ठीक है। जिस मालिक ने आपको दो शब्द देने का प्रबन्ध किया है, वह मेरे लिए पाँच शब्द दिये जाने का प्रबन्ध करेगा।

वहाँ से वापस घर को आ रहे थे। जब ब्यास पहुँचे तो साधुओं की एक टोली हरिद्वार को जा रही थी, उनके साथ चल दिये। हरिद्वार में जाकर कई प्रकार के महात्माओं की संगत की, कई महीने वहाँ रहे मगर जिस चीज़ की तलाश थी वह न मिली। वहाँ से पता लगा कि एक बड़ा बूढ़ा साधु, यहाँ से दस-बारह कोस

उजाड़ जंगल में रहता है जो आबादी में नहीं आता, न किसी को अपने पास ठहरने देता है। वहाँ से ही वृक्षों के फल, बूटियाँ इत्यादि खाकर अपना गुजारा कर लेता है। आप उसके पास गये। क्या देखते हैं कि वह एक अभ्यासी महात्मा है जो दिन-रात अभ्यास में अपना समय गुजारता है। वृक्ष पर दो रस्सियाँ लटका कर बाँधी हुई है। जब वह खड़ा-खड़ा थक जाता है तो उनका सहारा ले लेता है। जब उससे जाकर मिले तो पहले तो उसने डराया कि यहाँ तुम क्यों आये। यहाँ शेर और रीछ आते हैं। उन्होंने कहा कि जब आपको नहीं खाते तो क्या मुझे खा लेंगे? जब वह शान्त हुआ तो प्यार व प्रेम की बातें आरम्भ हो गई। बाबा जी ने पाँच शब्द के विषय में पूछा क्योंकि उनको तो यही शौक था। उसने लम्बा साँस लेकर कहा कि जो धुन मुझको है वही आपको है। यहाँ अभ्यास करके मुझे अन्तर्यामिता और सिद्धि शक्ति प्राप्त हो गई है, लेकिन पाँच शब्द के बिना मुक्ति नहीं। मैंने अपनी अन्तर्यामिता से देखा है कि आगरा में परम सन्त जो सत्रह-अठारह साल से अभ्यास में थे, अब अभ्यास से बाहर आकर प्रचार करने लगे हैं। आप उनके पास चले जाओ। क्योंकि खड़ा रहने से मेरी टाँगें, खून उतरने के कारण, भारी हो गई हैं, मैं भी वहाँ पहुँचूँगा परन्तु धीरे-धीरे चल कर।

बाबा जी महाराज वहाँ से चल कर आगरा पहुँचे। परन्तु यह पता करना भूल गये थे कि वह सन्त कौन-सी गली में मिलेंगे। कई मन्दिरों, ठकुरद्वारों और धर्मशालाओं में तलाश की परन्तु वे चिह्न, जो उसने बताये थे, न मिले। अन्त में स्नान करने के लिये यमुना नदी पर आकर सोचने लगे कि अब क्या करें, कहाँ तलाश करें? अचानक हुजूर स्वामी जी महाराज के दो सत्संगी, उस घाट पर आकर स्नान करने लगे और स्वामी जी की बातें करने लगे। आप झट उठकर उनके पास चले गए और पूछताछ की कि वे महात्मा कहाँ रहते हैं। उन्होंने बताया कि आप पन्नी गली में चले जायें। इसी बीच शाम के सत्संग का समय हो चुका था। जब वहाँ पहुँचे तो स्वामी जी ने सत्संग शुरू किया हुआ था। बाबा जी ने जाकर चरणों में प्रणाम किया। उन्होंने पूछा कि आप कहाँ से आये हो। आपने जवाब दिया, पंजाब से आया हूँ। तो हँसकर बोले हमारे पुराने मेला आ गये। बाबा जी हैरान थे कि मैंने तो उन्हें पहले देखा ही नहीं, पुरानी मुलाकात कैसे? कई महीने स्वामी जी का सत्संग सुना और पूछताछ करके अपनी तसल्ली कर ली। दिल में यह निश्चय हो गया कि इनसे बढ़कर कमाई वाले

महात्मा नहीं मिलेंगे। लेकिन दिल में यह अटक पड़ी थी कि स्वामी जी मोने हैं, मैं सिक्ख हूँ, इनसे कैसे दीक्षा लूँ?

एक दिन सत्संग के बाद जब सब लोग चले गये, बाबा जी और स्वामी जी अकेले रह गये, तो स्वामी जी ने पूछा अभी तुम्हारे दिल में सिक्ख और मोने के सवाल का फ़ैसला हुआ है या नहीं? उनकी अन्तर्यामिता देखकर, बाबा जी के आँसू निकल पड़े। खैर स्वामी जी ने उन्हें सन्तमत के बारे में अच्छी तरह खोलकर समझाया और कहा कि यहाँ मोने व सिक्ख का सवाल नहीं, सन्तमत की फ़िलासफ़ी ही और है। फिर स्वामी जी से उपदेश लेकर कुछ समय वहीं अकेले अभ्यास करते रहे। एक दिन बाबा जी बाग़ में अभ्यास कर रहे थे कि स्वामी जी आ गये। क्योंकि बाबा जी की वृत्ति अन्दर थी, इसलिये न उठे, न प्रणाम किया। स्वामी जी अपनी शक्ति से उनकी वृत्ति बाहर ले आये और पूछा कि बताओ, गुरु नानक का मार्ग ठीक है या नहीं। उन्होंने जवाब दिया कि रास्ता तो सोलह आने ठीक है, वृत्ति रूहानी मण्डलों पर जाती है, पर कुछ अटक पड़ती है। स्वामी जी ने कहा नहीं, तुम यह कर चुके हो और पिछले जन्म में तुम हमारे साथ थे। यह सबकुछ तुम्हारा किया हुआ है। बाबा जी ने पूछा कि इसका प्रमाण? स्वामी जी ने कहा कि यदि प्रमाण चाहते हो तो भजन में बैठो। स्वामी जी ने भजन में बैठकर अपना ध्यान देकर जो रुकावट थी, वह साफ़ कर दी। बाबा जी कहने लगे हमारा काम तो पूरा हो गया। अब बताईये कौन-से तीर्थ पर बैठकर अभ्यास करूँ। स्वामी जी महाराज ने फ़रमाया कि दुनिया में स्वार्थ और परमार्थ दोनों पक्ष पूरे होने चाहियें। यदि त्याग में रहोगे तो लोगों का खाना पड़ेगा। लोग माथा टेकने वाले और सेवा करनेवाले, तुम्हारे परमार्थ की कमाई लूट लेंगे। दुनिया में कोई न कोई काम करना चाहिये। हक़ की कमाई से अभ्यास पूरा होगा।

सिक्ख पलटन नं. 24 वहाँ थी। उसमें भर्ती होकर, तीन साल वहाँ सत्संग भी किया और नौकरी भी की। फिर उसी प्रकार जगह-जगह छावनियों में फिरते रहे और नौकरी भी करते रहे, अभ्यास भी करते रहे। करीब तैंतीस साल नौकरी करके रिटायर हो गये परन्तु नौकरी के बीच में भी अभ्यास करते रहे। क्योंकि आपने कमाण्ड अफ़सर और मेजर साहब को गुरुमुखी पढ़ाई थी, इसलिये वे आपका बड़ा लिहाज करते थे। जब दो-चार दिन की छुट्टी पलटन में होती तो

[illegible]

五、

● ● ● ● ●

一、政治：政治是社會的公器，是人民意志的體現。政治的腐敗，是社會的公敵。政治的清廉，是社會的公利。政治的進步，是社會的公心。政治的落後，是社會的公憤。政治的興衰，是社會的公理。政治的榮辱，是社會的公義。政治的得失，是社會的公理。政治的成敗，是社會的公理。政治的興衰，是社會的公理。政治的榮辱，是社會的公義。政治的得失，是社會的公理。政治的成敗，是社會的公理。

गाँधी और हुजूर का सेवक प्रीतम सिंह पहले से ही पहुँचे हुए थे। वहाँ सत्संग के बाद लोगों ने हुजूर को मिलने-मिलाने का कष्ट नहीं दिया।

यह इलाक़ा बड़ा हरा-भरा है। ज़मीन में नमी है, इसलिये गन्ना बारानी भूमि में ही बिना मेहनत के हो जाता है। सब लोग खुशहाल हैं। सज्जन और प्रेमी प्रतीत होते हैं। चारों तरफ़ हरियाली नज़र आती है। जो आदमी सिरसा, डबवाली से आया हो, उसको यह दृश्य-परिवर्तन आश्चर्यजनक लगता है। सरदार साहिब सत्संग के बाद कार में जालन्धर तशरीफ़ ले गये।

24 नवम्बर, 1943 को सुबह नौ बजे हुजूर, मुन्शी राम सैनी कपूरथला वाले की कार में गाँव सीकरी, जो यहाँ से तीन-चार मील पर है, सत्संग-घर का मौक़ा देखने तशरीफ़ ले गये। वहाँ गाँव के बाहर मास्टर जगत सिंह की ज़मीन पर हुजूर ने सत्संग-घर बनाया जाना पसन्द किया है। फिर वहाँ से धूल व रेत के बादलों में हुजूर पैदल सीकरी गाँव में गये, यहाँ एक जगह और आबादी में दिखाई गई। यह बहुत छोटी-सी जगह थी। यहाँ हुजूर ने एक शब्द श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से पढ़वा कर उपस्थित लोगों को समझाया कि देवी-देवताओं की मूर्तियों को पूजने से मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। असली देवी-देवता तुम्हारे अन्दर हैं। वे उस समय मिलेंगे जब तुम मन और रूह को एकाग्र करके अन्दर जाओगे, वे आत्मा के कारिन्दे (नौकर) हैं, इसलिये मनुष्य, जो परमात्मा का अंश है, जिसका दर्जा सृष्टि में सबसे ऊँचा है, अपने करिन्दों को नहीं पूजना चाहिये। बल्कि पूरे गुरु से नाम का रास्ता लेकर अन्दर रूहानी मुक़ामों पर जाना चाहिये। देवता भी इस पदवी के लिये तरस रहे हैं।

वहाँ से सीधे कार में सवार होकर बारह बजे के करीब ढट गाँव वापस आ गये। रास्ते में बहुत रेत थी। दो बजे सत्संग का समय था। सत्संग सुनने के लिये लाउड-स्पीकर लगाये गए थे। भीड़ पचास-साठ हजार से कम नहीं होगी। स्त्री-पुरुषों का समुद्र-सा दिखाई देता था। बड़े-बड़े मेलों में भी इतनी भीड़ नहीं देखी गई। सबने चुपचाप होकर हुजूर का सत्संग सुना। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'काम क्रोध परहर पर निंदा। लब लोभ तज होह निचिंदा'¹ पढ़ा गया। इस शब्द में अन्दर की चढ़ाई का वर्णन किया गया है। हुजूर ने फ़रमाया कि जब तुम काम, क्रोध, लोभ और मोह को छोड़कर मन व रूह को इकट्ठा करो तो पहले तुम्हें बिजली की-सी रोशनी दिखाई देगी। फिर तारा मण्डल, सूर्य और चाँद,

चाँद से परे स्वयं सतगुरु नूरी स्वरूप में तुम्हें मिलेंगे और शब्द का पल्ला तीसरे तिल पर पकड़ायेंगे। इस शब्द के बाद हुजुरी वाणी में से 'सतगुरु का नाम पुकारो'² लिया गया। सत्संग साढ़े चार बजे के लगभग समाप्त हुआ। हुजूर एक घण्टा ठहर कर जालन्धर वापस सरदार भगत सिंह वकील के यहाँ रात को तशरीफ़ ले गये। 25 नवम्बर को सुबह नहा-धोकर नाश्ता करके दस बजे वहाँ से चल कर दोपहर के लगभग ग्यारह-बारह बजे डेरे आ पहुँचे।

हुजूर का डेरे में निवास

26 नवम्बर, 1943 डेरे में रोज़ शाम को सत्संग होता है। लोग मासिक सत्संग के लिये आ रहे हैं। कल 27 नवम्बर को सुबह-शाम दो सत्संग होंगे और प्रातः सत्संग साढ़े नौ बजे शुरू होगा।

27 नवम्बर, 1943 को दो बार सत्संग हुआ। शाम के सत्संग में हुजुरी वाणी में से 'सत्संग करत बहुत दिन बीते। अब तो छोड़ पुरानी बान'³ और गुरु राम दास का शब्द लिया गया। कल के सत्संग में सांसारिक चर्चा करते हुए हुजूर ने फ़रमाया कि इस संसार में कोई किसी का नहीं है। इसलिये संसार के सब रिश्ते-नाते झूठे हैं। केवल पूरे गुरु का नाता सच्चा और स्थायी है। इन झूठे सम्बन्धों के कारण मनुष्य इस संसार में बार-बार जन्मता और मरता है। जैसे मृग के प्रेम से भरत ऋषि को जन्म धारण करना पड़ा था :

एक मृग के प्रेम बस, भरत धरी फिर देह।

कबीरा तिन की कौन गति, जिनके लाख सनेह ॥

हुजूर ने यह भी फ़रमाया कि सभ्य-व्यक्ति सेवा करने में शर्म महसूस करते हैं, जबकि साध-संगत की सेवा से ही उनको कुछ मिलेगा और यह भी फ़रमाया कि सिमरन से ही अभ्यासी सूर्य और चन्द्र मण्डल को पार करके तीसरे तिल तक पहुँच सकता है। यदि सिमरन से मन न ठहरे तो ध्यान साथ दे दो। यदि ध्यान से भी न ठहरे तो साथ शब्द भी दे दो।

28 नवम्बर, 1943 रविवार को सुबह नौ बजे से ग्यारह बजे तक हुजूर सेवा में बैठे। इसके बाद बारह बजे सत्संग शुरू हुआ। सत्संग में भीड़ ग्यारह-बारह हजार से कम नहीं थी परन्तु कुछ सत्संगों में इससे भी अधिक हुआ करती है। आजकल सफ़र की बहुत तकलीफ़ है और हुजूर होशियारपुर के ज़िले में

अभी सत्संग करके आये हैं। सत्संग में पहले श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'निहचल एक सदा सच सोई, पूरे गुर ते सोझी होई' और फिर स्वामी जी की वाणी में से 'धाम अपने चलो भाई। पराये देश क्यों रहना' लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि सन्तों-महात्माओं और पूरे सतगुरु का पाँच शब्द का रास्ता है जो हर व्यक्ति के अन्दर बिना किसी धर्म व भेद-भाव के है। इसलिये मनुष्य को चाहिये कि अपनी आयु पराये कामों में न गँवाये, कुछ अपना काम भी बनाये। अपने शरीर को पालना-पोसना, मन को दुनिया के स्वाद देना, देश बिरादरी, खानदान या परिवार की सेवा, यह सब पराया काम हैं। मनुष्य का अपना काम तो यह है कि आत्मा को इन सम्बन्धों से छुड़ाकर ऊपर के मण्डलों में ले जाये जिससे कि जन्म-मरण के चक्कर से छूट जाये। सत्संग के बाद पाँच बजे सेवा में बैठे। बहुत से लोग चले गए।

29 नवम्बर, 1943 सोमवार को हुजूर सुबह नौ बजे से लेकर तीन बजे तक पुरुषों और स्त्रियों को नाम देते रहे। इसके बाद पाँच बजे सेवा में आ गये। रात साढ़े दस बजे तक बातचीत भी करते रहे। मंगलवार सुबह सत्संगियों को नाम दिया। फिर शाम को सत्संग किया। फिर आठ बजे के बाद तक डाक सुनते रहे जो तीन-चार दिन से नहीं सुनी थी। कल सुबह नौ बजे अमृतसर तशरीफ़ ले जायेंगे। शाम को आठ बजे तक सारी डाक समाप्त कर दी।

1 दिसम्बर, 1943 को नौ बजे कार में डेरे से चल कर सीधे जिला कचहरी में डी.सी. आफ़िस के सुपरिटेण्डेण्ट लाला नत्थू राम के यहाँ गये। वहाँ पुलिस इन्स्पेक्टर को पिस्तौल व लाइसेन्स दिखाये। दीवान भवनानी भी साथ थे। उन्होंने भी पिस्तौल तथा लाइसेन्स दिखाया। नये लाइसेन्स के लिये प्रार्थना-पत्र दिये गए। इम्पीरियल बैंक * में पाँच रुपये फ़ीस जमा कराई गई। कचहरी से सीधे इम्पीरियल बैंक हुजूर के साथ गये। मुझे कई काम थे। वहाँ से बारह बजे दोपहर को अमृतसर सत्संग-घर पहुँचे। हुजूर ऊपर की मंजिल के आँगन में धूप में बैठ गये। अमृतसर के सत्संगी आसपास जमा हो गये। मैं जाकर निचले कमरे में लेट गया, क्योंकि मुझे सख़्त बुखार हो रहा था, चार बजे तक लेटा रहा, फिर कुछ आराम महसूस किया। हुजूर साढ़े चार बजे सत्संग करने लगे 'बिख बोहिथा

*अब स्टेट बैंक ऑफ़ इण्डिया।

लादया दीआ समुंद मंझार*। मैं धूप में बैच पर बैठकर धूप सेकने लगा। वहाँ से साढ़े छः बजे चल कर रात को साढ़े सात बजे डेरे पहुँच गये।

6 दिसम्बर, 1943 की सुबह हुजूर लाहौर तशरीफ़ ले गये और वहाँ से सात दिसम्बर को वापस आ गये। (मैं एक से सात दिसम्बर तक इंग्लैंड से बीमार रहा) हुजूर बहुत थकावट महसूस कर रहे हैं।

8 दिसम्बर, 1943 बुधवार को एक मोटे-तगड़े बड़े डील-डौल वाले, सिर पर छोटे-छोटे बालों और ख़शख़शी दाढ़ी वाले महात्मा सत्संग में तशरीफ़ लाये। उनके साथ एक दुबला-पुतला लम्बा-सा सिक्ख साधु था। वे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का आधा शब्द सुनकर चलते बने, सारा नहीं सुना। आज वे जालन्धर से अपनी स्त्री के साथ आये और पूरा सत्संग सुनकर गये। सच कहा है 'भरम भेख भरमाई हे'।

12 दिसम्बर, 1943 शाम के छः बजे, मैं एक रात के लिये लुधियाना चला गया। सोमवार 13 दिसम्बर को बम्बई एक्सप्रेस में शाम के साढ़े पाँच बजे खाना होकर अमृतसर साढ़े छः बजे पहुँच गया। यह अजीब बात है कि रेलवे स्टेशन लुधियाना पर इस गाड़ी को साढ़े तीन घण्टे लेट लिखा हुआ था पर दो घण्टे के बाद ही गाड़ी आ गई। यह इसलिये होगा कि मुसाफ़िर गाड़ी न चढ़ सकें क्योंकि आजकल उल्टा हिसाब हो रहा है। पहले तो रेलवे द्वारा प्रोपेगण्डा करके लोगों को कहा जाता था कि लारियों में यात्रा न करो, रेल में यात्रा करो। आजकल रेलवे लोगों को सफ़र न करने का इशतहार देती है। यह ग़लत-बयानी शायद उसी प्रोपेगण्डे का हिस्सा होगी।

14 दिसम्बर, 1943 को हज़ारा सिंह के मुकद्दमे में मेरी गवाही थी। मैंने तो उसको सच्चे दिल से समझाया कि मुकद्दमे से दूर रहो, मगर यार लोगों ने अपने हलवे-माण्डे की खातिर उसको उकसा रखा है। 14 दिसम्बर को पेशी के बाद सरदार साहिब व मलिक साहब तो किसी कार में डेरे आ गये और मुझे मेरे भाग्य पर छोड़ आये। मैं पार्सल ट्रेन में शाम के छः बजे के करीब वापस ब्यास पहुँच गया। वहाँ से कार में डेरे जाते ही काम का ज़ोर था। लोग सिरसा जा रहे थे। कोई सेवा दे रहा था। कहीं सवा ग्यारह बजे जाकर सोने का समय मिला।

सिकन्दरपुर का दौरा

हुजूर का सिकन्दरपुर का दौरा और वहाँ निवास

15 से 27 दिसम्बर 1943

15 दिसम्बर, 1943 को सुबह चार बजे सिरसा चलने के लिये उठ बैठे। सुबह साढ़े पाँच बजे डेरे से चल पड़े। रास्ते में ढिलवाँ से करतारपुर तक बैलगाड़ियों का जोर था, जो मिलों में गन्ना लिये जा रहे थे। धुन्ध से कुछ दिखाई नहीं देता था। जालन्धर पहुँचे तो अभी बहुत अँधेरा था। वहाँ से चल कर कुछ मिनट फिल्लौर में दीनानाथ वकील के दफ्तर के आगे ठहरे, क्योंकि लुधियाना के बहुत-से स्त्री-पुरुष वहाँ जमा हो गये थे। हमने चाय पी, वहाँ से मोगा डॉ. प्रेमनाथ जी के यहाँ गये। मगर डॉक्टर साहिब वहाँ नहीं थे। फिर कप्तान लाल सिंह के घर होते हुए कोटकपूरा में आकर रुके, जहाँ कि बहुत-सी संगत जमा थी। हुजूर ने कार से उतर कर उनको दर्शन दिये। फिर मुक्तसर में म्युनिसिपल कमिश्नर पण्डित बुधराम जी ने स्टेज सजा रखी थी, जहाँ कि बहुत-से लोग जमा थे और सामने पशुओं की मण्डी लगी हुई थी। एक ऊँट पाँच सौ से लेकर आठ सौ तक क्रीमत पाता है। वैसे ही भैंसों की क्रीमतें भी पाँच सौ रुपये से आठ सौ रुपये तक हैं। मुक्तसर से आगे मलोटा, डबवाली और डबवाली से एक-दो मील आगे जाकर ड्राइवर ने चार गैलन पेट्रोल, मोटर कार में डाला। मगर आधा मील जाकर कार रुक गई। चलने से साफ़ इनकार। कई पुर्जे खोले मगर बेकार। आबादी का कहीं नामों-निशान नहीं था। पीने को पानी तक नहीं मिला। अब क्या करें? 'न पाए रपतन न जाए मान्दन' यानी न जाने का रास्ता न उठरने की जगह। सोचा कि कोई लारी आये तो उसमें हुजूर को सामान के साथ रवाना कर दें और हुजूर सिरसा से कोई लारी भेज दें जो हमारी कार को बाँधकर

खींच ले जाये। आखिर एक लारी डबवाली से आती दिखाई दी। जान में जान आई। उसका ड्राइवर सिकख था। उसने उतर कर हमारी कार की जाँच की। फिर कहा कि वैक्युम में कोई रुकावट है। कार के नीचे घुसकर देखा तो पता लगा कि वास्तव में रूई आदि के छोटे-छोटे टुकड़े इकट्ठे होकर नलकी को बन्द कर रहे हैं। खैर, जब बीमारी का पता चल गया तो इलाज भी जल्दी हो गया और तीन बजे के बाद हम चल पड़े। लारी हमारे पीछे थी। पाँच बजे के करीब सत्संग-घर में आ गये। वहाँ आकर खाना, जो साथ लाये थे, गर्म करवा कर खाया और वहाँ से केरे मिल में आकर सामान उतारा। वहाँ एक घण्टे के करीब ठहर कर अँधेरा होते-होते घर आ गये।

16 दिसम्बर, 1943 को दिन भर डाक का काम होता रहा क्योंकि कई दिन की डाक इकट्ठी हो गई थी। राव बहादुर सरदार सिंह ने हुजूर की पोती की शादी पर, पाँच सौ रुपये का चैक भेजा परन्तु हुजूर ने लेने से मना कर दिया कि सत्संगियों के साथ न्योता-भाजी प्यार में रुकावट डालेगा। शाम को बातचीत में किसी ने कहा कि बढई, कीकर की लकड़ी काटने तराशने से बहुत घबराता है। इस पर हुजूर ने फ़रमाया कि एक बढई दरिया में बहा जा रहा था। किसी ने किनारे से आवाज़ दी 'मेरा कोठा छत दो'। बढई बोला, लकड़ी किस वृक्ष की है। उसने पुकारा कीकर (बबूल) की तो बढई ने जवाब दिया कि मुझे बह जाने दो।

19 दिसम्बर, 1943 रविवार शाम के साढ़े पाँच बजे हुजूर ने सिरसा सत्संग-घर में सत्संग किया। भीड़ दो-तीन सौ के करीब थी। मगर सिरसा के मालदार बनिये लोग सत्संग में नहीं आते। 'नाम निर्णय करूँ भाई' हुजुरी वाणी में से लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि कमाई के बिना अन्दर नहीं जा सकते। चाहे कमाई इस जन्म में कर लो या अगले जन्म में, मगर जाओगे कमाई करके। एक बार एक महात्मा पुष्कर तीर्थ को जा रहे थे। किसी दूसरे महात्मा ने पूछा कि वहाँ क्यों जा रहे हो? तो उन्होंने जवाब दिया कि पुष्कर में स्नान करके फिर मनुष्य जन्म मिलेगा तो दूसरे महात्मा ने कहा कि भाई, अब भी तो तुम मनुष्य हो, जो अगले जन्म में करना है वह अब ही कर लो।

सरगोधा से बाबू गोबिन्द राम तीन-चार बीबियों के साथ, कुछ दिनों से यहाँ आये हुए हैं। 20 दिसम्बर को एक बे-सत्संगी अफ़सर के पत्र के जवाब में हुजूर

ने लिखवाया कि जब से यह दुनिया बनी है तब से हम इस दुनिया में चौरासी लाख योनियों में भटक रहे हैं और दुःख भोग रहे हैं। मनुष्य जन्म सबसे उत्तम है, क्योंकि इस जन्म में ही चौरासी लाख योनियों में भटकने से छुटकारा मिल सकता है। मनुष्य शरीर में परमात्मा को मिलने का रास्ता है और किसी शरीर में यह रास्ता नहीं है। गाय, भैंस आदि जानवरों को तमीज़ नहीं है। देवी-देवताओं और फ़रिश्तों के शरीर में भगवान् से मिलने का रास्ता नहीं है। इसलिये देवी-देवता भी यह चाहते हैं कि हमें मनुष्य का शरीर मिले तो हम भक्ति करके आवागमन से छूट जायें क्योंकि ब्रह्मलोक से लेकर पाताल लोक तक सारी त्रिलोकी आवागमन के चक्कर में फिर रही हैं। ब्रह्मलोक से पार जायें तो आवागमन से छुटकारा मिलता है। दान, पुण्य, यज्ञ, तप, संध्या, नेम, कर्म-धर्म आदि अच्छे कर्म हैं जिनका अच्छा फल मिलेगा, मगर इस दुनिया में इन नेक कर्मों का फल भोगना पड़ेगा और भोग कर फिर चौरासी का चक्कर तैयार है। सिवाय (धुनात्मक) नाम के और पूरे सन्त-सतगुरु के, जीव की चौरासी काटी नहीं जा सकती।

21 दिसम्बर, 1943 की सुबह को बीबी रली, बीबी रक्खी और बहुत से सत्संगी डेरे से आ पहुँचे।

शाम को सरदार सोहन सिंह भण्डारी भी शाहजहाँपुर से तशरीफ़ लाये। हुजूर बारात की लारियों के लिये, ग्रेवाल मिल्स से सिकन्दरपुर तक रास्ता समतल और साफ़ करा कर सफ़ेदी के निशान लगवाते रहे, जिससे बिना बताये लारी वाले बारात को पक्की सड़क से सिकन्दरपुर तक ले आयें। बारात का स्वागत सिकन्दरपुर शान्ति आश्रम में होगा। सिरसा से भी लोग निमन्त्रित किये गए हैं।

23 दिसम्बर, 1943 सुबह कराची से सरदार नानक सिंह दो सत्संगियों के साथ तशरीफ़ ले आये। लाहौर से भी एक-दो आदमी आये हुए हैं। आजकल पंजाब में देहात की जिन्दगी ऐसी हो गई है कि सज्जन पुरुष का गुज़ारा कठिन है। शहरों में लोगों में पार्टीबाज़ी कम है। लोग कम जगह में दो या तीन मंज़िले मकान बना कर गुज़ारा कर लेते हैं। कोई कुछ करे, दूसरा हस्तक्षेप नहीं करता। देहात में ऐसा नहीं। ज़मींदारों को अपने रहने व पशुओं के लिये जगह घेरनी पड़ती है। इसलिये हुजूर ने फ़रमाया कि ज़मींदार की दाढ़ी के नीचे सौ बीघे ज़मीन आती है। ज़मींदार का गाँव में रौब-दाब,

दबदबा न हो तो लोग न उसकी फ़सल छोड़ेंगे, न उसके पशु और न ही उसके मुज़ारों के पशु। औरतों तक को उठा ले जाते हैं।

24 दिसम्बर, 1943 की सुबह पण्डित लाल चन्द लायलपुर से तशरीफ़ लाये। शाम को सरदार भगत सिंह तथा श्री आहलुवालिया तशरीफ़ लाये। दोपहर को एक सिक्ख जैटिलमैन ने गुरुद्वारा रीठा साहिब का हाल बताया कि पीलीभीत से आगे एक स्टेशन पीलाँवाली आता है वहाँ से गुरुद्वारे तक का चार-पाँच दिन का पैदल रास्ता है। रास्ते में घास का जंगल है। घास आदमी के क्रद से ज्यादा ऊँची है। कहीं इक्की-दुक्की झोंपड़ियाँ रास्ते में नज़र आती हैं। गाइड के बिना रास्ता मिलना कठिन है। गाइड एक रस्सी लेकर एक सिरा अपने हाथ में व दूसरा यात्री के हाथ में दे देता है। वरना जंगल में दोनों बिछुड़ जायें। गुरुद्वारे में एक रीठे का वृक्ष है जिसकी एक ओर मीठे और दूसरी ओर साधारण रीठे होते हैं। महन्त साहिब मीठे रीठे पवित्र होने के कारण, चार-पाँच रुपये दर्जन बेचते हैं। आटा, दाल आदि बहुत महँगा है। लड़ाई से चार-पाँच वर्ष पहले रुपये का सात सेर आटा मिलता था। हुजूर ने फ़रमाया कि सन्तों की असली करामात जीवों को काल के जाल से छुड़ाकर सत्तलोक पहुँचाना है।

25 दिसम्बर, 1943 शाम के सात बजे बारात आ पहुँची। शान्ति आश्रम के बाहर के मरदाने सहन के दक्षिण की दीवार के साथ, दो शामियाने लगाकर नीचे दरियाँ बिछा दी गईं और उन पर कुर्सियाँ और सोफ़ा सैट सजा दिये गए। सिरसा शहर के जाने-माने लोग और सरकारी अफ़सर बारात आने से पहले, तशरीफ़ ले आये थे। सरदार सेवा सिंह, सेशन जज गुलवन्तराय, दूसरे अतिथि और हुजूर महाराज स्वयं वहाँ उपस्थित थे। बारात के स्वागत के लिये एक मोटर कार सिरसा से, जहाँ से कुछ आगे पक्की सड़क से सिकन्दरपुर को मुड़ना पड़ता है, भेज दी गई थी। वहाँ पर साइन-बोर्ड लगा दिया गया था। बारात के आने से दो दिन पहले हुजूर ने स्वयं उस सड़क को ठीक करवाया था। गड्डे आदि भरवा कर, जगह-जगह मिट्टी की बुर्जियाँ बनवा कर उन पर सफ़ेदी डलवाई ताकि रास्ते का आसानी से पता लग जाये। इस काम में तीन-चार घण्टे लगे थे। यदि हुजूर की आयु का विचार किया जाये तो यह कड़ी मेहनत थी, मगर इस काम के बाद भी हुजूर मिल में जाकर मज़दूरों और क़ारीगरों का काम देखते रहे।

बारात की लारी और कार शान्ति आश्रम के दरवाजे तक आ गई। वहाँ से सब बाराती उतर कर शामियाने के नीचे आ गये। दूल्हा फ़ौज में कप्तान है। उसके हाथ में तलवार थी। क्रद लम्बा, बदन सुडौल और चेहरे से शराफ़त टपकती थी। सब बाराती शराफ़त का नमूना मालूम होते थे। थोड़ी देर सब मिल-मिला कर अपने कैम्प में तशरीफ़ ले गये। वहाँ नहाने के लिये गर्म पानी व खाने के लिए मिठाई और पीने के लिये चाय तैयार थी। गैस जल रहे थे। कैम्प में भी शामियाना लगा हुआ था, जिसके नीचे मेज़-कुर्सियाँ लगी हुई थीं। वहाँ चाय का प्रबन्ध था। इसके बाद रात को दस बजे खाना शान्ति आश्रम में दिया गया।

26 दिसम्बर, 1943 सुबह हुजूर छः-सात बजे के लगभग 'आसा दी वार' सुनने के लिये शान्ति आश्रम के अन्दर आँगन में आ बिराजे। बाराती आठ बजे तशरीफ़ लाये। दूल्हा-दुल्हन को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के सामने बैठाया गया और आनन्द कारज से पहले हुजूर ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के एक शब्द का अर्थ किया। इसके बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से लाँवों के शब्द पढ़े गये। रागियों ने आनन्द साहिब गाया। इसके बाद दरबारी लाल साधु ने सरदार कृपाल सिंह की लिखी हुई कविता पढ़ी। फिर सरदार भगत सिंह ने मारू राग में लिखी हुई अपनी कविता पढ़ी जिसके अर्थ बड़े गूढ़ थे। बहुत से सुनने वाले उन इशारों को, जो उस कविता में लाये गए थे, समझ नहीं सकते थे। इस रीति में तीन घण्टे लग गये। एक बजे बारात का खाना हुआ, शाम के पाँच बजे चाय और रात के दस बजे फिर खाना दिया गया। हुजूर स्वयं खाने व चाय के समय गद्देदार कुर्सी पर तशरीफ़ रखते थे। दूसरे अतिथि सत्संगी उनके पास ही दूसरी कुर्सियों पर बिराजमान थे। मैं सरदार हरबन्स सिंह तथा उनके परिवार के अतिथि-सत्कार का कायल हूँ। बहुत-से सत्संगी बिना बुलाये भी आये हुए थे। कई दूसरे व्यक्ति जो सम्बन्धित नहीं थे, खाना खाने आये। मगर उनके माथे पर कभी बल नहीं देखा। हमेशा सब आनेवालों का सत्कार करके खुश होते हैं। कभी तकलीफ़ महसूस नहीं करते। ऐसा मालूम होता था कि उनके यहाँ दूध, घी, चाय तथा स्वादिष्ट भोजन का दरिया बह रहा है जिससे सब बराबर लाभ उठा रहे हैं। उनके सुपुत्र भी अतिथि-सत्कार में उनसे कुछ कम नहीं। बल्कि स्वयं हर एक अतिथि को खाना पूछते हैं। किसी को बिना खाना खिलाये या चाय

पिलाये नहीं जाने देते। सच है- 'हर कि खिदमत कर्द ऊ मखदूम शुद'। यदि किसी का खिदमत करने के कारण, खिदमत करवाने वाला बनने का हक़ है तो इन लोगों का जो सच्चे अर्थों में खिदमत करनेवाले हैं।

27 दिसम्बर, 1943 की सुबह को बारात डबवाली के रास्ते से विदा हो गई और हुजूर उसी समय बाहर कैम्प में तशरीफ़ ले गये कि जल्दी सब खेमे व शामियाने बाँधकर व लारी में लाद कर, डेरा ब्यास भेजे जायें क्योंकि वहाँ बड़े दिनों के भण्डारे के कारण, संगत के रहने के लिये उनकी बड़ी आवश्यकता थी। वहाँ से दस बजे वापस आये और खाना खाने के बाद एक बजे कार से रवाना हो पड़े। सरदार भगत सिंह व मिस्टर आहलुवालिया की कार एक घण्टा पहले जालन्धर के लिये रवाना हो चुकी थी। रास्ते में शाम के चार-पाँच बजे के लगभग मोगा में, दोनों कारें मिल गईं। वहाँ सरदार प्रीतम सिंह की तबीयत का हाल पूछकर हुजूर लुधियाना, सूर्य छिपने से पहले, पहुँच गये। वहाँ बहुत-सी संगत जमा थी। वहाँ पाँच मिनट दर्शन देकर, फ़िल्लौर में वकील लाला दीनानाथ के मकान की ऊपर की मंज़िल में कुछ मिनट सरदार भगत सिंह की कार का इन्तिज़ार किया और फिर उसके जाने के बाद, जालन्धर रात के आठ बजे पहुँच गये। वहाँ आधे घण्टे के लगभग ठहर कर, डेरे रात के नौ बजे आ पहुँचे। वहाँ बहुत-सी संगत आई हुई थी। लोगों का आना 29 दिसम्बर प्रातः बल्कि दोपहर तक जारी रहा।

अध्याय 15

देरे में निवास का हाल

28 दिसम्बर, 1943 को दोनों समय सत्संग हुआ। सुबह हुजूर स्वामी जी महाराज की वाणी में से 'गुरुमता अनोखा दरसा। मन सुरत शब्द जाय परसा' लिया गया जिसमें सन्तों के मार्ग का वर्णन किया गया है। पहली सुन्न सहस्र-दल कमल है। शरीर में बाईस सुन्न और अठारह बंकनाल हैं। तीसरे तिल में सतगुरु का नूरी स्वरूप, सहस्र-दल कमल में सूक्ष्म स्वरूप और त्रिकुटी में शब्द-स्वरूप है। तीन रास्ते हैं- दायों, बायों और दरमियाना (बीच का)। दरमियाने रास्ते को सुखमना कहते हैं। बाई तरफ स्वर्ग-नरक आदि का जाल है, दाई तरफ बहुत देश आबाद हैं, परन्तु उनमें से ऊपर जाने को रास्ता नहीं है। बीच का रास्ता सन्तों का है। जब तक रूह ब्रह्म में नहीं जाती है और इस पर चढ़े हुये पूर्व जन्मों के सारे पाप नहीं धुल जाते हैं। रूह पारब्रह्म का प्रकाश और तेज सहारने के योग्य नहीं होती। यहाँ ब्रह्म में रूह को बहुत समय तक रह कर अभ्यास के द्वारा सब संचित कर्म यानी पुण्य और पाप, जो उसने पिछले करोड़ों जन्मों में किये हैं, साफ करने पड़ते हैं, क्योंकि जब से ये सृष्टि बनी है तब से हम लोग इस संसार में आये हुए हैं और इसीलिये हमारे अनगिनत जन्म हो चुके हैं। जैसे कि भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा है। हुजूर ने फरमाया कि पारब्रह्म में जो किंगरी की धुन हो रही है यदि उसको आधा घण्टा भी सुन लें, तो अनेकों जन्मों का पता चल जाता है।

28 दिसम्बर, 1943 की शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से शब्द पढ़ा गया। 'दुनीआ न सालाहे जो मर वंजसी' यानी, सांसारिक वस्तुओं तथा सांसारिक जीवों से प्रेम न कर, यह सब मिट जायेंगे। गुरुमुख साधु से प्यार कर, जिससे तेरा जन्म-मरण समाप्त हो जाये। गुरुमुख साधु वह है, जो तीनों शरीरों और तीनों गुणों को पार करके पारब्रह्म में जा पहुँचा हो।

240

29 दिसम्बर 1943

रूहानी डायरी भाग 1

241

29 दिसम्बर, 1943 को एक बजे सत्संग शुरू हुआ। पचास हजार आदमी होंगे। हुजूर की आवाज़ लाउड-स्पीकर की सहायता से सत्संग की अन्तिम कतारों से भी परे, साफ सुनाई देती थी। लोग चुपचाप कान लगाकर सुनते रहे। पहले हुजुरी वाणी में से 'जग में घोर अंधेरा भारी। तन में तम का भंडारा' और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'बिख बोहिथा लादया' पढ़े गए। हुजूर ने फरमाया कि परमात्मा न तो आसमान में है, न पुस्तकों में है बल्कि वह मनुष्य के अन्दर है। पुस्तकें उसकी बड़ाई करती हैं। उनका पढ़ना ऐसा ही है जैसे कोई बीमार अपनी बीमारी का नुसखा पढ़ता रहे परन्तु नुसखे को बनाकर न खाये और बीमारी से आराम की उम्मीद रखे। सत्संग के बाद सेवा में बैठे। हुजूर ने एक सत्संगी को बताया कि माँ-बाप की सेवा भाग्यशाली जीवों को मिलती है।

30 दिसम्बर, 1943 को कोई सत्संग नहीं हुआ। हुजूर सुबह नौ बजे ही बाहर के बड़े सत्संग-हाल में नाम देने के लिये तशरीफ ले गये। वहाँ एक हजार के लगभग स्त्री-पुरुष नाम के लिये जमा थे। वहाँ से शाम के चार बजे छुट्टी कर के, हुजूर ने घर आकर, स्नान करके खाना खाया, फिर पाँच बजे सेवा में बैठने के लिये नीचे आ गये। वहाँ एक सत्संगी ने विनती की कि उसका लड़का लड़ाई में गया हुआ था। वहाँ से उसके विषय में बुरी खबर आई तो उसके माता-पिता व बाल-बच्चों ने बहुत गम किया। सबने खड़े होकर सतगुरु से प्रार्थना की कि उसके विषय में अच्छी खबर आये। उसके बाद उसके लड़के का बाहर से पत्र आया जिसमें लिखा था कि हुजूर ने उसको वहाँ दर्शन देकर आदेश दिया कि अपने घर जल्दी अपनी राजी-खुशी की खबर भेजो। तुम्हारे घर वाले चिन्ता कर रहे हैं। सात-आठ बजे के बीच हुजूर फ़ारिग होकर अपने मकान में चले गए। वहाँ मुझे नौ बजे किसी काम के लिये जाने का अवसर मिला तो पता चला कि हुजूर ने अभी खाना नहीं खाया। यह हाल हुजूर के कड़े परिश्रम का है जो हुजूर सत्संग के लिये करते हैं यहाँ तक कि रात के साढ़े नौ बजे फरमाया कि अब डाक देख लें। मैंने विनती की कि अभी तो आपने खाना भी नहीं खाया। इसलिये हुजूर ने यह विचार छोड़ दिया।

31 दिसम्बर, 1943 की शाम को आँखों के प्रसिद्ध योग्य डॉ. शराफ़ देहली से तशरीफ लाये। मैं उन्हें कुछ पहले से जानता था। उनका खाना-पीना बहुत सादा है। केवल एक सब्जी और दो चपातियाँ शाम को खाते हैं। कहने लगे

कि मैं देहली में सुबह नौ बजे से लेकर रात के साढ़े दस बजे तक बराबर काम करता रहता हूँ।

1 जनवरी, 1944 को सुबह ग्यारह बजे डॉ. शराफ़ हुजूर से बातचीत करने गये। वही सवाल जोकि हरएक पढ़ा-लिखा किया करता है कि दुनिया क्यों बनाई और जब कि परमात्मा में सब अच्छाइयाँ हैं तो उसने बुराई को क्यों बनाया ? और यदि बनाया तो बुराई का नाश क्यों नहीं कर दिया ? जिनका जवाब यह है कि मनुष्य का दिमाग़ और बुद्धि दोनों सीमित हैं। जब मन और बुद्धि की सीमा के पार जायेगा तब पता लगेगा कि जो कुछ परमात्मा ने किया है वह ठीक किया है और जो कुछ हो रहा है वह ठीक हो रहा है। फिर उन्होंने हुजूर से पूछा कि मनुष्य की ज़िन्दगी का उद्देश्य क्या है ? हुजूर ने फ़रमाया कि मनुष्य का दर्जा सृष्टि में सबसे ऊँचा है। उसके शरीर में परमात्मा के मिलने का रास्ता है। उसको चाहिये कि इस शरीर को पाकर, अभ्यास करके, अपने अन्दर परदा खोलकर रूहानी देशों में जाये। वरना उसका इस दुनिया में इनसानी चोला धारण करने का उद्देश्य समाप्त हो जायेगा और वह आवागमन से छुटकारा नहीं पा सकेगा। शाम को सत्संग में कबीर साहिब की शब्दावली में से 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है'⁵ पढ़ा गया। हुजूर ने उसकी व्याख्या की कि मनुष्य चोले के चार भाग हैं। आँखों के नीचे पिण्ड, उसके ऊपर अण्ड, फिर ब्रह्माण्ड और फिर सचखण्ड। जो पिण्ड के छः चक्कर हैं वे ब्रह्माण्ड के छः चक्करों का प्रतिबिम्ब हैं। जो ब्रह्माण्ड के छः चक्कर हैं वे ऊपर के लोकों का प्रतिबिम्ब हैं। भाव यह कि योगी लोग, पिण्ड के छः चक्र जो कि प्रतिबिम्ब का भी प्रतिबिम्ब हैं, की साधना में ही अपनी आयु ख़राब करते रहे। जैसा कि सूर्य का प्रतिबिम्ब पानी पर पड़ता है तो पानी में सूर्य की शक्ल कुछ-कुछ दिखाई पड़ती हैं। मगर जब पानी में पड़ रहे सूर्य का प्रतिबिम्ब दीवार पर पड़े तो शक्ल भी सूर्य से बिलकुल नहीं मिलती। ज्यों-ज्यों आँखों से ऊपर जायें, मन को ज़्यादा से ज़्यादा आकर्षक और सूक्ष्म रचना नज़र आती है। अण्ड लोक इस स्थूल दुनिया से हज़ारों गुना अधिक आकर्षक, ख़ूबसूरत और सूक्ष्म है।

2 जनवरी, 1944 को, क्योंकि लोगों ने वापस जाना था, ग्यारह बजे दोपहर को सत्संग हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'हर कीआ कथा कहाणीआं गुर मीत सुणाईआं'⁶ लिया गया।

3 जनवरी, 1944 को डॉ. शराफ़ को दोपहर से पहले नाम दिया गया। शाम को सत्संग हुजूर वाणी में से 'धुन सुन कर मन समझाई'⁷ और 'धन्य धन धन्य पियारे'⁸ लिये गए। 'छिन छिन रक्षा हो रही। क्या उपमा कहूँ मैं शब्द की'⁹ का यह अर्थ किया गया कि शब्द की वजह से ही यह शरीर स्थिर है। जब मृत्यु के समय शब्द पीछे हट जायेगा तो शरीर का नाश हो जायेगा क्योंकि शरीर में जो पाँच तत्त्व यानी मिट्टी, पानी, आग, हवा और आकाश हैं ये सब एक-दूसरे के शत्रु हैं। केवल शब्द ही उनको इकट्ठा रखता है। जब मृत्यु के समय शब्द शरीर से हट जाता है तो मिट्टी पानी में, पानी आग में, आग हवा में और हवा आकाश में लीन हो जाती है और शरीर सड़ने लगता है। ऐसे ही श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में आया है 'पौण पाणी अग्नी इक वासा। आपे कीतो खेल तमासा'¹⁰ हुजूर ने आज फिर दो-तीन दिन की डाक नहीं सुनी क्योंकि समय ही नहीं है। आज सुबह नाम देने के बाद कालाबाग़ व ऐबटाबाद की संगत में, प्रत्येक व्यक्ति को गुड़, मालटे और एक-एक कुरते का प्रसाद दिया गया। जितना काम हुजूर सुबह से लेकर रात के बारह बजे तक करते हैं और कोई मनुष्य इस प्रकार काम करके बहुत समय तक जीवित नहीं रह सकता। काम भी ऐसा जिसमें हर मनुष्य उनका ध्यान अपनी ओर खींचता है। घर से बाहर आये नहीं कि लोगों ने घेर लिया। स्वर्गीय साई लसूड़ी शाह लायलपुरी सच कहा करते थे कि जिस मनुष्य के पीछे एक मक्खी लग जाये वह चैन से नहीं बैठ सकता। फिर जिस मनुष्य के पीछे सैंकड़ों मक्खियाँ हों तो उसका क्या हाल होगा ? यह काम हुजूर ही कर सकते हैं। किसी दूसरे में इतनी बर्दाश्त और नम्रता कहाँ ! हुजूर स्वयं मुझसे कहा करते हैं कि भई मैंने तो निर्वाह कर लिया जो मेरी जगह होगा उसका क्या हाल होगा ? दुनिया में सच्चे बहादुर और सच्चे सिपाही सन्त हैं।

आज एक यूरोपियन लेडी सत्संगिन ने हुजूर से पूछा कि ध्यान कैसे किया करें ? हुजूर ने जवाब दिया कि जिस तरह सतगुरु का स्वरूप तुम्हें बाहर से दिखाई देता है वैसा अपने अन्दर बनाने का प्रयास करो। सिमरन से ज्यों-ज्यों मन एकाग्र होगा, ध्यान बनेगा। फिर पूछा कि मन क्या है ? जवाब मिला कि ब्रह्म की

किरण माया पर पड़ती है, उसका प्रतिबिम्ब मनुष्य के हृदय कमल पर पड़ता है, वह मन है। मन पाँच तत्वों का सतो गुणी अंश है। एक थाली में पानी लेकर धूप में रखो। सूर्य की किरणें पानी पर पड़ती हैं और पानी में से सूर्य का प्रतिबिम्ब दीवार पर पड़ता है। यदि पानी खड़ा हो तो दीवार पर पड़ने वाला प्रतिबिम्ब चमकदार होता है। यदि पानी साफ़ न हो और हिल रहा हो तो प्रतिबिम्ब भी धुंधला होता है या बिलकुल दिखाई नहीं देता। यह पानी की हरकतों की कमी, वृद्धि या उसकी सफ़ाई पर आधारित है। वैसे ही यदि मन खड़ा है तो वह ज्ञानियों का मन है। यदि मन चंचल है तो वह मूर्खों का मन है। जब यह नीचे बुरे कर्मों में गिरता है तो मन काल का एजेण्ट है। जब यह एकाग्र होकर ऊपर के मण्डलों में जाता है तो रूह का सहायक है।

अध्याय 16

कालू की बड़ के दौरे का हाल हुजूर का कालू की बड़ की तरफ़ सफ़र, सत्संग तथा वापसी का सफ़र

7, 8 व 9 जनवरी, 1944 डेरे के इतिहास में हमेशा याद रहेंगे। जब से हुजूर डलहौजी में, पिछले सितम्बर से बीमार हुए, तब से उन्हें डलहौजी में रुचि नहीं रही है और उनको विश्वास हो गया है कि यहाँ की जलवायु उनके अनुकूल नहीं है। डॉक्टर लोग भी यही कहते हैं कि वृद्धावस्था में मनुष्य के लिये चार-पाँच हजार फुट से अधिक ऊँचाई की सर्दी, अनुकूल नहीं होती। डलहौजी में वर्षा बहुत होती है। आने-जाने का रास्ता टूट जाता है और बड़ा खतरनाक हो जाता है। इन सब कारणों को देखकर हुजूर ने बीबी धर्मदेवी (गाँव चलेट, तहसील उना) व दूसरे सत्संगियों को आदेश दिया कि कोई ऐसी जगह तलाश करो जो बहुत ऊँची न हो, जहाँ की जलवायु खुशगवार हो और वर्षा की अधिकता न हो। अतएव जनवरी माह के शुरू होते ही बीबी साहिबा ने एक ऐसे स्थान का पता बताया और हुजूर ने बीबी साहिबा को कुछ और साथियों के साथ भेजा कि होशियारपुर में उनकी प्रतीक्षा करें। हुजूर छः जनवरी को सुबह साढ़ सात बजे मुझे और भाई शादी को साथ लेकर कार में डेरे से चल दिये। जालन्धर से होकर होशियारपुर सुबह साढ़ नौ बजे सुबह गवर्नमेंट कॉलिज के प्रोफ़ेसर लेख राज के निवास-स्थान पर जा पहुँचे। वहाँ एक लारी जिसका सिक्ख झाइवर, बड़ा सज्जन और नेक सिद्ध हुआ, बीबी धर्मदेवी और दूसरे सत्संगियों के साथ उपस्थित था। हमने अपना सामान कार से उस लारी में रख दिया। हुजूर स्वयं झाइवर के साथ अगली सीट पर बिराजमान हो गये। प्रोफ़ेसर साहिब को भी हुजूर ने साथ चलने की अनुमति दे दी। वहाँ से दस बजे से पहले-पहले चल कर हम गगरेट, शिवबाड़ी, सर्वाँ, मुबारिकपुर, कुनू की हट्टियाँ गुजर कर भरवाई, दोपहर बारह बजे के कुछ बाद पहुँचे।

शिवबाड़ी एक घना जंगल है जिसमें एक मन्दिर है, जहाँ साधु लोग ठहरते

हैं। यहाँ कोई और आबादी नहीं है। रास्ते में मुबारिकपुर का गाँव बड़ा फैला हुआ आता है। कुनू की हट्टियों के नीचे एक हरी-भरी घाटी, जिसमें पानी बहता है, दिखाई देती है। भरवाई, होशियारपुर से 28 मील के करीब है। क्योंकि वर्षा नहीं हुई, इसलिये सड़क पर काफी धूल उड़ रही थी। रास्ते में यह मालूम हुआ कि चिन्तपूर्णी देवी, भरवाई से पहले आयेगी और बाद में भरवाई क्योंकि रास्ता छोड़े की नाल की तरह है। भरवाई में जिला होशियारपुर के अफसर, गर्मी के मौसम में जाकर आराम करते हैं। वहाँ एक डाक बैंगला, डाकखाना, तार-घर और अस्पताल हैं। वहाँ से आगे चिन्तपूर्णी व परागपुर गाँव के तंग बाजार व तंग घर आते हैं जिनमें से लारी बड़ी मुश्किल से गुज़री। यहाँ तक तो लारी की यात्रा बड़े आराम से कट गई। मगर उससे आगे डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की कच्ची सड़क जिसमें पत्थर गड़े हुए हैं, वृक्षों की टहनियाँ और जड़ें जगह-जगह फैलकर, लारी के रास्ते को रोकती हैं। बड़ी कठिन मंज़िल है। रास्ते में कई जगह वृक्षों की टहनियाँ और जड़ें कटवानी पड़ीं। कई जगह ऐसी सख्त ढलान थी कि सब सवारियों को उतरना पड़ता था। कई जगह से सड़क बहुत तंग थी और दूसरी तरफ़ खड्ड था। फिर भी दो घण्टे में छः मील के खराब रास्ते का सफ़र समाप्त करके, धर्मशाला गाँव से डेढ़-दो मील आगे निकलकर, एक जगह सड़क के पास दुकानें दिखाई दीं। उन दुकानों के ऊपर एक छोटी-सी पहाड़ी पर दो बड़ के वृक्ष खड़े दिखाई दिये। बस यही हमारी मंज़िल थी। लारी को छोड़कर महन्दड़ों के घने झाड़-झंकाड़ों में से पहाड़ के ऊपर गये और सब मौक़ा देखा।

अब महसूस होता था कि हुज़ूर महाराज जी पहले से ही इस स्थान के बारे में निर्णय कर चुके हैं कि गर्मी का मौसम यहीं बिताया करेंगे। इसलिये लारी के रास्ते को बड़ी सावधानी से पैदल चल कर हुज़ूर ने गुज़रने के लायक बनवाया। वहाँ पर पहुँचते ही आदेश दिया कि पटवारी को बुलाकर, जो जगह हमने चुनी है, उसकी हदबन्दी करवाओ। यह पहाड़ी दो मालिकों की है। एक भाग राजपूतों का है दूसरा ब्राह्मणों का। यह पहाड़ी पूर्व से पश्चिम तक फैली हुई है। इसकी चोटी पर तो महन्दड़ों की झाड़ियाँ हैं और दोनों तरफ़ खेती की जगह है, गोया घोड़े की जीन की तरह है। हुज़ूर ने बीस कनाल के करीब ज़मीन लेने को कहा। पूर्व की ओर की ज़मीन का कुछ हिस्सा ब्रेट गाँव में है और पश्चिम की ओर का कुछ हिस्सा भटीर गाँव में है। शाम को हुज़ूर सूबेदार जोधा राम के मकान पर, जो भटीर गाँव से दो मील आगे उसी सड़क पर है, रहे। वहाँ रात को सत्संगी भजन

मण्डली ने ख़ूब भजन गये। हुज़ूर ने शाम को सत्संग किया और दूसरे दिन सुबह दस बजे के करीब फिर निश्चित स्थान पर पहुँच गये जहाँ पटवारियों से नपाई करवा कर, पत्थरों से हदबन्दी की गई और कागज़ों व नक्शों का निरीक्षण किया गया। मालिकों को पेशगी देकर 'बयाने' की रसीद ले ली गई। दाखिल ख़ारिज पटवारी के रजिस्ट्रों में चढ़वाया गया। शाम को हुज़ूर ने वहाँ दुकानों पर सत्संग किया और आप धर्मशाला गाँव के उस भाग में, जिसको चम्बी कहते हैं, आराम करने के लिये पैदल वापस आ गये। रास्ते में बूँदा-बाँदी होने लगी और रात को हुज़ूर की पार्टी चम्बी में एक सत्संगी ब्राह्मण के घर पर रात बिताने पहुँच गई।

यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि हुज़ूर तथा उनके साथी अपना खाना-दाना साथ लेकर जाते हैं। केवल दूध वहाँ से ले लिया जाता है और उसकी क्रोमत दे दी जाती है। इस सारी यात्रा में सिवाय प्रोफ़ेसर लेखराज के घर के और किसी जगह हुज़ूर ने किसी का खाना नहीं खाया। चम्बी में रात को बूँदा-बाँदी होती रही। हुज़ूर का आदेश था कि सुबह साढ़े सात बजे खाना होना है। हम साढ़े सात बजे बिस्तर बाँधकर तैयार हो गये। हुज़ूर इस बूँदा-बाँदी में लारी में सामान लादने के लिये पीछे छोड़कर, स्वयं पैदल खाना हो गये।

वहाँ से चले तो हुज़ूर के पीछे-पीछे सत्संगियों की भजन-मण्डली भजन गाती देवी के मन्दिर तक गई। वहाँ से हुज़ूर एक और स्थान को देखने के लिये गए। उस जगह को देखकर भरवाई के करीब, जहाँ कि चिन्तपूर्णी को जानेवाली सड़क गगरेट की तरफ़ से आकर मिलती है, लारी पर सवार हो गये। रास्ते में वापसी पर भरवाई नहीं आया। भरवाई बायें हाथ पर रह गया। आगे गगरेट के पास वर्षा जोरों से होने लगी। मगर होशियारपुर पहुँचकर धूप निकल आई। होशियारपुर में हुज़ूर का विचार अधिक देर ठहरने का नहीं था परन्तु प्रोफ़ेसर साहिब के बार-बार कहने पर वहाँ ठहरना स्वीकार कर लिया। इसलिये हम सबने हाथ-मुँह धोकर खाना खाया। खाना खाने के बाद बहुत-से सत्संगी भाई-बहन आ पहुँचे। हुज़ूर उनसे बातचीत करते रहे। फिर वहाँ से अपनी कार में खाना होकर पिपलावाली में बाबू देवराज अग्रवाल के घर दर्शन देते हुए, जालन्धर सरदार साहिब की कोठी पर आ पहुँचे। वहाँ केवल आधा घण्टा आराम करके वापस ब्यास डेरे में आ गये। वहाँ पहुँचते ही फिर काम शुरू कर दिया।

उस जगह को, जो हुज़ूर ने खरीदी है, 'कालू की बड़' कहते हैं। मगर पहाड़ी लोग उसे 'कालू दा बड़' या 'कालवे दी बड़' कहते हैं।

अध्याय 17

सिकन्दरपुर के दौरे का हाल

हुजूर का सिकन्दरपुर की तरफ सफ़र

15 जनवरी, 1944 को हुजूर खाना खाकर सुबह नौ बजे डेरे से कार में सिरसा की ओर चल दिये। शाम के तीन बजे सिरसा सत्संग-घर आ पहुँचे। रास्ते में मुक्तसर में माधी के मेले की भीड़ देखने में आई। बहुत-से लोग ऊँटों पर सवार थे। यह मेला सिक्खों का है। ऊँट पर आम तौर पर सरदार साहिब और उनके पीछे सरदारानी जी देखे गये। कुछ पर दो औरतें ही थीं। उनमें से अगली ऊँट को चलाती थी। ताँगे, टमटम भी दिखाई दिये। बहुत-से निहंग सिक्ख पैदल थे। कुछ के पीले कपड़े थे। मुक्तसर से रेगिस्तान का इलाक़ा शुरू हो जाता है। यह इलाक़ा मलोट मण्डी, डबवाली, भटिण्डा से बीकानेर, बहावलपुर तक सारा रेगिस्तान है। डबवाली से आगे सिरसा की तरफ़ नहर नहीं जाती। सिरसा के इलाक़े में करनाल की तरफ़ से दूसरी नहर आती है। डबवाली से परे नाली तक रेगिस्तान है। मलोट के पास खानाबदोश लोग सड़क पर अपने बाल-बच्चों व माल-असबाब के साथ एक जगह से दूसरी जगह जाते दिखाई देने लग जाते हैं। उनके बाल-बच्चे अधिकतर गधों, ऊँटों पर होते हैं। एक ने रेहड़ी, जैसी कि शहरों में सब्जी बेचने वाले लिये फिरते हैं, के आगे बैल जोता हुआ था, बीबी बच्चे भी उसी रेहड़ी में थे और आप पैदल जाता हुआ दिखाई दिया। ओड लोग इनमें अधिक होते हैं। सिरसा में आध घण्टे के करीब ठहर कर ग्रेवाल मिल्स में आ गये। वहाँ खेतों और मशीनरी की देख-भाल कर, हुजूर आठ बजे के लगभग रात को सिकन्दरपुर तशरीफ़ ले गये।

हुजूर का सिकन्दरपुर में निवास

16 जनवरी, 1944 रविवार को हिसार से कुछ वकील साहिबान सत्संग सुनने के लिये तशरीफ़ लाये थे। इसलिये हुजूर ने जुकाम की तकलीफ़ होने पर

भी शाम को चार-पाँच बजे के करीब सिरसा सत्संग-घर में जाकर हुजूरी वाणी में से 'नाम निर्णय करूँ भाई' शब्द पढ़वा कर उसकी व्याख्या की। नाम दो प्रकार का है— एक वह है जो लिखा, पढ़ा और बोला जाये जैसे राम, अल्लाह, वाहेगुरु, खुदा इत्यादि। यह भी चार प्रकार का होता है। एक बैखरी— जो ज़बान से बोला जाये। दूसरा मध्यमा— जो गले में बोला जाये। तीसरा पश्यन्ती— जिसका हृदय से उच्चारण किया जाये। चौथा परा— जो नाभी से योगी लोग हिलोर उठाते हैं। मगर सन्तों का नाम धुनात्मक अर्थात् शब्द-धारा है जिसको बाइबिल में वर्ड अर्थात् लोगोस, वेदों में आकाशवाणी या नाद और मुसलमान फ़कीरों ने, 'बाँगे आसमानी' बताया है। इस नाम और नामी में अन्तर नहीं है। जैसा कि बाइबिल में आया है, 'शब्द खुदा था' (Word was God)।¹ पहले प्रकार के नाम से न केवल खयालों का तबादला होता है बल्कि उसके सिमरन से मन और रूह सिमटकर नुक्ता-ए-सवैदा अर्थात् तीसरे तिल में एकाग्र हो जाते हैं, चरतें कि सिमरन ध्यानपूर्वक किया जाये और दोनों आँखों के बीच ध्यान रखा जाये। केवल वर्णात्मक नाम के सिमरन से ही आँखों के पीछे तारा मण्डल, सूर्य मण्डल और चन्द्र मण्डल पार किये जा सकते हैं। इसी को वेदों में देवयान और पित्रयान कहा है।

अब उसके आगे दूसरे नाम की आवश्यकता पड़ती है, जो वहाँ से रूह और मन को खींचकर ऊपर के लोकों में ले जाता है। गुरु का वास्तविक रूप शब्द है। सब सन्त-महात्मा शब्द में से इस संसार में आये और अपना-अपना कार्य करके शब्द में जा समाये। आवाज़ तो तारा मण्डल से नीचे भी सुनाई देती है, परन्तु वह खींचती नहीं क्योंकि चन्द्रलोक से नीचे-नीचे ध्यान न केवल शरीर के रोम-रोम में फैला हुआ है बल्कि वहाँ से निकलकर प्रियजनों, सम्बन्धियों, बीबी, बच्चों में बँध गया है। बल्कि उनसे परे भी देश, जाति, जायदाद आदि की असंख्य जंजीरों से जकड़ा हुआ है। सन्त जो सत्संग करते हैं, उसका यह उद्देश्य होता है कि मन को इन जंजीरों से आजाद करा कर ऊपर ले चलें। कुछ लोग यह कहते हैं कि हमारी रूह को खींचकर हमें अन्दर दिखा दो जिससे कि विश्वास आ जाये। यह ऐसे ही है जैसे कि एक कपड़ा, जो काँटों में उलझा हुआ हो, खींचकर काँटों से बाहर लाने की कोशिश करें तो कपड़ा निकलेगा नहीं बल्कि फट जायेगा। इस प्रकार हुजूर ने एक विद्वान् पण्डित की कहानी सुनाई, जिसने नाम लेकर पहले छः महीने अभ्यास किया। क्योंकि विद्वानों का मन फैला हुआ होता है, इसलिये

उसके अन्दर प्रकाश नहीं हुआ। अतः सन्तों के ढंग को छोड़कर प्राणायाम में लग गया। छः मास तक उसमें टक्करें मारीं परन्तु उसे कुछ लाभ न हुआ। फिर सन्तों के पास आया कि मुझे दिखा दो चाहे मैं मर ही जाऊँ। सन्तों ने बहुतेरा समझाया कि तुम्हारी हानि होगी परन्तु उसने एक न मानी। अन्त में उसको भजन में बैठकर ज़रा ध्यान दिया तो उलट कर जा पड़ा और लगा थर-थर काँपने। सन्त अपनी शक्ति से उसे बाहर लाये और सिमरन करा कर शान्त किया तो कहने लगा कि धिक्कार है मुझ पर मैंने सन्तों का कहना नहीं माना। पूछा क्या हुआ ? कहा- ऐसा मालूम हुआ कि करोड़ों बिजलियाँ मुझ पर टूट पड़ीं। रूह उस स्थान के प्रकाश को धीरे-धीरे सहन कर सकती है।

हर एक धर्म में जो नित्य-नेम बना रखे हैं उनका यह उद्देश्य है कि हाथ-पौंव सुन्न होने लगें और रूह व मन इकट्ठे होकर ध्यान को खड़ा करने का जमा हो। परन्तु क्योंकि नित-नेम करते समय ध्यान को खड़ा करने का प्रयत्न नहीं किया जाता केवल मुख से उच्चारण किया जाता है, मन को खुला फिरने दिया जाता है, इसी कारण हर एक धर्म के नित्य-नेम का उद्देश्य समाप्त हो गया है। संसार में सब धर्म, सब भेख वर्णात्मक नाम जपने में ही रह गये, धुनात्मक नाम तक नहीं पहुँचे।

कल रात नौ-दस बजे के करीब हुजूर के कमरे में हिसाब दिखाने गया तो वहाँ भाई शादी ने चर्चा की कि एक महा कंजूस, मगर मालदार व्यक्ति, जब मरने लगा तो उसके बेटे उसके आसपास जमा हो गये। उसने उनसे कहा कि मुझसे एक गाय का दान करवा दो। इस पर लड़कों ने कहा कि पिताजी गाय मणसने पर वापस तो नहीं आ जाओगे। क्या लाभ ? हुजूर ने फरमाया कि संसार में कोई किसी का नहीं है। केवल सतगुरु ही जीव के सच्चे मित्र हैं। इसी तरह भाई शादी ने कहा कि उनके गाँव की एक बुढ़िया मरने लगी तो उसने कहा कि यदि मैं मर जाऊँ तो मेरे लड़के को बता देना कि मेरा पाँच सौ रुपया खम्बे के नीचे गड़ा हुआ है। यदि जीवित रहूँ तो न बताना। यह हाल है सांसारिक सम्बन्धियों का। माँ-बाप और बेटों में जो सम्बन्ध है उससे बढ़कर क्या सम्बन्ध होगा ? "जगत में झूठी देखी प्रीत।"

हुजूर ने ज़मींदारी के अनुभव से कहा कि जिस ज़मीन में पलाश का वृक्ष हो वह सख्त होती है। जिस बाग़ में बकरियाँ या ऊँट रहें वह अवश्य उजड़ जायेगा और कई बातें कहीं जो मुझे भूल गईं।

23 जनवरी, 1944 रविवार को शाम के चार बजे के करीब, जबकि कुछ वर्षा हो रही थी, हुजूर ने सिरसा सत्संग-घर में जाकर सत्संग किया। हुजुरी वाणी में से 'जग में घोर अंधेरा भारी' और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से उसी तरह का शब्द 'बिख बोहिथा लादया दीआ समुंद मंझार' पढ़े गए।

24 जनवरी, 1944 सोमवार को सुबह जब हुजूर वर्कशाप को जाने लगे तो हवा चल रही थी और बादल छाये हुए थे। रात के आठ बजे हुजूर ने शान्ति आश्रम के बरामदे में सत्संग किया। रात तो बिल्कुल साफ़ थी परन्तु सहन में ठण्ड थी। हुजुरी वाणी में से 'यह तन दुर्लभ तुमने पाया' पढ़ा गया। हिन्दू मत और सारे धर्मों की शिक्षा का सार तथा सबसे ऊँची और सच्ची शिक्षा, इसमें हुजूर स्वामी जी महाराज ने हिन्दू मत और दूसरे सब धर्मों की शिक्षा तथा सबसे ऊँची रूहानी तालीम का सार दिया है। आपने समझाया है कि मनुष्य शरीर चौरासी लाख प्रकार की योनियों में से गुज़र कर मिलता है। मनुष्य शरीर मिलने पर आत्मा कुल-मालिक के नज़दीक से नज़दीक होती है, क्योंकि मनुष्य शरीर न केवल परमात्मा के पास जाने का रास्ता है बल्कि स्वयं परमात्मा का निवास-स्थान है। इस योनि में यदि पूरा गुरु मिल गया तो काम बन गया। गुरु पूरा वह है जो शब्द या बाँगे-आसमानी, जिसको वेदों ने नाद और बाइबिल ने वर्ड या लोगोस कहा है, का भेद बताये। किसी विशेष धर्म की क़ैद नहीं; चाहे किसी धर्म का गुरु हो। जो नाद का भेद बताये वही पूरा गुरु है। अब पूरा गुरु मिलने पर यदि सेवक उसकी आज्ञा के अनुसार चलता है तो भवसागर पार कर जाता है। यदि पूरा गुरु न मिला तो फिर नरक, स्वर्ग और चौरासी का चक्कर तैयार है। फिर जब असंख्य युगों के बाद मनुष्य का चोला तो मिला, उस समय भी यदि गुरु पूर्ण न मिला तो फिर वही चक्कर चल पड़ा। इसी प्रकार इस दुनिया के लोग सुख-दुःख, पाप-पुण्य के हिण्डोले में झूल रहे हैं। जब इस चक्कर से निकलने का समय आता है तो धर्म का पक्षपात, लोक-लाज, सुस्ती तथा मूर्खता के कारण मनुष्य पूर्ण गुरु के पास जाने से रह जाते हैं या दुनिया की दौलत, पदवी और हुकूमत पाने की कोशिश में अपना जीवन गँवा देते हैं। इस दुनिया में सच्ची और पूर्ण विद्या है तो यही है।

एक पत्र के उत्तर में हुजूर ने लिखवाया कि सन्तमत का धर्म ही यही है कि सब पर दया करना और बिना स्वार्थ, बिना बदले के, बिना किसी इच्छा के

दुनिया के जीवों की सहायता करना। उसने लिखा था कि आपने एक मुसीबत में मेरी बड़ी रक्षा की। मैं उसका क्या बदला दे सकता हूँ ?

27 जनवरी, 1944 को एक सत्संगी ने सवाल किया कि कुछ लोग यह कहते हैं कि मनुष्य मर कर मनुष्य के जन्म से नीचे नहीं जाता। इसके प्रमाण में उन्होंने दो छोटी लड़कियों के जिनको अपने पहले जन्म का पता था, के उदाहरण दिये जिसके बारे में हिन्दू महासभा के पिछले जलसे में क्रिसमस की छुट्टियों में अमृतसर में बताया गया था। हुजूर ने जवाब दिया कि नहीं, मनुष्य जन्म से फिर से मनुष्य का जन्म तो बड़े श्रेष्ठ कर्म हों तो प्राप्त होता है। नहीं तो अधिकतर अच्छे कर्म करने वालों को तो स्वर्ग लोक यानी बहिश्त में ले जाते हैं। वहाँ वे अपने नेक कर्मों का फल भोगकर फिर अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग से गिरकर मनुष्य या उससे नीचे की योनि में जाते हैं। जो लोग बैकुण्ठ यानी विष्णुपुरी में जाते हैं, वहाँ से गिरकर मनुष्य-जन्म धारण करते हैं। जो लोग बुरे काम करते हैं वे या तो मरकर चौरासी लाख योनियों में जाते हैं या नरकों में। नरकों में दण्ड भुगत कर फिर बुरे-बुरे जन्मों साँप, बिच्छू, छिपकली इत्यादि में गिर जाते हैं। फिर फ़रमाया कि जो कोई मनुष्य सराय, धर्मशाला, कुआँ या जनहित की चीज़ें बनवाता है उसको उस समय तक रहमत पहुँचती रहती है जब तक इमारतों या चीज़ों से लोगों को लाभ पहुँचता है।

इसी प्रकार पहली फ़रवरी की शाम को एक सिक्ख डॉक्टर साहिब ने हुजूर से चर्चा की कि जेहलम के ज़िले से एक बड़ी भारी गद्दी हिन्दू महन्तों की है, जिसके महन्त का नाम... नन्द जी है। उनको हुजूर के सत्संग सुनने तथा दर्शन करने का बड़ा शौक है। उसके चेले ने संस्कृत की उच्च परीक्षा पास की है और अब अंग्रेज़ी की दसवीं की तैयारी कर रहा है। उसको भी हुजूर से प्यार-प्रीत है। डॉक्टर साहिब ने यह भी बताया कि चेले ने गुरु को बताया कि मैं पहले जन्म में तुम्हारे गुरु का गुरु था। इसलिये मेरी पोथी और एक छाज मेरे मकान में होंगे। वह मकान गिर चुका था। जब उस मकान के मलबे को हटाया गया तो नीचे मकान की दीवारें निकलीं और वहाँ एक पोथी और छाज पाया गया। हुजूर ने सुनकर फ़रमाया कि यह असम्भव नहीं है। बल्कि मैं खुद भी फिर इस दुनिया में आऊँगा, क्योंकि हमारा काम ही यह है कि यहाँ से रूहों को बेड़े में भर कर पार ले जायें। जैसे कि फ़ौज में स्टाफ़ अफ़सर होते हैं वैसे ही परमात्मा ने काम

करनेवाले नियुक्त कर रखे हैं, जिनका काम ही इस संसार से रूहों को निकालकर सतलोक ले जाना है। इसलिये वे इस दुनिया के उद्धार के लिये बार-बार आते हैं। मुझे याद है कि हुजूर ने एक बार फ़रमाया था कि माया बड़ी नीच है। एक जन्म में जो माँ है, दूसरे जन्म में बीबी बन जाये तो कोई आश्चर्य नहीं। एक जन्म में बाप है दूसरे जन्म में बेटा।

2 फ़रवरी, 1944 को स्कूलों के रिटायर्ड इन्स्पेक्टर ला. ज्ञानचन्द तथा उनकी सुपुत्री जोकि डॉक्टर है, तशरीफ़ लाये। वह बीबी फ़ारसी की नज़म वाली किताब हुजूर से लेकर पढ़ने लगी तो हुजूर को आश्चर्य हुआ। इस पर इन्स्पेक्टर साहब ने कहा कि पहले फ़ारसी, पहली-दूसरी कक्षा से शुरू कर देते थे। अब सातवीं कक्षा से शुरू करते हैं। अब अंग्रेज़ी का जोर है। मैंने कहा कि जो बादशाह आता है हम उसी की ज़बान पढ़ने लग जाते हैं।

6 फ़रवरी, 1944 को रेल व नहर के परे कमाद (ईख) की कटाई शुरू हुई। आजकल उस इलाक़े में चारे की कमी है क्योंकि वर्षा नहीं हुई। इसलिये बारानी भूमि में रबी की फ़सल नहीं होगी। पिछले साल जो लोग कमाद के नज़दीक नहीं आते थे, अब बारात की तरह आ रहे हैं। कोई ऊँट पर सवार है, कोई गड्डे पर। कई मण्डलियाँ पैदल आ रही हैं गोया एक मेला-सा प्रतीत होता है। कमाद के खेत में सैंकड़ों आदमी कमाद काटने तथा गन्ने छीलने में लगे हुए हैं। आजकल यह इलाक़ा, जहाँ कुछ साल पहले उजाड़ मैदान दिखाई देते थे, दुआबे को मात कर रहा है। जिधर देखो कमाद के खेत खड़े हैं। कई जगह बेलने कमाद पीड़ रहे हैं। गुड़ बन रहा है। सबकी भट्टियाँ एक विशेष ढंग की हैं, जिनमें आँच ज़्यादा से ज़्यादा पैदा होती है।

7 फ़रवरी, 1944 आज एक चिट्ठी जो एक सत्संगी ने दोमैली, ज़िला जेहलम से भेजी है उसका यहाँ वर्णन करना उचित समझता हूँ- 'श्री हुजूर महाराज सतगुरु दीनदयाल जी- राधास्वामी। मैं आपका अनजान बच्चा हूँ। मेरी उम्र इस समय अठारह साल की है। मुझे नाम मिले हुए चार-पाँच साल हो गये हैं। हुजूर की दया से भजन-सिमरन बना हुआ है। हुजूर महाराज जी आपका स्वरूप भी अंग-संग है। सतगुरु महाराज जी मेरे साथ एक घटना हुई है, जो कि दिन के चार बजे के करीब हुई। महाराज जी, मैं एक शहर से साइकिल पर सवार होकर घर को आ रहा था। कच्ची सड़क थी। रास्ते में कोई जंगल न था।

मैदानी रास्ता था। एक जगह सड़क का मोड़ था और रास्ता कुछ ख़राब था। जब मैं मोड़ पर आया तो क्या देखता हूँ कि सड़क के किनारे पाँच पठान खड़े हैं। वे मुझे देखकर कहने लगे कि खड़े हो जाओ। मैं खड़ा नहीं हुआ। दूसरी बार फिर उन्होंने जोर से कहा। मैं उनके पास से गुज़र गया, फिर उन्होंने जोर से कहा कि खड़े हो जाओ। मेरी साइकिल गिर गई और मैं भी गिर गया, मगर झट उठकर खड़ा हो गया और उनसे कहा कि क्या बात है ? उन्होंने कहा कि तुम्हारी जान लेनी है। जब मैंने उनकी तरफ़ देखा तो ऐसा मालूम हुआ कि उनकी शकलें पहले से बदल गई हैं। मुझे सिमरन भी याद न रहा। हुजूर केवल आपको याद किया तो अन्दर आपके दर्शन हुए और आप चले गए। इतने में एक मनुष्य बिल्कुल आपका स्वरूप धारण करके आ गया और वे पाँचों हट गये। वह कहने लगा कि ऐ लड़के! तूने मुझे पहचाना नहीं ? मैं तुम्हारा गुरु हूँ, मुझे मत्था टेक! मैं घबराया हुआ था, जब उसकी तरफ़ ध्यान से देखा तो उसका माथा और आँखें सही न लगी। मैंने जवाब दिया कि तू ज़माने का ठग होकर मुझे गुरु बनकर धोखा देता है। मैं तुझे मत्था नहीं टेकूँगा। उसने मुझे बहुत धमकाया और जोर दिखाया। मुझसे सिमरन भी नहीं हो सकता था। फिर मैंने दिल में जोर देकर सिमरन याद किया। जब तीन-चार बार सिमरन किया तो देखते ही देखते वह गायब हो गया। जब वह गायब हो गया तो हुजूर महाराज जी आप झट सोटी पकड़े हुए दस क़दम पर आते दिखाई दिये। मैंने अच्छी तरह पहचान कर सिमरन करते-करते आपको राधास्वामी बुलाई और आपने भी राधास्वामी बुलाई। फिर मैंने आपके चरणों में सिर रखा। फिर हुजूर आपने मुझे थपकी दी और कहा शाबाश, बच्चा तुमने ठीक किया, ऐसा ही होना चाहिये था। अब तुम जाओ। मैंने विनती की कि हुजूर पहले आप जायें। फिर हुजूर आप मेरे सामने वहाँ से दस क़दम जाकर लुप्त हो गये। वे जो पाँच पठान थे, वे मुझे कहने लगे कि हमें भी आज्ञा दो। हम भी जायें। मैंने उनको कहा कि जाओ न जाओ हम क्या करें। मैं वहाँ से साइकिल पर सवार होकर चल पड़ा और वे पठान भी मेरे पीछे चल पड़े। एक फ़र्लाँग जाकर मैंने उनसे कहा कि क्या कहते हो ? उन्होंने कहा कि हमें आज्ञा दो ताकि हम भी जायें। मैंने उनको कहा कि अच्छा जाओ। मेरे कहने की देर थी कि वे उसी जगह देखते ही देखते लुप्त हो गये। हुजूर महाराज जी, मैं यह स्वप्न या भजन में बैठने की हालत बयान नहीं कर रहा। यह हालात मेरे साथ रास्ते में

दिन में चार बजे हुए हैं। हुजूर महाराज जी वह जो आपका रूप बनाकर आया था वह तो काल होगा और पाँच पठान जो थे वे कौन थे ? और आप भी देह समेत आये थे और मुझे थपकी दी थी...।

हुजूर ने कहा कि शुक्र कर वच गया है। मैंने विनती की कि हुजूर वे पठान उससे जाने की आज्ञा क्यों माँगते थे ? जवाब दिया कि वे उसकी तरफ़ आकर्षित और उसके अधीन हो गये थे।

9 फ़रवरी, 1944 आज एक सत्संगी का लम्बा-सा पत्र कीनिया (अफ्रीका) से आया है। उसका पहला भाग नोट करने लायक है—'राधास्वामी—इससे पहले एक प्रार्थना-पत्र आपकी सेवा में 19-12-43 को जामनगर से लिखा था कि मैं आपकी दया तथा मेहर से आपका सहारा लेकर अफ्रीका जा रहा हूँ। आपका तुच्छ सेवक 15-1-44 को शाम को पाँच बजे राजी-खुशी मोम्बासा पहुँच गया है। इस पत्र को लिखने का मेरा यह मतलब है कि आपसे क्षमा माँगू क्योंकि रास्ते में मैंने आपको बड़ा कष्ट दिया। वह यह है कि 7-1-44 और 8-1-44 के बीच की रात को जहाज़ भारी तूफ़ान की लपेट में आ गया। रात का एक बजा था। समुद्र की लहरें जहाज़ को चलने न देती थीं। कभी इधर से तो कभी उधर से जहाज़ के साथ टकराती थीं। सब यात्री, जिनकी संख्या एक सौ दो थी, परेशान थे। परन्तु कोई पेश न जाती थी। अन्त में जहाज़ इतना डोलने लगा कि सब जीवन से निराश हो गये। जहाज़ के कैप्टन ने कहा कि सब यात्री जहाज़ के नीचे के भाग में चले जाओ। उनसे पूछा गया कि अब क्या होगा ? कैप्टन साहिब ने फ़रमाया कि अब हम सब साहिबान अल्ला मियाँ के सहारे हैं। बस सच्चे पिता! उस समय जो दशा हुई वह बयान से बाहर है। यह ठीक है कि पूत कपूत हो जाते हैं लेकिन माँ-बाप साथ नहीं छोड़ते। उस समय केवल आप ही थे और कोई न था। आपके चरणों की तरफ़ ध्यान किया और बेहोश हो गया। बेहोशी में सेवक आपकी सेवा में उपस्थित हुआ। उस समय आप आराम कर रहे थे। मैंने बिना आदर-मान के आपको पुकारा कि आप यहाँ आराम कर रहे हैं और हम इस मुसीबत में फँसे हुए हैं। यह सुनते ही आप बिना कोई जवाब दिये नंगे पाँव चल पड़े। उसके बाद जब होश आया तो सब ऊपर की मंज़िल के लोग धीरे-धीरे ऊपर जा रहे थे और कैप्टन साहिब फ़रमा रहे थे कि अब कोई ख़तरा नहीं है, निश्चिन्त होकर सो जाओ। उस समय आपकी दयालुता देखकर मेरा मन भर आया''।

पूरी ज्ञान में हिन्दुओं में मूर्ति-पूजा का विकास बहुत ज्यादा है। एक सम्प्रदाय ने यह धेजा है कि पवित्रतम लोग कहते हैं कि जो मूर्ति को पत्थर मान कर पूजा करता है उसके लिये तो मूर्ति-पूजा निष्फल है परन्तु जो ब्रह्मा-भक्ति के साथ उस मूर्ति को पूजता है तो वह मूर्ति वास्तव में उसके लिये उस देवता का काम करती है। उस देवता के सहाय्य दर्शन भी हो जाते हैं। पिछले साल इलाहाबाद में ... काम का एक निर्धन ब्राह्मण था जो श्री कृष्ण का बड़ा भक्त था और उसे श्री कृष्णजी के दर्शन हुए। उस ब्राह्मण ने उससे अपनी गरीबी दूर करने की प्रार्थना की। अब भी वह आदमी जीवित है और काशी धनवान् व्यक्तिओं में उसकी निजली है। हुजूर ने जबकि लिखवाया :

मूर्ति-पूजा उन व्यक्ति-मुक्तियों में जो अन्दर जाते थे, इसलिये रखी थी कि जो लोग बाहरमुखी हैं, उनकी अन्दर जाने की लगन पैदा हो। तात्पर्य यह है कि जिन मूर्तियों के प्रति उनमें लगन पैदा की जाती थी उसका उद्देश्य यह था कि वे अभ्यास करते-करते उन देवों में पहुँचें, जहाँ-जहाँ वे महात्मा अपने अभ्यास का फल रक्षायी व्यक्तियों पर धोखे रहे हैं या जो-जो ब्रह्म, परब्रह्म और आत्मलोक में समा लगे हैं। परन्तु ज्योतिषिक मन अन्दर जाने नहीं देता, वे लोग पवित्र बन करके परदा न खोल सके। इसलिये बाहर माना देवाने लगे और पूजा करके बाहर ही बाहर रह लगे। जिन महात्माओं की गुजरी चुप बीत लगे अब उनका आप सम्भव नहीं। यदि उन्होंने भूतों-प्रेतों की तरह संसार में ही निवास था तो अभ्यास क्यों किया ? यदि वे आत्मिक से मिले तो फिर उन्हें इस पानी दुनिया में आने की क्या तकल्ल है ? यदि सब देवों से सीखा और दुःखी देव है तो वह दुनिया है। ज्यों-ज्यों अन्दर देखी व्यक्तियों पर जाओगे कुछ ही कुछ झूलत होगा। इस चीरासी के जेलखाने में आने की फिर इच्छा नहीं रहेगी। जिस प्रकार हम पहाड़ की ऊँचाई पर ज्यों-ज्यों ऊपर जाते हैं, ठण्डक बढ़ती जाती है। इसी प्रकार ज्यों-ज्यों कहानी व्यक्तियों पर चढ़ोगे, शान्ति और खुशी प्राप्त होगी।

इस जिलेकी मैं शान्ति नहीं। शान्ति तुम्हारे अन्दर है। सो जब तक तीन गुणों की रचना के पार नहीं जाओगे, शान्ति नहीं मिलेगी। यदि वास्तविक शान्ति है तो मन और मया के घेरे से परे है। जहाँ तक मन और मया की रक्षावट है, पूर्ण शान्ति प्राप्त नहीं होती और जो तुम लिखते हो कि यदि मूर्ति को अवतार, देवता, ब्रह्म तथा परब्रह्म मान कर पूजे तो वह मन का धोखा है। मन धोखा दे रहा है।

ऐसे लोग अपने वेद-शास्त्रों से अनभिज्ञ हैं। वह सारी मूर्ति पवित्र तत्वों की बनी हुई है। मूर्ति में एक तत्व है, मिट्टी का कोई धातु, काँची, सीसा, सोना, चाँदी आदि मिट्टी है। वनस्पति में भी एक तत्व है, वह है पत्ती। बीड़े, मखोली में दो तत्व, तबक और आग प्रचलन हैं। पक्षियों में तीन और जानवरों में चार हैं। इनमें आकाश तत्व कम है। केवल मनुष्य में ही पवित्र तत्व पूर्ण है। हिन्दू लोग इस बात पर जोर देते हैं कि "जहाँ आत्मा तहाँ बाबा"। यदि मनुष्य पवित्र तत्व का मालिक होकर एक तत्व मूर्ति या वृक्ष को पूजता है तो वह भा कर क्या बोलता ? पत्थर या वृक्ष। यह ईश्वर के रूप को एक मिट्टी की मूर्ति में देखता है, जबकि उसके अपने अन्दर ईश्वर, ज्ञान ईश्वर और ब्रह्म साक्षात् हैं। अगर वह महात्मा को छोड़कर नीचे गिरता है तो मनुष्य कोनि से नीचे क्यों नहीं जावेगा ? यदि बादशाह बनाकर एक चण्डी की सेवा करता है तो वह क्या देगा ?

मनुष्य के अन्दर सम्पूर्ण-ब्रह्माण्ड है। कुल देवी देवता, कुल अक्षर, वैशम्पय, ईश्वर, परमेश्वर, ब्रह्म, परब्रह्म और स्वयं परमात्मा इसके अन्दर है। उसको चाहिये कि अन्दर खोज करे। कई मूर्ति-पूजक घेरे पास आते रहते हैं और वे भी बोलते हैं कि जिन-जिन महात्माओं को हम पूजते हैं वे हमें अन्दर दर्शन देते हैं। मैंने उनसे कहा कि तुम उनको परखो कि वे स्वयं अवतार या महात्मा आते हैं या तुम्हारे मन की कल्पनाएँ हैं। वे पूछते हैं कैसे परखें ? मैं उनको कहता हूँ कि भाई जब तुम ध्यान में बैठो और तुम्हारा इष्ट तुम्हारे सामने आ जावे तो तुम उससे यह सवाल करो कि तुम्हारा देश कौन-सा है ? मुझे कब से चलेगा ? मुझे क्या-क्या करना चाहिये ? आप घेरे अन्दर का परदा खोल कर कहानी मण्डली में तो चलो। जब वे लोग ऐसा करते हैं तो दूसरे दिन वे भी पास जाकर आकर कहते हैं कि साहिब वह मूर्ति तो बोलती नहीं। कई बार हमने हाथ-पैर जोड़े, मिनती, खुरामदे की मगर वह चुप की चुप खड़ी है। मैं उनको समझाता हूँ कि वह महात्मा नहीं आवे, न आवेगी। वह तुम्हारे मन का प्रभु है और इरादा का प्रतिचित्र है। इसकी जानकारी के लिये तुम एक पिनट पूर्ण की ओर ध्यान करो, अर्ध वन्द न करो। जब एक पिनट के बाद अर्ध वन्द करोगे तो पूर्ण जायगा है। अगर चन्द्रमा या लक्ष्म का ध्यान करोगे तो चन्द्रमा या लक्ष्म आया जा जावेगा। इसी प्रकार यदि आप अर्ध खुन्ती रखें और दो पिनट तक किसी के मकान को देखें तो मकान अन्दर आ जावेगा। जब उन लोगों को विचित्र

आता है। मनुष्य को मनुष्य से नीचे किसी भी पशु, पक्षी, वृक्ष या पत्थर आदि का ध्यान करने की आवश्यकता नहीं। सारी दुनिया में यदि कोई श्रेष्ठ योनि है तो मनुष्य की है। जो दौलत ईश्वर ने मनुष्य के अन्दर रखी है वह और कहीं नहीं। सच्ची मसजिद, सच्चा ठाकुरद्वारा, सच्ची धर्मशाला, सच्चा मन्दिर यदि कोई है तो मनुष्य के अन्दर है। अफसोस है कि दुनिया चेतन मन्दिर को, जिसमें कि ईश्वर बोल रहा है और जिसमें आत्मा परमात्मा मौजूद हैं, छोड़कर जड़ वस्तुओं में परमात्मा को ढूँढती है।

यद्यपि हमें सिवाय परमेश्वर के इन चीजों की आवश्यकता नहीं, फिर भी यदि उन देवी-देवताओं और अवतारों से मिलना है और उनसे बातें करनी है तो अन्दर के मन्दिर में चलो। जब खूब अभ्यास करके मूल-चक्र में जाओगे तो गणेश मिल जावेंगे। इन्द्री-चक्र में जाओगे तो ब्रह्मा मिल जायेंगे। नाभि में जाओगे तो विष्णु मिलेंगे। हृदय में जाओगे तो शिव। यदि कण्ठ में जाओगे तो तुम्हें आदि शक्ति के दर्शन होंगे जो कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीनों की माता है। आँखों के पीछे छुटे चक्र में जाओगे तो वहाँ तुम्हारा मन और आत्मा उपस्थित हैं। जब तुम अपनी वास्तविक बैठक से ऊपर चढ़ोगे तो कुल ब्रह्माण्ड आ जायेगा, जिसके विषय में नाम देते समय समझाया जाता है।

कुछ लोग कहा करते हैं कि धने भक्त को पत्थर से परमेश्वर मिला है। यदि धन्ना को मिला तो उनको भी मिलना चाहिये। परन्तु कदापि नहीं। सब खाली के खाली हैं। वास्तव में बात क्या थी? धन्ना गुरु था और त्रिलोचन सेवक था। धन्ना उससे मूर्ति-पूजा छुड़वा कर ब्रह्म-पद में ले जाना चाहता था। क्योंकि धन्ना जाट था और त्रिलोचन ब्राह्मण था, इसलिये ब्राह्मण जाट को कैसे गुरु मान सकता था। धन्ना नादान बन कर, त्रिलोचन जहाँ मूर्ति-पूजा करता था, वहाँ जा बैठा। चुपचाप देखता रहा। क्योंकि त्रिलोचन का ध्यान मूर्ति में था और त्रिलोचन उसको इष्ट मानकर प्यार करता था, धन्ना ने कहा, पण्डित जी, जैसे तुम करते हो मैं भी कर सकता हूँ या नहीं? त्रिलोचन ने कहा, "कर सकते हो। मैं तुम्हें ठाकुर दे दूँगा मगर इस शर्त पर कि तुम मुझे दूध देनेवाली गाय दे दो"। धन्ना ने गाय लाकर हाज़िर कर दी। त्रिलोचन ने सोचा कि यह मूर्ख जाट क्या पूजा समझेगा? उसने तोल करनेवाला चार-पाँच सेर का पत्थर उसको दे दिया कि यह तेरा ठाकुर है। हमारे सब ठाकुरों का सरदार है। धन्ना ने पत्थर को तो घर के आगे फेंक दिया और दो

महीने के बाद त्रिलोचन के पास पहुँचा, जहाँ वह पूजा करता था। धन्ना देखता रहा। जब त्रिलोचन ने पूजा समाप्त की और ठाकुर की मूर्ति को भोग लगाने लगा तो वह मिठाई मूर्ति के मुँह से लगाकर आप खाने लग गया। धन्ना बोला— "पण्डित जी, क्या अनर्थ कर रहे हो। अपने ठाकुर से ही ठगी कर रहे हो। उसको खिला दिया?" त्रिलोचन ने कहा, "धन्ना, कभी पत्थर भी खाय़ा करते हैं"। धन्ना ने जवाब दिया कि यदि पत्थर नहीं खाते तो तुम उससे क्या लोगे? तुम मेरे साथ चलो, मेरा ठाकुर मेरा सब काम करता है। त्रिलोचन चकित होकर पूछने लगा, क्या धन्ना तुम सच कहते हो? जब त्रिलोचन धन्ना के साथ गया तो क्या देखता है कि धन्ना का रहट खुद बख़ुद चल रहा है। त्रिलोचन ने कहा कि मुझे तो दिखाई नहीं देता। उस समय त्रिलोचन को समझाना शुरू किया कि तुम बाहरमुखी हो गये हो। तुम में ब्राह्मण होने का, अपनी जाति का, अपनी विद्या का अहंकार है। जो-जो वुटियाँ त्रिलोचन में थीं, धन्ना ने सब बताई। त्रिलोचन ठण्डे दिल से सुनता रहा। अन्त में रो पड़ा कि तुम जो कुछ कह रहे हो वे सब दोष मुझ में हैं। अब मैं तुम्हारी शरण में आ गया हूँ। मुझे असली ठाकुर दिखाओ। उस समय धन्ना ने उसको अन्दर जाने का रास्ता बताया और ज्ञान दिया।

इसमें शक नहीं कि जब मनुष्य के मन में मूर्ति के प्रति प्रेम-प्यार और श्रद्धा होती है और उसके प्रति तरह-तरह के संकल्प पैदा करके उसको अपने विचारों में स्थान देता है तो उसे ऐसे लगता है कि मेरा सब काम मूर्ति ही कर रही है। जो अच्छे काम हुये वे मूर्ति की ओर से समझ लिये। जो काम फेल हुए वे अपने दुर्भाग्य के कारण सोच लिये। जितनी ऋद्धि-सिद्धि, शक्ति, करामात, कौतुक इत्यादि हैं, ये सब मनुष्य के मन और आत्मा के जौहर हैं। ज्यों-ज्यों आदमी सिमरन करके मन को एकाग्र करता है, इच्छा शक्ति दृढ़ होती जाती है। परन्तु जो मुक्ति देने वाली शक्ति है, जिसको नाम कहते हैं, वह इससे परे है। वह परिश्रम और अभ्यास से मिलेगी।

12 फरवरी, 1944 की शाम को हुजूर ने सिरसा सत्संग-घर में जाकर चालीस स्त्री-पुरुषों को नाम दिया। क्योंकि आज फालगुन की संक्रान्ति है, थोड़ा-सा सत्संग भी किया। हुजूर छोटे से छोट्य काम भी अपनी निगरानी में करवाते हैं। आम लोगों की तरह हुक्म देकर चले जाना काफ़ी नहीं समझते। जैसे आज खाली ड्रम वर्कशाप से घर लाने थे। कोई और तो हुक्म देकर चला आता

कि दो ड्रम ले आना। परन्तु हुजूर ने सोचा कि यह कोई और ही ड्रम न ले आये, इसलिये उनको स्वयं लदवा कर घर आये जबकि रात के नौ बजे थे।

15 फरवरी, 1944- पीर शो बयामोज* वाली बात है। यूँ तो यहाँ कारखाने में बहुत-सी नई बातें देखीं- कमाद का काटना, रस निकालना, खँड बनाना, डीजल इंजनों का काम आदि। आज कुछ कमाद बोने का ढंग भी सीखा। पहले जमीन में पानी देते हैं। जब पानी सूख जाता है, यानी जमीन इतनी सूख जाती है कि चलते समय कीचड़ नहीं होता तो उसमें दो-तीन बार हल चलाते हैं। फिर दो-तीन बार सोहागा फेर कर जमीन को समतल करते हैं। फिर खेत की बटें बाँधते हैं ताकि यदि नहर का पानी दिया जाये तो पानी खेत से बाहर न निकले। फिर एक-दो हलों से इसमें क्यारियाँ बनाते हैं, जिनमें सात-सात इंच के फासले पर गन्ने के टुकड़े बिछाये जाते हैं। ये टुकड़े कोई नौ-दो इंच के करीब लम्बे होते हैं और इनको थोड़ा पाँव से दबाते जाते हैं। इसके बाद सोहागा फेर कर मिट्टी से उन टुकड़ों को ढाँप देते हैं। इसी तरह पिछले साल जो मालटे, नींबू, सन्तरे के पौधों की जड़ों की मिट्टी को उखाड़ कर झाड़-झंकाड़ साफ़ किया गया था, वह परीक्षण (तजुर्बा) सफल हुआ। क्योंकि झाड़-झंकाड़ पौधों की खुराक को खुद खा जाते हैं, इसलिये यदि इसको हर साल पौधों की जड़ों से निकालकर बाहर फेंक दिया जाये और नई मिट्टी, जिसमें रेत मिला हो, जड़ों के आसपास एक गिलास शीरा मिलाकर डाल दी जाये और गोबर का खाद भी मिला दिया जाये तो फल खूब आता है और मीठा होता है।

19 फरवरी, 1944 को महाराज जी ने सुबह स्वामी जी महाराज के अन्तिम वचन पढ़वा कर राव बहादुर शिवध्यान सिंह जी को सुनाये। फिर कमाद के खेत में जहाँ लोग कमाद काट रहे थे, बातों-बातों में फ़रमाया कि स्वामी जी के ज्योति-ज्योत समाने के बाद एक बार हुजूर बाबा जी महाराज तथा हम आगरा गये। उस समय साधु हंसदास जी जीवित थे और राधा बाग में रहते थे। बड़ी कमाई वाले थे। उनसे हम मिलने गये तो एक बीबी ने, जो वहाँ उपस्थित थी, मुझे देखकर कहा कि अब इनको चाहिये कि स्वामी बाग आगरा में रहकर भजन-सिंमरन किया करें। इस पर साधु हंसदास जी गुस्से होकर बोले, अरे

*बूढ़े होकर भी कुछ सीखते रहो।

बावरी, तुम्हें क्या पता कि अभी इन्हें क्या-क्या काम करने हैं? कहाँ-कहाँ फिरना है? किस-किस बहाने जीव निकालने हैं? फिर साधु ने कहा, भई हमें तो स्वामी जी महाराज ने जैसे किसी को ओक भर कर देते हैं, वैसे दिया। मगर इनके बाबा जी को तो जैसे कोई दोनों हाथों से दौलत देता है, वैसे दिया।

आज एक सत्संगी के सवाल पर फ़रमाया कि यदि सत्संगी को सतगुरु पर विश्वास है और इस दुनिया की आशा-तृष्णा नहीं तो चाहे भजन नहीं किया फिर भी उसका जन्म नहीं होगा। परन्तु भजन बहुत भी हो और दुनिया की आशा-तृष्णा कोई दिल में हो, उस आशा को पूरा करने के लिये जन्म लेना पड़ेगा।

20 फरवरी, 1944- सुबह को मैं और हुजूर वर्कशाप से कमाद के खेत को जा रहे थे। हुजूर ने फ़रमाया कि वर्कशाप से दो मील इधर और दो मील उधर कुल चार मील का चौड़ा टुकड़ा किसी समय दरिया के नीचे था। इसके किनारे शहर बसे हुए थे। इस चार मील चौड़े टुकड़े का पानी मीठा है। परन्तु उससे आगे पानी खारा है और इस चार मील की हद के आसपास जो पुराने वक्तों के कुएँ निकलते हैं, वे केवल चालीस फुट नीचे जाकर समाप्त हो जाते हैं।

पानी यहाँ पास था। मैंने विनती की कि इतिहास में किसी ऐसे बड़े शहर का नाम नहीं आता जो कभी यहाँ बसा हो। हुजूर ने फ़रमाया कि एक महात्मा ने अन्तरी दृष्टि से बताया कि जो ऊँचा टीला सिकन्दरपुर से उत्तर की ओर दो मील की दूरी पर स्थित है और जिस पर बड़े-बड़े भारी लाल रंग के पत्थर पड़े हैं, वहाँ छः हजार साल पहले आबादी थी। रसूलपुर में जो थेहड़ी है वह सात हजार साल पहले की थी।

कालोऽयं निर वधिर्विपुला च पृथ्वी।

21 फरवरी, 1944 को हवा, वर्षा का जोर था। हुजूर शाम के पाँच बजे ही घर वापस आ गये। वहाँ एक सत्संगिन ने हुजूर को पत्र भेजा कि उसका लड़का, जो बहुत बीमार था, हुजूर का पत्र मिलने पर अच्छा हो गया है। मगर अब दूसरे लड़के की नौकरी में तरक्की भी होनी चाहिये। हुजूर ने फ़रमाया, 'यके रा बगुज़ार, दीगरे रा बगीर' अर्थात् एक को छोड़ और दूसरे को पकड़ और यह कविता पढ़ी।

आं शुनीदस्तती

कि दर सहराए और बार सालारे बे-उफ़ताद अज़ स्तारे।

गुफ़्त चश्मे तंगे दुनियादार रा या क़नाअत पर कुन्द या ख़ाके गोर।

अर्थात्, एक बार रेगिस्तान में एक सिपाही घोड़े से गिरा। कहने लगा कि संसार के लोगों की तंग नज़र या तो सन्तोष से भरती है या क्रुद्ध की मिट्टी से।

हुज़ूर की वापसी और डेरे में निवास

24 फ़रवरी, को हुज़ूर सिरसा से सुबह के सात बजे डेरे पहुँचे। रास्ते में डबवाली तक वर्षा होती रही। महीने का सत्संग 27 फ़रवरी को हुआ। 29 फ़रवरी को अमृतसर तशरीफ़ ले गये। तरनतारन बाबा बग्गा सिंह जी के यहाँ भी जाने का विचार था। लेकिन रईया से पता चला कि नहर की पटरी पर कटे हुए वृक्ष पड़े हैं, जिससे सड़क पर मोटर कार नहीं जा सकती। अमृतसर में हुज़ूर ने शाम और सुबह को दो सत्संग किये। गुरु-भक्ति पर जोर दिया। शाम को छः बजे के लगभग वापस डेरे तशरीफ़ ले आये। 4 मार्च को सिरसा जाने का विचार है।

2 मार्च, 1944 की शाम को महाराज जी ने एक विधवा स्त्री की विधुर बाबू से आनन्द-कारज द्वारा शादी करवाई। आनन्द कारज करने से पहले श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से गुरु अर्जुन देव का शब्द 'जो जो जूनी आयो तिह तिह उरझायो' पढ़ा गया। हुज़ूर ने फ़रमाया कि काल ने सत्पुरुष से एक वर यह लिया था कि जहाँ जिस रूह को भेजा जाये वहीं खुश रहे। एक सूअर से कहा गया कि आओ, तुम्हें अच्छी दुनिया में ले चलें। तो बोला, अभी बाल-बच्चे छोटे-छोटे हैं, वे मेरे बिना नहीं रह सकेंगे। फिर फ़रमाया कि गुरु तीन प्रकार के होते हैं। मुर्गी, कछुआ तथा कूँज जैसे। मुर्गी का अण्डा उसके शरीर की गर्मी से पकता है यानी जब तक चेला गुरु के पास है गुरु से लाभ उठा सकता है। जब दूर चला गया तो लाभ का रास्ता बन्द हो गया। ये हैं निचली श्रेणी वाले गुरु यानी जो आँखों से नीचे-नीचे पिण्ड देश में ही अभ्यास करते हैं, जैसे कि प्राणायाम करनेवाले योगी आदि। कछुए की दृष्टि से अण्डे पकते हैं। कछुआ पानी में रहता है, परन्तु पानी के किनारे कीचड़ में अण्डे देता है और उनको अपनी दृष्टि से पकाता है। तीसरे, कूँज जो सर्दियों के मौसम में पहाड़ों में अण्डे देती है और अण्डों को वहाँ छोड़कर आप मैदानों में आ जाती है। उसके अण्डे उसके

विचारों की धारा से पकते हैं। ऐसे ही पहुँचे हुए मुर्शिद (सतगुरु) हर समय विचार की धारा के समान अपने मुरीद (सत्संगी) के साथ रहते हैं। जैसे एक मुरीद, जोकि फ़ौज में लड़ाई पर गया हुआ था, लड़ाई से तंग आकर अपनी बन्दूक वहीं फेंककर पैदल चल पड़ा। रास्ते में दुश्मन के सिपाही थे। उसने समझा कि हमारे अपने सिपाही हैं। वहाँ से होता हुआ टैंकों की लाइनों को पार कर आगे गया। मुर्शिद का ध्यान किया तो मुर्शिद आ प्रगट हुए और बोले ये दुश्मन की फ़ौजें हैं। तुम जाओ, बन्दूक सँभालो, अभी नौकरी करनी है।

सिकन्दरपुर, देहली और रोहतक के दौरे का हाल

4 मार्च, 1944 को सुबह आठ बजे डेरे से कार में सिरसा की ओर खाना हुए। मौसम बिल्कुल साफ था क्योंकि वर्षा हुए सिर्फ चार-पाँच दिन ही हुए थे, इसलिये रेलगाड़ी के इंजन का धुआँ सर्दी तथा नमी के कारण वहाँ का वहीं खड़ा रहा और लक़ीर-सा प्रतीत होता था। ढिलवाँ के पास धुन्ध थी, क्योंकि गोली ज़मीन में से भाप निकल-निकल कर जम रही थी। हवा बन्द थी। वहाँ से जालन्धर, लुधियाना और जगराओं होते हुए डॉ. प्रेमनाथ साहिब के अस्पताल में पहुँच गये। डॉक्टर साहिब की तलाश की तो देखा कि एक बीमार को मेज़ पर लिटाया हुआ है और आँख का आप्रेशन कर रहे हैं। ऐसी अवस्था में उनको बुलाना और उनके काम में बाधा डालना ठीक न समझकर चुपचाप बाघापुराना, समालसर, कोटकपूरा और मुक्तसर से आगे निकल गये। जब मलोट ग्यारह मील रह गया तो अबोहर ब्रॉच बाँगला नहर के पास कार का तेल रुक गया। वहाँ एक से दो बजे तक सिर खपाई करके कार को आगे चलाया। फिर सिरसा जाकर ही दम लिया। रास्ते में रोटी आदि नहीं खाई। सिरसा में हम सबने, जो खाना लाये थे, खाया। वहाँ एक घण्टा ठहर कर शाम के पाँच बजे वर्कशाप को चल दिये। वहाँ पहुँचते ही हुज़ूर खेतों में तशरीफ़ ले गये। दास भी साथ गया परन्तु थकावट महसूस करके वापस आ गया और गन्ना चूसकर आराम कुर्सी पर लेट गया।

5 मार्च, रविवार शाम को सिरसा सत्संग-घर में सत्संग हुआ। फालगुन का महीना हुज़ूरी पोथी में से लिया गया :

फ़ागुन मास रंगीला आया। धूम धाम जग में फैलाया ॥
घर घर बाजे गाजे लाया।

तुझको फिर कर फ़ागुन आया। सम्हल खेलियो हम समझाया ॥

मन और इन्द्रियाँ सँभलकर खेलने से रुकती हैं। जैसा कि वारिसशाह ने समझाया कि 'तिलकन बाज़ी है वेहड़ा खेड़ियाँ दा, एथे सम्भल के पैर धरावना जी'। यह दुनिया ही खेड़ियाँ दा वेहड़ा है। बुरे कामों से बचना चाहिये। इसका उदाहरण मुझे डॉ. करतार सिंह जी ने वर्कशाप से घर पैदल आते हुए बताया। एक सत्संगी बड़ा अभ्यासी, 75 साल का बुजुर्ग था। सतगुरु का प्यारा था। एक बार शहर से अपने गाँव को जा रहा था। शाम को अँधेरा हो गया। रास्ते में गोगीरा ब्रॉच बड़ी गहरी और चौड़ी आती थी। उस पर रेल का पुल था। वह उस पुल पर से जा रहा था कि उसको ऐसा मालूम हुआ कि जैसे रेल के आने का शोर हो। बेचारा बड़ा घबरा गया और बेसुध हो गया। नीचे गहरी नहर और अँधेरी रात, पुल के बीच में से न इधर भाग सका न उधर। 'शबै तारीक व बीमे मोज व गरदाबे चुर्नी हायल' यानी काली रात, लहरों का डर और सिर पर मँडराता हुआ तूफ़ान वाला मामला हो गया। करे तो क्या करे ? अन्त में जो स्लीपर पुल के बाहर निकले हुए थे उन पर लेट गया, ऐसे कि सिर रेल से परे रहे। दो ट्रालियाँ आ रही थीं। एक ट्राली आकर जोर से टकराई। उसकी सारी पसलियाँ टूट गईं और कन्धे की हड्डी उतर गई। रेलवे का जमादार पुल के सिरे से देख रहा था। उसको ऐसा मालूम हुआ कि जैसे कोई सफ़ेदपोश सफ़ेद दाढ़ी वाला बुजुर्ग जल्दी-जल्दी पुल से ट्रालियों की ओर भागा जा रहा हो। सबसे पहले ट्राली उस सत्संगी से टकरा कर चार क़दम पीछे हट गई। दूसरी भी पीछे हटी। बड़ा आश्चर्य है कि वह टक्कर खाकर नहर में नहीं गिरा। उसको डॉ. करतार सिंह के घर लाये, क्योंकि दोनों में बड़ा प्रेम था। वहाँ से सरकारी अस्पताल में ले गए। एक मस्त फ़क़ीर वहाँ घूमा करता था। वह डॉक्टर साहिब से पूछने लगा कि वह कहाँ है जिसको चोटें आई हैं। सो उसको अस्पताल में ज़ख्मी के पास ले गए। बोला, अरे! तुमने गाय को क्यों मारा था ? देखो, बदला देना पड़ा। पता चला कि उस सत्संगी ने अपनी जवानी में अपनी गाय को ऐसी जोर से लाठी मारी थी कि बेचारी की पसलियाँ टूट गईं और दो घण्टे बेहोश रही। यह उसके सिर पर कर्मों का कर्ज था। उसको साफ़ करना आवश्यक था। जो सतगुरु ने

टाली की टक्कर लगवा कर साफ़ किया। इकबाल साहिब का यह शेअर बार-बार मेरे सामने आता था :

कभी ऐ हक़ीक़ते मुन्तज़िर नज़र आ लिबासे मजाज़ में।

कि हज़ारों सिजदे तड़प रहे हैं मेरी ज़बीने नियाज़ में।

परन्तु मनुष्य तो स्वयं हक़ीक़त है, जो मजाज़ी लिबास (देह का चोला) पहन कर आई है। इसलिये मौलाना रूम ने फ़रमाया था :

मस्जिदे अस्त अंदरूने औलिया,

सिजदा गाहे जुमला अस्त औज़ा खुदा।

भाव खुदा औलिया-अल्लाह (प्रभु के सन्तों) के अन्दर है। जिसको सिजदा करना हो वह औलिया को सिजदा करे। औलिया और आम मनुष्य दोनों के अन्दर खुदा है। औलिया के अन्दर परदा खुला हुआ है। आम मनुष्य के अन्दर भी खुदा है। परन्तु खुदा और मनुष्य के बीच अहंभाव का परदा है। यदि पहुँचे हुए गुरु मिलें तो उस परदे को खोलकर परमात्मा का नूर दिखा दें। जब परदा हट गया तो वह मनुष्य भी मायावी चोले में हक़ीक़त होगा। हक़ीक़त तो हमेशा मनुष्य के चोले में दुनिया में आती रहती है। जैसे कि तुलसी साहिब जी ने कहा है 'सन्त न होते जगत में, जल मरता संसार'। मगर दुनिया के लोग हक़ीक़त को इस पहनावे में देखने से इनकार करते हैं। इनकार ही नहीं करते बल्कि लड़ने को तैयार रहते हैं। इसलिये मौलाना रूम साहिब ने इस विषय पर बड़ा लम्बा-चौड़ा भाषण मसनवी में लिखा है :

क्रौम गुफ़्तंद ऐ गिरोहे मुदई, कू गवाहे तिवो इलमे वाफ़ई।

हुबो जाह व सरवरी दारदहर ओ, कै शुमारद ख़वेश अज़ पैगम्बरों।

चू शमा बस्ताइ हम ख़्वाबों ख़ुरेद, कै शुमा सैयादे सी-मुर्गे दिल एदे।

भाव लोग कहते हैं कि हे आन्तरिक ज्ञान की डींग मारने वालो! जिसके मन में पदवी और मान पाने की धुन है वह कैसे अपने आपको परमात्मा का प्यार कह सकता है ? तुम, जो कि सदा खाने और सोने की सोच में रहते हो, किस तरह आत्म-ज्ञान को पा सकते हो ?

बस यही हाल हम सबका है, जिसका नज़्शा मौलाना साहिब ने मसनवी में खींचकर दिखा दिया है। इनसान भी सच्चा है। वे उस व्यक्ति को कैसे

पहचाने, जो वेशक हमारी तरह खाता-पीता और बाल-बच्चेदार है, परन्तु वास्तव में हमारे जैसा मनुष्य नहीं बल्कि खुद परमात्मा स्थूल देह धार बन आया है। उनकी आँखों के आगे धर्म, जाति, देश-विदेश के भेद-भाव, सांसारिक लालच आदि के परदे लगे हैं। वे जो कुछ देखते हैं उन परदों में से देखते हैं। कोई बिरले ही, जिन पर प्रभु की कृपा होती है, खोजी नज़र से ऐसे दावों की जाँच-पड़ताल करते हैं। पहले तो दुनिया और दुनियादारों के दिल में इस पहनावे में सच्चाई को ढूँढ़ने का शौक ही नहीं, उनको तो दुनिया का रुपया-पैसा, स्त्री, बाल-बच्चे प्यारे हैं। बहुतेरों को दुनिया के धन्धों से सच्चाई की खोज के लिये फुर्सत ही नहीं। जो इन रुकावटों से बचा वह अपने धर्म और रीति-रिवाजों की रंगीन ऐनक को आँखों पर चढ़ाये हुए है। सच्चाई का सफ़ेद उजाला उसे कैसे नज़र आये। कामिल फ़कीर फिर उसे उसके अपने धर्म के विचारों के अनुसार समझाने के प्रयत्न करते हैं। जिनकी समझ में उनकी बात आ जाती है वे उनको इस पहनावे में सच्चाई का जलवा दिखाते हैं। फिर एक और भारी रुकावट है जिसको लोक-लाज कहते हैं। जैसे कि शम्स तबरेज़ ने कहा है :

गुफ़्ता कि कूस्त रहज़न, गुफ़्तम हमीं मुलामत।

अर्थात् पूछा कि ठग कौन है ? कहा कि लोक-लाज, निन्दा आदि का डर।

जब-जब परमात्मा इस पहनावे में आता है वह दुनियादारों से बचने के लिये अपनी निन्दा या चुगली करवाने का सामान उत्पन्न कर लेता है। जैसा राधास्वामी दयाल ने फ़रमाया है, 'निन्दा चौकीदार बिठाई। कोई जीव धसने नहीं पाई'। पिछले महात्माओं को, जब वे मनुष्य के रूप में महात्मा बनकर इस संसार में आये, लोगों ने उन्हें कितना दुःख दिया। हज़रत ईसा, हज़रत मुहम्मद, राम, कृष्ण, कबीर साहिब, गुरु नानक साहिब इत्यादि को लोगों ने उनकी बात सुनने और उनका आदर-मान करने की बजाय हर प्रकार से कष्ट पहुँचाये। लेकिन जिन लोगों ने सौभाग्य से उन महात्माओं की शिक्षा को मान लिया, वे लाभ उठा गये। शेष ख़ाली रह गये। अब हम हैं कि उन गुज़रे हुए महात्माओं की शिक्षा को दिखावे के लिये मानकर और भेद-भाव में पड़कर कहते हैं कि अब उनके बाद कोई महात्मा नहीं आयेगा, जैसे कि अब परमात्मा ने इस पहनावे में आने का नियम ही समाप्त कर दिया हो। वास्तव में बात यह है कि परमात्मा इस पहनावे में आता रहा है और आता रहेगा। जो-जो उसको इस पहनावे में पहचान लेंगे, उनका काम बन जायेगा। शेष

खाली फिरते रहेंगे। वे दुनिया के बन्दे हैं। गुजरे हुए महात्माओं को मानना आसान है। जीवित महात्मा की इच्छानुसार काम करना और उसके हुक्म पर चलना बहुत कठिन है। लेकिन उसके बिना गुजारा भी नहीं है। इसे प्रमाणित करने के लिये कि परमात्मा इस पहनावे में आता है, बुल्लेशाह ने कहा है : 'मौला आदमी बन आया'। गुरु अर्जुन देव जी :

हर जीओ नाम परयो रामदास ।

शम्स तबरेज : 'औं बादशाहे आजम दे बस्ता बूद महकम।

पोशीद दलिक आदम यानी कि बर दर आमद।

वह शहंशाह दरवाजा बन्द किये हुए था। फिर वह मनुष्य के भेस में दरवाजे पर आया।

मौलाना रूम : चूं कि करदी जाते मुर्शिदा रा क़बूल।

हम खुदा दर जातिश आमद हम रसूल।

जब तूने मुर्शिद (सतगुरु) को मान लिया तो उसमें खुदा भी आ गया और रसूल भी।

आज 6 मार्च को हुजूर वर्कशाप तथा खेतों में नहीं गए। कल आपकी आँखों में कुकरा फूल गया था। आज कास्टिक लगाया तो तकलीफ़ ज्यादा हो गई है। बिस्तर पर आराम कर रहे हैं। शाम के चार बजे हुजूर को कुछ आराम हो गया। हुजूर वर्कशाप में तशरीफ़ ले गए। कमाद की बुआई का काम जारी है। 8 और 9 मार्च, दो दिन कमाद की बुआई थैहड़ी रसूलपुर के पास हौदियाँ में होती रही, जिसको मोरीवाला से रास्ता जाता है। आज एक सत्संगी का पत्र आया कि मैंने 27 फ़रवरी को नाम लिया था। अब सिमरन खुद-ब-खुद जारी है यानी नाम लेने के एक सप्ताह बाद सिमरन पक गया। पिछले जन्म के संस्कार और मेहनत। कुछ लोग तो वर्षों तक इस स्थान पर नहीं पहुँच पाते। संस्कृत में ख़ुब कहा है कि सिद्धि यानी सफलता प्राप्त होने में अनेक जन्म लग जाते हैं। निराश होकर छोड़ न दें। जैसे मौलाना रूम ने कहा है : 'अन्दरी राह भी तराश व भी ख़राश, ता दमे आखिर वले फ़रग़ मबाश'⁹ इस राह पर आखिरी साँस तक बढ़ते चलो, कभी आलस न करो।

जहाँ तक किसी ने इस जन्म में उन्नति कर ली अगले जन्म में फिर वहीं से आरम्भ करेगा, परिश्रम निष्फल नहीं जाता। भगवान् कृष्णजी ने भी गीता में यही कहा है कि योगभ्रष्ट यानी वह योगी जिसको योग में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हुई और मृत्यु हो गई, वह फिर मनुष्य जन्म में आयेगा। फिर उसको योग पूर्ण करने का अवसर मिलेगा या तो सत्संगी अभ्यासियों के घर पैदा होगा या किसी धर्मात्मा वंश में, जहाँ कि उसे पूर्ण भक्ति करने का अवसर मिल जायेगा। इसलिये हर व्यक्ति को चाहिये कि पूर्ण गुरु से नाम लेकर मेहनत करे। यदि मेहनत नहीं कर सकता तो सत्संग करे या साध संगत की सेवा करे। यदि पूर्ण गुरु नहीं मिला या उस पर विश्वास नहीं आया तो साधुओं-महात्माओं की खोज जारी रखे और उनकी सेवा करता रहे। यह भी बेकार नहीं जायेगी। जैसे शेख़ सादी ने फ़रमाया है, 'शायद कि वक्ते रसी कामिले।' यानी सम्भव है कभी तेरा किसी पूर्ण सतगुरु से मेल हो जाये। कमी है तो इच्छा की। हमारे अन्दर रूहानी खोज और तरक्की की चाह नहीं। इसीलिये मौलाना रूम ने फ़रमाया है, 'ब-हर हाले कि बाशी में-तलब' यानी, जिस हाल में भी रहो मालिक से मिलने की मन में तड़प रखो। कमी है तो तड़प की। हमारे अन्दर तड़प नहीं है।

इस समय 6 मार्च को रात के साढ़े ग्यारह बजे हैं। मैं अभी सत्संग से आया हूँ, जोकि सिकन्दरपुर के शान्ति आश्रम के आँगन में हुआ। मौसम बड़ा सुहावना है। न सर्दी है न गर्मी। स्वामी जी की वाणी में से आसाढ़ और सावन के महीने पढ़े गए। जिनका अर्थ है कि जो मनुष्य दुनिया में आता है, किसी न किसी आशा अर्थात् पहले जन्म की इच्छा के कारण आता है। सत्संग के बाद हुजूर ने लाल सिंह मियाँविण्ड वाले की कहानी सुनाई कि वह बाबा जी महाराज के समय में बड़ा प्रेमी सत्संगी था। जब डेरे आता कभी खाली नहीं बैठता। या तो सत्संग सुनता या सेवा करता। यदि कुछ न होता तो रस्सी ही बटता रहता या बाड़ लगाता रहता। उसके पास अपनी ज़मीन बहुत थोड़ी थी। लोगों से लेकर खेती करता था लेकिन इस विचार से कि किसी मालिक की बटाई का दाना उसके पास न रह जाये वह हरएक मालिक की ज़मीन का खिलवाड़ा उसी के खेत में लगा कर अनाज निकालता था। इस प्रकार से उसे कई जगह खिलवाड़े लगाने पड़ते। लोग कहते भी इतनी जगह इतने खिलवाड़ों की देखभाल कैसे करोगे ?

तो जवाब दिया कि गुरु कर लेगा। सो एक बार कुछ बदमाशों ने सोचा कि आओ इसका खिलवाड़ा जला दें। वे इकट्ठे होकर रात के समय पहले एक खिलवाड़े पर गये और पुकारा, 'लाल सिंह तुम जागते हो!' आवाज आई। 'हाँ!' फिर दूसरे पर गये वैसे ही पुकारा, 'लाल सिंह तुम जागते हो!' आवाज आई, 'हाँ जागता हूँ।' उन्होंने सोचा कि एक खिलवाड़े से दूसरे में भाग कर आ गया होगा। फिर तीसरे पर गये। वहाँ आवाज दी तो जवाब मिला 'हाँ जागता हूँ।' उस समय से लोगों को विश्वास हो गया कि भाई लाल सिंह करनी वाला व्यक्ति है और उसकी मान्यता होने लगी। कुछ समय के बाद वह तंग आ गया। उसके गाँव में एक बीबी साहिब देई प्रेमी अभ्यासिन थी। एक दिन वह उसे मिलने आई, तो लाल सिंह ने कहा कि अब दिल दुनिया से तंग आ गया है। अब तो यहाँ से चले जाने को जी चाहता है। लेकिन एक बड़ी बात बाकी है। उसने पूछा क्या? तो बोला कि बताऊँगा। कुछ समय बाद वह अपने भाई का भैंसा खोल रहा था कि उस भैंसे ने दोनों सींग उसके पेट में मार कर उसकी आँतें निकाल दीं। एक हकीम ने उसको सी दिया। परन्तु लाल सिंह बजाय चारपाई पर लेटने के चल कर घर चला गया। जिससे सिलाई फट गई और फिर ज़ख्म हो गया। लेकिन लाल सिंह का चेहरा खुश तथा लाल था। जब लोग आते तो मुँह ढाँप लेता। साहिब देई ने पूछा तो बताया कि वह भैंसा पिछले जन्म में सुनार था। मैंने छवी से उसकी आँतें बाहर निकाली थीं। अब वह बदला देना पड़ा। अच्छा हुआ कि हिसाब साफ़ हो गया। अब मैं जाता हूँ।

इसके बाद डॉ. करतार सिंह ने सत्संग में बताया कि एक बार उसका लड़का सत्संग सुनकर ब्यास से ट्रेन में घर वापस आ रहा था। रास्ते में एक सूबेदार मेजर से बातचीत हुई तो उसने कहा कि यह क्या, मैं तुम्हें अपनी घटना बताता हूँ कि जब जापानियों ने अंग्रेज़ी जहाज़ प्रिंस आफ वेल्स पर सिंगापुर में बमबारी की तो मैं जहाज़ में था। जापानियों ने चिमनी में बम मारा और उसके बाद कई बम गिराये, जिनसे जहाज़ फट गया और नीचे डूबने लगा। मैंने जहाज़ का एक तख्ता पकड़ लिया और समुद्र में बहने लगा। लेकिन वह तख्ता हाथ से छूट गया और लगा गोते खाने। उस समय विनती की कि हे सतगुरु! आप कहा करते थे कि आप सब जगह मौजूद हैं, अब मेरी सहायता करो। इस पर हुजूर ने उसको दर्शन दिये और हाथ पकड़ लिया। फिर वह बेहोश हो गया। जब होश आया तो वह किनारे पर था।

हुजूर ने कहा कि अभी एक लारी आयेगी और तुम्हें ले जायेगी। लेकिन जब मैंने हुजूर को मत्था टेकना चाहा तो हुजूर लुप्त हो गये। इतने में लारी आ गई और मुझे बिठा लिया। मैंने पूछा कि सिंगापुर यहाँ से कितनी दूर है? जवाब मिला कई सौ मील अर्थात् हुजूर कई सौ मील तक उसे ले गए।

हुजूर महाराज जी का देहली का दौरा

15 मार्च की सुबह को हुजूर दस बजे सिरसा से मोटर कार में सवार होकर पूरे तीन बजे कोठी न. 7/24 दरियागंज देहली में पहुँच गये। उनके सेवादार उनसे पहले सुबह आठ-नौ बजे वहाँ पहुँच चुके थे। थोड़ा सा आराम करके हुजूर ने शाम को छः बजे सत्संग शुरू किया। लेकिन क्योंकि लोगों को पता था कि हुजूर रेलगाड़ी से हिसार तथा गुड़गाँव के रास्ते शाम के सात बजे तशरीफ लायेंगे इसलिये बहुत भीड़-भाड़ न थी। लेकिन दूसरे दिन सुबह आठ बजे के सत्संग में और शाम साढ़े छः बजे के सत्संग में भीड़ होने लगी। यह भीड़ प्रतिदिन बढ़ती ही गई। यहाँ तक कि आज शाम 17 मार्च को इतनी भीड़ थी कि सत्संग का सारा आँगन स्त्री-पुरुषों से भर गया। आज हुजूर ने कबीर साहिब की वाणी में से 'कर नैनो दीदार महल में प्यारा है'¹⁰ की व्याख्या की। कल शाम को 'जग में घोर अंधेरा भारी। तन में तम का भंडारा'¹¹ और 'बिख बोहिथा लादया दीआ समुंद मंझार'¹² पढ़े गए। एक बार 'यह तन दुर्लभ तुमने पाया'¹³ लिया गया। क्योंकि देहली में मूर्ति-पूजा का रिवाज अधिक है, इसलिये हुजूर ने मूर्ति-पूजा को निकृष्ट धर्म बताया और धन्ना भक्त के ठाकुर की कहानी भी सुनाई। यह भी फ़रमाया कि देवी-देवता मनुष्य के पूजने योग्य नहीं। मनुष्य-शरीर को वे भी तरसते हैं कि हमें मनुष्य का जन्म मिले और हम भजन बन्दगी करके भवसागर से पार हो जायें। मनुष्य के पूजने के लिये परमात्मा के सिवाय कोई नहीं, क्योंकि मनुष्य से बड़ी और कोई हस्ती नहीं है। देहली में सत्संग के बाद सारा दिन उन लोगों की भीड़-भाड़ रहती है जो हुजूर से बातचीत करना चाहते हैं। हुजूर को कभी आराम का खयाल नहीं आता। मैंने प्रार्थना की कि हुजूर दोपहर को दो घण्टे आराम के लिये नियुक्त करके लोगों को सूचित कर दिया जाये कि उस समय आकर हुजूर को कष्ट न दें। लेकिन हुजूर ने परवाह न की। आज हुजूर राय बहादुर सरदार सिंह की कोठी पर उनको देखने गये, क्योंकि वह बीमारी के

कारण स्वयं दर्शन करने नहीं आ सकते थे। इसके बाद फोटोग्राफर मिस्टर दत्त के स्टूडियो में कश्मीरी गेट तशरीफ ले गये। मैंने उनके बनाये हुए फोटो देखे जोकि बहुत साफ थे। उनके पास भारत के कमाण्डर-इन-चीफ और वायसराय के सर्टीफिकेट भी थे। उन्होंने बिजली के प्रकाश में हुजूर का ग्रुप फोटो लिया जिसमें मैं, भाई शादी, मिस्टर टी. एस. सचदेव और एक-दो अन्य व्यक्ति शामिल थे। इसके बाद हुजूर ने वापस आकर सत्संग किया। फिर रात के साढ़े आठ बजे सरदार जगजीत सिंह रईस नई देहली की कोठी पर तशरीफ ले गये। वहाँ हम सबको खाना खिलाया गया। वहाँ से सवा दस बजे वापस आये। रास्ते में चर्चा हुई कि एक सिक्ख औरत ने बीस हजार रुपया लगाकर अखण्ड पाठ करवाया। मैंने अर्ज की कि दान तो पंजाब में सर गंगाराम का बड़ा लाभदायक सिद्ध हुआ है। सर गूजरमल का अमृतसर में टी.बी. का अस्पताल भी बहुत अच्छा कार्य कर रहा है। हुजूर ने फरमाया कि मुक्ति तो बिना नाम के नहीं होगी। हाँ, यह दानी लोग अगले जन्म में सेठ-साहूकार हो जायेंगे।

18 मार्च को हुजूर ने देहली में दो सौ चालीस स्त्री-पुरुषों को नाम दिया। इसके बाद कुछ बड़े-बड़े सेठ-साहूकारों की सम्बन्धी स्त्रियों को भी नाम दिया। फिर शाम को सब्जी मण्डी आटे की मिल में, जिसका मैनेजर सत्संगी है, तशरीफ ले गये। वहाँ क़रीब आधा घण्टा ज्ञान चर्चा होती रही। उन्होंने फरमाया कि गीता में मन को वश में करने के दो साधन लिखे हैं— एक अभ्यास और दूसरा वैराग्य। सन्तमत में, सन्त सत्संग द्वारा मन में दुनिया की तरफ से वैराग्य और रूहानी देशों का प्रेम पैदा करते हैं। सत्संग का ध्येय यही है। सन्तजन सुरत-शब्द के अभ्यास से मन को स्थिर करने का ढंग बताते हैं। रात को नई देहली के ठेकेदार व रईस सरदार बहादुर जगजीत सिंह जो स्वर्गीय राय बहादुर सरदार नारायण सिंह जी के सुपुत्र हैं, के यहाँ कार में तशरीफ ले गये। वहाँ हुजूर और उनके साथियों को सरदार साहिब तथा उनकी धर्मपत्नी ने बड़े प्रेम से खाना खिलाया। हुजूर को उनसे बड़ा प्रेम है। उन पर हमेशा दया रखते हैं। धन्य है वे लोग जो पूर्व जन्मों में अपनी अच्छी करनी के कारण इस जन्म में बड़े-बड़े धनवान बनते हैं और सन्तों की सेवा करके आगे के लिये भी अच्छे जन्मों या आन्तरिक लोकों में जाने के अधिकारी बन रहे हैं। धन का लाभ और सबसे

उत्तम खर्च भी यही है कि सन्तों-महात्माओं और जनता की सेवा में खर्च किया जाये। वरना हुजूर स्वामी जी महाराज सच फरमाते हैं :

सो धन जोड़ किया क्या भाई। जगत लाज में दिया उड़ाई ॥
पर जो समझवार तुम होते। तो धन से कुछ कारज लेते ॥
कारज लेना यह है भाई। गुरु सेवा में खर्च कराई ॥¹⁴

हुजूर का रोहतक का दौरा और सिकन्दरपुर को वापसी

19 मार्च रविवार को हुजूर दिन के बारह बजे सरदार बहादुर की कार में दरियागंज से चल कर दोपहर के दो-तीन बजे के क़रीब रोहतक शान्ति भवन में वकील लाला द्वारका प्रसाद के मकान पर पहुँचे। वहाँ हजारों स्त्री-पुरुष आपको राह देख रहे थे। शाम के छः बजे पास वाले जैन गर्ल्स स्कूल के आँगन में सत्संग हुआ। राय बहादुर लाला गुलबन्त राय, सेशन जज और एक सब-जज भी उपस्थित थे। सत्संग के बाद हुजूर कार में सैर को तशरीफ ले गये। वहाँ से आकर कई स्त्री-पुरुषों को नामदान दिया।

20 मार्च की सुबह साढ़े आठ बजे से साढ़े नौ बजे तक सत्संग किया। स्कूल का सारा आँगन भरा हुआ था। सत्संग के बाद सरदार साहिब की कार में ग्यारह बजे रोहतक से चल कर सवा बारह बजे कचहरी में लाला कुंजलाल साहिब वकील से मिलने तशरीफ ले गए। फिर हिसार से अपनी कार में चल कर रास्ते में फतेहबाद, औरतों के अस्पताल की डॉक्टर बीबी चन्द्रावती को दर्शन देते हुए शाम को साढ़े तीन बजे ग्रेवाल मिल्स में पहुँच गये। जब हम रोहतक से हिसार आ रहे थे तो रास्ते में सरदार साहिब के ड्राइवर ने कहा कि हुजूर एक अर्ज करनी है। हुजूर ने फरमाया कि अवश्य करो। अतः उसने वह सवाल पूछा जोकि दुनिया में अधिकतर आदमी एक-दूसरे से पूछा करते हैं यानी दुनिया में देखा जाता है कि जो आदमी नेक, धर्मी-कर्मो होते हैं वे दुःख उठाते हैं और उनको मरने से पहले बीमारी आदि का बड़ा दुःख होता है। इसके विपरीत जो लोग बुरे और पापी होते हैं उनकी जान आसानी से निकल जाती है। उनको इतना दुःख नहीं होता। हुजूर ने जवाब दिया कि ऐसा ही होना चाहिये क्योंकि यह परमात्मा की विशेष दया है कि वह नेक लोगों के पापों को बीमारी आदि से धोकर साफ करना चाहता है, जिससे बाद में उनको नरकों में सज़ा न भुगतनी पड़े और जो बुरे लोग हैं उनको

दूसरे जन्म में या योनियों में या नरकों में अपने बुरे कर्मों की कड़ी सजा भुगतनी पड़ती है। इस विषय पर शम्स तबरेज़ का यह शेर है :

तू जे ख़्तारी हाइ हमे नाली नमे बीनी इनायत हा,
मख़्वाह अज़ हक़ इनायत हा व कम कुन शिकायत हा।

अर्थात् ऐ परमात्मा से अपने दुःखों का रोना रोने वाले, उसकी दयालुता देख। या तो परमात्मा से दया न माँग या अपने दुःखों की शिकायत न कर।

हुज़ूर की डेरे को वापसी की यात्रा

23 मार्च को सुबह हुज़ूर ने सिकन्दरपुर चलने का प्रोग्राम बनाया था, मगर प्रातः चार-पाँच बजे सिकन्दरपुर में भारी वर्षा थी। अँधेरी रात के समय कार द्वारा सिकन्दरपुर से पक्की सड़क तक कीचड़ को पार करना सम्भव नहीं था। इसलिये सुबह के सात बजे रवाना हुए। इस समय उजाला तो हो गया था परन्तु बूँदा-बाँदी हो रही थी। यह विचार था कि सिरसा ब्राँच की पटड़ी गुज़रने के लायक नहीं रही होगी क्योंकि केरे से अट्ठाइस मील पक्की सड़क पर बड़ड़ पुल जाकर वेस्टर्न जमुना नहर की सिरसा ब्राँच पर सौ मील तक जाकर पिपली के पास देहली से अम्बाला तक का रास्ता पकड़ना पड़ता है परन्तु ज्यों-ज्यों सड़क पर चलते गए, वर्षा कम होती गई। फ़तेहबाद के पास ऐसा मालूम हुआ कि यहाँ वर्षा नहीं हुई। बड़ड़ पुल जाकर नहर की पटड़ी पर हम सुबह आठ बजे पहुँच गये और साढ़े दस बजे पिपली के पास रास्ते को पकड़कर अम्बाला सवा ग्यारह बजे राय साहिब के मकान पर, जोकि कालीबाड़ी रघुनन्दन निवास में है, आ पहुँचे। वहाँ बहुत-से सत्संगी भाई-बहन इकट्ठे थे। वहाँ पन्द्रह मिनट के लगभग उनको दर्शन देकर और राय साहिब को कार में बैठाकर लुधियाना की ओर रवाना हो गये। रास्ते में वर्षा का बड़ा जोर रहा। अम्बाला से आगे सरहिन्द के पास जरनैली सड़क पर फ़ौजी ट्रक भारी संख्या में सफ़र कर रहे थे। मोटर के फिसलने का डर था। इसलिये सड़क से नीचे कच्चे में कार ले जानी पड़ी। लुधियाना में मुसलमानों के किसी जलसे के कारण बड़ी भीड़ थी। इस भीड़ में से कार कठिनाई से निकली। जालन्धर सरदार साहिब के यहाँ दस मिनट ठहर कर, शाम के पाँच बजे के करीब डेरे पहुँच गये।

अध्याय 19

डेरे में निवास का हाल

24 मार्च को एक सत्संग हुआ। 25 मार्च को दो सत्संग हुए। स्वामी जी महाराज की वाणी में से आसोज का महीना और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'जिन तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती घर आओ' लिये गए। 26 मार्च रविवार को बारह बजे दोपहर को सत्संग होना था। बहुत-सी संगत दूर-दूर से सत्संग सुनने के लिये आई हुई थी। लेकिन वर्षा इतनी अधिक थी कि सत्संग न हो सका। आज सोमवार को बहुत से स्त्री-पुरुषों को नाम दिया जा रहा है। कल शाम को मेरी उपस्थिति में हुज़ूर ने बताया कि मन को निचला बैठने की आदत नहीं। जब ध्यान लगाकर सिमरन पर बैठा जाता है तो मन सिमरन में लगना नहीं चाहता और तंग करता है, व्याकुल होता है। परन्तु अभ्यासी को चाहिये कि सिमरन न छोड़े। मन चाहे तंग करे या न करे, सिमरन करता जाये। फिर कुछ समय बाद पिण्डलियों में दर्द होगा, जैसे कि पिण्डलियाँ फटना चाहती हैं। उस समय घबरा कर न उठ खड़ा हो, बैठा रहे। अन्त में दर्द दूर हो जायेगा। फिर जितना चाहो बैठो, मालूम न होगा। इसी प्रकार धीरे-धीरे मन निश्चल होता जायेगा।

29 मार्च बुधवार को आज कई दिनों के बाद दोपहर में धूप निकली। कल हुज़ूर ने रामदासिया बिरादरी को नाम दिया और अब तक युवराज आदि जो लोग जा रहे हैं उनको विदा करने में लगे हैं। आज तीन दिन की डाक देखी। अभी तक मासिक सत्संग की भीड़-भाड़ के काम से पूरी तरह छुटकारा नहीं मिला।

आज डाक में एक मुसलमान साहिब ने एक कहानी नोट करने के लायक लिखी कि एक नेक व्यक्ति ने अपनी सारी आयु परमात्मा की बे-लाग बन्दगी की। मरने के बाद जब उसे परमात्मा के दरबार में ले गये तो परमात्मा ने आदेश

दिया कि इसको स्वर्ग में ले जाओ। वह बोला कि बस मेरी सारी उम्र की बन्दगी का यही फल है जो मुझे दे रहे हो। इस पर परमात्मा ने आदेश दिया कि इसे नरक में ले जाओ। जब फ़रिश्ते उसे ले जा रहे थे, रास्ते में उसे बड़ी प्यास लगी और प्यास के मारे उसकी जान निकलने लगी तो उसने पानी माँगा। फ़रिश्तों ने कहा कि पानी का गिलास तो हाज़िर है मगर तब मिलेगा जब तुम अपनी सारी आयु की बन्दगी का फल हमें दे दोगे। मरता क्या न करता। बेचारे को देना पड़ा। तब परमात्मा ने आदेश दिया कि उसे वापस लाओ और फ़रमाया कि देखो यह थी तुम्हारी बन्दगी की क़ीमत। सच है गुरु नानक साहिब ने फ़रमाया है :

करम धरम पाखंड जो दीसै तिन जम जागाती लूटै ।

फिर कहा है :

जिह पैडै लूटी पनिहारी। सो मारग संतन दूरारी ।

शाम के छः बजे सत्संग शुरू हुआ। हुजूर के पास शिकायत आई थी कि कुछ बीबियाँ नाम लेकर भी देवी-देवता, तीर्थ-व्रत, मूर्ति-पूजा के भ्रम की कैद में हैं, इसलिये तुलसी साहिब की घट रामायण में से लोमस ऋषि, जोकि ब्रह्मा जी का बेटा था, का संवाद लिया गया। उसने बाप के कहने पर तीर्थ-स्नान, व्रत आदि, मूर्ति-पूजा, पीपल, तुलसी की पूजा, शिव जी की पूजा, सब हजारों साल करके देखे, परन्तु मुक्ति न मिली बल्कि चौरासी लाख योनियों में जाना पड़ा। हुजूर ने फ़रमाया कि मूर्ति की पूजा तथा ध्यान भी मना है, चाहे मूर्ति पत्थर की हो या धातु की या कागज़ की। फिर फ़रमाया कि जो लोग मेरी फ़ोटो की पूजा करते हैं, वे पाप कर रहे हैं। मेरी फ़ोटो यदि घर में रखना हो तो ऐसे ही रखो जैसे किसी बुजुर्ग या माता-पिता या यार-दोस्त का फ़ोटो याद के लिये रख लिया जाता है।

एक फ़ौजी युवक ने जो कि बर्मा से आया हुआ मालूम होता है, बताया कि इनफ़ेण्ट्री नम्बर 2 के बहुत-से आदमी बर्मा संगठन की लड़ाई में मारे गये और वह बहुत उदास हो गया। जब उस पलटन के ज़ख्मी लाये गये तो उसके अफ़सर ने कहा कि तुम तो उदास और दुःखी हो। जाओ स्नान कर आओ ताकि तुम्हें होश आ जाये। वह एक चश्मे पर जोकि सुन्दरबन के जंगल में था, कपड़े धोने और नहाने गया। परन्तु उदासी के कारण बिना कपड़े धोए ही आ गया।

उसके अफ़सर ने कहा कि तुम तो अभी भी उदास हो तो उसने जवाब दिया कि मैं ब्यास दर्शन करने जाना चाहता हूँ। उसका अफ़सर बोला कि भई तीन साल से पहले छुट्टी नहीं मिल सकती। तुम्हें अभी दो साल हुए हैं। इस पर वह युवक निराश होकर अपनी जगह पर आ गया। मगर रात को उसके अफ़सर ने उसे बुलाया और कहा कि जाओ तुम सुबह चले जाओ। बिस्तर तैयार रखो। सुबह वह लारी में चल पड़ा। आगे जाकर उसे दूसरी लारी पकड़नी थी, जो उसे जहाज़ के बन्दरगाह तक पहुँचा देती। मगर जब वह उस दूसरी लारी पर सवार होने के लिये आया और उसमें बैठ गया तो एक गोरा सारजण्ट आ गया और कहने लगा कि तुम इस लारी में नहीं जा सकते। उसने बहुतेरा हट किया लेकिन सारजण्ट ने एक न मानी। सब लारियाँ वहाँ से जहाज़ के लिये चल दीं। उसे दूसरे दिन वहाँ से जाना पड़ा। दो दूसरे दिन पता लगा कि दो जहाज़, जिन पर पहले दिन की सवारियाँ थीं, जापान वालों ने बम मार कर डुबो दिये। कुल तेरह सौ यात्रियों में से थोड़े-से देशी बचे हैं। बाकी सबके सब अण्डेमान के पास डूब गये। उसे सन्देह हुआ कि गोरा सारजण्ट कौन था ? सतगुरु ने बताया कि वह मैं था। वहाँ से जब जहाज़ पर सवार हुआ तो रास्ते में तूफ़ान आ गया और पाँच-पाँच, छः-छः गज़ ऊँची लहरें जहाज़ से टकराने लगीं। एक-एक टक्कर से जहाज़ एक मील पर धकेला जाता था। जहाज़ का कप्तान भगवान को याद करने लगा। जब लोग रोने लगे कि अब मरेंगे तो वह युवक सतगुरु के भरोसे पर ख़ुश था। उसे डूबने का ग़म नहीं था। यहाँ तक कि सब लोगों ने लाइफ़ बेल्ट और तैरने की टंकी बाँध ली लेकिन उसने नहीं बाँधी। लोग हैरान थे। अन्त में जहाज़ बच गया और वह सही सलामत कॉक्स बाज़ार पहुँच गया।

आज डाक पढ़ते-पढ़ते किसी का पत्र आया कि मैं बीमार हूँ। हुजूर ने जवाब दिया कि भजन-सिमरन करना मन का काम है, शरीर का काम नहीं। मन में सिमरन-ध्यान करो, बीमारी में दया अधिक होती है। कई बार सतगुरु आते हैं और बीमारी की दवा बता जाते हैं जिससे आराम हो जाता है। एक मस्त सत्संगी पास बैठा था उसने अपने अनुभव से इसकी पुष्टि की।

30 मार्च शाम के सत्संग में यह वचन आया कि सत्संगियों को आपस में दुश्मनी तथा ईर्ष्या नहीं रखनी चाहिये, विशेषकर बीबियों को। हुजूर ने एक

लतीफा सुनाया कि एक शहर में एक बुढ़िया बड़ी लड़ाकी थी, जिसने लड़-लड़ कर लोगों को तंग कर दिया था। अन्त में यह निश्चय किया गया कि हर एक खुशी के अवसर पर बुढ़िया को कुछ मिठाई और वस्त्र दे दिए जायें और वह लड़ाई न करे। बहुत समय तक यह चलता रहा कि हर एक शादी के अवसर पर बुढ़िया को उसका टैक्स भेजा जाता। एक बार एक नई दुल्हन को ब्याह कर लाये। जब उसकी सास ने कुछ मिठाई और वस्त्र अलग करके रखे तो नई बहू ने पूछा कि यह किसके लिये हैं ? तो सास ने कहा कि यह लड़ाकी बुढ़िया को दिये जायेंगे। बहू ने कहा कि मत दो। मैं उससे निपट लूँगी। अतएव जब बुढ़िया को उसका टैक्स नहीं मिला तो वह आग बबूला होकर लड़ने दौड़ी तो बहू ने कहा कि तुम किस तरह की लड़ाई करोगी-रोज की, सप्ताह की या महीने की। बुढ़िया हैरान होकर पूछने लगी कि यह कैसे ? तो बहू ने कहा कि यदि तुमने रोज की लड़ाई लड़नी हो तो मेरी सौतन बन जाओ। रोज लड़ाई रहा करोगी। यदि सप्ताह की लड़ाई का चाव है तो मेरी पड़ोसिन बन जाओ। यदि महीने की लड़ाई का विचार है तो मेरे मोहल्ले में मकान ले लो। बुढ़िया हैरान होकर अपना-सा मुँह लेकर वापस चली गई।

फिर फ़रमाया कि स्त्रियों को चाहिये कि जब पुरुष घर में भोजन करता हो तो उसके सामने चिन्ता, लड़ाई-झगड़े न खोलें। उसे प्रसन्नता से भोजन करने दें न कि घर के क्रिस्से सुनाकर उसके खाने को बे-रस कर दें। हर एक को चाहिये कि सोते समय गम व गुस्से को दिल में न आने दें, जिससे चैन की नींद आये।

एक सत्संगी के सवाल पर हुजूर ने फ़रमाया कि पहले सिमरन ज़बान से करना चाहिये, फिर खयाल से, जब सिमरन करते-करते ज़बान रुक जाये तो खयाल से यानी मन से सिमरन करो।

7 अप्रैल को दोपहर के बाद हुजूर ने दौलू नंगल तथा धालीवाल में जाकर सत्संग किया। एक सत्संगिन ने लिखा कि वह पहले अपने अन्दर बहुत-से नज़ारे देखा करती थी। अचानक उसका जवान बेटा मर गया। सब नज़ारे बन्द हो गये। हुजूर ने जवाब में लिखवाया कि तुमने लड़के की मृत्यु पर चिन्ता की जिससे मनुमुहारी रूह पर आ बैठा और नज़ारे बन्द हो गये। इसलिये महात्माओं ने कहा है कि :

सुख दुख दोनों सम कर जानै और मान अपमाना ।⁴

आज मिण्टगुमरी मुलतान के दौरे का प्रोग्राम बनाया गया। हुजूर 17 अप्रैल से 25-26 अप्रैल तक उधर रहेंगे। आज सत्संग में निन्दा करने वालों पर व्याख्यान हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निन्दक लोगों के विरुद्ध बहुत कुछ लिखा है। ये लोग सोने को हाथ लगाते हैं तो मिट्टी हो जाता है। जिसकी निन्दा करते हैं उसके पाप उनको लग जाते हैं और निन्दा करनेवालों के अच्छे कर्म उनको मिल जाते हैं जिसकी वे निन्दा करते हैं। हुजूर ने फ़रमाया कि शेख़ सादी ने कहा है कि निन्दा करो तो अपने माँ-बाप की, जिससे कि अच्छे कर्म यदि उनसे जायें तो घर में ही रहें।

9 अप्रैल को रविवार के कारण कुछ लोग बाहर से आ गये। सुबह नौ बजे तथा शाम को छः बजे दो बार सत्संग हुआ। सुबह हुजुरी वाणी में से 'गुरु गुरु मैं हिरदे धरती'⁵ लिया गया। हुजूर ने चुप रहने के बारे में ये श्लोक सुनाया:

चतुर चुप कर रहे चतुर के वचन पछाने,
चतुर चुप कर रहे सभा बेगानी जाने।
चतुर चुप कर रहे चतुर जब होय अकेला,
चतुर चुप कर रहे गुरु के आगे चेला ।⁶

सुबह को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'बिरखै हेठ सभ जंत इकट्ठे। इक तत्ते इक बोलन मिट्ठे'⁷ चेतावनी का शब्द लिया गया, जिसमें व्याख्या की गई है कि दुनिया की रिश्तेदारियाँ माँ-बाप, भाई-बहन, लड़का-लड़की आदि सब दुनिया में ऐसे आकर इकट्ठे हो गये हैं जैसे वृक्ष पर पक्षी। जब सुबह होती है वे अपनी-अपनी राह ले लेते हैं, कोई तड़के चला गया कोई दिन चढ़े। फिर पता नहीं कब मेल होगा। हुजूर ने फ़रमाया कि ये वृक्ष जो सामने दिखाई देते हैं, किसी समय हमारी तरह मनुष्य थे। अपने कर्मों के कारण नरक भोगकर अब सबसे निचली मंजिल वनस्पति में आ गिरे हैं। अब इनकी मनुष्य जन्म की बारी पता नहीं कब आयेगी। हाँ, जिस वृक्ष के नीचे सन्त-सतगुरु बैठ जायें या वृक्ष का फल खा लें उसे मनुष्य का चोला मिल सकता है। इसके बाद कबीर साहिब का प्रसिद्ध शब्द 'पिया मोरा जागे मैं कैसे सोई री'⁸ लिया गया। रूह कहती है कि मैं सोई हुई हूँ ; मेरा पति सत्पुरुष जाग रहा है। मैं पाँच सहेलियों यानी काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से मिलकर खेल रही हूँ। मेरी सास, ननद, देवरानी

यानी दुरमत, आशा, मनसा मुझे डरा रही हैं। अपने मन से मैंने दोस्ती कर रखी है, मेरा छुटकारा कैसे हो!

10 अप्रैल को हुजूर कपूरथला के पुलिस सुपरिण्टेण्डेंट सरदार मदनगोपाल सिंह साहिब के यहाँ भोग पर तशरीफ़ ले गये। भोग में जो वाणी पढ़ी उसकी व्याख्या करते हुए दुनियादारों की मोह-ममता का उदाहरण दिया कि कबीर साहिब का एक जाट ज़मींदार से प्यार था। वे हमेशा उसको कहा करते कि भाई भगवान् का भजन-सिमरन किया करो। जाट कहता, जी हाँ, ज़रा ये लड़के जवान होकर काम-काज सँभाल लें तो भजन ही करना है। जब लड़के जवान होकर घर-बार सँभालने लग गये तो कबीर साहिब ने फिर वही सवाल किया। उस पर जाट ने कहा कि ये लड़के रात को बे-ख़बर होकर सो जाते हैं, मैं यदि रात को नहीं जागूँ तो चोर इनका घर लूट कर ले जायें। इस बात को दस-बारह साल हो गये। अन्त में फिर कबीर साहिब का वहाँ पर जाना हुआ तो उस जाट के लड़कों ने बताया कि बापू तो आठ-नौ साल हुए स्वर्गवास हो गये। कबीर साहिब ने अन्तर्दृष्टि से देखा तो मालूम हुआ कि वह जाट पहले तो अपने लड़कों के यहाँ बैल बना, फिर जब बूढ़ा हो गया तो लड़कों ने गाड़ीवान के हाथों बेच दिया। जब गाड़ीवान के काम का नहीं रहा तो उसने तेली को दे दिया। जब बहुत बूढ़ा हो गया तो तेली ने कसाई को बेच दिया। इस पर कबीर साहिब ने यह शब्द पढ़ा :

बैल बने हल में जुते, ला गाड़ी में दीन।
तेली के कोल्हू जुते, पुन घेर कसाई लीन॥
मास कटा बोटी बिकी, चमड़न मढ़ी नकार।
कुछेक कर्म बाकी रहे, तिस पर पड़ती मार॥

11 अप्रैल को फगवाड़ा के पास एक गाँव में तशरीफ़ ले गये। वहाँ से रात को वापस आये।

12 अप्रैल को कपूरथला में तोपखाना देखा, जिसमें पुराने ज़माने के बहुत से हथियार देखने को मिले जैसे लोहे के कोट, लोहे का ख़ोद, लोहे की ढाल-तलवारें, खंजर, पुरानी बन्दूकें और पुराने तीर-कमान। तीर के सिरे पर आहनी फल लगा हुआ था। मेरा विचार है कि इन तीरों से आदमी का मारा जाना

काफ़ी मुश्किल है, हाँ घायल होना सम्भव है। ऐसे हथियार बहुत-सी देसी रियासतों के हथियारखानों में देखे जाते हैं। एक कमरे में हाथियों के होदे लकड़ी के तख्तों पर रखे थे। कुछ तो मिराज की शकल के चाँदी का पतरा चढ़े हुए सन्दूक से थे, जिनको राव बहादुर साहिब ने मुगलई के नाम से पुकारा। कुछ गद्देदार सोफ़े वाली कुर्सियों की तरह थे। एक कमरे में एक पलंग रखा था, जिसके पाय चाँदी के बड़े वज़नदार मालूम होते थे और बाहियाँ भी बड़ी मोटी थीं। ऊपर छत में शीशे के झाड़ू-फ़ानूस लगे थे, जिनमें मोमबत्तियाँ जलती होंगी। एक कमरे में चाँदी के बर्तनों के अतिरिक्त धातु की सफ़ेद-सफ़ेद पिचकारियाँ अलमारी में रखी थीं। मैंने सोचा कि उनमें तेज़ाब भर कर युद्ध में मित्रों पर रंग फेंकने के यत्न हैं। इससे सिद्ध होता है कि अंग्रेज़ी राज्य से पहले हिन्दू राजा, हिन्दू त्योहार बड़ी धूम-धाम से मनाया करते होंगे। यह बात अब स्वप्न मात्र हो गई है।

14 अप्रैल को डेरे से कार में रईया नहर की पटरी के रास्ते से होकर वण्डाला, गगड़भाना गुज़र कर दायें हाथ को नहर के कोई दो-तीन कोस पर मौज़ा घुमान में आये जो हुजूर बाबा जी महाराज की अति पवित्र जन्म-भूमि है। यहाँ हुजूर महाराज जी ने एक सत्संग-घर बनाया है। यहाँ शाम को पाँच बजे सत्संग हुआ।

15 अप्रैल शाम के सत्संग के बाद नाम दिया। वहाँ से 16 अप्रैल सुबह को सात बजे चल कर रास्ते में नहर की पटरी पर बैलगाड़ियों पर छाँग लदवा कर डेरे सुबह ग्यारह बजे वापस पहुँच गये। आते ही मिण्टगुमरी, मुलतान का दौरा मुलतवी कर दिया, तारें दे दी गई।

16 अप्रैल की शाम को सत्संग में हुजुरी वाणी में से शब्द लिया गया, जिसके दौरान हुजूर ने फ़रमाया कि योगाभ्यास में सहस्र-दल कमल से परे नहीं जा सकते क्योंकि प्राणायाम का अभ्यास यहाँ तक ही ले जा सकता है। प्राण चिदाकाश से परे नहीं जा सकते। जैसे साइकिल पक्की सड़क पर चलती है, जहाँ रेत आई साइकिल नाकारा हो गई। बिना गुरु के ध्यान के रोशनी या पचरंगी फुलवाड़ी को कैसे पार किया जाये जोकि शशमाल चक्र के आगे आती है।

सकते, उसे गुरु के ध्यान से ही पार कर सकते हैं।

17 अप्रैल को कबीर साहिब की वाणी में से 'कर नैनों दीदार महल में
प्यारा है'¹⁰ पढ़ा गया। हुजूर ने व्याख्या करते हुए फ़रमाया कि पिण्ड के छः
चक्र अण्ड के छः चक्रों का प्रतिबिम्ब हैं और अण्ड के छः चक्र ब्रह्माण्ड के
छः चक्रों का प्रतिबिम्ब हैं। अतः जो आँखों के नीचे के छः चक्र हैं वे
प्रतिबिम्ब के भी प्रतिबिम्ब हैं, जिनमें योगियों ने अपनी सारी आयु बिता दी।
गरुड़ पुराण का अन्तिम भाग जिज्ञासुओं के अध्ययन के योग्य है, जिसमें
भगवान् गरुड़ ने छः चक्रों का वर्णन करते हुए सहस्र-दल कैवल का भी
वर्णन किया है और हरएक चक्र पर जो-जो अक्षर हैं, उनको भी खोलकर
लिखा है। इनके अनुसार आँखों में दो दल कैवल है। यह रूह और मन की
बैठक है। यहाँ दो अक्षर 'स' और 'ह' हैं। साँस अन्दर करते समय 'स' और
बाहर निकालते हुए 'ह' उपयोग किया जाता है। इसके अलावा गरुड़ जी ने
लिखा है कि किताबों, वेदों-शास्त्रों के पढ़ने या तीर्थों में स्नान करने से
आवागमन से छुटकारा न होगा, बल्कि गुरु तथा शब्द से होगा।

20 अप्रैल को हुजूर ओकाड़ा, मिर्जपुर और मुलतान की तरफ जा रहे हैं और इसलिये डेरे की इस साल की गेहूँ की फसल की कटाई जोर-शोर से हो रही है। क्योंकि हुजूर डेरे से चले जाने के पहले-पहले जितनी कटाई हो सके अपने सामने करवाना चाहते हैं, इसलिये आज दोपहर को साढ़े तीन बजे धूप में खेतों में पधारे हैं।

मिण्टगुमरी, मुलतान, बनी बग्गी व लदरौर
आदि के दौरे का हाल

20 अप्रैल, 1944 को सुबह छः बजे हुजूर अपनी कार में लाहौर को रवाना हुए। रास्ते में सात बजे अमृतसर सत्संग-घर पहुँच गये। वहाँ पाँच मिनट के लगभग संगत को दर्शन देकर, आठ बजे लाहौर के सत्संग-घर रावी रोड आये। वहाँ बहुत-से स्त्री-पुरुष एकत्रित थे। पहले हुजूर ने सत्संग के पण्डाल में कुछ देर दर्शन दिये। फिर अपने चौबारे पर तशरीफ़ ले गए। लाहौर से सरदार बख़्तावर सिंह साहिब की कार में साढ़े नौ बजे रवाना हुये। अनारकली में दालचीनी की टिकियाँ ख़रीदीं क्योंकि हुजूर का गला ख़राब हो रहा था। पत्तोकी में सड़क पर ही संगत को दर्शन देकर, ओकाड़ा कृपाराम मिल में आ गये। वहाँ दोपहर के बारह बजे, जबकि कड़ी धूप और गर्मी थी, सत्संग किया। यद्यपि ओकाड़ा में सत्संग को समय नहीं देना था फिर भी उन्होंने लाउड-स्पीकर लगवा कर सब तैयारी कर रखी थी। वहाँ से डेढ़ बजे चल कर कोट हाकिमराय में ढाई-तीन बजे पहुँच गये। वहाँ सबने खाना खाया और सो गये। सरदार बख़्तावर सिंह साहिब इस इलाक़े के बड़े जमींदारों में से हैं। यह गाँव इनकी अपनी जायदाद है। उन्होंने अपने रहने के लिये एक बहुत सादा और आरामदेह कोठी बनवा रखी है, जिसके चारों ओर एक बहुत बड़ा आँगन है। इस चारदीवारी के बाहर एक ओर मरदाना आँगन है, जिसमें सत्संग हुआ। इस आँगन के आगे एक बहुत बड़ा बाग़ लगा रखा है। इनकी कोठी के अहाते के आसपास चारों तरफ़ इनके मुजारों के रहने के मकान हैं। ये लोग आम चक्कों से ज़्यादा आराम में हैं, क्योंकि इनके यहाँ आपस में लड़ाई-झगड़ा, मुकद्दमे, फ़ौजदारी, अपहरण आदि का नाम भी नहीं। सब लोग खुशहाल हैं। लगभग सारे ही सत्संगी हैं। शाम को सत्संग हुआ। उपस्थिति कम थी लेकिन सुबह 21 अप्रैल को बहुत लोगों ने सत्संग सुना, जिनके लिये लाउड-स्पीकर लगाने पड़े।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'जग में घोर अंधेरा भारी' और 'बिख बोहिथा लादया' शब्द पढ़े गये। ग्यारह बजे के बाद सत्संग समाप्त हुआ। सरदार साहिब ने हमारी आवभगत में कोई कसर नहीं छोड़ी।

21 अप्रैल की शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से दो शब्द लिये गए। सत्संग शाम के पाँच बजे शुरू किया गया क्योंकि कुछ लोगों ने वापस ओकाड़ा जाना था। कल कोई सत्संग नहीं है। कल नाम दिया जायेगा और शाम के चार बजे मिण्टगुमरी खाना हो जायेंगे। आज के दो शब्दों में से पहला शब्द तो दुनिया और दुनियादारों की ज़िन्दगी का नक्शा खींचता है :

बिरखै हेठ सभ जंत इकट्ठे। इक तते इक बोलन मिट्ठे।

दुनिया और गृहस्थ की ज़िन्दगी का उदाहरण वृक्ष की तरह है, जिस पर रात के समय कई प्रकार के पक्षी इकट्ठे हो जाते हैं और सूर्य निकलने से पहले-पहले हर एक अपनी-अपनी राह पर चला जाता है। कोई मीठा बोलता है, कोई कड़वा। जो-जो कर्म करता है, उसका फल भुगतना पड़ता है। भगवान् की अति दया-मेहर हो तो मनुष्य का ध्यान प्रभु की ओर लगता है और उसे सतगुरु मिलते हैं। दूसरा शब्द गुरु अमरदास जी का, जो इससे भी ज्यादा प्रसिद्ध है, पढ़ा गया।

तेरीआं खाणी तेरीआं बाणी। बिन नावैं सभ भरम भुलाणी।

सारी दुनिया चार श्रेणियों में बाँटी जा सकती है— अण्डज: जो अण्डों से पैदा होते हैं। जेरज: वे जो झिल्ली से लिपटे हुए पैदा होते हैं। सेतज: जो मौसम की तबदीलियों से पैदा होते हैं जैसे कीड़े, पतंगे, आदि। चौथे: उद्भिज अर्थात् वृक्ष आदि। इस प्रकार दुनिया के कलाम (शब्द) को चार श्रेणियों में बाँटा है— बैखरी, मध्यमा, पश्यन्ती और परा। एक वह शब्द है, चाहे वह किसी ज़बान का हो, जो जिह्वा अर्थात् ज़बान से बोला जाये। दूसरा वह जो कण्ठ में बोला जाये। तीसरा उससे अधिक बारीक जिसका हृदय से उच्चारण किया जाये। चौथा बहुत ही बारीक जो योगी लोग नाभी से हिलोर की तरह उठाते हैं। गुरु साहिब का मतलब यह था कि नाम हर एक तरह के कलाम तथा सब तरह की खलकत से ऊपर है यानी नाम हर एक धार्मिक पुस्तक से परे है। दुनिया की किसी धार्मिक, पवित्र पुस्तक में नाम नहीं है, केवल नाम की महिमा आदि है। नाम तो मनुष्य के अन्दर है और लिखने-पढ़ने से ऊपर है। यह नाम पूर्ण गुरु से मिलता है। इसकी प्राप्ति गुरु-कृपा, गुरु सेवा से हो होती है। सेवा का अर्थ यह नहीं कि

उनकी निजी सेवा की जाये बल्कि असली मतलब यह है कि उनके नियमों पर चलते हुए मन और रूह को एकाग्र करके आँखों के पीछे तीसरे तिल पर इकट्ठा किया जाये और तारा-मण्डल, सूर्य-मण्डल और चन्द्र-मण्डल को पार करके तीसरे तिल में जहाँ गुरु खड़े हैं, उनके चरणों में रूह और मन को पहुँचाया जाये।

मिण्टगुमरी में हुजूर मिस्टर नन्द लाल बैरिस्टर की कोठी पर ठहरे जोकि मिण्टगुमरी सत्संग-घर के साथ है। कल शाम 23 अप्रैल रविवार को सत्संग में बड़ी भीड़ थी। हुजूर स्वामी जी की वाणी में से 'नाम निर्णय करूँ भाई' लिया गया। आज सुबह श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से कई शब्द लिये गए। तुलसीदास जी की रामायण में से पतिव्रत धर्म पढ़ा गया, जो अत्रि ऋषि की स्त्री अनुसूया ने सीता को सुनाया था। कल शाम हुजूर मिण्टगुमरी रेलवे स्टेशन से आगे 'लिंक केनाल' भी देखने गए, जहाँ से मिण्टगुमरी की बड़ी नहर 'लोअर बारी दोआब' में से एक 'लिंक' निकालकर पाकपटन की नहर में डाली गई है जिससे कि उस नहर के पानी में गार मिल जाये। रावी दरिया की गार, खेतों के लिये बड़ी लाभदायक है। क्योंकि सतलुज, ब्यास के पानी से ज़मीन बंजर होती जाती थी, इसलिये रावी की गार इस पानी में मिलकर खेतों को लाभ पहुँचा रही है।

25 अप्रैल को दोपहर के एक बजे हुजूर कराची मेल में मिण्टगुमरी से मुलतान को खाना हुए। बहुत गर्मी थी। सेकेंड क्लास में हुजूर के लिये एक सीट मिल गई और बर्फ का ढेला रेलवे वालों से गाड़ी में रखवा लिया गया जिससे गर्मी कम महसूस होने लगी। रास्ते में मियाँ चन्नु व खानेवाल में बहुत-सी संगत दर्शनों को आई हुई थी। शाम के चार बजे हुजूर मुलतान छावनी के स्टेशन पर उतर कर, कार में राधास्वामी सत्संग-घर, नवांशहर आ पहुँचे। थोड़ी देर बाद बहुत तेज़ आँधी आई जिसमें बहुत गर्द व धूल थी और रात तक चलती रही। लाचार होकर सत्संग से बन्द करना पड़ा। रात को वर्षा हुई जिससे मौसम ठण्डा हो गया। हम लोग सत्संग-घर के बरामदे में सो गये।

26 अप्रैल सुबह को आठ बजे सत्संग आरम्भ हुआ। मौसम सुहावना था। सत्संग में उपस्थिति एक हज़ार के लगभग होगी जोकि मुलतान जैसे शहर के लिये कम है। आजकल कोई छुट्टी नहीं। आशा है कि शाम के सत्संग में काफ़ी भीड़ हो जायेगी। सत्संग के बाद हुजूर कार में बैठकर मुलतान छावनी के

कम्पनी बाग में घूमने तशरीफ ले गये। वहाँ से आकर भोजन करने के बाद आराम करने लगे। पाँच बजे से लोग आने शुरू हो गये। उस समय डाक देखी। डाक में बम्बई से श्री ठण्डीराम ने पत्र लिखा कि कुछ दिन पहले बम्बई में जो विस्फोट यानी धमाका हुआ था और बन्दरगाह के एक भाग में आग लग गई थी, जोकि कई दिनों तक सुलगती रही, उस भाग में बहुत-से सत्संगी काम करते थे। लेकिन धमाके के दिन एक सत्संगी तथा सत्संगिन की शादी आनन्द रीति से होनी थी। सभी छुट्टी लेकर शादी में व्यस्त रहे और हुजूर की दया से सबके सब बच गये। हुजूर यह खबर सुनकर बड़े प्रसन्न हुए और मालिक का धन्यवाद करने लगे। शाम को सवा छः बजे सत्संग हुआ, जिसमें श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'नाम मिलै मन तृपतीए बिन नामे धृग जीवास' और हुजुरी बाणी में से 'नाम निर्णय करूँ भाई' लिया गया। काफी संगत थी। सत्संग की समाप्ति पर हुजूर कार में सैर करने चले गए।

27 अप्रैल सुबह हुजूर ने दो सौ स्त्री-पुरुषों को नाम दिया। इस बार नाम लेने वालों की कुल संख्या छः सौ के करीब थी। मुलतान में बहुत-से अफसरों को नाम दिया गया। 27 अप्रैल की शाम को कबीर साहिब की बाणी में से 'कर नैनो दीदार महल में प्यारा है' पढ़ा गया। 28 अप्रैल की सुबह हुजूर ग्यारह बजे कराची मेल में सवार होकर ओकाड़ा उतर पड़े। वहाँ से सरदार बखतावर सिंह की कार में रीनाले खुर्द जाकर, सत्संग-घर के लिये स्थान देखा तथा रेलवे लाइन के पास एक जगह पसन्द की। इसके बाद सेठ सेठमल के यहाँ गये। वहाँ पास ही एक मैदान में सत्संग का प्रबन्ध किया हुआ था, बहुत-से स्त्री-पुरुष उपस्थित थे। लाउड-स्पीकर लगा हुआ था। वहाँ हुजूर ने शाम के चार बजे तक कड़ी गर्मी में सत्संग किया। वहाँ से निपट कर कार में चले तो रीनाला का रेलवे फाटक बन्द था। दोनों ओर से माल-गाड़ियाँ आ रही थीं। अभी एक माल-गाड़ी गई थी और दूसरी खड़ी थी कि कराची जानेवाली मिलिट्री स्पेशल के लिये सिगनल हो गया। यहाँ हुजूर पूरा एक घण्टा फाटक पर रुके रहे। कड़ी गर्मी, लोगों की भीड़ और सफ़र की थकान थी। अन्त में छः बजे शाम के वहाँ से चल कर साढ़े आठ बजे लाहौर के सत्संग-घर रावी रोड में पहुँचे। वहाँ हजारों स्त्री-पुरुषों को एकत्रित पाया। बहुत प्यास लगी हुई थी, पहले पानी पिया, फिर संगत को दर्शन देकर नौ बजे वहाँ से चल कर दस बजे अमृतसर आये। रात अधिक हो गई थी।

रास्ते में बहुत-से सत्संगी मिल गये जोकि हुजूर की प्रतीक्षा करके सत्संग-घर से वापस आ रहे थे। उनको चार-पाँच मिनट दर्शन देकर ग्यारह बजे रात को डेरे पहुँचे।

डेरे में निवास का हाल

29 अप्रैल सुबह नौ बजे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से एक शब्द लिया गया। लेकिन हुजूर का गला खराब हो रहा था इसलिये सरदार गुलाब सिंह जी ने इसकी व्याख्या की। फिर सत्संग के बाद सेवा में बैठे। शाम को सरदार गोकुल सिंह ने सत्संग किया।

30 अप्रैल इतवार को नौ बजे सत्संग आरम्भ हुआ। 'सतगुरु का नाम पुकारो' और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से एक शब्द लिया गया। संगत काफी थी जबकि आजकल फ़सल की कटाई के कारण ज़मींदार और मेहनती लोग नहीं आ सकते।

4 मई को एक आनन्द कारज करवा कर हुजूर नौ बजे कार में रईया की नहर के किनारे-किनारे बुरजी 112-113 पर गये। वहाँ से वृक्षों की कटी हुई टहनियाँ, जोकि वृक्षों का ख़रीदार छोड़ गया था, लानी थी। सोलह गड्डे गये हुए थे। गर्मी का बहुत ज़ोर था। गर्म हवा चल रही थी। क्योंकि लादने वाले ज़्यादा नहीं थे, इसलिये दो गड्डों से अधिक एक बार में नहीं लादे जा सकते थे। लेकिन हुजूर इस गर्मी और धूप की परवाह न करके वहाँ चलते-फिरते रहे। यहाँ तक कि शाम के साढ़े चार बजे सारे गड्डे टहनियों से लाद दिये गए। तब उन सब गड्डों को नहर के पुल पर से गुज़ार कर वापस आये। हुजूर ने बातों-बातों में फ़रमाया कि जापान की लड़ाई समाप्त हो जायेगी तो ईधन काफी सस्ता हो जायेगा। दास ने विनती की कि जब समाप्त हो जायेगी तब ही होगा। इस पर हुजूर ने फ़रमाया "अभी तो बहुत शोर-शराबा होना है"। वहाँ से वापस आकर, नहा-धोकर, हुजूर शाम के सात बजे के करीब सत्संग में तशरीफ़ ले गये। उसके बाद रात को ग्यारह बजे तक और कारोबार करते रहे। मैं तो थककर दस बजे ही सो गया।

5 मई को शाम के सत्संग में हुजूर स्वामी जी महाराज की पुस्तक में से 'जोड़ो री कोई सुरत नाम से। यह तन धन कुछ काम न आवे। पड़े लड़ाई जाम

से¹⁰ पढ़ा गया। हुजूर स्वामी जी महाराज की वाणी उनके दिल से निकली है और दिल को पकड़ती है। इससे ऊँचा उपदेश, दुनिया की किसी पुस्तक में देखने में नहीं आया।

6 मई को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'काम क्रोध परहर पर निंदा'¹¹ लिया गया। हुजूर बार-बार यही जोर देते हैं कि मन के संकल्प-विकल्प रोक कर अन्दर चलो।

7 मई रविवार को शाम के सत्संग में हुजुरी वाणी में से 'जग में घोर अंधेरा भारी'¹² और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'बिख बोहिथा लादया दीआ समुंद मंझार'¹³ लिया गया। हुजूर ने स्वयं व्याख्या की और फ़रमाया कि आजकल सिक्ख लोग श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के प्रमाणों से, मांस खाना ठीक प्रमाणित करने का प्रयत्न करते हैं। यदि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में मांस खाने की अनुमति देनी होती तो सदा कसाई की कहानी क्यों लिखी जाती और गुरु अर्जुन साहिब यह क्यों फ़रमाते :

कुदम करे पसु पंखीआ दिसै नहिँ काल।

ओतै साथ मनुख है फाथा माया जाल।¹⁴

भाव वह पशु या पक्षी जिस पर तू अत्याचार करता है, तेरी तरह किसी समय इनसान था। अब अपने कर्मों के कारण इस अवस्था को पहुँच गया है।

लोग अंधाधुंध अपने-अपने कार्यों में लीन हैं। किसी से पूछें तो वह यही जवाब देता है कि मुझे फुर्सत ही नहीं। इस दुनिया के कार-व्यवहार में इस तरह क़ैद हैं कि वह नहीं सोचते कि मरने के बाद क्या हाल होगा ? कहाँ जायेंगे ? क्या इस ज़िन्दगी में मौत का कुछ उपाय हो सकता है या नहीं ?

8 मई को बारह बजे दोपहर के बाद हुजूर कार में पहले अमृतसर ज़िला कचहरी में अपने पेंशन का बिल तसदीक़ कराने, तशरीफ़ ले गये। वहाँ से अमृतसर सत्संग-घर में 2-3 बजे के करीब पहुँचे। धूप और गर्मी बहुत थी। शाम को सत्संग किया। दूसरे दिन सुबह 8 बजे सत्संग हुजुरी वाणी में से किया गया। इसके बाद लोगों को नामदान दिया गया। शाम के पाँच बजे के बाद यहाँ से चल कर डेरे वापस आ गये। आते ही बिना आराम किए उसी समय लारी में से, जो सिरसा से आई थी, सामान उतरवाने लगे। इसके बाद बाहर खेतों में अनाज की गुहाई देखने चले गए। वहाँ से लौटते समय रास्ते में कल और आज की डाक

देखने में एक घण्टा लगाया। फिर कहीं घर पहुँचे। इस आयु में इतना कड़ा परिश्रम हमें अचम्भे में डाल रहा है। कल मोटर कार में हुजूर ने मुझसे फ़रमाया कि अब तो दिमाग़ थक गया है। मैंने विनती की कि डेरे में आप को कोई आराम से नहीं बैठने देता। हुजूर ने फ़रमाया, हाँ बाहर चलेंगे।

आज सुबह सात बजे हुजूर कार में फिर रईया की नहर के किनारे, लकड़ी लेने गए। शाम के चार बजे तक वहाँ खड़े होकर वृक्ष आदि कटवा कर उन्नीस-बीस गड्डों में लदवाते रहे। शाम को पाँच बजे डेरे वापस पहुँचे। शाम के छः बजे सत्संग में तशरीफ़ ले गये। सत्संग के बाद डाक सुनी। इसके बाद ईंधन के गड्डों को उतरवाते रहे। यानी हुजूर जैसा काम करने वाला शायद ही कोई व्यक्ति हो। लड़ाई में जो ज़रनैल होते हैं वे केवल लड़ाई के समय तक ही काम में लगे रहते हैं। लड़ाई के बाद उनको भी फुर्सत हो जाती है। परन्तु हुजूर का यह हाल तीस-चालीस वर्षों से चला आता है। आज एक घायल भैंसा, जोकि गड्डे में जुता हुआ था, देखकर हुजूर ने फ़रमाया देखो, इसको मन ने इस हालत में पहुँचा दिया है।

बन्नी बग़ी तथा लदरौर के दौरे का हाल

14 मई आज सुबह साढ़े सात बजे डेरे से अपनी कार में चल कर, पहले हुजूर जालन्धर तशरीफ़ लाये। वहाँ दस मिनट ठहर कर, होशियारपुर दस बजे से पहले पहुँच गये। वहाँ इतनी संख्या में स्त्री-पुरुष एकत्रित थे कि प्रोफ़ेसर लेख राज साहिब की कोठी का आँगन तथा एक-दो कमरे बिलकुल भरे हुए थे। कुछ लोग बाहर सड़क पर भी खड़े थे। वहाँ से सवा दस बजे किराये की कार में ऊना की ओर रवाना हुए। रास्ते में जहानखेला पर, जोकि होशियारपुर से पाँच-छः मील पर है, बहुत-सी संगत एकत्रित थी, हजारों की संख्या होगी। वहाँ कार से उतर कर सारी संगत को दर्शन देकर हुजूर आगे रवाना हुए। लेकिन अभी एक मील ही गये होंगे कि कार का डायनमो बिगड़ गया और सूबेदार रक्खा सिंह को कार से होशियारपुर भेजना पड़ा। एक सज्जन ने, जो वहाँ सौभाग्य से खड़े थे, बड़े आदर से हुजूर से अर्ज की कि आप मेरे यहाँ ठहरिये जब तक कि कार वापस न आ जाये। मालूम होता था कि वहाँ उनकी ज़मींदारी थी, रहने की जगह न थी। इसलिये पशुओं के लिये जो मकान अभी नये तैयार करवाये गए थे उनमें

हुजूर के लिये चारपाई बिछा दी। कमरा बिलकुल नया और साफ़ था। हुजूर अपना तौलिया बिछाकर लेट गये। वह साहिब पास ही कुर्सी पर बैठकर इधर-उधर की बातें करने लगे। उनकी बातों से पता लगा कि वह मेरे पुराने मेहरबान, होशियारपुर के बैरिस्टर पण्डित पृथ्वी चन्द जी हैं। मैं उनको बिलकुल न पहचानता यदि वह अपना नाम न बताते। मगर उन्होंने मुझे कुछ देर बाद पहचान लिया। पता लगा कि यहाँ उन्होंने आम और जामुन का बाग़ लगा रखा है।

आज रविवार की छुट्टी के कारण बाग़ का ठेका नीलाम करने आये थे। इस गाँव में पानी की बड़ी समस्या है। एक कुआँ था जिसमें से लोग चरस से पानी निकालते थे। बैलों की बजाय स्त्री-पुरुष दूर तक रस्सी खींचकर ले जाते तब चरस ऊपर आ जाता। दोपहर को पानी गंदला निकलता है क्योंकि कुएँ में पानी की कमी है। दोआबे में पानी की सतह नीचे जा रही है। यहाँ से शिवालिक पर्वत शुरू होता है। उसको कटार धार कहते हैं। उसके दोनों ओर पानी की कमी है। कटार धार का पूर्वी भाग कोह बैत का इलाक़ा कहलाता है। यहाँ पानी की इस क़दर कमी है कि सुना है कि सरकार ट्यूब-वैल लगा कर, इंजन से पानी उठाकर, बाँटा करेगी। इस प्रदेश में गूजर लोग आबाद हैं, जोकि बड़ी-बड़ी मण्डियों में जाकर मज़दूरी करते हैं। पण्डित जी का मिलनसार होना उनकी पुरानी ख़ानदानी शराफ़त ज़ाहिर करता है। उन्होंने चलते समय हुजूर को एक हरा गेंदा पेश किया और बताया कि इसे एक कोरे घड़े में पानी भर कर दो घण्टे तक डाले रखो तो दो महीने तक, जो पानी इस घड़े में से पिया जायेगा, सुगन्ध देगा। यदि इस फूल को कपड़ों के टुक़ में रखा जाये तो कपड़े खुशबूदार हो जायेंगे।

वहाँ से चल कर रास्ते में कई जगह इस तरह लोग सड़क पर इकट्ठे होते थे कि हुजूर महाराज जी को उनके लिये उतरना पड़ता था। अन्त में दो बजे के लगभग ऊना के आगे ठहरना पड़ा क्योंकि वहाँ एक शामियाने के नीचे स्टेज के आसपास, हज़ारों की संख्या में संगत एकत्रित थी जैसा सारा पहाड़ ही वहाँ जमा हो गया था। बड़ी गर्मी, धूप, भीड़-भाड़ और शोर-शराबा था। वहाँ हुजूर शामियाने के नीचे कुछ समय दर्शन देकर, फिर जो कच्ची सड़क ऊना से रियासत मण्डी को जाती है, उससे रवाना हुए। यहाँ से मण्डी 44-45 मील होगी। पहले-पहले तो यह सड़क मैदान में से जाती है तथा गर्मी और लू महसूस

होती है। सड़क भी बहुत ऊँची नीची है। परन्तु आगे जाकर एक ऊँचा हरा-भरा पहाड़ नज़र आया। हमें इस पहाड़ की चोटी पर जाना है। ज्यों-ज्यों इस पहाड़ पर चढ़ते हैं शरीर को आराम मिलता है, लू का नाम नहीं। जब चोटी पर पहुँचे तो वहाँ छायादार वृक्षों के नीचे कई हलवाईयों की दुकानें पाई। यह सड़क बहुत रैनक वाली है। ऊपर से खच्चर, गन्दे बरोजे के कनस्तर और ख़ाली पीपे लाद कर ला रहे हैं। इधर से भी नमक, गुड़, कपड़ा आदि जा रहा है। लोग पैदल भी सफ़र करते नज़र आते हैं। जहाँ कहीं भी छाया है, वहीं ऊँट, खच्चर आराम कर रहे हैं। कई दुकानें पास ही हैं। इस जगह को 'शाहतलाई' कहते हैं। यह ऊना से छः मील की दूरी पर होगी।

इस पहाड़ी की चोटी पर एक तालाब है, जिसमें गन्दा पानी जमा था, जो पीने के लायक नहीं था। तालाब के पास टिकारानी मतिकोट का पक्का प्लेटफ़ार्म बना हुआ है, जहाँ कि वृक्षों की छाया है, जिस पर लोग आराम करते हैं। उसके सामने एक बड़ी साफ़-सुथरी और सुन्दर पक्की सराय है, जिसके बीच में पक्का आँगन और आँगन के पीछे बरामदा है। यह सराय ऊँची है, जहाँ सीढ़ियों पर चढ़कर जाना पड़ता है। यह स्थान मैदान की लू तथा गर्मी से जले हुए (थके हारे) लोगों को अति सुन्दर मालूम होता है। लेकिन वहाँ पीने का पानी जो हलवाईयों ने दिया, कुछ गंदला था जिसे रूमाल से छानकर पीना पड़ा। सराय में कुछ संगत एकत्रित थी। हुजूर अन्दर तशरीफ़ ले गए। मैं और शादी हलवाईयों की दुकानों को ललचाई हुई नज़रों से देखते रहे क्योंकि सुबह केवल दूध पीकर डेरे से चले थे। मेरा विचार था कि पेड़े या बफ़्नी ख़रीद कर खायें। लेकिन शादी ने आवाज़ दी कि हुजूर आ रहे हैं। अतः 'कहरे दरवेश बर जाने दरवेश' यानी फ़कीर का गुस्सा अपने सिर। झटपट पेड़ों का विचार छोड़कर कार के पास आ गये। यहाँ से उसी पहाड़ के पिछली ओर उतर गये। बिलकुल घाटी में आ गये जोकि चारों ओर से पहाड़ों से घिरी हुई मालूम होती थी। लेकिन सामने का पहाड़ पिछले पहाड़ से कम ऊँचा था। इस सुन्दर घाटी में पानी बहुत है। पानी तीन स्थानों से पार करना पड़ता है। उस घाटी और उसके आगे पहाड़ों को पार करके दूसरी घाटी में आ गये, जिसके सामने एक और ऊँचा पहाड़ नज़र आया। उस पहाड़ी में टीन की छत वाले पहाड़ी ढंग के मकान नज़र आते हैं।

स्थान-स्थान पर छोटे-छोटे खजूर के वृक्ष लगे हैं, जिनमें छोटी-छोटी खजूरें भी लगी हैं। पास ही बाँसों के वृक्ष और डण्डा थोहर खड़ी हैं। उसके अतिरिक्त आम के वृक्षों के झुण्ड दिखाई देते हैं। हवा में सुहावनी ठण्डक है। उस पहाड़ को पार करके हमारी मंजिले मकसूद बन्नी बग्गी आ गई। अब आगे कोई पहाड़ दिखाई नहीं देता। खेतों की सीढ़ियाँ दिखाई दे रही हैं। सारा इलाका हरा-भरा है, हवा ठण्डी, पानी मीठा और स्वादिष्ट है।

हम यहाँ सूबेदार साहिब रमखा सिंह के मकान पर उतर पड़े जोकि सड़क से करीब एक मील की दूरी पर होगा। सत्संग का प्रबन्ध रास्ते में वृक्षों के झुंड की छाया में किया गया। इसके आगे सूबेदार साहिब का रहने का मकान है, जिसका सहन घोड़े के खुर की शक्ल का है। सहन में काली सलेटों का फ़र्श लगा हुआ है। फ़र्श से परे कमरे हैं। कमरों में फ़र्श पर दरियाँ बिछी हुई हैं और कुर्सियाँ मेज लगे हुये हैं। छतें नीची हैं लेकिन गर्मी मालूम नहीं होती। सारे कमरे दो मंजिले हैं। हम निचली मंजिल में ठहरे हुए हैं। हुजूर के लिये मुलाकात का एक बड़ा कमरा, उसके आगे सोने का कमरा और स्नानगृह है। यहाँ पहुँचकर बड़ा आराम मिलता है। डेरे में लू और गर्मी का नाम तक नहीं, पानी ठण्डा है। रात को चाहे अन्दर सोयें या बाहर। इस मकान के पीछे बड़ा खुला मैदान है जिसमें सीढ़ीदार खेत और पानी के चश्में हैं। जिस जगह रात को हुजूर का पलंग लगाया गया वहाँ अखरोट, अमरूद और अंजीर के वृक्ष लगे हैं। उससे निचले खेत में बाँसों के झुण्ड खड़े हैं। सैर के लिये बड़ी अच्छी जगह है। सुबह नौ बजे धूप बड़ी मीठी लगती है जबकि मैदान में आठ बजे भी निकलने को जी नहीं चाहता। हुजूर का विचार है कि कालू की बड़ वाली ज़मीन इससे कम ऊँची नहीं। ये दोनों स्वास्थ्य के लिये बड़ी अच्छी मालूम होती हैं। न गर्मी है, न सर्दी और न मच्छर हैं। हाँ, कमरों में मक्खियाँ जरूर हैं। लेकिन कमरों में दोपहर को बड़ी शान्ति रहती है। दिल को शान्ति आ जाती है। मैं रात को बाहर मैदान में सोया। केवल एक गर्म चादर और एक रूईदार पतली तुलाई ओढ़ ली।

15 मई सुबह आठ बजे सत्संग हुआ। संगत मेरी आशा से कम थी। हुजूर की वाणी में से 'नाम निर्णय करूँ भाई'¹⁵ और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'नाम ही ते सभ किछ होआ'¹⁶ पढ़े गए। पूरे दो घण्टे सत्संग होता रहा। साढ़े दस बजे हम सत्संग से अपने-अपने कमरों में वापस आ गये। हाँ इतना लिखना भूल गया कि

इस अन्तिम पहाड़ की चोटी पर बड़ेसर का थाना है और डाकखाना भी है। बहुत-सी दुकानें हैं। अच्छी रौनक की जगह है। वहाँ से यह स्थान तीन मील की दूरी पर है। पहाड़ी लोग अधिकतर फ़ौज में नौकरी करते हैं। उनमें से बहुत-से बड़ी-बड़ी पदवियों पर लगे हुए हैं। उनको सरकार ने फ़ौजी सेवा के बदले बार के इलाक़े में ज़मीन दे रखी है। इसलिये इन लोगों का रहन-सहन तथा जीवन अच्छा हो गया है। इनका रहन-सहन भी शहरों जैसा हो गया है, यद्यपि इनके विचारों में सादापन और सच्चाई है।

किसी ने आकर हुजूर से सवाल किया कि आप पाँच विशेष नामों का सिमरन क्यों बताते हैं? क्यों नहीं राम-राम, वाहेगुरु-वाहेगुरु और दूसरे प्रचलित शब्दों का सिमरन बताते जैसा कि दूसरे धर्मों में जारी है, जैसे कि अल्लाह, रहीम और गॉड आदि। हुजूर ने जवाब दिया कि पूर्ण धनी परमात्मा के सब नाम, जो संसार में लिए जाते हैं, सब सिफ़ाती नाम हैं। जैसे सर्व-शक्तिमान, सर्वव्यापक, रहीम, करीम, दयाल, निर्गुण, सगुण। ये सब मालिक के निजी नाम नहीं हैं। सन्त जो अन्तर में देखकर नाम बताते हैं वे ज्ञाती नाम हैं। जब किसी को उसके अपने नाम से बुलाते हैं तो वह जल्दी हमारी ओर आकर्षित होता है। इसके अतिरिक्त यदि किसी गुण के नाम से पुकारो तो प्रायः हम उसे अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकते। इसलिये जब हम ज्ञाती नामों का सिमरन प्रेम-प्यार से करते हैं तो जिसके वे नाम हैं वह हमारी ओर आकर्षित होता है और हमारे ध्यान को अन्तर में अपनी ओर खींचता है।

16 मई की सुबह पधरेड़ी गाँव में, जो यहाँ से डेढ़ मील के लगभग है, सत्संग किया गया। वहाँ से साढ़े दस बजे के बाद वापस आये। रास्ते में जब कार को छोड़कर घर आ रहे थे तो हुजूर ने बातों के दौरान फ़रमाया कि चीने के कोठे में आदमी डूब जाता है। इस तरफ़ आम अक्सर होते हैं। पहाड़ी लोगों ने बताया कि आम का वृक्ष खेत में फ़सल को कम हानि पहुँचाता है जबकि बेरी और कीकर ज़मीन की तरावट को खींच लेते हैं और फ़सल को बढ़ने नहीं देते।

शाम को सत्संग सूबेदार साहिब के यहाँ हुआ। यह अन्तिम सत्संग था। इसमें हुजूर ने पहाड़ी लोगों की रहनी के अनुसार चार बातों की चर्चा की। पहले पतिव्रत धर्म, दूसरे मूर्ति-पूजा, तीसरे जादू-टोना, चौथा देवी-देवता और भूत-प्रेत की पूजा। तुलसीदास जी की रामायण में से पतिव्रत धर्म का उपदेश सुनाया गया

अध्याय 21

ढेरे और डलहौजी में निवास का हाल

22 मई, 1944 शाम को सत्संग हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से महला पाँच का शब्द 'दिन रात कमाइअड़ो सो आयो माथै। जिस पास लुकायंदड़ो से वेखी साथै।' यानी जो-जो कर्म हम करते हैं वे हमारे माथे पर लिखे जाते हैं। जिस सर्वव्यापी प्रभु से छिपकर कर्म करते हैं वह हमारे अन्दर बैठा देख रहा है। इसी प्रकार शम्स तबरेज़ ने कहा है 'मी नवीसन्द आँकि शुमा में बाजीद, ताकि आँरा बाज़ बखानीद शुमा' अर्थात् जो-जो कर्म तुम करते हो, सब लिखे जाते हैं। बाइबिल के पुराने अहदनामे में हज़रत लूत का दृष्टान्त आया है कि पुराने ज़माने में ननोह और बाबुल शहर बड़े भोग-विलासी शहर थे। परमात्मा ने हज़रत लूत के पास फ़रिश्ते भेजकर पूछा कि यदि इस शहर में पचास व्यक्ति भी ठीक हों तो इसको छोड़ दिया जाये वरना इसको आग और पत्थरों की वर्षा से तबाह कर दिया जाये। हज़रत लूत ने परमात्मा से बार-बार विनती करके उनको इस पर सहमत कर लिया कि यदि दस बन्दे भी इस शहर में नेक हों तो हज़रत लूत का लिहाज़ करके ये शहर नष्ट होने से बचा लिया जाये। ऐसे ही आजकल भी एक भक्त की खातिर बहुत-से लोगों के सिरों पर आनेवाली बला वह भक्तों से प्यार करनेवाला परमात्मा टाल देता है। एक साधु ने बताया कि वह फगवाड़ा से एक ऐसी लारी में सवार हुआ जिसकी छत पर लगभग बीस मन दूध लदा हुआ था और सवारियाँ खचाखच भरी हुई थीं। रास्ते में बोझ अधिक होने के कारण एक टायर फट कर निकल गया और गाड़ी उसी तरफ़ को होकर गिर जाती परन्तु उसका धुरा टेढ़ा हो गया और गाड़ी का एक सिरा ज़मीन से लगता-लगता रह गया। सारा दूध ऊपर से वह गया। सबने कहा कि परमात्मा ने अपना हाथ देकर इस लारों को बचा लिया है। कोई नेक व्यक्ति इसमें सवार है। इसी तरह इस साधु ने कहा कि एक सत्संगी पण्डित की पन्द्रह वर्ष की लड़की उसके सामने गुज़र गई। उसने हुज़ूर

से नाम नहीं लिया था। परन्तु, क्योंकि सत्संगी माता-पिता के घर उसका पालन-पोषण हुआ था और सत्संग में आती रहती थी, इसलिये मरने से कई घण्टे पहले बोली कि महाराज जी उसको लेने के लिये आ गये हैं। फिर जब उसे प्रसाद दिया गया तो खिलखिला कर हँसी और प्रसन्नता से प्राण त्याग दिये।

27-28 मई को मासिक सत्संग हुआ। उपस्थिति अच्छी थी, पर लोग गेहूँ की फ़सल की कटाई आदि में लगे हुए थे, लू का ज़ोर और गाड़ियों में भीड़ थी, इसलिये पहले जितनी उपस्थिति नहीं थी। एक कारण यह भी था कि हुज़ूर अभी-अभी पहाड़ का दौरा करके लौटे हैं इसलिये पहाड़ से कम लोग आये हैं। सत्संग में आसाढ़, सावन और आसोज के महीने 'सार बचन' छन्द-बन्द में से पढ़े गए। गुरु अर्जुन देव जी का वह शब्द पढ़ा गया जिसमें उन्होंने इस दुनिया के लोगों को पुकार-पुकार कर कहा है कि आओ, हमें परमेश्वर ने तुम्हें बुलाने के लिये भेजा है :

जिन तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती घर आओ ।

छोडो वेस भेख चतुराई दुबिधा एह फल नाहीं जीओ ।

सन्त दुनिया को पुकार-पुकार कर बुलाते हैं कि तुम हमारे कहने पर चलो। हम तुम्हें परमात्मा के दरबार में ले चलेंगे। उसके बीच में हुज़ूर ने फ़रमाया कि दुनिया के लोग जब उनका कोई प्यारा मर जाता है 'कागा रौली' मचा कर चुप हो जाते हैं। 'कागा रौली' का पंजाबी शब्द दुनियादारों की वास्तविक अवस्था का चित्र खींचता है। जब किसी कौवे को बिल्ली पकड़कर ले जाती है तो वह काँ-काँ करके अनगिनत कौवे इकट्ठे कर लेता है, जो मँडरा-मँडरा कर काँ-काँ करके आसमान सिर पर उठा लेते हैं। लेकिन न तो बिल्ली को रोक सकते हैं, न कौवे को बचा सकते हैं। इसी प्रकार हम दुनिया के अंधे लोग जब किसी प्यारे की मृत्यु देखते हैं तो हाय-हाय करके, चीखना-चिल्लाना आरम्भ कर देते हैं। यह पता नहीं कि उसको कौन ले गया, किधर ले गया। उसका क्या हाल हुआ। दो-चार घण्टे रोकर सन्तोष करके बैठ जाते हैं, जैसे कौवे करते हैं। फिर मरने वाले को भूल जाते हैं। किसी ने सच कहा है :

मुर्गा दर कफ़स बाँ, माहियां दर मर्कों बाँ।

भाव पक्षियों को पिंजरे में देखो और मछलियों को जाल में।

30 मई को हुजूर ने फ़रमाया कि जिस किसी ने हमसे बात करनी हो वह बारह बजे दोपहर तक कर ले। उसके बाद शाम के छः बजे तक कोई हमें आकर तंग न करे। हम छः बजे सीधे सत्संग में आ जाया करेंगे। बीबी को भी खूब झिड़का परन्तु अन्त में शान्त होकर कहा कि सन्तों का झिड़कना ऐसा ही है जैसे गर्म पानी से मैल का धोना। कल शाम 'सार बचन' कविता से यह आरती पढ़ी गई :

कहूँ आरती राधास्वामी, तन मन सुरत लगाय।
थाल बना सत शब्द का, अलख जोत फहराय।

यह आरती हुजूर स्वामी जी महाराज ने हुजूर चाचा प्रताप सिंह जी के लिये कही थी।

4 जून रविवार को हुजूर जालन्धर शहर सत्संग के लिये गए क्योंकि लाला उमराव बहादुर ने अपने स्वर्गीय पिता राय बहादुर लाला रंजीत गोपाल की याद में यह सत्संग अपने घर मोहल्ला बिक्रमपुरा में करवाना था। हुजूर यहाँ से 7 बजे चल कर पहले सरदार साहिब की कोठी पर तशरीफ़ ले गये। वहाँ से 9 बजे बिक्रमपुरा के चौक में, जहाँ कि लाउड-स्पीकर लग रहे थे और हज़ारों स्त्री-पुरुष एकत्रित थे, सत्संग करने गए। वहाँ 'जग में घोर अंधेरा भारी'⁵ और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से मारु राग में से 'बिख बोहिथा लादया'⁶ पढ़े गए। 11 बजे सत्संग समाप्त हुआ तो हुजूर एक घण्टे तक लाला साहिब के मकान पर विराजमान रहे। उनके बीबी-बच्चे सब प्रेमी हैं। उन्होंने हुजूर को स्वागत के तौर पर प्रेम के शब्द पढ़कर सुनाये। वहाँ से हुजूर सरदार साहिब की कोठी पर वापस आ गये और लोगों से बातें करते रहे। फिर भोजन किया, आराम किया और डॉ. सी. साहिब बहादुर पीर अहसानुद्दीन साहिब को मिलने तशरीफ़ ले गये। पीर साहिब हुजूर से विशेष प्रेम रखते हैं। वहाँ से छुट्टी मिली तो आँधी का जोर था। फिर सरदार साहिब की कोठी पर एक सब जज साहिब से बातें करते रहे और 8 बजे डेरे वापस पहुँच गये। आकर डाक सुनी।

5 जून की शाम को सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'हर की पूजा दुलभ है संतो कहणा कछू न जाई'⁷ पढ़ा गया। गुरु साहिब का मतलब है कि

परमात्मा को पूजने वाले बहुत कम हैं। स्त्री, धन, जाति, देश, संसार, स्वार्थ और मूर्तियों के पुजारी आदि बहुत हैं परन्तु ईश्वर का पुजारी होना आसान नहीं। जब तक पहुँचे हुए गुरु न मिलें और वे सुरत-शब्द योग का रास्ता न बतायें, प्रभु भक्त बनना सम्भव नहीं और प्रभु भक्त बने बिना आवागमन के चक्कर से बचना मुश्किल है। तीर्थ, व्रत, पूजा, योग, ज्ञान, तप, जप से जीव की चौरासी नहीं कटती। इसके बाद हुजुरी पोथी में से 'गुरु की मौज रहो तुम धार। गुरु की रजा सम्हालो यार'⁸ लिया गया। हुजूर महाराज जी ने फ़रमाया कि राबिया बसरी से किसी ने पूछा कि ईश्वर की रजा पर राजी कैसे रहना चाहिये? एक फ़कीर ने कहा कि दुःख को सुख करके भोगना चाहिये। लेकिन राबिया बसरी ने कहा कि इसमें से अहंकार की वृत्ति आती है। फ़कीर को ऐसा चाहिये कि सुख-दुःख में भेद न रखे।

एक सत्संगी ने विनती की कि उसका एक सत्संगी जानकार था, जिसकी स्त्री गैर-सत्संगिन थी। उसको घर में दो चुड़ैलें दिखाई दिया करती थीं और उसको डरा कर कहा करती थी कि यह हमारा मकान है, इसको खाली कर दो नहीं तो तुम सबको मार डालेंगी। इस पर उसके पति ने पाँच नाम का सिमरन किया। उसका यह लाभ हुआ कि वे चुड़ैलें घर के दरवाजे के अन्दर नहीं आती थीं। जब उसकी बीवी और लड़की को नाम मिल गया और उन्होंने भी नाम जपना आरम्भ कर दिया तो उसके बाद वे लुप्त हो गईं। हुजूर ने फ़रमाया कि नाम के निकट कोई भूत-प्रेत नहीं आ सकता।

आजकल डेरे के माल-मवेशी (ढोर-डंगर) चारदीवारी में रखे जाते हैं। लेकिन अब हुजूर ने बड़े सत्संग हाल के आगे एक बड़ी-सी जगह कच्ची चारदीवारी से घेर ली है, जिससे कि सब माल-मवेशी और खेती-बाड़ी का सामान डेरे से बाहर उसके अन्दर रहे और डेरे की यह जगह आबादी के काम आये।

6 जून की शाम को हुजुरी वाणी में से 'काल ने जगत अजब भरमाया। मैं क्या क्या कहूँ बखान'⁹ लिया गया। सन्तमत के अतिरिक्त संसार के सभी धर्म इस भेद से वंचित हैं। उनको पता नहीं कि जिस परमात्मा की वे पूजा करते हैं वह हौमैं, मन यानी काल है। दयाल इससे परे है। काल रूहों को बना या बिगाड़

नहीं सकता। सत्पुरुष ने रूहों की कुछ संख्या उसको सौंप रखी है, जिनको वह शरीर के पिंजरों में कैद करके, इस सृष्टि का काम चला रहा है। जिसको 14 तबक या त्रिलोकी कहते हैं, यह सब काल के घेरे में है। काल उन हमारी जैसी रूहों को, जो कि दयाल ने उसके सुपुर्द कर रखी हैं, मार नहीं सकता लेकिन अपनी रचना की रौनक के लिये उनको तरह-तरह के शरीरों में बदलता रहता है। कभी वृक्ष, कभी पक्षी, कभी साँप, कभी बिच्छू, कभी पशु, कभी मनुष्य, कभी फ़रिश्ते, कभी देवी-देवता आदि शरीरों में उनको कैद रखता है। उनको पता ही चलने नहीं देता कि उसके सिवाय कोई और परमात्मा भी है, यदि उसके अधीन रूहों को यह भेद मालूम हो जाये तो वे दयाल के पास पहुँचने की खोज करेंगी और उसका देश उजाड़ हो जायेगा। इसलिये उसने अलग-अलग धर्म बना कर एक-दूसरे से लड़ा दिये हैं। हर एक व्यक्ति जिस धर्म में उत्पन्न हुआ, उसी को सच्चा मानता है और छानबीन नहीं करता। बल्कि दूसरे धर्म वालों को झूठा कहकर उनसे लड़ाई-झगड़ा करता है। दयाल का मत तो सुलतान-उल-अज़कार यानी सुरत-शब्द अभ्यास का है। प्रत्येक व्यक्ति अपने अन्तर में अभ्यास करके आवागमन के चक्कर से पार हो सकता है। लेकिन लोग अपने-अपने धर्म के साथ इस तरह जुड़े हुए हैं कि इस बात को मानने के लिये भी तैयार नहीं हैं। हुजूर ने तुलसीदास जी का एक श्लोक सुनाया और फ़रमाया कि जिस मनुष्य में दीनता और सच्चाई है तथा जो पराई स्त्री को माँ-बहन समझता है, वह अवश्य परमात्मा को पायेगा। मैं इसका साक्षी हूँ।

डलहौज़ी में निवास का हाल

7 जून को सुबह 7.30 बजे चल कर अमृतसर के रास्ते डलहौज़ी के लिये रवाना हुए। रास्ते में अमृतसर की संगत को दस मिनट दर्शन देकर 9 बजे के करीब पहुँचे। गुरदासपुर लाला ईश्वर दास के मकान पर संगत एकत्रित थी, वहाँ भी आधा घण्टा लगा। फिर दिन के 11.30 बजे पठानकोट से छः मील परे चक्की के फाटक पर पहुँच गये। पूछने पर पता चला कि सर्विस 1 बजे दोपहर बाद जायेगी, इसलिये एक आम के वृक्ष की छाया में हम सबने खाना खाया। मौसम सुहावना था। गर्मी अधिक न थी। जब वहाँ से दुनरे 2.30 बजे पहुँचे तो वहाँ तेज़ धूप, अत्यधिक गर्मी और मोटर कार की छत जलती

हुई मालूम हुई। हमने विश्राम-गृह में आराम किया, पानी पिया और वहाँ से चल पड़े। रास्ते में गर्मी लगती रही। बन्नी खेत पहुँचकर यह आभास हुआ कि ठण्डी जगह पहुँच गये हैं। वहाँ से बूँदा-बाँदी आरम्भ हो गई, लेकिन डलहौज़ी पहुँचने तक समाप्त हो गई। जब कोठी में पहुँच गये तो फिर वर्षा और तेज़ हवा आरम्भ हो गई। काफी सर्दी हो गई। जब शाम को सैर को गये तो हाथों को ठण्डी हवा लगने लगी।

8 जून को मौसम अच्छा हो गया। आजकल धूप अच्छी निकलती है। लेकिन डलहौज़ी में अभी चहल-पहल नहीं हुई। दुकानदार हाथ पर हाथ रखे बैठे हैं। सुनसान-सी मालूम होती है। हुजूर 9 जून को सुबह को सरदार मक्खन सिंह के घर मिलने के लिये तशरीफ़ ले गये। सरदार साहिब बड़े प्रेम से मिले। इधर-उधर की बातें होती रहीं। सरदार बहादुर ने ज़िक्र किया कि उनके सुपुत्र पंचौली आर्ट पिक्चर वाले दो हजार फुट लम्बी फ़िल्म और कई अन्य फ़िल्मों के विशेष दृश्य तैयार कर रहे हैं। इस कला से जो लोग परिचित हैं, उनका बहुत आदर करते हैं। उनके लड़के भी बहुत सभ्य हैं और उच्च कोटि के शिक्षित होते हुए भी बड़ों के सामने अधिक बात नहीं करते।

11 जून को सरदार साहिब एल्समियर में हुजूर से मिलने आये। बातों-बातों में फ़रमाया कि मुझे सुबह क्रब्ज रहती थी। एक डॉक्टर साहिब ने बताया कि ईसबगोल का छिलका ले लिया करो। लेकिन उससे भी अधिक लाभ नहीं हुआ। एक दूसरे डॉक्टर साहिब ने फ़रमाया कि रात को सोते समय काबली हरड़ को बारीक पीस कर दो छोटे चम्मच दूध के साथ ले लिया करो। इससे क्रब्ज दूर हो गई। हुजूर ने फ़रमाया कि बचपन में वे एक साधु के पास क्रब्ज की शिकायत लेकर गये तो साधु ने कहा कि दाल, सब्जी में खाना खाते समय जो तड़क कर घी डालते हो उसकी जगह घी ज़रा गर्म करके डाल लिया करो। तड़के का घी क्रब्ज करता है।

आजकल हुजूर यहाँ आराम कर रहे हैं। सत्संग के इरादे से नहीं आये और न ही सत्संग करते हैं। सुबह और शाम दोनों समय घूम आते हैं। किसी समय भजन में देर हो जाती है तो सुबह सैर को नहीं जाते। हम सबको कहते हैं कि

यहाँ आने का यह लाभ तो है कि जितना हो सके भजन-सिमरन को समय दो। आजकल डलहौजी में मौसम बहुत अच्छा है। वर्षा नहीं, लेकिन दोपहर की धूप इतनी तेज होती है कि धूप में चल-फिर नहीं सकते। नीचे लिखी चिट्ठी, जो आज मिण्टगुमरी से एक सत्संगी की आई है कि किस प्रकार हुजूर महाराज जी अपने सेवकों की सहायता करते हैं, मैं उसकी पूरी नक़ल करता हूँ।

मिण्टगुमरी

10-6-44

राधास्वामी दयाल की दया, राधास्वामी सहाय।

जवाब जरूर दें, शुक्र है! शुक्र है !!

श्री हुजूर महाराज सरदार सावन सिंह जी महाराज,

राधास्वामी।

दो जहान के मालिक, राधास्वामी। अर्ज है कि ता. 5-6-44 को प्रिय केवल कृष्ण सुपुत्रआयु 15 वर्ष की तबीयत बहुत बिगड़ चुकी थी। हुजूर कृपा करते हुए कार में मिण्टगुमरी पधारे। कार तो लाला सुन्दर दास मनियारी वाले की दुकान पर खड़ी कर दी और आप केवल कृष्ण के पास उनके मकान पर आये तथा केवल कृष्ण को आदेश दिया कि चलो। क्योंकि वह बच्चा था, उसको कुछ न सूझा और कहने लगा कि महाराज जी अभी मैंने कोई पाप नहीं किया और अभी यहाँ रहने दिया जाये। इसके बाद उसके पिता ने विनती की कि हुजूर अभी इसको यहाँ रहने दिया जाये। तब हुजूर ने कहा, बहुत अच्छा। उसके बाद आपने केवल कृष्ण से पूछा कि दवाई किसकी करते हो। तो उसने कहा कि मेरा मास्टर है और वह शराब बहुत पीता है। अब डॉ. ध्यान सिंह की दवा शुरू कर दी है; तो आपने कहा कि डॉ. ध्यान सिंह की दवाई किये जाओ। वह योग्य डॉक्टर है। परसों तक तुम ठीक हो जाओगे। अकेले केवल कृष्ण से ही आपने ये बातें की। अब केवल कृष्ण ठीक है। इसके बाद आपने केवल कृष्ण से कहा कि सुन्दर दास को टेलिफोन करो ताकि वह मेरी कार, जो उसकी दुकान पर खड़ी है, ले आये। तब उसने टेलिफोन किया और कार आ गई। फिर हुजूर कार पर सवार होकर चले गए।

डलहौजी में शाम को पाँच बजे के बाद सत्संगी हुजूर के अन्दर वाले इंग्लिश रूम में एकत्रित हो जाते हैं और बातचीत करते हैं।

आज 17 जून की सुबह को हुजूर माल रोड का चक्कर प्रतिदिन की भाँति लगाने गए और सड़क के किनारे बैच पर बिगड़मान हो गये और फ़रमाया कि हुजूर बाबा जी महाराज कई बार इस संसार में जीवों का उद्धार करने के लिये आते रहे। यद्यपि उनकी अपनी मौज न थी फिर भी मजबूरी से आते रहे। जब एक बार मौज से ऐबटाबाद के पास आए, तब पाण्डवों की पहाड़ी अभी मैदान ही थी तब भी उनका आगमन हुआ था। फिर फ़रमाया कि सतगुरु जिस जीव को नाम देते हैं, उसे अपने गुरु के सुपुर्द कर देते हैं। नाम के अक्षर बताने तो आसान हैं। बच्चे भी बता सकते हैं। लेकिन अन्तर में जीवों की सँभाल करना, उनके कर्मों का प्रबन्ध करना बहुत कठिन काम है, आसान काम नहीं। अतः बाबा जी के ज्योति-ज्योत समाने के एक वर्ष बाद तक मैंने किसी को नामदान नहीं दिया। जब फिर आगरा में हुजूर चाचा प्रताप सिंह जी के सत्संग में गये तो वहाँ 28 दिन मेरी उनसे बहस होती रही। वह कहते थे कि 'नामदान' दिया करो। मैं इनकार करता था कि मैं इस योग्य नहीं। अपने किसी साधु को वहाँ नाम देने के लिये भेज दो। अन्त में चाचा जी महाराज ने एक दिन जोश से कहा कि तुम हमें क्या समझते हो ? तो मैंने जवाब दिया कि आपको हुजूर स्वामी जी महाराज का भाई और बाबा जी का प्रिय मित्र और उनका रूप समझता हूँ। तो चाचा जी महाराज ने कहा कि बस यदि तुम मुझे ऐसा समझते हो तो नामदान अवश्य देना होगा। तुम स्वामी जी महाराज का कार्य कर रहे हो। वे स्वयं सँभाल करेंगे। इस पर मजबूर होकर मैंने यह कार्य अपने हाथ में ले लिया।

एक सत्संगी ने पत्र लिखा कि जब आप कहते हो कि केवल सिमरन से ही नौ द्वारों को छोड़कर सतगुरु के चरणों तक पहुँच सकते हैं तो फिर शब्द सुनने की क्या आवश्यकता है। हुजूर ने फ़रमाया कि सिमरन करते-करते चोला छूट जाये और शब्द न सुने तो दोबारा जन्म लेना पड़ेगा क्योंकि ले जाने वाला शब्द है। किसी सत्संगी के सवाल के जवाब में फ़रमाया कि सूक्ष्म शरीर सत्रह तत्त्वों का होता है।

21 जून को सुबह 9 बजे की सर्विस में डलहौजी से रवाना होकर पहले बकलोह की संगत को दर्शन देते हुए पठानकोट दिन के बारह बजे पहुँच गये। वहाँ भी एक स्थान पर संगत एकत्रित थी। वहाँ पाँच मिनट दर्शन देकर

पठानकोट रेलवे स्टेशन पर पानी पिया और फिर वहाँ से गुरदासपुर लाला ईश्वर दास वकील के मकान पर आ गये। महाराज जी वहाँ संगत को आधा घण्टा दर्शन देते रहे। मैं लाला ईश्वर दास से बातें करता रहा। गर्मी तेज़ थी। वहाँ से चल कर धारीवाल से दो मील इधर हम सब एक कुएँ के पास ठहर गये और एक शीशम के वृक्ष के नीचे खाना खाया। वहाँ काफ़ी समय लग गया क्योंकि किसी विशेष स्थान पर पहुँचने की जल्दी नहीं थी। धारीवाल से दो साइकिल सवार एक-दूसरे के पीछे धारीवाल की संगत के भेजे हुए आये कि हुजूर कब पहुँचेंगे। संगत दर्शनों के लिये कई घण्टों से खड़ी थी। अतएव फिर वहाँ से चल कर दर्शन देते हुए बटाला लुहारों के कारखानों पर रुके। वहाँ हुजूर लोहा ढलता देखते रहे। वहाँ से चले तो अमृतसर सत्संग-घर में आकर ठहरे। वहाँ हजारों की संख्या में संगत एकत्रित थी। शाम को सत्संग किया। हुजूर रात को वहाँ रहे। दूसरे दिन 22 जून को आठ बजे सत्संग करके दोपहर को डेरे पहुँच गये।

डेरे में निवास

23 जून, 1944 मासिक सत्संग का समय आ गया था। संगत आ रही थी लेकिन गर्मी बहुत थी, जिस कारण अधिक लोग सत्संग पर नहीं आये। गर्मी के कारण हुजूर का स्वास्थ्य भी कुछ बिगड़-सा गया। इसलिये हुजूर ने सोमवार को नामदान भी नहीं दिया। आज मंगलवार के दिन सब लोग अपने-अपने घरों को चले गए हैं। हुजूर का स्वास्थ्य ठीक हो गया है। रात वर्षा थी। इस कारण मौसम भी सुहावना है। कालू की बड़ जाने की तैयारियाँ हो रही हैं।

2 जुलाई, 1944 रविवार का दिन तो कागज़-पत्र आदि देखने में समाप्त हो गया। शाम को सत्संग सरदार कृपाल सिंह ने किया :

गुरु का ध्यान कर प्यारे। बिना इस के नहीं छुटना।¹⁰

हुजूर स्वामी जी महाराज ने सार बचन छन्द बन्द के इस शब्द में संसार के प्राणियों को सच्ची शिक्षा दी है कि ऐ लोगों, यदि तुम इन सांसारिक कष्टों से छूटना चाहते हो तो गुरु का ध्यान करो। स्त्री, पति, पुत्र, दुनिया के सम्बन्धी, दुनिया की जायदादों और दुनिया के लोगों का ध्यान छोड़ दो। यदि उनका ध्यान करोगे तो मर कर भी उन्हीं में जन्म लेना पड़ेगा। जैसा कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में भी आया है, 'अकाल मूरत है साध संतन की ठाहर नीकी ध्यान कौ'¹¹ यानी

सन्तों का ध्यान करने से मन खड़ा होने लगता है। फिर इसके बाद कहा कि लाभ-हानि, मान-बड़ाई का विचार छोड़ दो, वरना मृत्यु पर छोड़ने पड़ेंगे। जो-जो कर्म अच्छे या बुरे करोगे, सबकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी। जैसा कि गीता में आया है, 'न हीयते कर्म कल्प कोटि शतैरपि' कि कर्म करोड़ों युगों के बाद भी बिना भोगे नष्ट नहीं होते। हुजूर ने फ़रमाया कि कर्म से बचो। सबसे बुरा कर्म क्या है ? किसी का दिल दुखाना। जैसे कि हाफ़िज़ शीराज़ी ने फ़रमाया है :

मैं ख़ुरो महसफ़ बसोज़ो आतिश दर काँबा जन,

साकिन बुतख़ाना बाश मरदुम आज़ारी मकुन।

शराब पी, मुसल्ला जला दे, काबे में आग लगा दे, बुतख़ाने में चला जा, लेकिन किसी के दिल को न दुःखा। इसके बाद गुरु की शरण ले, यह मुक्ति प्राप्त करने का ढंग है। यह सब मत-मतान्तरों का निचोड़ है, जो स्वामी जी महाराज ने इस छोटे-से शब्द में भर दिया है।

5 जुलाई की सुबह को 6.30 बजे कार में चल कर हुजूर जालन्धर आये। वहाँ केवल एक-दो मिनट ठहर कर आदमपुर, शाम-चौरासी की संगत को दर्शन देते हुए 9 बजे से पहले होशियारपुर पहुँच गये। वहाँ से हरियाणा, भुंगा के रास्ते ढोल बाहा 10 बजे आये। होशियारपुर से जो सड़क दसूहा को जाती है उसके बाईं ओर हरियाणा का पुराना क़स्बा है। इस सड़क पर आमों और शीशम के वृक्षों के अतिरिक्त कोई वृक्ष नज़र नहीं आते हैं। हरियाणा से पाँच-छः मील आगे इस सड़क पर भुंगा है जो रियासत कपूरथला में शामिल है। भुंगा से चार मील आगे दायें हाथ को कच्ची सड़क ढोल बाहा को जाती है जो वहाँ से छः-सात मील पर पहाड़ की जड़ में स्थित है। धूप तेज़ लगती है, अतः छाया में बैठते ही आराम मालूम होता है। लू का नामोनिशान तक नहीं है। राजपूतों का यह गाँव शिवालिक पहाड़ी की घाटी में स्थित है। छायादार वृक्ष, जिनमें आम अधिक हैं सब ओर दिखाई देते हैं। पानी इतना कम गहरा है कि ढाँगली से निकाल लेते हैं। एक ओर एक नाला है जो अब सूखा हुआ है लेकिन वर्षा में बहता होगा। जहाँ हम ठहरे हैं, वहाँ कमरे बड़े हवादार हैं लेकिन न कोई स्नानगृह, न कोई बैठक, न कोई विशेष प्रबन्ध दिखाई देता है। शाम को 2 . 30 बजे मैदान में आम के वृक्ष के नीचे सत्संग हुआ। पंखे की कोई आवश्यकता महसूस नहीं होती थी। ठण्डी-ठण्डी हवा चल

रही थी। पाँच बजे सत्संग समाप्त करके हुजूर अपने स्थान पर आ बिराजे। आँगन में आम के पेड़ के नीचे कुर्सी पर बिराजमान होकर रौनक बढ़ाई। आसपास दरी पर सत्संगी एकत्रित हो गये, जिनमें मुसलमान भी थे।

6 जुलाई को सुबह 8 बजे सत्संग आरम्भ हुआ। लेकिन एक ही शब्द पढ़ा था कि जोर से वर्षा आ गई। इसलिये हम सब दौड़कर अपनी-अपनी जगह आ गये। रास्ते में फिसलन भी थी। हुजूर भी कठिनाई से बचे।

हुजूर का विचार था कि यहाँ लोगों को नाम दिया जाये लेकिन दोपहर बारह बजे होशियारपुर से प्रोफेसर लेखराज साहिब कार लेकर आ गये कि तरनतारन में सन्त बग्गा सिंह सख्त बीमार हैं। हुजूर आकर दर्शन दें। 1 बजे वर्षा बन्द हो गई। हुजूर जल्दी-जल्दी कुछ बीबियों तथा भाइयों को सिमरन देकर, सामान बाँध, लारी लदवा, मोटर पर सवार हो, हरियाणा, भुंगा के रास्ते होशियारपुर पहुँच गये और वहाँ से जालन्धर होते हुए शाम के सात बजे के करीब डेरे में पहुँच गये।

तरनतारन वाले बाबा बग्गा सिंह जी के दाह-संस्कार का हाल

7 जुलाई सुबह 7 बजे डेरे से चल कर 9 बजे तरनतारन पहुँच गये तो पता लगा कि सन्त जी 6 जुलाई, 1944 की दोपहर को बारह बज कर चालीस मिनट पर, ठीक जबकि हुजूर को तार मिला था, चोला छोड़ गये। जब अन्दर डेरे में गये तो सारी संगत ज़ार-ज़ार रो रही थी। सन्त जी का शरीर कपड़ों में लपेटकर बर्फ़ की बड़ी-बड़ी सिल्लियों पर रखा हुआ था। हुजूर महाराज जी की प्रतीक्षा हो रही थी। हुजूर ने पहले तो उनको उपदेश दिया कि रोना-धोना बन्द कर दो। यह सन्तमत के सिद्धान्तों के विरुद्ध है। जैसा कि गुरु अमरदास जी ने फ़रमाया है :

मत मैं पिच्छै कोई रोवसी सो मैं मूल न भाया।¹²

कबीर सन्त मूए क्या रोईऐ जो अपने गृह जाय।

रोवो साकत बापूरे जो हाटै हाट बिकाय।¹³

और इसके बाद उनको हुजुरी वाणी में से एक शब्द पढ़वा कर सत्संग सुनाया ताकि उनका ध्यान दूसरी ओर हो जाये :

गुरु कहे खोल कर भाई। लग शब्द अनाहद जाई॥¹⁴

इसके बाद सरदार देवा सिंह जी (जो सन्त जी के परम सेवक हैं) ने विनती की कि बहुत-सी संगत दोपहर के बाद तीन बजे की गाड़ी से आनेवाली है। उसके बाद दाह-संस्कार किया जाये। लेकिन हुजूर ने फ़रमाया कि सारी संगत, बीबियाँ, बच्चे दो दिन से भूखे हैं। जल्दी संस्कार कर दिया जाये। सो सन्त जी के शरीर को स्वयं हुजूर ने एक स्नानगृह में अच्छी तरह स्नान करवाया। इसके बाद बाजों के साथ उनकी अरथी को सत्संग-घर के मैदान में ले जाकर, जहाँ कि सन्त सत्संग किया करते थे, बारह और एक बजे के बीच दोपहर को संस्कार किया गया। कहा जाता है कि सन्त हुक्म दे गए थे कि इसी मैदान में, उनकी समाधि बना दी जाये। इसके बाद 2 बजे के करीब हुजूर ने सन्त जी के ख़ास सेवकों, बीबियों तथा सरदार देवा सिंह को फ़रमाया कि दूध मँगवाओ और पियो, क्योंकि वे कई दिनों से भूखे थे और गिर-पड़ रहे थे। अतएव हुजूर ने स्वयं अपने हाथों से कटोरी में दूध पिलाया। उसके बाद आज्ञा दी कि देखो अब जाकर लंगर जारी करो जिससे सारी संगत खाना खाये। जो संगत बाहर से आये उसकी सेवा करो, सत्संग सुनाओ और धैर्य दो। इसके बाद हुजूर वहाँ से चल कर 4 बजे डेरे वापस आ गये। आकर हम सबने भोजन किया। इसके बाद शाम को 6 बजे सत्संग हुआ। दूसरे दिन सुबह 7 बजे कालू की बड़ को जाना था।

अध्याय 22

कालू की बड़ के दौर का हाल

8 जुलाई को सुबह 7:30 बजे पहाड़ के दौर के लिये चल कर, जालन्धर आधा घण्टा ठहर कर, होशियारपुर आये। वहाँ प्रोफेसर साहिब के मकान पर पाँच मिनट ठहर कर दोपहर के एक बजे के लगभग गगरेट, चिन्तपुर्णी के रास्ते कालू की बड़ आ पहुँचे। चिन्तपुर्णी तक सड़क अच्छी है लेकिन इसके बाद छः-सात मील का टुकड़ा बहुत तंग, भयानक और पेचदार है। मोटर ड्राइवर होशियार और मोटर की ब्रेक मजबूत होनी चाहिये। यहाँ बहुत-से सत्संगी स्त्री-पुरुष उपस्थित थे। पहाड़ की खुदाई हो रही थी। बीबियाँ बट्टे इकट्ठे कर रही थीं। केवल दो कमरे निचली मंजिल पर और दो कमरे ऊपरी मंजिल पर बन पाये। लेकिन किसी दरवाजे पर तख्ते नहीं लगे थे। बड़ी कठिनाई से तीन घण्टे बाद हुजूर के निवास-स्थान में दरवाजों और खिड़कियों पर लकड़ी के सादा तख्ते जड़ दिये गए, क्योंकि वर्षा अन्दर आने से सारे कपड़े भीग जाने का डर था। हमारा साथ वाला कमरा बिना तख्तों के था। निचले कमरे वर्षा से बिल्कुल भीगे हुए थे, क्योंकि पिछली रात यहाँ वर्षा हुई थी। सारी संगत निचले दो कमरों में ठहरी हुई है। उन्हें हमारे आने का पता नहीं था। इसलिये दोपहर के तीन बजे सबने भोजन किया। हुजूर एक घण्टा आराम करके शाम के पाँच बजे काम देखने चले गए। जो ज़ीन की शक्ल की पहाड़ी खरीदी थी, उस पर महँदड़ों के बहुत-से पौधे थे जिनमें से गुजरना और जरीब^क ले जानी कठिन थी। अब वे साफ़ कर दिये गए हैं। क्योंकि पहाड़ी की चौड़ाई कम है, इसलिये पहाड़ी काटकर स्थान को चौड़ा किया जा रहा है ताकि ऊपर कोठी बनाने या सत्संग करने के लिये काफी चौड़ा मैदान मिल सके।

क. खेत नापने की जंजीर।

जब हम जंडियाला की नहर पर से तरनतारन जा रहे थे तो हमने देखा कि नहर के दोनों किनारों पर जो शीशम आदि के वृक्ष खड़े थे सब नहर की ओर झुके हुए थे। बजाय दूसरी ओर झुकने के, नहर की ओर ही उनकी टहनियाँ और पत्ते अधिक झुके हुए थे। यानी वृक्षों को भी यह आभास है कि उधर हमारे लालन-पालन का सामान है, इसलिये उधर को झुको। जहाँ भी पालन-पोषण तथा बढ़ने का साधन है वहाँ वह बिना रूह के नहीं हो सकता। यह चेतन शक्ति है जिसकी सहायता से प्रत्येक प्राणी घास, पौधों से लेकर मनुष्य तक हवा, मिट्टी, पानी, अग्नि और आकाश में से अपने जीवित रहने के परमाणु पचा कर बढ़ता है। चेतन सत्ता न होती तो इस सृष्टि में रौनक नहीं होती। न वृक्ष होते, न पशु-पक्षी आदि; केवल समुद्र, पहाड़, जंगल होते। हुजूर ने फ़रमाया कि मृत्यु के बाद जबकि आत्मा शरीर से निकल जाती है तो उस समय किसी महात्मा या किसी प्यारे व मित्र का फ़ोटो लेना व्यर्थ है। शरीर में रौनक आत्मा की है। शरीर की महानता व क्रूर आत्मा के कारण है। जैसे उपनिषदों में भी आया है, रूह के बिना शरीर मुर्दा व डरावना प्रतीत होता है। उसका चित्र क्या?

9 जुलाई को रविवार था। सेवादार व सेवादारनियाँ खुदाई की सेवा करती रहीं। शाम के 4 बजे पहाड़ी पर सत्संग हुआ। यह पहला सत्संग था तथा बहुत-से लोगों को मालूम न था परन्तु फिर भी हजारों लोग उपस्थित थे। इन सादा व्यक्तियों का प्रेम ही हुजूर महाराज जी को इन सुनसान पहाड़ों में खींच लाया है, वरना यहाँ ठहरने का क्या मनोरथ? न कोई रौनक है, न कोई वस्तु मिलती है। पानी दो मील से गाँव देहरा की बावली से आता है। लोग कठिनाई से घड़ा उठाकर लाते हैं। हाँ, आम बहुत अधिक मात्रा में और ताजे मिलते हैं। रात दो टोकरियाँ मेरे पावों की तरफ और एक सिरहाने की तरफ पड़ी थीं। अभी इमारत थोड़ी बनी है। न बैठने की कोई जगह है न कोई वस्तु रखने की। सत्संग के दो घण्टे के बाद हुजूर उसी पहाड़ी पर, जहाँ कि चोटी पर पत्थरों का थड़ा बना हुआ है, घूमने गये। यह पहाड़ी आसपास के सब पहाड़ों से ऊँची है। इसके बाद रात को बड़ी वर्षा व हवा थी।

आज सुबह हवा व वर्षा का जोर है। दरवाजे बन्द करके अन्दर बैठे हैं। हुजूर यहाँ सत्संग, तुलसी साहिब की वाणी में से करते हैं क्योंकि यहाँ ब्राह्मणों

की आबादी अधिक है और हिन्दू धर्म का जोर है। पहले दिन तुलसी साहिब के दोहे पढ़े गये :

सुरत सैल असमान की, लख पावै कोइ संत।
तुलसी जग जानै नहीं, अति उतंग पिया पंथ॥
पढ़ पढ़ के सब जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई अच्छर प्रेम के, पढ़ै सो पंडित होय॥¹

वे ढाई अक्षर क्या हैं ? उनको दसवें द्वार पर सन्त दिखाते हैं। एक को छोड़ना पड़ता है। एक को लेना पड़ता है। दूसरे दिन घट रामायण में से सन्तों की महिमा सुनाई गई।

जो कछु करहिं करहिं सोइ संता, संत बिना नहिं पावे पंथा॥²

फिर स्वामी जी महाराज की वाणी में से कार्तिक के महीने में से शरीर के अन्दर जो बारह कमल हैं, वे सुनाये गए और कहा गया कि देवी-देवताओं के स्थान मनुष्य की आँखों के नीचे हैं जबकि मनुष्य के शरीर में आत्मा दोनों आँखों के पीछे बैठी है। जब मनुष्य मरता है तो देवी-देवता उसको पहले छोड़ जाते हैं। जब मनुष्य की रूह आँखों में सिमटकर आती है तब उसके प्राण निकलते हैं। देवी-देवता की बैठक गुदा, इन्द्रिय, नाभी, हृदय और कण्ठ के स्थानों पर होने के कारण वे मनुष्य को पहले ही छोड़ जाते हैं।

यहाँ प्रायः आकाश पर बादल छाये रहते हैं। वर्षा अधिक नहीं होती। धूप भी निकल आती है। इसलिये बिस्तर आदि सूख जाते हैं और गर्म वस्त्र पहनने की आवश्यकता नहीं। मेरी खिड़की में से दक्षिण-पूर्व की ओर दूर-दूर तक हरियाली व पहाड़ियाँ दिखाई देती हैं। उनके बीच में नदियाँ बहती दिखाई देती हैं। कहीं कहीं आबादी मालूम पड़ती है। मकानों की छतों पर टीन की चढ़ें पड़ी हैं। दूसरी ओर छोटी-सी पहाड़ी है, जो दरवाजे से दिखाई देती है। इसको हुजूर महाराज जी ने खरीदा है। उस पर उनकी कोठी बनेगी। रात को उस पहाड़ी पर चढ़कर देखा तो दक्षिण की ओर होशियारपुर की बिजली की रोशनी और उससे दाईं तरफ जालन्धर का प्रकाश और बाईं तरफ एक प्रकाश और दिखाई देता था, जो शायद फगवाड़ा या लुधियाना का हो। उत्तर की तरफ देखें तो योल कैम्प का प्रकाश दिखाई पड़ता है। कहते हैं कि यहाँ से ब्यास नदी का रेलवे पुल और डेरा बाबा जैमल सिंह के सत्संग हाल की मीनारें दिखाई देती हैं।

13 जुलाई की शाम को एक सत्संगी की इच्छा पर हुजूर ने घट रामायण में से लोमस ऋषि का संवाद लिया, जिसमें लिखा है कि तीर्थ, व्रत, जप, तप से जीव का कल्याण नहीं होगा जब तक सन्तों की शरण में जाकर, नाम लेकर, कमाई न करे। आजकल इस पहाड़ी, जहाँ कि सत्संग होता है, को काटकर बराबर और चौड़ा किया जा रहा है और बाद में कोठी बनाई जायेगी।

14 जुलाई को दोपहर के एक बजे प्रोफेसर लेखराज पुरी, होशियारपुर के डिस्ट्रिक्ट इंजीनियर के साथ पहुँच गये क्योंकि इंजीनियर साहिब ने चिन्तपुर्णी से कालू की बड़ तक सड़क का निरीक्षण करना था। इस सड़क को अधिक चौड़ा करना चाहिये।

16 जुलाई को सावन की संक्रान्ति थी और सुबह 8.30 बजे से 10 बजे तक सत्संग होता रहा। सत्संग के बाद कुछ प्रेमियों ने हारमोनियम के साथ शब्द सुनाये जिनमें से एक हुजूर की कालू की बड़ में कोठी बनाने के सम्बन्ध में है:

अर्ज आखिरी सतगुरु आ बस तू नेड़े नेड़े।

झगड़े मैं की दस्सां जेहड़े मेरे तेरे।

तेरे जेहा सन्त नाहीं मेरे पापां दा अन्त नाहीं।

* दस्सां मैं केहड़े, केहड़े..... आदि

मालूम होता है कि बाबा बग्गा सिंह के ज्योति-ज्योत समाने पर यद्यपि बाबा जी भाई देवा सिंह को गद्दी पर बैठने का आदेश दे गये हैं और हुजूर महाराज जी भी सरदार देवा सिंह को गद्दी का उत्तराधिकारी समझते हैं, फिर भी कुछ सत्संगी लोग गद्दी का लालच रख कर कह रहे हैं कि उनमें धारा आ गई है। गद्दी के साथ एक सौ बीघे के लगभग ज़मीन है जिसकी उपज से तरनतारन सत्संग का साल भर का निर्वाह चल जाता है।

संक्रान्ति की शाम को, क्योंकि धर्मशाला के बहुत-से लोग सत्संग सुनने आ गये थे, सत्संग हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'सतगुरु सेवन से वडभागी'³ और हुजूर वाणी में से 'यह तन दुर्लभ तुमने पाया'⁴ लिये गए। फिर उसके बाद तुलसी साहिब की घट रामायण में से आरम्भ के छन्द लोगों को सुनाये गए। यहाँ बहेड़े के वृक्षों की लकड़ी की शहतीरियाँ व तुन्न की लकड़ी (जो लाल रंग की होती है) और सेमल (जो सफ़ेद रंग का होता है)

और जिसके रेशे से सिरहाने भरे जाते हैं) मकानों में प्रयोग होते हैं। आजकल यहाँ मौसम बहुत सुहावना है, बादल आ-जा रहे हैं। ठण्डी हवाएँ चल रही हैं। कभी-कभी धूप भी निकल आती है। न अधिक गर्मी है और न अधिक सर्दी। स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है।

19 जुलाई को कालू की बड़ में बड़ी रौनक दिखाई दे रही है क्योंकि कल एक सौ पाँच लोगों को नामदान दिया गया। आज हुजूर ने 350 स्त्रियों और पुरुषों को नाम दिया। इसलिए हजाराँ से भी अधिक सत्संगी स्त्री-पुरुष यहाँ एकत्रित हैं। लोगों को पता था कि शाम को सत्संग होगा, इसलिये शाम के छः बजे यहाँ इतनी जनता एकत्रित हो गई कि लोगों के बीच में से गुजरना कठिन हो गया। एक बड़ा भारी मेला-सा प्रतीत होता था।

20 जुलाई को प्रातः से ही लोग कालू की बड़ को आने आरम्भ हो गये। इस सड़क पर आनेवालों की काफ़ी भीड़ थी। कई बार तो रास्ता नहीं मिलता था। यह भीड़ शाम के तीन बजे तक लगी रही। हुजूर सत्संग में तशरीफ़ ले गये। हुजूर ऊँची जगह तख़्त पर बिराजमान थे और नीचे में भी बैठा था। स्त्री-पुरुषों का एक समुद्र-सा प्रतीत होता था। रंग-बिरंगी पगड़ियाँ ही पगड़ियाँ दिखाई देती थीं या बीबियों के रंग-बिरंगे दुपट्टे। सारे मैदान में लोग खचाखच भरे हुए थे। यह वह मैदान है जोकि बोहड़ से नीचे है और जहाँ हुजूर की कोठी बनेगी। इस मैदान के दोनों तरफ़ ढलान पर लोग खड़े थे और जो रास्ता कालू की बड़ को पब्लिक सड़क से आता है, उस पर इतनी भीड़ थी कि बीच में से गुजर नहीं सकते थे। दूर-दूर पहाड़ी गाँवों व झोंपड़ियों से स्त्री-पुरुष और बच्चे आ रहे थे, एक बड़ा भारी मेला-सा प्रतीत होता था। जैसे कि मेलों में होता है, इस सड़क पर और कालू की बड़ की सड़क पर हलवाईयों और आम बेचने वालों की बहुत-सी दुकानें सजी हुई थीं। यह वही स्थान है जहाँ पहले जब हम दिसम्बर 1943 में जगह देखने आये थे तो बिल्कुल सुनसान थी और जिस जगह अब लोग सत्संग सुन रहे हैं, महंदड़ के पौधे इतने ज्यादा थे कि बीच में से होकर चलना कठिन था। हुजूर ने इन पौधों को साफ़ करा कर निचली तह को कई फुट कटवा कर एक समतल मैदान सत्संग के लिये और बाद में कोठी के लिए बनवा लिया है। अब हम इस मैदान से नीचे रहते हैं।

सत्संग में स्वामी जी महाराज के सार बचन नज़म में से 'जग में घोर अंधेरा भारी' और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'इस गुफा मह अखुट भंडारा' लिये गए। दोनों में यह बताया गया कि परमात्मा इनसान के अन्दर रहता है और उसके मिलने का रास्ता भी अन्दर है। बाहर किसी को न मिला है और न मिलेगा। बाहरमुखी क्रिया सब व्यर्थ है। जब तक अन्दर न जायें, जीव की आवागमन से मुक्ति सम्भव नहीं। अन्दर जाने का रास्ता पूरा सतगुरु ही बता सकता है, जो स्वयं अन्दर गया हो। अभी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की कथा समाप्त नहीं होने पाई थी कि वर्षा आरम्भ हो गई। पहाड़ी स्त्रियाँ बिना छतरी के घर से कम निकलती हैं और पुरुषों के पास भी प्रायः छतरियाँ होती हैं। सबने छतरियाँ तान लीं। ऊपर से जहाँ कि मैं बैठा था, काले सफ़ेद तम्बुओं का एक जंगल-सा प्रतीत होता था। लोगों ने विनती की कि सत्संग जारी रखा जाये। तो तुलसी साहिब की घट रामायण में से यह गज़ल 'दिल का हुजरा साफ़ कर जानों के आने के लिये' पढ़ी गई। हुजूर ने उसकी व्याख्या की और फ़रमाया कि कुरान शरीफ़ में जो 'शाहरग' की चर्चा है उसका अर्थ गले की घुण्डी ही नहीं बल्कि 'शाहरग' बाल जैसी एक बहुत बारीक रंग है जोकि सतगुरु अन्दर अभ्यास में बताते हैं, उसमें से होकर ही रूहानी दुनिया में जा सकते हैं। उसके बाद तुलसीदास की रामायण में से अनुसूईया का सीता जी को पतिव्रत धर्म का जो उपदेश है, वह सुनाया गया। उसके बाद दरबारी दास 'उडारू' ने अपनी पंजाबी कविता हुजूर की सेवा में सुनाई, इसके बाद दो सत्संगियों ने एक भजन गाया :

लक़्खौं शकलौं तकौयाँ अखियाँ ने, कोई नज़र मेरी विच खुबदी नहीं।

ऐ सावन दीन दयाल मेरे, तेरा नाम लियाँ बेड़ी डुबदी नहीं।

हुजूर ने फ़रमाया कि अभी एक वर्ष बाद कालू की बड़ का नया नाम रखा जायेगा।

इस प्रदेश में बहुत-से महन्त हैं। यहाँ से डेढ़ मील पर धर्मसाल में, जोकि ब्राह्मणों का गाँव है, महन्त लक्ष्मीधर की गद्दी है। इस प्रदेश में अधिकतर आबादी ब्राह्मणों की है, जो सनातन धर्म के विचारों के हैं। कुछ महन्त श्री गुरु ग्रन्थ साहिब को भी मानते हैं। हुजूर का विचार है कि हुजूर के साथ ये सब लोग प्रेम-प्यार से भाइयों की तरह मिलें-जुलें। इस विचार को ध्यान में रख कर हुजूर ने अपने जन्म-दिन के अवसर पर महन्त साहिब को बुलाने के लिये कई सभ्य व्यक्ति भेजे। परन्तु

दुर्भाग्यवश आज सूर्य ग्रहण का दिन है। महन्त साहिब ने ग्रहण की समाप्ति पर भोजन करना था इसलिये वह तशरीफ़ नहीं ला सके। उनके छोटे भाई बधाई देने के लिये तशरीफ़ लाये और बड़े प्रेम के साथ हुजूर से मिले। हुजूर ने कल कुछ मुसलमान तेलियों को नामदान दिया जोकि धर्मसाल के तेलियों के सम्बन्धी थे, लेकिन वहाँ के निवासी नहीं थे। इन धर्मसाल के तेलियों ने एक-दो मौलवी इकट्ठे किये ताकि उन लोगों पर, जिन्होंने हुजूर से सुरत-शब्द योग (सुल्तान-उल-अज़कार) का रास्ता लिया था, आरोप लगाकर अपने धर्म से अलग करने का फ़तवा दे दिया जाये। उन मौलवी लोगों ने हुजूर को एक सन्देश लिखकर भेजा कि आज अरबी, फ़ारसी के विद्वान धर्मसाल में इकट्ठे होंगे। आप विचार-विमर्श के लिए तशरीफ़ लायें। हुजूर फ़क़ीर हैं व अभ्यासी हैं। स्वामी जी महाराज ने कहा है कि :

रूबरू आमिलाने बातन फ़हम।

आलिमां इल्मे जाहिरी जाहिल।

अन्तर्मुख अभ्यासी और अनुभवी पुरुषों के सामने विद्वान और बाहरमुखी ज्ञानी मूर्ख हैं। विद्वान लोग परमात्मा के दरबार के पहरेदार होने का दावा करते हैं। वे कहते हैं कि जो कोई परमात्मा के दरबार में जायेगा, उनके पहरे में से होकर जायेगा। जो उनमें से होकर नहीं गया और वह परमात्मा से मिलने का दावा करे तो उसका दावा झूठा है। उनको यह नहीं पता कि परमात्मा के चाहने वाले एक दूसरे रास्ते से परमात्मा के पास पहुँच जाते हैं, जिसकी आम लोगों को ख़बर भी नहीं। जैसे शम्स तबरेज़ ने फ़रमाया है :

अक़ल ग़ौयद शस जहत अस्त व हेच बेरूँ राह नेस्त,

इश्क़ ग़ौयद हस्त राहो रफ़ता अम बारहा।

अर्थात् बुद्धि कहती है कि इसके सिवाय और कोई रास्ता नहीं है। प्रेम कहता है कि रास्ता है और मैं कई बार उस रास्ते पर गया हूँ।

हुजूर ने उनको जवाब दिया कि आज जोड़ मेल है, उनको फुर्सत नहीं है और न वे बहस पसन्द करते हैं, न आम जलसे में जाते हैं। क्षमा किया जाये। इस समय शाम के छः बजे हैं, जब मैं यह लिख रहा हूँ। मेरे कमरे की खिड़की में से लोगों की भीड़ पब्लिक रोड पर वापस जाती दिखाई दे रही है।

21 जुलाई, 1944 को होशियारपुर के डिप्टी कमिश्नर के आदेशानुसार, जो सड़क चिन्तपुर्णी से कालू की बड़ को जाती है, उसकी मुरम्मत आरम्भ हो गई। कई स्थानों पर सड़क केवल आठ फुट चौड़ी थी जबकि कागज़ों में पाँच करम लिखी हुई है। लगभग पचास-साठ मज़दूर पहाड़ियाँ काट-काट कर सड़क की चौड़ाई ठीक कर रहे हैं और सड़क को भी मिट्टी और पत्थर बिछाकर बराबर कर रहे हैं। यह कार्य कई दिन तक होते रहने की संभावना है। 21 जुलाई को शाम के सत्संग में कबीर साहिब का शब्द 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है' लिया गया। बहुत-से ब्राह्मण लोग उपस्थित थे। सबने प्रेम से सुना।

22 जुलाई को सरदार भगत सिंह एडवोकेट जालन्धर से अपनी कार में तशरीफ़ लाये। जालन्धर से चार बजे के बाद चल कर सुबह 8-9 बजे के करीब यहाँ पहुँच गये। शाम के पाँच बजे वापस चले गए। डलहौज़ी जाने के लिये दो दिन चाहियें।

यह स्थान आमों के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ चूसने के लिये आम अच्छे और सस्ते मिल जाते हैं। भाई शादी ने आम चूसते-चूसते यह सुनाया :

तरन तारन दिया मुनारिया, सिरों पतलेआ ते पैरों भारिया।

तू मसया ते सारा जहान तारिया, मैंनूँ वी अम्बां विच वाड़िया।

मैं वी नहीं बोरा किसे नाल दे नूँ दिखालिया।

24 जुलाई को प्रातः बड़ी वर्षा थी। वर्षा के रुक जाने की प्रतीक्षा में 9 बजे कालू की बड़ से रवाना हुए। उस समय वर्षा बन्द हो चुकी थी। बड़ के सामने की सड़क का कुछ भाग ठीक हो चुका था। लेकिन आगे जाकर चिन्तपुर्णी के पास कार का दायीं पहिया एक डंगे पर से गुज़रा, तो डंगा नीचे बैठ गया। यदि हुजूर कार को न उहराते तो कार का पिछला पहिया खड़्ड में जाता। यहाँ चढ़ाई थी, इसलिये हम सब लोग पैदल जा रहे थे, जोकि बड़े सौभाग्य की बात हुई। वरना डाइवर यदि कार को नहीं रोकता तो पिछला पहिया नीचे जाता और यदि अगला पहिया नीचा करते तो अगला पहिया खड़्ड में जाता। इसलिये मज़दूरों को बुलाकर कार को उठाकर दूसरी तरफ़ धकेला गया और आगे चल दिये। चिन्तपुर्णी में देवी-भक्त, स्त्री तथा पुरुष पैदल और ताँगों में आ रहे थे, क्योंकि देवी का मेला सावन सुदी अष्टमी का होना बताया जाता है। यहाँ से लेकर सर्वा

के किनारे तक उतराई है। कदम-कदम पर नानबाई और हलवाईयों की दुकानें हैं जिनमें लोग खा-पी रहे हैं। कुछ सड़क के किनारे बैठकर आम चूस रहे हैं। सर्वाँ के किनारे तक यही हालत है। जब वहाँ पहुँचे तो सर्वाँ चढ़ी हुई थी। कार गुजर नहीं सकती थी। एक-दो लारियाँ कठिनाई से गुजरीं। वहाँ हम पन्द्रह मिनट ठहर गये कि सर्वाँ ज़रा उतर जाये। अन्त में एक लारी पर, जिसमें डेरे के लोग बैठे हुए थे, हुजूर और अन्य कार की सवारियाँ बैठकर गगरेट आ गई, जहाँ पर बहुत-सी संगत एकत्र थी। वहाँ आकर कार का इन्तिज़ार करने लगे। दरबारी दास संगत को शब्द सुना-सुना कर आधे-पौने घण्टे तक निहाल करता रहा। जो लोग चिन्तपूर्ण जा रहे थे वे भी यह दृश्य देखने के लिये खड़े हो गये। वहाँ से चल कर रास्ते में एक-दो जगह संगत को दर्शन देते हुए, होशियारपुर तीन बजे के करीब पहुँच गये। वहाँ हम सबने स्नान किया। हम पहाड़ से जो उतरे थे इसलिये हमें गर्मी बहुत तेज़ लग रही थी। वहाँ हम सबने पुरी साहिब के यहाँ भोजन किया। वहाँ से पाँच बजे के बाद चल कर जालन्धर पहुँच गये।

अध्याय 23

डेरे में निवास का हाल तथा कालू की बड़ का दौरा

28 जुलाई, 1944 को हुजूर का जन्म-दिन है और लोग धड़ाधड़ डेरे आने आरम्भ हो गये हैं। लेकिन कठिनाई यह है कि ब्यास रेलवे स्टेशन पर 11 बजे से 5 बजे तक कोई ताँगा नहीं मिलता। उसी समय ताँगों की बहुत आवश्यकता होती है क्योंकि सवारियाँ बाल-बच्चों को लेकर धूप में पैदल नहीं आ सकती। इसलिये हुजूर की आज्ञानुसार अमृतसर से एक प्रेमी सज्जन, जिनकी अपनी लारियाँ हैं, एक लारी लेकर पहुँच गये और यह कठिनाई समाप्त हो गई। मौसम का यह हाल है कि आकाश पर बादल छाये रहने पर भी वर्षा कम है। जब हवा चलनी बन्द हो जाती है तो बहुत गर्मी महसूस होती है। जन्म-दिन तक बहुत-सी संगत डेरे में एकत्रित हो गई। परन्तु डेरे में इतने मकान नहीं थे। इसलिये बहुत-से प्रेमी स्त्री-पुरुष बरामदों में समान रखे बैठे हैं और वहीं पर दिन-रात गुज़ारा करते हैं। जिन लोगों के पास मकान हैं वहाँ भी तिल धरने की जगह नहीं है। प्रत्येक मकान वाले के मित्र तथा सम्बन्धी लोग आकर ठहरे हुए हैं।

जन्म-दिन का उत्सव

28 जुलाई, 1944 को सुबह पहले हुजूर ने हुजुरी वाणी में से दो शब्द और एक शब्द श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से पढ़वा कर व्याख्या की। इसके बाद बलसराय के रागियों की पार्टी ने शब्द-कीर्तन सुनाया :

मोरी रुण झुण लाया भैणे सावण आया।

जिसको सारी संगत ने बहुत पसन्द किया। इसके बाद 'भई परापत मानुख देहुरीआ। गोबिंद मिलण की एह तेरी बरीआ' सुनाया।

इतने में ग्यारह बज गये और उत्सव समाप्त हुआ। फिर शाम को 'सतगुरु का नाम पुकारो। सतगुरु को हियरे धारो' पढ़ा गया। इसके बाद कवि दरबार

हुआ जिसमें भिन्न-भिन्न कवियों, 'मजलूम', 'दीवाना' और सरदार दर्शन सिंह ने अपनी-अपनी कविताएँ पढ़कर सुनाई, जो लोगों ने बहुत पसन्द की। 'मजलूम' साहब का :

मैं हरा ज़र्रा सावन नुमा देखता हूँ, मैं मुर्शिद में अपना खुदा देखता हूँ।

सरदार दर्शन सिंह की उच्चकोटि की नज़म तथा मिस्टर दीवान अली 'दीवाना' की फिल्मी ढंग की कविता 'सावन के संग चला चल' सुनकर लोग खुश हुए। इसके बाद ढड़ड़ सारंगी वालों ने अपने दो शब्द सुनाये। इस समूह ने देहात के मेले की याद दिला दी।

राय साहिब हरनारायण जी ने अपने भाषण से लोगों को मोहित कर लिया। लेकिन हुजूर ने फ़रमाया कि मुझे अपनी बड़ाई सुनना पसन्द नहीं। आप लोगों ने मुझे परमात्मा का परमात्मा कहकर सतलोक पर चढ़ा दिया। मैं तो अभी शिष्य यानी सेवक भी नहीं बना। यदि सतगुरु मुझे सेवक बनाना ही स्वीकार कर लें तो भी धन्यवाद ही दूँगा।

चे निसबत खाक रा बा-आलमे पाक।

पृथ्वी की धूल की पवित्र सृष्टि से क्या तुलना! मैं तो गुनहगार बन्दा हूँ। जब तुम लोग मेरी प्रशंसा करते हो तो मैं अपनी सुरत खींचकर बाबा जी के चरणों में डाल देता हूँ। मैं अगले वर्ष तुम्हारे क़ाबू में नहीं आऊँगा।

समय थोड़ा था। बाक़ी कवियों को उनके हठ करने पर कहा गया कि तुम्हें कल समय दिया जायेगा।

29 जुलाई को सुबह 8 बजे सत्संग आरम्भ हुआ। 'काल ने जगत अजब भरमाया। मैं क्या क्या करूँ बख़ान' लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि संसार के बहुत सारे धर्म और मत, काल और दयाल में भेद नहीं जानते। काल को ही परमात्मा समझकर उसकी पूजा कर रहे हैं, जबकि काल त्रिलोकी का नाथ है। वह चौथे पद यानी मुकामे हक़ अथवा सतलोक में कभी नहीं जा सकता। न रूहों को उत्पन्न कर सकता है, न ही नाश कर सकता है। उसने कई युगों तक भक्ति करके दयाल सत्पुरुष से रूहें ली हैं। उनको तन, मन के पिंजरों में कैद करके कभी स्वर्ग, कभी नरक और कभी चौरासी में घुमाता है। सत्पुरुष दयाल का उनको पता नहीं देता। वे काल को ही परमात्मा समझकर उसकी पूजा कर रहे हैं। काल चाहता है

कि रूहें सदा उसके अधीन रहें और उसकी त्रिलोकी आबाद रहे। महात्मा धुर-धाम सतलोक से आकर जीवों, रूहों को उपदेश देते हैं कि यह देश तुम्हारा देश नहीं है। यह जातियाँ तुम्हारी जातियाँ नहीं हैं। तुम्हारी असली जाति सतनाम और तुम्हारा असली देश सतलोक है जोकि सदा स्थिर रहनेवाला और सब सुखों का भण्डार है। तुम काल के देश को, जोकि अस्थिर माया तथा कर्मों के नियमों का देश है, छोड़कर हमारे साथ चलो। इस शब्द के बाद लाला दरबारी लाल और एक दो साहिबान ने अपनी-अपनी कविताएँ पढ़कर सुनाई।

30 जुलाई को मासिक सत्संग 8 बजे आरम्भ हुआ। भीड़ इतनी थी कि पहले कभी देखने में नहीं आई। संगत पचास-साठ हजार के करीब थी। सत्संग के समाप्त होने पर एक मुसलमान साहिब ने कविता सुनाई :

सुरते हक़ रा ख़्वाही, सुरते मुर्शिद बर्बी।

मतलब यदि तू परमात्मा को देखना चाहता है तो पूरे सतगुरु के दर्शन कर। एक सिक्ख ने पंजाबी कविता पढ़ी। इसके बाद वर्षा आरम्भ हो गई वरना और भी बहुत-से लोग अपने-अपने लेख पढ़ना चाहते थे। 31 जुलाई तथा 1 अगस्त को नामदान दिया गया।

बाबा देवा सिंह जी के गद्दी पर बैठने के अवसर पर

हुजूर का तरनतारन का दौरा

3 अगस्त को सुबह हुजूर बाबा देवा सिंह के गद्दी पर बैठने के उत्सव पर नहर के रास्ते तरनतारन तशरीफ़ ले गये। वहाँ सत्संग किया और दूसरे दिन शाम को तीन-चार बजे के करीब गद्दी पर बैठने की रीति आरम्भ हो गई। पहले हुजूर ने सत्संग किया। उसके समाप्त होने पर सरदार देवा सिंह जी को अपने बराबर बैठाकर फ़रमाया कि अब तुम सन्त बग्गा सिंह की जगह पर काम करो। जो काम वह करते थे, यानी नामदान देना और सत्संग करना, अब वे तुम्हें करने होंगे। लेकिन सारी संगत के साथ प्रेम-प्यार का बर्ताव करना होगा। यदि कोई तुम्हारे विरुद्ध हो तो उसको यहाँ से बाहर निकाल दो। किसी से मत डरो। एक सत्संगी ने सवाल किया कि हम बाबा देवा सिंह जी को क्या ख़याल करें? उनको सत्संग-घर का और उसकी जायदाद का मैनेजर ख़याल करें या कुछ और? हुजूर ने फ़रमाया कि जैसा तुम बाबा बग्गा सिंह

को समझते थे वैसे ही समझो। जब तुम ध्यान करके सूर्य-चाँद से ऊपर जाओगे तो बाबा बग्गा सिंह और बाबा देवा सिंह जी दोनों के स्वरूप आ जायेंगे। हमारे यहाँ प्रायः ऐसे होता रहा है और अब भी होता है कि जिन सत्संगियों ने बाबा जैमल सिंह जी से नाम लिया था बाबा जी के ज्योति-ज्योत समाने के बाद ऐसा होता रहा कि दोनों स्वरूप अन्दर आकर दर्शन देते रहे या पहले हुजूर का स्वरूप आता फिर बाबा जी महाराज का या पहले बाबा जी का फिर हुजूर का। इसके बाद हुजूर ने बाबा देवा सिंह जी को एक पगड़ी और 125 रुपये नक़द भेंट किये। फिर दूसरे लोगों ने भी पगड़ियाँ भेंट में दीं। उसके बाद हुजूर पानी पीकर अमृतसर को रवाना हो गये। रास्ते में एक गाँव में, जो सड़क के पास ही दाईं ओर था, सत्संग किया।

फ़िरोज़पुर का दौरा

अमृतसर में सुबह सत्संग किया और दूसरे दिन दोपहर के तीन बजे फ़िरोज़पुर छावनी को रवाना हो गये। वहाँ से शाम के छः बजे नहर के रास्ते खालड़ा ललयानी कसूर जा पहुँचे। पहुँचते ही वर्षा आरम्भ हो गई। दूसरे दिन सेशन जज सरदार सेवा सिंह की कोठी पर सत्संग किया। छः सात अगस्त दोनों दिन सुबह-शाम दोनों समय सत्संग होता रहा। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से मारू राग के शब्द महला तीसरा से लिये गए। आखिरी सत्संग में कबीर साहिब की वाणी में से 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है'⁵ लिया गया। आखिरी सत्संग में लोगों की बहुत भीड़ थी। जैसे-जैसे लोगों को हुजूर के आने का समाचार मिलता गया, उपस्थित-जनों की संख्या में वृद्धि होती रही। चौधरी साधु राम पुलिस सुपरिण्टेण्डेंट फ़िरोज़पुर वाले अपने बाल-बच्चों के साथ पधारे। वह हुजूर के पहले से ही सेवक थे। सिविल सर्जन डॉ. राज सिंह साहिब और उनके बाल-बच्चे, आई. एम. एस. कर्नल चन्दानी, मैजिस्ट्रेट ठकुर अर्जनसिंह साहिब, एडीशनल सब-जज लाला पुरुषोत्तम लाल साहिब और दूसरे साहिबान शामिल हुए।

8 अगस्त को लगभग एक सौ पचास स्त्री-पुरुषों को नामदान दिया गया। कहते हैं कि कई स्त्रियों का ध्यान उसी समय लग गया। उनको अन्दर प्रकाश और आवाज़ सुनाई देने लगी। 9 अगस्त को सुबह हुजूर रवाना हुये। लेकिन रास्ते में रिसालदार मेजर खुशहाल सिंह ने हुजूर को आरमर्ड कारें (जंगी मोटरें) दिखाई। एक कार तो विशेषकर नोट करने के लायक है, जिसकी गोला चलाने की नाली

बहुत लम्बी थी। कहते थे कि पन्द्रह मील तक गोला फेंकती है। इस मोटर के अन्दर चार व्यक्तियों की जगह है। ड्राइवर का सिर ही बाहर निकलता है। वह भी खतरे के समय अन्दर कर सकते हैं। दूसरा व्यक्ति दूरबीन लगाकर देखता रहता है। एक कमाण्डर होता है और एक निशानेबाज़। इस नाली को जिस ओर चाहें घुमा सकते हैं और मोटर के आगे एक बहुत बड़ा लोहे का मोटा तख्ता लगा रखा है। जिस पर यदि गोली लगे तो गोली अन्दर नहीं जा सकती, बाहर ही गेंद की तरह उछलकर रह जाती है। उसके बाद हुजूर ललयानी में आकर सड़क के साथ वाले स्कूल में एक घण्टा सत्संग देकर खालड़े की तरफ नहर की पटरी के साथ-साथ रवाना हुये। नहर के महकमे के अफ़सर लाला अर्जन दास साहिब यहाँ अपने बाल-बच्चों के साथ कार में आ मिले। ललयानी से एक पक्की सड़क लाहौर को जाती है। ललयानी से दो मील पर बहुत चौड़ी नहर है; जिसके साथ पन्द्रह-सोलह मील पर खालड़ा है। ललयानी और खालड़ा का पानी खारा है। इसलिये उस क्षेत्र को खारा-माझा बोलते हैं। लेकिन अब नहर के कारण मीठे कुएँ भी हो गये हैं। नहर के किनारे से दायें हाथ को खालड़ा का नया बाज़ार और मण्डी है। लोग स्वस्थ, लम्बे, बलवान और खुशहाल दिखाई दिये। लेकिन सत्संग से बेखबर और धार्मिक पक्षपात में फँसे हुए हैं। फिर भी खालड़ा सत्संग-घर के बाहर मैदान में, जहाँ सत्संग हुआ, काफी भीड़ थी। यहाँ और ललयानी में लाउड-स्पीकरों का प्रबन्ध था। वहाँ भी मारू राग का एक शब्द सुनाकर हुजूर खालड़ा नहर के बैंगले से पानी पीकर अमृतसर शाम के तीन बजे पहुँच गये और वहाँ भी एक सत्संग देकर शाम के आठ बजे के लगभग डेरे वापस आ गये।

बाबा बग्गा सिंह जी के फूलों का जल-प्रवाह

लगभग उसी समय तरनतारन वाले बाबा देवा सिंह जी अपनी कार में कुछ सत्संगियों के साथ बाबा बग्गा सिंह जी के फूल ब्यास नदी में जल-प्रवाह करने के लिये आ पहुँचे। यद्यपि कुछ सत्संगियों का विचार था कि तरनतारन सत्संग-घर के मैदान में बाबा जी की समाधि बनाई जाये, लेकिन हुजूर महाराज जी ने गद्दी पर बैठने की रस्म के समय उनको इस बात से मना करके फ़रमाया कि यह सन्तमत के सिद्धान्तों के विरुद्ध है। सिक्खों के दसों गुरु साहिबान में से किसी की समाधि नहीं बनाई गई। यह बुत-परस्ती तथा क़ब्र-परस्ती को बढ़ावा देना है। इसलिये कल 10 अगस्त को ये फूल हुजूर ने स्वयं तशरीफ़ ले जाकर

प्रवाह कराये। उसके बाद सत्संग किया गया। दोपहर को सारी पार्टी खाना खाने के बाद चली गई।

13 अगस्त रविवार के दिन सुबह 8 बजे के करीब डेरे से कार में कालू की बड़ को चल दिये, क्योंकि वहाँ सड़क ठीक कराने का निरीक्षण करना था। रास्ते में जगह-जगह जैसे आदमपुर, मदारपुर, मानको, शाम चौरासी, होशियारपुर में संगत एकत्रित थी। होशियारपुर में प्रोफेसर साहिब के मकान पर हम लोगों ने पानी पिया। वहाँ ज़िला इंजीनियर साहिब से मिलकर गगरेट की ओर रवाना हुये। रास्ते में मियाँ खेल, मंगोवाली, गगरेट में भी संगत इकट्ठी थी। भरवाई में हुज़ूर सरकारी बैंगले में देहाती बैंक के असिस्टेंट रजिस्ट्रार सरदार इन्द्र सिंह साहिब से मिलने गये। वहाँ जाते ही मूसलाधार वर्षा होने लगी और करीब एक घण्टा होती रही। जब वर्षा रुकी तो कार में सवार होकर चिन्तपुर्णी की ओर चल दिये। रास्ते में वर्षा दुबारा आने के कारण चिन्तपुर्णी से परे अमृतसर सेवा समिति की धर्मशाला में ठहरना पड़ा। वहाँ लाहौर के एक वैद्य साहिब ने बड़े प्रेम-भाव से आदर किया। यह धर्मशाला पक्की बनी हुई है और दो मंजिली है। इसमें बहुत बढ़िया पक्के फ़र्श के कमरे हैं। आगे बरामदा है। इस मकान की नींव सड़क से बहुत ऊँची है। यह जगह कभी-कभी ठहरने के लिये बहुत अच्छी मालूम होती है, विशेषकर जब मेले का शोर-शराबा न हो। सामने हलवाई की दुकान है। दूर-दूर तक सुहावना दृश्य है। वैद्य साहिब कवि भी है। उन्होंने अपनी उर्दू की कविताओं से लोगों का मनोरंजन किया। कहने लगे कि सत्संग में जरूर आऊँगा। क्योंकि उनकी एक कविता में परमात्मा की खोज के विषय में चर्चा थी, इसलिये हुज़ूर ने फ़रमाया कि यद्यपि परमात्मा सर्वव्यापक है पर वह सर्वव्यापक परमात्मा हमारा कोई भला नहीं कर सकता। न हमें पाप करने से रोकता है, न दुःख में हमारी विनती का जवाब देता है। बाहर परमात्मा ऐसा ही है जैसे दूध में घी। दूध घी का कोई काम नहीं देता और न ही घी, दूध में दिखाई देता है। जब युक्ति से दूध की दही बनाकर मक्खन निकालें तो घी का पता लग जाता है। वैसे ही जिसने परमात्मा को मिलना हो, अपने अन्दर आँखों के ऊपर सुष्मना के रास्ते खोज करे। लेकिन यह तभी हो पाएगा जब कोई अन्दर का भेदी

महात्मा अन्तर में रास्ता दिखायेगा। इसलिये सब शास्त्रों में गुरु की जरूरत पर बल दिया गया है। ऋग्वेद में तुरिया पद और सगुण ब्रह्म की बड़ाई की गई है:

सहस्रशीर्षः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपातः।

इसको सहस्र-दल-कमल भी बोलते हैं। इसके बाद निर्गुण ब्रह्म का भी वर्णन ऋग्वेद में आया है :

हिरण्यगर्भः समवर्तताऽग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

इसको सन्तों ने त्रिकुटी कहा है और मुसलमान मुसल्लसी या अल्लाहु बोलते हैं।

वहाँ से चल कर रास्ता खराब था। चिन्तपुर्णी से कुछ दूर गुजर कर बहुत उतराई आती है और साथ ही तेज़ मोड़ भी आता है। यहाँ आकर हमें नीचे उतरना पड़ा और मोटर कार भी कठिनाई से मोड़ी गई। फिर आगे रास्ता साफ़ था। किसी-किसी जगह रास्ता तंग था और सावधानी की जरूरत थी। चम्बी की दुकानों से आगे जहाँ कि छप्पर हैं बहुत-से पत्थर और तेज़ चढ़ाई आती है। वहाँ तो मोटर कार बिलकुल पत्थरों और कीचड़ में धँस गई। हम सब तो पैदल चल कर चम्बी की दुकानों पर आ बैठे मगर मोटर कार को धकेलकर निकालना पड़ा, जिसमें बहुत समय लग गया। उसके आगे रास्ता साफ़ था। शाम के चार बजे हम सब कालू की बड़ पहुँच गये। छः बजे के करीब भोजन करके लेट गये। अब वर्षा तो नहीं लेकिन बादल छाये हुए हैं और सर्दी है। गर्म रूईदार तुलाई ओढ़कर बड़ा आनन्द आया। आजकल कालू की बड़ में मौसम सुहावना है। थोड़ी-बहुत वर्षा रोज़ होती है। जब धूप निकलती है तो भादों की मैदानी धूप की तरह बहुत तेज़ होती है, जिसमें चलने से पसीना आ जाता है। लेकिन जब धूप न हो और हवा बन्द हो तो भी मैदान की तरह, यहाँ जिसे हुसड़ कहते हैं, वह नहीं आता। स्वास्थ्य के लिये यह स्थान बहुत अच्छा है। आजकल जिस ओर दृष्टि डालो हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है। सब पहाड़ियाँ और घाटियाँ हरी दिखाई देती हैं। इससे आगे दक्षिण-पश्चिम में सर्वाँ की रेत दिखाई देती है। सर्वाँ से आगे भी गगरेट की हरी पहाड़ियाँ दिखाई देती हैं। आज शाम को कई लोगों ने कहा कि उनको ब्यास नदी का रेलवे पुल दिखाई दे रहा है। कोई कहता था कि डेरे के सत्संग-हाल की मीनारें दिखाई देती हैं। मगर मुझे दिखाई नहीं दीं। वैसे भी मेरी नज़र कमजोर है। लेकिन शायद वे दिव्य-दृष्टि से

देख रहे हों लेकिन उनके विरोधी यह कहेंगे कि खाली भ्रम है। आज सरदार इन्द्र सिंह साहिब, जो देहाती बैंकों के असिस्टेंट रजिस्ट्रार हैं, हुजूर के दर्शनों के लिये अपने परिवार सहित पधारे। शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से शब्द सुनाया गया। मारू राग :

निहचल एक सदा सच सोई। पूरे गुर ते सोझी होई।⁹

फिर 'इस गुफा मह अखुट भंडारा। तिस विच वसै हर अलख अपारा।'¹⁰ लिया गया। उसके बाद शाम के छः बजे वे सब मोटर कार में भरवाई तशरीफ़ ले गये।

20 अगस्त रविवार को एडवोकेट सरदार भगत सिंह अपनी कार में जालन्धर से तशरीफ़ लाये और शाम के पाँच बजे वापस चले गए। रविवार के दिन महन्तों की धर्मशाला में दो बजे दोपहर महन्त साहिब का सनातन धर्म का सत्संग हुआ करता है। इसमें आसपास के स्त्री-पुरुष सैकड़ों की संख्या में आ जाते हैं। वहाँ भागवत पुराण व दूसरी धार्मिक हिन्दू पुस्तकों की कथा होती है। परन्तु मैंने स्वयं जाकर नहीं देखा। कल शाम को यहाँ भी उपस्थिति बहुत थी। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'काया कामण अत सुआल्यो पिर वसै जिस नाले'¹⁰ और तुलसी साहिब के दोहे लिये गए। सत्संग के बाद हमारे कमरे के पश्चिम की ओर जो डंगा हमारी ज़मीन और दूसरी खेती की ज़मीन के बीच में बन रहा है, हुजूर उसको बनवाते रहे, कहीं बाहर सैर को नहीं गये।

21 अगस्त की शाम को कबीर साहिब की शब्दावली में से 'महरम होय सो जानै साधो, ऐसा देस हमार'¹¹ और 'साधो ऐसा धुंध अंधियारा'¹² लिये गए। इसके बाद कबीर साहिब की वाणी में से 'सुमिरन का अंग'¹³ लिया गया। शाम को सैर में आश्चर्यजनक दृश्य देखा कि एक काला बादल इस आकार का था कि जैसे हिन्दू लोग दशहरे में रावण बनाते हैं। उसके अन्दर बिजली चमक रही थी। दूसरा बादल ऐसा था जैसे किसी ने ऊँचे प्लेटफ़ार्म पर तोप रखी होती है और तोप की नाली बहुत लम्बी दिखाई देती हो। बातों-बातों में किसी के सवाल करने पर हुजूर ने फ़रमाया कि सूक्ष्म-मण्डल की रूहें कभी-कभी स्थूल-मण्डल वालों को अपना आप दिखा देती हैं। लेकिन सूक्ष्म-मण्डल की रूहें इस दुनिया के लोगों का कुछ बिगाड़ नहीं सकती। केवल दुर्बल हृदय वाले या वहम

करनेवाले लोग उनसे डर कर घबरा जाते हैं। यहाँ पहाड़ों में किसान, जिन खेतों में फ़सल उग रही हो, उनमें मल-मूत्र त्यागना ठीक नहीं समझते। जबकि मैदान के किसान खेतों में ऐसा करना अच्छा समझते हैं। यहाँ खेतों में मनुष्य के विपदा की खाद नहीं डालते। केवल गोबर या कूड़ा-करकट डालते हैं। मनुष्य की विपदा को खड्डों में फेंक दिया जाता है।

24 अगस्त को सुबह 8.30 बजे चल कर गगरेट और चिन्तपुरणी के रास्ते 11 बजे के करीब होशियारपुर पहुँच गये। वहाँ एक घण्टा ठहर कर दोपहर दो-तीन बजे के करीब जालन्धर सरदार साहिब के मकान पर पहुँच गये। वहाँ सबने खाना खाया। फिर मास्टर आहलूवालिया के मकान पर गये। हुजूर ने उनके नवजात नवासे (दौहित्र) को देखा और फ़रमाया कि वह घर भाग्यशाली होता है जहाँ दिया जले और बच्चे खेलते हों। उसके बाद कपूरथला प्रोफ़ेसर साहिब के मकान पर गये। वहाँ बहुत-से स्त्री-पुरुष एकत्रित हो गये और करीब आधा घण्टा वहाँ ठहर कर शाम के छः बजे डेरे पहुँच गये। थोड़ा विश्राम करके तथा नहा-धोकर सत्संग में गये। इसके बाद चार दिन की डाक सुनी।

अध्याय 24

ढेरे में निवास का हाल

25 अगस्त की दोपहर को 12.30 बजे हुजूर बलसराय से एक अखण्ड पाठ के बाद वापस आये। शाम को छः बजे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से मारू राग का तीसरे गुरु साहिब का शब्द 'निहचल एक सदा सच सोई। पूरे गुर ते सोझी होई' लिया गया है क्योंकि ज़िला अमृतसर सदर से दो-तीन सिक्ख अफसर पधारे थे। हुजूर ने फ़रमाया कि बिना सतगुरु के वह परमात्मा, जोकि अद्वितीय है, नहीं मिल सकता।

बेद पढ़ पढ़ बाद वखाणह। घट मह ब्रह्म तिस सबद न पछाणह।¹

वेद ब्रह्म से उत्पन्न हुए हैं; परन्तु ये वेद नहीं। ब्रह्म से वेदों की ध्वनि निकली जिसे ऋषियों ने महावाक् कहा है। उन ध्वनियों को सुनकर ऋषि-महात्माओं ने स्थूल वेद रचे। गुरु साहिब फ़रमाते हैं कि मनुष्य वेद पढ़कर शास्त्रार्थ करता फिरता है, परन्तु अपने अन्दर जो ब्रह्म है, उसके शब्द यानी ब्रह्म-शब्द को नहीं पकड़ता। ब्रह्म के लोक में भी कारण माया है, इसलिये ब्रह्म की मुक्ति भी सदैव के लिये नहीं है, केवल कल्प पर्यन्त है। नौ सौ अठानवे चौकड़ी युगों का एक कल्प होता है।

सत्संग हाल की हद में आम के पौधे लगाए जा रहे हैं। कहते हैं कि एक पौधा दूसरे पौधे से कम से कम पच्चीस फुट की दूरी पर लगाना चाहिये क्योंकि यदि दोनों वृक्षों की टहनियाँ आपस में मिल जायें तो फल नहीं लगता और आम के पौधे को यदि एक स्थान से दूसरे स्थान पर और दूसरे स्थान से तीसरे स्थान पर उखाड़ कर लगा दें तो आम अच्छा आता है। सरू के बूटे भी लगाये गए हैं।

26 अगस्त को सुबह सत्संग में हुजुरी वाणी में से 'यह तन दुर्लभ तुमने पाया। कोटि-जन्म भटका जब खया'² लिया गया। ऐसा ऊँचा उपदेश मैंने

किसी ग्रन्थ में नहीं देखा। शाम को सत्संग में गुरु राम दास का शब्द 'राम गुरु पारस परस करीजै'³ और हुजुरी वाणी में से 'भजन कर मगन रहो मन में'⁴ लिये गए।

27 अगस्त रविवार को मासिक सत्संग सुबह 9 बजे आरम्भ होकर लगभग 11 बजे समाप्त हुआ। पहले तो मौसम सुहावना था, परन्तु अन्त में धूप आ गई, जिससे बहुत-से लोग व्याकुल प्रतीत हुये। हुजुरी वाणी में से 'गुरुमता अनोखा दरसा। मन सुरत शब्द जाय परसा'⁵ लिया गया। संसार में केवल दो ही मत हैं—गुरु-मत और मन-मत। जब तक पूरा गुरु न मिले संसार के सारे धर्म मन-मत में शामिल हैं। पूरा गुरु किसी जाति-पाति या धर्म का क़ैदी नहीं। जो महात्मा सतलोक या धुर-धाम पहुँच जाये वही पूरा गुरु है चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, सिक्ख हो या ईसाई। उससे शिक्षा लेकर अभ्यास करना गुरु-मत है। बाकी सब मन-मत और धोखा है। गुरुमत के बिना आवागमन नहीं छूटता। जब पूर्ण गुरु मिल गया और उसने आत्मा को शब्द तथा पूर्ण ध्वनि से जोड़ दिया तब आत्मा ऊँचे स्थानों पर जाकर भिन्न-भिन्न स्थानों के रूहानी दृश्य देखने लगी। जैसा कि शम्स तबरेज़ ने फ़रमाया है :

गोयन्द आँ सगाँ कि नरफतन्द राहे रास्त,
राह नेस्त बंदा रा बजानवे ख़ुदा-दरोग।⁶

वे नासमझ लोग जोकि ठीक रास्ते पर नहीं चले, कहते हैं कि इनसान के लिये परमात्मा तक पहुँचने का कोई भी रास्ता नहीं है। परन्तु यह झूठ है! झूठ है!! झूठ है!!!

अन्दर सूक्ष्म और कारण लोकों में अमृत बरस रहा है। उसको आत्मा पीने लगी, इसलिये ऐसी आत्मा को पनिहारी कहा गया है। आगे जाकर 'सुन दर की खिड़की खोली'। यह रूहानी भेद है। जब आत्मा पहले रूहानी मण्डल अर्थात् मुकामे-अल्लाह के स्थान पर पहुँची तो वहाँ एक बारीक छेद में से आगे रास्ता है, उसको खोला। सुखमन, शाहराग को कहते हैं जोकि गले में नहीं है, जैसा कि आम लोगों का विचार है, बल्कि आँखों के ऊपर है। इस शब्द के बाद गुरु नानक साहिब का शब्द मारू राग में से लिया गया। 'कुदरत करनैहार अपारा। कीते का नाहीं किहु चारा'⁷ अब की बार इतनी भीड़ न थी जितनी कि पिछले सत्संग में थी।

30 अगस्त— कल वर्षा का मौसम था। पहले तो सत्संग में हुजुरी वाणी में से 'सतगुरु सरन गहो मेरे प्यारे। कर्म जगात चुकाय' ⁹ लिया गया। शरण का पद बहुत ऊँचा है। श्री कृष्ण भगवान् ने भी गीता में अर्जुन को यही उपदेश दिया 'सर्व-धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।'¹⁰ सब कर्मों-धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आ जा, मैं तुम्हें सब पापों से छुड़ा दूँगा। यही स्वामी जी महाराज फ़रमाते हैं कि गुरु की शरण लो तो सब पाप नष्ट हो जायेंगे लेकिन शरण लेनी कठिन है। भजन-अभ्यास में परिश्रम कर लेना आसान है। हुजूर ने फ़रमाया, शरण ली थी गुरु अंगद ने, जब बहुत-से यात्रियों के साथ देवी के दर्शन को जा रहे थे तो रास्ते में गुरु नानक साहिब का सत्संग था। वहाँ जाकर ऐसे मोहित हो गये कि फिर कहीं न गये, जैसे परवाना ज्योति को छोड़कर फिर कहीं नहीं जाता। यह ऊँचे प्रेमियों का विषय है जिनको तन-मन की सुध नहीं रहती :

दर्शन करत पिंड सुध भूली। फिर घर बाहर सुधि क्या आय।¹¹

परमार्थ की दौलत ऐसे विरले प्रेमियों के लिये ही है। बाक़ी तो धीरे-धीरे लड़खड़ाते गिरते-पड़ते चले जाते हैं। इसके बाद गुरु अर्जुन साहिब का प्रसिद्ध शब्द सावन की छिंझ के विषय पर लिया गया। पाँच शरीकों से मतलब पाँच विकारों से है। उससे आगे पाँच ज्ञानेन्द्रियों का वर्णन है। गुरु साहिब का तात्पर्य है कि जैसे संसार में छिंझ अर्थात् पहलवानों का दंगल होता है, वैसे ही हर व्यक्ति के अन्दर दैवी सम्प्रदाय यानी शील, सन्तोष, विवेक आदि की काम, क्रोध, मोह आदि के विकारों से नॉक-झोंक हो रही है। सावन से अभिप्राय मनुष्य-जन्म से है कि मुझे मनुष्य-जन्म मिला। मैंने पाँचों शत्रुओं को जीत लिया और मैंने ऊँची पदवी प्राप्त कर ली। मेरी शरीर रूपी नगरी में दैवी सम्प्रदाय के गुण रूपी प्रजा आराम से रहने लगी। '....बुट्टा घुघ गिराओ जीओ'¹² यानी गाँव गहरी नौद की तरह आराम से रहने लगा, जैसे पंजाबी में कहते हैं, 'बड़ी घूक नौद आई है'। जैसे दंगल में ढोल आदि बजते हैं, उसी प्रकार मनुष्य के अन्दर घण्टे, शंख आदि बज रहे हैं।

31 अगस्त की सुबह को हुजूर अमृतसर के अकाली लीडर मास्टर तारा सिंह से मिलने गए। मास्टर जी, खालसा कॉलेज से पहले स्थित मिशनरी कॉलेज

में रहते हैं। बातचीत से सज्जन पुरुष प्रतीत होते हैं। कहने लगे कि सिक्ख पंथ में जो पार्टियाँ हैं वे तो मुसीबत के डर से ही आपस में एका करेंगी। उनमें मतभेद हो तो कोई बुरा नहीं। मतभेद तो रहना चाहिये लेकिन राजनीतिक दृष्टि से सब एक हो जाने चाहियें। मास्टर जी स्वयं तो निःस्वार्थ जाति-भक्त प्रतीत होते हैं, उनके विचार नेक हैं। जाति की सेवा बिना किसी पुरस्कार के करना चाहते हैं। उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। भगवान् करे उनको देश व जाति की सेवा करने के लिये बहुत-से अवसर मिलें।

वहाँ से वापस आकर शाम को पाँच बजे अमृतसर सत्संग-घर में हुजुरी वाणी में से :

गुरु क्यों न सम्हार। तेरा नर तन बीता भर्म में॥

दारा सुत परिवार। ठगियन संग क्यों खोवही॥

मन है बड़ा गँवार। मोह रहा कर प्यार। छूटे कैसे जार से॥¹³

पढ़ा गया। इससे ऊँची शिक्षा मैंने नहीं देखी। मनुष्य को मन ने ही परमात्मा से दूर कर रखा है। उसने प्यार से मनुष्य को वश में कर रखा है। प्यार से स्वादों में फँसाता है। बिना पूर्ण गुरु के इसके भ्रमों से बचना सम्भव नहीं। गुरु साहिब फ़रमाते हैं कि जो मन कहे उसके विरुद्ध करो। इसी पर चलना कठिन है। जिसने यह कर लिया वह दुनिया से बाजी जीत गया।

2 सितम्बर रविवार को सुबह 8.30 बजे डेरे से कार में चल कर जंडियाला की नहर पर से होते हुए भुल्लर के रास्ते तरनतारन सुबह 10 बजे पहुँच गये। हुजूर का स्वागत किया गया। फिर सत्संग आरम्भ हुआ। हुजुरी वाणी में से 'जग में घोर अंधेरा भारी। तन में तम का भंडारा।'¹⁴ लिया गया। जग में अंधेरा इसलिए है कि जल में और थल में जीवों को जीव खा रहे हैं, और गुजारे का कोई ढंग नहीं रखा गया क्योंकि जितनी वनस्पति, मेवे और अनाज के दाने हैं उन सबमें रूह है। वेद-शास्त्रों में भी लिखा है कि रूहें सूर्य और चाँद की किरणों द्वारा सूक्ष्म मण्डल से इस भौतिक संसार में उतर कर फल, फूल, अनाज, घास-फूस आदि बनती हैं, जिन्हें लोग खा लेते हैं। रूहें अपने कर्मानुसार योनियों में आ जाती हैं। फिर चौरासी लाख के चक्कर में घूमती रहती हैं। जब उनकी मनुष्य-जन्म की बारी आती है तो प्रायः गाय आदि की योनि से मनुष्य योनि में आती हैं। जैसे कि मौलाना रूम

साहिब ने भी अपनी मसनवी में लिखा है कि पहले मैं जमादात (पत्थर और धातु) में आया, फिर नबातात (पेड़ पौधों) में, फिर हैवानात (पशुओं) में और फिर मनुष्य योनि में आया। जब मनुष्य बन गया तो अब अवसर है कि चौरासी लाख योनियों में से निकल जायें। वह कैसे हो सकता है ? किसी पूर्ण सतगुरु से सुरत-शब्द के अभ्यास की शिक्षा लेकर शब्द के सहारे जीते-जी रूहानी मण्डलों में पहुँच कर आत्मा मनुष्य शरीर में ही उच्च रूहानी मण्डलों पर चढ़ सकती है। जैसा कि शास्त्रों में लिखा है, 'जो ब्रह्मण्डे सोई पिण्डे' मनुष्य का शरीर, आलमे सगीर, आलमे कबीर का नमूना है। अंग्रेजी में जिन्हें Macrocosm (ब्रह्माण्ड) व Microcosm (पिण्ड) कहते हैं। मगर शब्द को पकड़ने के लिये मन व इन्द्रियों को वश में करने की ज़रूरत है। इसलिये सब धार्मिक नेता, ऋषि-मुनि इस बात का उपदेश करते चले आए हैं कि इच्छाओं का दमन करो। इन्द्रियों को वश में करो, 'सम-दम' साधन अपनाओ। यदि मनुष्य ने ऐसा नहीं किया तो फिर मनुष्य-जन्म में जो-जो कर्म लोभ, मोह, काम, क्रोध के वश होकर करेगा वे चौरासी में या नरकों में अथवा स्वर्गों में भोगने पड़ेंगे। चौरासी का चक्कर फिर चल पड़ेगा। इसके बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से गुरु नानक साहिब का शब्द 'बिख बोहिथा लादया दीआ समुंद मंझार'¹⁵ लिया गया, जोकि बड़ी उच्चकोटि की वाणी है। इसमें भी यही शिक्षा दी गई है कि प्रत्येक व्यक्ति पुण्य और पाप का माल लाद कर, संसार-सागर में बहा जा रहा है। न उसकी नाव के साथ मल्लाह है, न चप्पू। इसके अतिरिक्त समुद्र अथाह है जिसका कोई किनारा भी दिखाई नहीं देता। जिधर की हवा आई उधर ही नाव चल पड़ी। हजारों बल्कि लाखों वर्ष इसी प्रकार बहते हो गये। यदि कोई पहुँचा हुआ सन्त मिलता तो पार लगाता। सत्संग के बाद 4 बजे के करीब बारिश शुरू हो गई। इसलिये शाम का सत्संग 6 बजे शुरू हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से गुरु अर्जुन साहिब का प्रसिद्ध शब्द 'पाठ पढ़यो अर बेद बीचारयो'¹⁶ और गुरु अमरदास जी का 'नामै ही ते सभ किछ होआ बिन सतगुरु नाम न जापै'¹⁷ लिये गए। फिर उसी रात 7 बजे चल कर 8 बजे वापस पहुँच गये। रास्ते में भी बारिश होती रही।

3 सितम्बर रविवार की शाम को हुजुरी वाणी में से यह शब्द लिया गया :
गुरु की मौज रहो तुम धार। गुरु की रजा सम्हालो यार ॥¹⁸

हुजूर ने फ़रमाया कि सेवक को गुरु की परीक्षा नहीं लेनी चाहिये। यदि अ, आ पढ़ने वाला एम. ए. पास मास्टर की परीक्षा ले तो वह मूर्ख है। इसी तरह मौलाना रूम साहिब ने फ़रमाया है :

शेख रा कि पेशवा व रहबर अस्त,
गर मुरीद इम्तिहान कर्द ऊ खरास्त।¹⁹

मतलब यदि शिष्य गुरु का इम्तिहान ले तो वह मूर्ख है।

फिर हुजूर ने हज़रत ख़िज़र और मूसा की कहानी सुनाई जोकि मौलाना रूम की मसनवी में भी आई है और 'रसूमें हिन्द' में भी देखी थी कि किस प्रकार हज़रत ख़िज़र ने तीन कार्य ऐसे किये जो मूसा की समझ से बाहर थे। पहले तो एक अनाथ की नाव को तोड़ डाला। दूसरे एक नेक व्यक्ति के इकलौते बेटे को मार डाला। तीसरे एक टूटी हुई दीवार को बिना पैसे के सारा दिन कीचड़ लगा-लगा कर खड़ा कर दिया। हुजूर ने फ़रमाया कि सन्तों के सामने जब कोई आता है तो उसका आदि से अन्त तक का सारा वृत्तान्त प्रत्यक्ष हो जाता है। इसलिये सन्त जो कुछ करते हैं उस पर इतराज़ नहीं करना चाहिये। ऐसे ही मौलाना रूम साहिब ने कहा है कि शिष्य के उत्पन्न होने से पूर्व ही गुरु को उसका हाल मालूम हो जाता है :

पेश अज़ जाइदने तू सालहा दीदा बाशिन्दत बचन्दे हालहा।

यानी तेरे पैदा होने से कई साल पहले से ही वे तेरा हाल जानते थे। ज़िला हज़ारा की एक माई गुलाबो की कहानी सुनाई कि उसकी अन्दर की आँखें खुली थीं। जब स्त्रियाँ उसके पास से निकलतीं तो पुकार उठती कि तूने अमुक बुरा कर्म किया है और तुम नरक में जाओगी आदि। यहाँ तक कि स्त्रियों ने उसके पास से निकलना छोड़ दिया। इसी प्रकार सन्तों को सेवकों के अच्छे-बुरे कर्मों का पता होता है। परन्तु वे परदा नहीं उठाते, इस आशा से कि आज नहीं तो कल सुधर जायेगा। यदि वे परदा उठाने लगे तो उनके पास कोई न आये। सेवक को चाहिये हर समय गुरु का धन्यवाद करे चाहे गरीबी आये या बीमारी, क्योंकि गुरु उसके पापों का कर्ज़ा भुगतवा कर उसको साफ़-सुथरा करना चाहते हैं। यदि वे किसी पर नाराज़ होते हैं तो इसमें उनका अपना कोई मतलब नहीं होता बल्कि सेवक के लाभ के लिये ऐसा करते हैं। पूर्ण गुरु से मान-बड़ाई प्राप्त करने की

आशा नहीं करनी चाहिये, ऐसा करनेवाला पापी है। गुरु तो दर्पण की भाँति होते हैं, जिस विचार से उनके पास जाओ उस विचार के अनुसार ही फल मिलता है। यदि कोई दोष निकाले और कमी देखने के विचार से उनके पास जाये तो उसकी अपनी हानि है। यदि प्यार-प्रेम से जाये तो उसका अपना हृदय निर्मल होता है।

हुजूर ने शेर सिंह सवार की कहानी सुनाई कि किस प्रकार एक बनिये ने उसके दो हजार रुपये, जो उसके पास उसने जमा किये थे, उसके उत्तराधिकारियों से छुपा कर हड़प लिए थे। अन्त में शेर सिंह ने उसके घर लड़का बन कर वह रुपया वसूल किया और वसूल करके जवानी में मर गया और बता गया कि मैं वही शेर सिंह हूँ। इसके बाद डॉक्टर साहिब ने अपने स्वर्गीय पुत्र सोहन की कहानी सुनाई कि जब वह पैदा हुआ तो हुजूर ने कहा कि इसके लिये पाँच हजार रुपया जमा करा दो। जब उसकी बड़ी बहन की शादी आदि के लिये रुपया जमा करने के विषय में पूछा तो हुजूर ने कहा कि उसकी शादी हम स्वयं कर देंगे। वह लड़की तो छोटी आयु में मर गई। जब सोहन भी ब्यास नदी में डूब कर मरा तो उसकी माँ बहुत रोई। हुजूर ने फ़रमाया कि फिर आ जायेगा। लेकिन वह रोती गई तो हुजूर ने फ़रमाया कि दो आ जायेंगे। डॉक्टर साहिब ने बताया कि सोहन की मृत्यु के बाद वह लुधियाना ज़िले में अयाली गाँव के एक ज्योतिषी के पास उसकी जन्म-पत्री बनवाने गए। उसने पाँच रुपये पेशगी लिये और पाँच रुपये बाद में लेने को कहा। शाम को जन्म-पत्री का फल बताने का वादा किया। जब शाम को डॉक्टर साहिब गये तो ज्योतिषी उन पर बड़े नाराज़ हुए और कहने लगे कि ये लो अपने रुपये और तुम चले जाओ। ये पत्री मुझसे नहीं बनती। जब डॉक्टर साहिब ने नरमी से पूछा तो कहा कि मेरे हुए की पत्री बनवाते हो। सुनो तुम पहले जन्म में एक राजा के साईस थे और तुम्हारी यह पत्नी तीन जन्मों से तुम्हारी पत्नी है। (डॉक्टर साहिब के अनुसार हुजूर महाराज जी पहले जन्म में राजा थे) एक बनिए का लड़का पाँच हजार रुपया का सोना, चाँदी, रेशमी कपड़े आदि लेकर तीर्थ पर गया क्योंकि उसका बाप मरता हुआ उसको कह गया था कि मेरी जायदाद में से पाँच हजार रुपया तीर्थ पर जाकर मेरे नाम से दान-पुण्य कर देना। लेकिन तुमने और तुम्हारी पत्नी ने मिलकर उस पाँच हजार रुपये का सोना, चाँदी चुरा लिया और वह लड़का बहुत विलाप करने लगा। लोग इकट्ठे हो गये। तुम भी वहाँ गये

तो तुम्हें दया आ गई। परन्तु तुम्हारी पत्नी ने चोरी का माल वापस नहीं देने दिया। इसलिये उस लड़के ने तुम्हारे घर जन्म लिया और उसकी मृत्यु तीर्थ पर हुई। तुम्हें उसकी मृत्यु पर सब्र आ गया। परन्तु तुम्हारी पत्नी ने जो निर्दयता की थी उसको सारी उम्र वह लड़का नहीं भूलेगा। हुजूर ने फ़रमाया कि न तो कोई किसी का बाप है, न बेटा। सब लेना-देना पूरा करने आये हैं। जीव का तो सतगुरु और शब्द है। उनके सिवाय उसका संसार में और कोई सम्बन्धी नहीं।

एक सत्संगी तेजा सिंह को मैंने देखा कि वर्षा के मौसम में ब्यास नदी के पास एक गुफा के अन्दर बीमार पड़ा है। हुजूर उसकी खबर लेने गये। मैं भी साथ गया तो हुजूर ने फ़रमाया कि उसकी रूह बहुत दूर तक गई हुई है, वापस आना नहीं चाहती। मैं भी उसको इस आनन्द से बाहर लाना नहीं चाहता। जब आयेगी तो बात करेंगे। आज उसकी रूह बाहर शरीर में आ गई है तो उसने अपने अन्दर का सारा हाल बताया और कहा कि बारह वर्ष तक भजन-सिमरन में बड़ा परिश्रम किया लेकिन कोई रस नहीं आया। अब आया है।

एक सत्संगी के सवाल के जवाब में हुजूर ने बताया कि बाई तरफ़ काल का जाल है। नरक, स्वर्ग, बैकुण्ठ आदि सब बाई ओर हैं। उन लोकों में योगी मिलते हैं लेकिन उस से आगे रास्ता नहीं है। दाई ओर बड़े-बड़े नगर हैं और उस ओर सुरत-शब्द के अभ्यासी भी मिल जाते हैं। परन्तु सन्तों का रास्ता दोनों के मध्य में सुखमन यानी शाहरग में से है जो सीधा सतलोक को जाता है। दाई ओर सन्त-महात्मा सैर के लिये आ जाते हैं।

कल दोपहर 11 बजे तार आया था कि रावलपिण्डी के असिस्टेंट डिप्टी कण्ट्रोलर, मिलिटरी अकाउंट्स, सरदार जोध सिंह साहिब का देहान्त लाहौर में हो गया। यहाँ उनके भाई सरदार कृपाल सिंह जी रहते हैं। सरदार साहब हुजूर के प्रेमी सत्संगी थे। कुछ दिनों से घायल और बीमार थे। मुझे तो पहले ही हुजूर के संकेतों से पता चलता था कि उनका चोला नहीं रहेगा। हुजूर ने तुरन्त कार की तैयारी का आदेश दिया। 12 बजे यहाँ से सीधे लाहौर को चल दिये। वहाँ दो-तीन बजे के करीब राम गली में सरदार साहिब के मकान पर पहुँचे। क्योंकि स्वर्गीय सरदार साहिब के पुत्रों की शाम के आठ बजे फ्रण्टियर मेल से रावलपिण्डी से आने की आशा थी, इसलिये मृतक-संस्कार में देर थी। हुजूर लाहौर सत्संग-घर, जो रावी रोड पर था, तशरीफ़ ले गये। वहाँ विश्राम किया।

हुजूर आठ बजे से कुछ पहले मरघट पहुँच गये। वहाँ अरथी भी आ पहुँची। वहाँ एक भाई बैठा हुआ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से शब्द पढ़ रहा था, बीच में लाश रखी थी। आसपास लोग एकत्रित थे। दूर कई मुर्दे जल रहे थे। एक ओर साधु लोग रोटियाँ पका रहे थे। दूसरी तरफ एक छाबड़ी वाला चाय बेच रहा था। जो लोग मरघट में रहते हैं उनके लिये यह प्रतिदिन का कार्य हो जाता है। उनके लिये मुर्दों का आना, रोने-पीटने की आवाजें और मुर्दों का जलाया जाना मामूली-सी बात होती है, जिसका उनके दिल पर असर नहीं होता। वे अपनी रोटियाँ पका रहे थे, जैसे अपने घर में आराम से बैठे हों और कोई मरा ही नहीं। जो मुर्दे को जलाने आये थे, उनके लिये दुनिया अँधेरी हो रही थी। छाबड़ी वाला इस आशा से आया होगा कि यहाँ भी चाट के शौकीन मिल जायेंगे। पेट के लिये मनुष्य मरघट में भी रोजी ढूँढ़ता है 'दुनिया है बहुरंगी बाबा'। दाह-संस्कार करके हुजूर 9 बजे के करीब लाहौर से वापस चल दिये। रात को सवा ग्यारह बजे डेरे पहुँच गये।

6 सितम्बर, 1944- आज शाम को, जो नया अस्तबल बनाया गया है, उसके उद्घाटन का सत्संग उसके आँगन में किया और हलवे का प्रसाद बाँटा गया। पहले तो दरबारी दास ने भाई गुरदास जी की बाणी सुनाई :

जे गुरु सांग बरतदा सिक्ख सिदक ना हारे।

जे पिर कहु घर हन्डण सत रखे नारे।¹⁰

इसके बाद हुजूर स्वामी जी के सार बचन छन्द-बन्द यानी हुजुरी वाणी में से 'गुरु चरन गिरह मेरे आये। भाग मेरे सोते दिये जगाये'²¹ पढ़ा गया। हुजूर ने व्याख्यान करते हुए फ़रमाया कि सतगुरु के चरण घर आने का अर्थ है कि जब सेवक अभ्यास करके तारा मण्डल, सूर्य, चाँद को पार करके सतगुरु के चरणों तक पहुँचता है तब उसका भाग्य जागता है। जब सतगुरु अपने सेवकों को ऊपर के लोकों में ले जाते हैं तो उन लोकों के हंस शर्मिन्दा होते हैं, क्योंकि पारब्रह्म में जो हंस हैं या उससे ऊपर के लोकों में जो हंस हैं वे उन्हीं लोकों की शोभा और रौनक के लिये हैं। वे अपने से ऊपर के लोकों में नहीं जा सकते। जो आत्माएँ इस नाशवान संसार में आकर सतगुरु के सहारे ऊपर चली जाती हैं उनको यह अधिकार है कि सतलोक से परे अनामी तक चली जायें। इसलिये यह कहा है कि गुरु के सेवकों को देखकर आकाश मण्डल के हंस शर्मिन्दा होते हैं। इसी प्रकार

ऋषि, मुनि, देवी, देवता भी उन आत्माओं को ऊपर के लोकों में जाता देखकर तरसते हैं कि काश, हमें भी मनुष्य शरीर मिलता तो हम भी सतगुरु से मिलकर, भजन-सिमरन करके उन देशों में जाते। सतगुरु के सेवकों का प्रकाशमय तेज देखकर ऋषि, मुनि, देवी, देवता ईर्ष्या करते हैं। सुरत-शब्द अभ्यास के बिना उन रूहानी देशों में जाना सम्भव नहीं। इसके बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'सा धरती भई हरी आवली जित्थै मेरा सतगुरु बैठा आय'²² लिया गया।

एक सत्संगी ने भजन-सिमरन में मन न लगने की शिकायत की है। उसको यह जवाब हुजूर ने स्वयं लिखवाया, 'अन्तर में मन न लगने और अभ्यास में रस न आने के कई कारण हैं। पहले तो यह कि जब व्यक्ति अभ्यास में बैठे तो मन की चौकीदारी करे। यह सबसे ज़रूरी है कि मन बाहर न जाये। यदि बाहर जाये तो फिर वापस लाओ। फिर जाये तो फिर वापस लाओ। मन से वायदा करो कि मैंने एक या दो या तीन घण्टे भजन पर बैठना है। कोई बाहर का संकल्प नहीं लाना। यदि आये तो बाहर निकाल दो। इस प्रकार करने से, मन को अन्दर बैठने की आदत पड़ जायेगी। जब मन अन्दर बैठेगा तो रस आने लग जायेगा। कई बार ऐसा भी होता है कि मन में कोई फ़िक्रर तथा चिन्ता हो तो भी मन को अभ्यास में रस नहीं आता। इसका इलाज केवल यही है कि हम मन को समझायें कि जब हम पैदा हुए, तो साथ प्रारब्ध लेकर आये हैं। उसमें कमी नहीं हो सकती। जो कुछ होना है सो होना है। उस चिन्ता वाले काम का इलाज कर दो लेकिन भजन के समय उसकी माला न फेरो। जब भजन से उठो उसका इलाज कर दो। यदि मन संसार में घूमता है तो फिर भजन में छः घण्टे बैठो तो भी कोई लाभ नहीं। यदि लिखने-पढ़ने के अतिरिक्त आपको दिन के समय कोई सैर करने या बाहर जाने का मौक़ा मिले तो सिमरन करो। जब अवकाश मिले तो सिमरन करो। जब रात को सोओ तो सिमरन करते-करते सो जाओ। जब जागोगे तो ऐसा प्रतीत होगा कि सिमरन से उठे हो। इस प्रकार आदत डालने से जब भजन में बैठोगे, मन लग जायेगा। इस संसार में यदि कोई हमारा शत्रु है तो मन है। ग्रन्थ-पोथियों, वेद-शास्त्रों में जितने उपाय हैं, सब मन को वश में करने के हैं। गुरुवाणी पढ़कर देख लो। सो घबराओ नहीं, धीरे-धीरे करते चले जाओ। सिमरन में बहुत भारी शक्ति है। यदि सिमरन पूरा हो जाये तो चलती गाड़ी को खड़ी कर सकते हैं। किसी

सत्संगी का यह सोचना कि दूसरे को नाम मिल जाये, बुरा नहीं। लेकिन प्रेम-प्यार से उसको समझाओ। यदि उसका मन करे तो नाम दिलाओ लेकिन जबरदस्ती नाम दिलाने से उसके कर्म अपने ऊपर लेने पड़ते हैं। यदि कोई सत्संगी मन में यह प्रार्थना करे कि अमुक व्यक्ति को नाम मिल जाये, परन्तु उसके कर्म ऐसे हैं कि मालिक उसको नाम नहीं देना चाहता तो उसकी प्रार्थना निष्फल होगी। परन्तु विचार बुरा नहीं, सम्बन्धी माने या न माने। सिमरन कभी नहीं छोड़ना चाहिये। यदि आयु भर भी परदा न खुले तो भी सिमरन न छोड़ो। सिमरन मुख्य वस्तु है। सिमरन के द्वारा ही प्राणी अन्दर जाता है।"

माता किशन कौर जी का चोला छोड़ना

7 सितम्बर, 1944 को शाम के सवा चार बजे माता जी (माता किशन कौर) ने लगभग पन्द्रह दिन बीमार रह कर सतलोक का रास्ता लिया। आपको संग्रहणी का रोग था। दिन-रात में बहुत-से दस्त आते थे जिससे 5 सितम्बर को, जब मैंने उनके अन्तिम दर्शन किये, इतनी दुर्बल हो गई थीं कि किसी को पहचान नहीं सकती थीं। बोलना तो कई दिनों से बन्द था। अन्त में 5 सितम्बर को उनकी आत्मा अन्दर चली गई। ऐसा लगता था जैसे बेहोश हो। उस रोज़ हुजूर महाराज जी ने उनको दर्शन दिये। वह हुजूर महाराज जी से तीन-चार दिन पहले से विनती कर रही थीं कि अब मुझे इस संसार से ले चलो। उस दिन हुजूर ने फ़रमाया कि अच्छा, अन्दर ध्यान करो। बस फिर अन्दर से ध्यान वापस नहीं आया। एक बीबी ने पूछा कि उनको इतना कष्ट क्यों हुआ? तो फ़रमाया कि लोगों से मत्था टिकवाती थी। बड़ी सीधी-सादी हँसमुख स्त्री थीं। सारी संगत, बीबियों और भाइयों को अपने बच्चों की तरह समझती थीं। सबसे प्यार के साथ बर्ताव करती थीं, सब लोग भी उनकी प्रशंसा करते थे और सबको ही उनकी जुदाई से दुःख हुआ। उनका कोई भी सुपुत्र अन्त समय उनके पास नहीं था। कारण यह था कि हुजूर नहीं चाहते थे कि उनके सुपुत्र अन्त समय उनके सामने हों और उनको उनसे अलग होने में कष्ट हो। जैसा कि कबीर साहिब ने फ़रमाया है :

कबीर मरना भला परदेश का, जा में संग न कोय।
पड़े रहो मैदान में, बात न पूछे कोय।²³

देखने में तो यह बहुत बुरा लगता है लेकिन सन्त-महात्मा नहीं चाहते कि अन्त समय में सत्संगियों को कोई सांसारिक बन्धन याद आये या उनके निकट-सम्बन्धी विलाप करते दिखाई दें, जिससे रूह को इस संसार से जाने में कठिनाई हो। हुजूर ने उनके देहान्त के बाद अपने सुपुत्रों को तारें दे दीं। परन्तु उनके आने की प्रतीक्षा नहीं की बल्कि शाम को ही दाह-संस्कार कर दिया।

9 सितम्बर 1944 को दोपहर 11-12 बजे के करीब हुजूर के सुपुत्र सरदार हरबन्स सिंह पधारे। एक बजे हम स्वर्गीय माता जी के चौथे को गये। वहाँ जाकर देखा तो भस्म बहुत ही गर्म थी और अलग दिखाई देती थी। फ़ोटो लेने के बाद भस्म पर पानी की बाल्टियाँ गिराई गईं जिससे राख ठण्डी हो जाये। जब पानी डालते तो बुलबुले और शोर उठता जैसा कि बुझे चूने या सफ़ेदी के ढेले पर पानी डालने से होता है क्योंकि भस्म और नीचे की रेत बहुत गर्म हो गई थी। बहुत सारी पानी की बाल्टियाँ डालकर राख को ठण्डा करके फावड़ों से बाल्टियाँ भर कर पास ही ब्यास नदी में बहा दी गईं। हिन्दुओं की तरह भस्म में हाथ डाला कर हड्डियाँ अलग-अलग चुन कर इकट्ठी नहीं की। हिन्दू लोग तो वह सब इसलिये करते हैं कि हड्डियाँ गंगा नदी में डाल दी जायें। यह ढंग अच्छा प्रतीत होता है कि सारी राख हड्डियों समेत उसी समय किसी पास की नदी में डाल दी जाये। इस काम में एक घण्टा लग गया, यद्यपि वह स्थान डेरे से दूर नहीं था। जहाँ दाह-संस्कार किया गया था उस स्थान को इस प्रकार खुरच कर सब रेत नदी में डाल दी कि गड़्ढा हो गया, जिसको बाद में रेत से भर कर बराबर कर दिया गया। लोग अमृतसर और लाहौर से शोक मनाने के लिये आ रहे हैं। तारें भी आ रही हैं।

कल सत्संग में एक व्यक्ति ने सवाल किया कि महाराज जी भाग्य क्या वस्तु है? हुजूर ने फ़रमाया कि जो अच्छे या बुरे कर्म हमने पिछले जन्मों में किये हैं वे इस जन्म में हमारे भाग्य बन गये। इसके अतिरिक्त सन्तों की दया भी कोई चीज़ है, जो भाग्य बदल देती है। एक बनिया था जो बड़ा सूद-खोर, सूद पर सूद लेनेवाला था। किसी को सूद में से एक पाई भी नहीं छोड़ता था। एक बार फ़सल के अवसर पर एक कर्जदार जाट उसको कर्जों का हिसाब करने और कर्जा चुकाने के इरादे से अपने गाँव में ले गया। बनिये ने ख़ूब सूद पर सूद लगाया और एक पाई भी नहीं छोड़ी। जाट मन ही मन बहुत क्रोधित हुआ।

बनिया रात को रहने के विचार से बिस्तरा साथ लाया था। जाट ने बिस्तरा उठाकर उसके घर पहुँचाने से इनकार कर दिया। बिस्तरा भारी था। गाँव में कोई उठाने वाला मिलता नहीं, बनिया हैरान व परेशान खड़ा था। कोई सन्त-महात्मा वहाँ आये थे। उनको तरस आ गया तो कहा, लाला जी चलो बिस्तरा मैं छोड़ आता हूँ। लाला ने पूछा क्या मजदूरी लगे ? तो महात्मा ने कहा मजदूरी तो कुछ नहीं लूँगा परन्तु या तो तुम भगवान् का कीर्तन मुझे सुनाना या मैं तुम्हें सुनाऊँगा, तुम्हें सुनना पड़ेगा। बनिये ने सोचा कि इससे सस्ता सौदा नहीं मिलेगा। यह बकता जायेगा, मैं हाँ-हाँ करता जाऊँगा। इस प्रकार महात्मा बिस्तरा उठाकर चल पड़े। रास्ते में हरि के गुण बनिये को सुनाते गये। बनिया हाँ-हाँ करता गया। जब निवास-स्थान पास आया तो महात्मा ने सोचा कि यह बनिया भी क्या याद करेगा, उससे कहने लगे कि लालाजी, तुम्हें दस-बारह दिन बाद मर जाना है। तुमने संसार में आकर कोई अच्छा कर्म नहीं किया। तुम्हें धर्मराज के सामने ले जाया जायेगा और तुम्हारे कर्मों का लेखा खोला जायेगा तो उसमें से केवल यही तीन-चार घड़ी, जो तुमने मेरे साथ बितायीं, तुम्हारे अच्छे कर्मों में आयेंगी। तुमसे पूछेंगे कि तुम इसका बदला पहले लेना चाहते हो या नर्क भोग कर। तुम कहना : पहले दे दो और मुझे उस महात्मा के पास ले चलो। सो ऐसा ही हुआ। जब यमदूत उसको महात्मा के पास लाये तो उन्होंने कहा लाला तीन घड़ी के बाद तुम्हें यहाँ से हमारे पास आना है। जब तीन घड़ी बीत गई तो लाला ने महात्मा से कहा कि अब मुझे जाना होगा। वे यमदूत मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस पर महात्मा बोले, मत जाओ मेरे पास बैठे रहो, वे यहाँ नहीं आ सकते। यमदूत हैरान होकर धर्मराज के पास गये तो धर्मराज ने कहा :

जहं साधू गोबिन्द भजन कीरतन नानक नीत।

णा हाँ णा तू णह छुटह निकट न जाईओ दूत।²⁴

11 सितम्बर, 1944 शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से यह शब्द लिया गया :

मन मैगल साकत देवाना। बनखंड माया मोह हैराना।

इत उत जाहि काल के चापे। गुरमुख खोज लहै घर आपे।

बिन गुर शबदै मन नहीं ठौरा।

सिमरो राम नाम अत निरमल। अवर तिआगो हाँमें कौरा।

एह मन मुगध कहो क्यों रहसी। बिन समझे जम का दुख सहसी।²⁵

इसके बाद हुजुरी वाणी में से 'धुन सुन कर मन समझाई'²⁶ शब्द लिया गया। हुजुर ने फ़रमाया कि मन पाँच तत्त्वों के सतोगुणी अंश से उत्पन्न होता है। आत्मा से बल पाकर आत्मा को ही दबाये बैठा है। जैसे कि सूर्य की परछाई पानी के तालाब पर पड़ती है और तालाब से टकरा कर फिर एक दीवार पर पड़ती है। यदि तालाब का पानी साफ़ तथा निर्मल है तो सूर्य की परछाई, जो दीवार पर पड़ेगी, वह भी निर्मल और साफ़ होगी। यदि तालाब का पानी हिल रहा हो यानी अस्थिर हो या गन्दा हो तो परछाई भी धुंधली-सी होगी। वैसे ही यदि मन मैला है या चंचल है तो उसमें से सतगुरु का स्वरूप दिखाई नहीं देगा। इसलिये पहले परिश्रम करके मन को स्थिर करो, जिससे उसमें रूहानी दुनिया की परछाई पड़े। साधु-महात्माओं का मन सदा एक ही अवस्था में रहता है। जैसे कि कहा है :

कभी मन रंग तरंग चढ़े, कभी चित चाहत है धन को।

कभी तिरिया संग लुभावत है, कभी छोड़ चला बन को।²⁷

कल से स्वामी जी महाराज की वाणी में से बारहमाहा का पाठ शुरू से लिया गया। किसी व्यक्ति ने हुजुर से पूछा कि जो प्रसाद किसी को दिया जाता है क्या वह उसी को खाना चाहिये या किसी और को दे सकता है? हुजुर ने फ़रमाया कि जिसको प्रसाद दिया जाता है, यह दया तो उसी के लिये होती है। यदि वह अपनी दया दूसरों को दे दे तो उसकी मर्जी, उनको लाभ होगा। स्वामी जी का बारहमाहा स्वयं मुक्ति प्राप्ति की एक पूर्ण शिक्षा है। पहले दो माह यानी आसाढ़ और सावन में सांसारिक लोगों की दशा बताई गई कि जब बच्चा माँ के गर्भ में होता है तो उसको सारे जन्मों की सोझी (ज्ञान) होती है, उस समय परमात्मा से यह पुकार करता है कि यदि तू मुझे इस कैदखाने से छोड़ा दे तो मैं स्वाँस-स्वाँस तेरा नाम जपूँगा। परन्तु ज्यों ही माँ के पेट से बाहर आया तो माया ने सबकुछ भुला दिया और वह अपने पूर्व जन्मों के संस्कारों के अनुसार बरतने लगता है। जन्म लेते ही दुःखों ने घेर लिया। कभी रोग है, कभी भूख-प्यास, बोल सकता नहीं, न ही अपना रोग किसी को बता सकता है। माँ-बाप हैरान हैं। रोग कुछ होता है, औषधि कुछ देते हैं। दर्द कान में है मगर जुलाब दे रहे हैं। दुगना कष्ट उत्पन्न हो गया। फिर ज़रा बड़ा हुआ तो यह खेलना चाहता है, परन्तु माँ-बाप इसको स्कूल में पढ़ाना चाहते हैं और मारते-पीटते हैं। जब इस दुःख से थोड़ा आगे गया तो जवानी आ गई और काम की तरंगों ने बुरी दशा की। शादी हुई,

बच्चे हो गये तो खाने-कमाने की चिन्ता सताने लगी। दर-दर की ठोकें खाने लगा। यदि पूर्व जन्मों के शुभ कर्मों के कारण धन मिल गया तो अच्छा है। वरना कुत्ते की-सी गति हो गई, दर-दर धन के लिये मारा-मारा फिरता है। गृहस्थी के खर्च पूरे ही नहीं होते। ज्यों-ज्यों आयु बढ़ती गई खर्च भी बढ़ते जाते हैं। स्त्री और बच्चे खाने-पीने को माँगते हैं। किसी लड़के की पढ़ाई की चिन्ता है तो किसी लड़की की शादी की चिन्ता। इस प्रकार बुढ़ापा आ गया। दुनिया के काम-काज में भगवान् को याद ही नहीं किया। जब मौत आ गई तो फ़रिश्ते खींचकर ले गये। हाँ, सतगुरु मिल गये, थोड़ी भजन-सिमरन की कमाई कर ली तो अन्त समय तो अच्छा हो गया। भादों के महीने में कहा है कि संसार को मलेरिया ज्वर हो गया है। मनुष्य को शारीरिक, मानसिक और रूहानी तीन प्रकार के कष्ट लगे हुए हैं। रूहानी कष्टों से अभिप्राय रूह का अन्तर में न जाना और सूक्ष्म देशों का भ्रमण न करना है। इन दुःखों से घबरा कर भिन्न-भिन्न लोग अलग-अलग उपाय करते हैं। कोई इन कष्टों के निवारण के लिये वेद-शास्त्र पढ़ता है, कोई जप, कोई तप, कोई संध्या गायत्री, कोई यज्ञ, कोई दान-पुण्य करता है। मगर ये सब उपाय मनुष्य को चौरासी लाख योनियों के आवागमन से नहीं छुड़ा सकते। इससे छुटकारा तो केवल सतगुरु से नाम लेकर नाम की कमाई द्वारा ही हो सकता है। नाम से मतलब उस नाम से नहीं जो पुस्तकों, वेदों, शास्त्रों और ग्रन्थों में आया है बल्कि उस नाम से है जिसकी महिमा सब धार्मिक पुस्तकें करती हैं। परन्तु नाम पुस्तकों में नहीं है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर है, जिसका भेद सन्त बतलाते हैं। जब तक वह नाम न मिले, चौरासी नहीं छूट सकती।

21 सितम्बर को सर कोलिन गारबेट साहिब हुजूर के दर्शनों को आये, वे भोपाल रियासत में वित्त मन्त्री होकर जा रहे हैं। वहाँ जंगल बहुत हैं। जंगलों में शेर भी ऐसे हैं जो कि रेल-गाड़ी या मोटर कार में टक्कर दे मारते हैं।

अध्याय 25

डलहौजी का दौरा

माता किशन कौर जी के भोग की रस्म और
राय साहिब हरनारायण जी की अन्तिम यात्रा

हुजूर का डलहौजी का दौरा

23 सितम्बर को सुबह पाँच बजे मलिक राधा किशन, सरदार साहिब सरदार हरबन्स सिंह तथा मैं हुजूर के साथ डलहौजी को चल दिये। पहले नहरी पटरी के रास्ते जाने का विचार था परन्तु अँधेरा होने के कारण अमृतसर के रास्ते गये। सुबह साढ़े आठ बजे चक्की पर पहुँच गये। वहाँ दस मिनट ठहर कर, दोपहर के साढ़े बारह बजे डलहौजी आ पहुँचे। रास्ते में कोई विशेष घटना नहीं हुई। दुनेरे में गर्म-गर्म जलेबियाँ बन रही थीं। बड़े शहरों के लोग अच्छे किस्म की घी और खाँड प्रयोग में नहीं लाते। इसलिये हमने डलहौजी में खाने के लिये जलेबियाँ खरीद लीं। जब वहाँ पहुँचे तो बहुत ठण्ड थी। सबको भूख लगी हुई थी। सबने खूब पेट भर कर भोजन किया। रात को हुजूर के सोने के कमरे में बातचीत करते रहे।

हुजूर ने फ़रमाया कि हुजूर बाबा जी महाराज के ज्योति-ज्योत समाने के बाद उन्होंने बहुत समय तक लोगों को नामदान नहीं दिया। हुजूर उस समय ऐबटाबाद के मिलिटरी वर्क्स में एस. डी. ओ. थे। एक बार हुजूर, चाचा जी महाराज के पास आगरा तशरीफ़ ले गये। वहाँ तीन-चार सप्ताह तक यही झगड़ा चलता रहा। चाचा जी हठ करते थे कि नामदान क्यों नहीं देते? महाराज जी मना कर रहे थे कि यह बोझ मुझसे नहीं उठाया जाता। आप किसी साधु को यहाँ से भेज दीजिये। अन्त में चाचा जी महाराज ने कहा कि तुम हमें क्या समझते हो? इस पर हुजूर ने उत्तर दिया कि आपको हुजूर स्वामी जी महाराज का छोटा भाई

समझता हूँ। क्योंकि बाबा जी महाराज का और आपका बहुत प्रेम था, इस कारण आपको बाबा जी महाराज का रूप समझता हूँ। इस पर हुजूर चाचा जी महाराज ने फ़रमाया कि बस, तुम्हें हमारा कहना मानना पड़ेगा, नामदान देना शुरू करो। हुजूर ने फ़रमाया कि नामदान देकर भी मेरा हृदय विचलित रहा और जब तक नाम दिये हुए सत्संगियों की सँभाल होती नहीं देख ली, तब तक चैन नहीं पड़ा।

फिर फ़रमाया कि वे एक बार बाबा गरीबदास जी के सत्संग के लिये, देहली जाकर कई दिनों तक उनके पास रहे। एक दिन प्रश्न किया कि सोलह दल कैवल कहाँ है? बाबा जी ने अन्तर्धान होकर फ़रमाया कि बेटा, पहले तो मैं इसके पास से होकर गुज़र जाया करता था, कभी ध्यान नहीं दिया था परन्तु अब देख लिया है। फिर बाबा रामबिहारी लाल की ओर देखकर फ़रमाया कि बच्चा, तुम्हारा सत्संग तो सिसकता-सिसकता चलेगा। असली धूम-धाम तो ब्यास में रहेगी। हुजूर ने फ़रमाया कि किसी इस्लामी पुस्तक में लिखा है कि 'जिक्रे क़लब सम सम है, जिक्रे ज़बान लक़ लक़ है।' परन्तु जिक्रे रूह शरीर और प्राण को शान्ति देनेवाला है। डलहौज़ी में, प्रतिदिन शाम को साढ़े चार बजे से लेकर साढ़े छः बजे तक सत्संग होता है। परन्तु संगत अधिक नहीं होती क्योंकि लोग वापस चले गये हैं।

28 सितम्बर सुबह सात बजे हुजूर डलहौज़ी से चल कर बनीखेत के फ़ाटक पर, दो घण्टे के लगभग फ़ाटक खुलने की प्रतीक्षा करते रहे। हम लोग आसपास की पहाड़ियों में, जहाँ कि पानी के झरने बह रहे थे, शौच आदि के लिए चले गये। हुजूर मुलतान के वकील मलिक राधाकिशन से, झरने के पुल के पार धूप में खड़े बातचीत करते रहे। फिर वहाँ से सवा नौ बजे चल कर, रास्ते में बकलोह के सत्संगियों को दर्शन देते हुए, पठानकोट से छः मील इधर ठहर गये, क्योंकि कार में पेट्रोल समाप्त हो गया था। शायद डलहौज़ी के गैरिज में किसी ने तीन गैलन चोरी कर लिया हो। वहाँ से ड्राइवर को पेट्रोल लेने पठानकोट भेजा जिसमें करीब एक घण्टा लग गया। इसके बाद पठानकोट में संगत एकत्रित थी। वहाँ संगत को दर्शन देकर हुजूर दीनानगर आये। वहाँ एक अफ़सर से दस मिनट मिलकर गुरदासपुर में लाला ईश्वर दास वकील की कोठी पर ठहरे, क्योंकि वहाँ बहुत-सी संगत एकत्रित थी। वहाँ से बटाला मिस्त्रियों के वर्कशाप से पुर्जे ख़रीद कर, चार बजे अमृतसर सत्संग-घर आ पहुँचे। वहाँ हुजूर

ने एक शब्द पढ़वा कर सत्संग किया। वहाँ से चल कर शाम को अँधेरा होने से पहले डेरे पहुँच गये। संगत दर्शनों को आ रही थी क्योंकि माताजी का भोग और मासिक सत्संग दोनों, 1 अक्टूबर की सुबह होने थे।

29-30 सितम्बर को दोनों समय सत्संग हुआ। एक समय के सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से पहली पातशाही का शब्द, जो मैंने आज से पूर्व कभी नहीं सुना था, लिया गया :

हर सा मीत नाही मैं कोई। जिन तन मन दीआ सुरत समोई।

इस शब्द में आगे चल कर यह विषय आता है कि आत्मा योगी है, काया सुन्दर स्त्री है। जब समय आता है तो आत्मा शरीर को छोड़कर चली जाती है इत्यादि।

माता किशन कौर जी के भोग की रस्म

1 अक्टूबर को माताजी के भोग की रस्म सम्पूर्ण हुई। नौ बजे सत्संग आरम्भ हुआ। पहले गुरु तेग बहादुर के श्लोक लिये गए, जो कि अनुपम वैराग्य से भरे हुए हैं। हुजूर ने स्पष्टता से उनकी व्याख्या की कि हमारे मन, माया में इतने फँस गये हैं कि माया के पदार्थों, विषय, विकारों, मोह, ममता तथा दुनिया के स्वादों को नहीं छोड़ते। जन्मों-जन्मों के पापों से हमारे मन काले हो गये हैं। इसलिये मन भगवान् के भजन-सिमरन की ओर नहीं आता। जब सिमरन करते हैं तो संसार की आशा, तृष्णा मन को खींचकर बाहर ले आती है। प्रत्येक योनि में मृत्यु के बाद जीव को धर्मराय की कचहरी में पेश किया जाता है। उसके बाद फिर दूसरी योनि में धकेल देते हैं। अतः दस नम्बरी बदमाश की तरह हथकड़ियाँ लगी रहती हैं और पेशियाँ होती रहती हैं। जब कोई रूह सतगुरु के उपदेश पर परिश्रम करके, ऊपर के मण्डलों को जाती दिखाई देती है तो उसको देखकर देवी-देवता तरसते हैं कि यदि हमें मनुष्य शरीर मिलता तो हम भी भजन-सिमरन करके, ऊँचे रूहानी मण्डलों को जाते क्योंकि देवी-देवता केवल अपने अच्छे कर्मानुसार, भोग-विलास में लीन हैं। उन लोकों में भजन-बन्दगी नहीं, केवल भोग-विलास हैं। परन्तु हम लोग ऐसे मूर्ख हैं कि देवी-देवताओं को पूजते हैं। भाव हाकिम होकर चपरासी को पूजते हैं। हुजूर ने अन्त में फ़रमाया कि जब हुजूर बाबाजी महाराज ने यह निश्चय कर लिया कि उनके बाद, मैं

कार्य करूँगा तो 1898-99 के लगभग मुझे आज्ञा दी कि अब गृहस्थ नहीं भोगना। इस पर उन्होंने मेरी धर्मपत्नी को बुलाकर पूछा कि तुम्हारी क्या इच्छा है ? उन्होंने उत्तर दिया कि मुझे सन्तोष है। मुझे गृहस्थ भोगने की इच्छा नहीं। उसके बाद पैंतालीस-छियालीस वर्ष का समय बीत गया। उन्होंने कभी मुझे पति भाव से नहीं देखा और न मैंने उन्हें पत्नी भाव से देखा। जबकि उस समय उनकी आयु पैंतीस-छत्तीस वर्ष की होगी। सारी आयु गुरु के हुक्म में रहीं। अपनी आयु के अन्तिम वर्षों में इस संसार से चले जाने की इच्छा करती रहीं। बल्कि हुजूर महाराज ने रोके रखा। हुजूर का विचार था कि अपने पोतों की शादियाँ देखकर जायें। अन्तर में बाबा जी महाराज से प्रार्थना करती थीं तो उत्तर मिलता था कि हमें कोई आपत्ति नहीं है परन्तु बाहर से पूछ लो। बाहर से हुजूर मना कर देते थे। अन्त में जाने से तीन-चार दिन पहले हुजूर से रुष्ट हो गई कि मुझे जाने से क्यों रोकते हो। फिर हुजूर उनके पास पधारे और इजाजत दे दी। उस समय रूह अन्दर चली गई और अट्ठाईस घण्टे अन्दर रहकर, ज्योति-ज्योत समा गई। बाहर नहीं आई, बड़ी भाग्यवान स्त्री थीं। पति के हाथों में डेरें में परमात्मा के प्रेम-प्यार में चोला छोड़ा। इसके बाद सुपुत्रों की तरफ से सारी संगत को जो करीब बीस हज़ार होगी, बड़ा अच्छा भोजन कराया गया।

माता जी का भण्डारा, सिकन्दरपुर में 7 अक्टूबर को सुबह बनाया जाना निश्चित किया गया। इसलिये हुजूर डेरे से कार में, 4 अक्टूबर को आठ बजे रवाना हुए। लुधियाना तक कार में आये पर सिरसा तक जाने के लिये पेट्रोल नहीं था इसलिये लुधियाना में कार एक गैरिज में बन्द करके, शाम के साढ़े आठ बजे गाड़ी से हिसार के लिये रवाना हुए। साथ में ग्यारह अन्य व्यक्ति थे। लुधियाना पूरे ग्यारह बजे पहुँचे थे। पहले बीबी विद्यावती के यहाँ गर्वनमेण्ट हाई स्कूल के पास श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का भोग डालने की रस्स पूरी की गई। उसके बाद उसी पोथी में से एक शब्द लिया गया। फिर हुजूर बाबू बलवन्तराय वकील के मकान पर आराम करके चार बजे फिर बीबी जी के मकान पर सत्संग करने तशरीफ़ ले गये। वहाँ से साढ़े छः बजे आकर दूध पीकर और लोगों को आँगन में दर्शन देकर हुजूर आठ बजे प्लेटफार्म पर पहुँच गये। सेकेंड क्लास का सारा डिब्बा, जिसमें केवल पाँच सीटें थीं, उनके और उनके साथियों के लिये रिजर्व करवाया गया था। आशा के खिलाफ़ सेकेंड क्लास में यात्रियों की संख्या अधिक थी इसलिये बाकी लोगों को

दूसरे महिलाओं के डिब्बे में जगह लेनी पड़ी। संगत की भीड़ हुजूर की गाड़ी के दोनों तरफ बहुत थी। सारी रात बड़े आराम से यात्रा की।

सुबह सात बजे गाड़ी हिसार प्लेटफार्म पर पहुँची तो बाबू कुंजलाल वकील वहाँ उपस्थित थे। सामान ताँगों में लाद कर लारियों के अड्डे, जोकि नागौर दरवाजे पर हैं, ले आये। वहाँ दो सीट लारी में बुक करवा कर, हुजूर को अगली सीट पर बैठा दिया गया, बाकी हम सब लोग उनके पीछे बैठ गये। लारी फतेहबाद में आधा घण्टा ठहर कर सिरसा से पाँच मील इधर केरे में, साढ़े ग्यारह बजे आ पहुँची। फतेहबाद में भी हुजूर के दर्शनों को सत्संगी स्त्री-पुरुष आये थे, कुछ पीने के लिये दूध भी लाये थे। पर हम सब हिसार से दूध पीकर आए थे, किसी को कोई जरूरत महसूस नहीं हुई। केरे आधा घण्टा ठहर कर, बारह बजे बकबोर्ड और ताँगों में बैठकर, सब हुजूर मकान सिकन्दरपुर में आ गये। वहाँ सब ने स्नान किया, खाना खाया और सो रहे।

6 अक्टूबर की शाम महिमासिंहवाले की रागी-पार्टी ने शब्द-कीर्तन किया। इसके बाद हज़ूर ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से सत्संग किया।

7 अक्टूबर की सुबह बहुत-से अतिथि मोगा, फ़िरोज़पुर और जालन्धर आदि स्थानों से माता जी के भोग की रस्म पर उपस्थित होने के लिये पधारे। हज़ूर शान्ति आश्रम के बाहर आँगन में, छाया में, कुर्सी पर बिराजमान हो गये और सब अतिथियों का स्वागत करते रहे। दोपहर के बारह बजे से अतिथियों को भोजन खिलाना शुरू हुआ और गरीबों को भी खाना बाँटा गया। आसपास के गाँवों के सिक्ख, मुसलमान, खत्री, बाह्यण, अरोड़े आये हुए थे। सबको तीन बजे तक भोजन खिलाते रहे।

शाम को पाँच बजे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का भोग आरम्भ हुआ। भोग से पहले तीसरी पातशाही का शब्द 'जो तुध करणा सो कर पाया। भाणे विच को विरला आया' पढ़वा कर हुजूर ने उसकी व्याख्या की कि बिना आन्तरिक रूहानी उन्नति किये, कोई भी परमात्मा की मौज पर राजी नहीं रह सकता। यह ऊँची और दुर्लभ पदवी है कि मनुष्य हर दशा में, उसकी रजा में खुश रहे। चाहे उस पर निर्धनता, दुःख, सुख और मृत्यु आदि दूट पड़ें तो भी परमात्मा का धन्यवाद करता रहे। यह पदवी रूहानी उन्नति के बिना, सम्भव नहीं है। इसके बाद भोग शुरू हुआ। पहले नवम पातशाही का शब्द 'गुन गोबिंद गायो नहीं' लिया गया। इसके बाद राग माला

पर 'सद' यानी गुरु अमर दास जी के देहान्त के समय, गुरु राम दास जी के गद्दी पर बैठने का हाल पढ़ा गया जिससे पता लगता था कि सुरत-शब्द अभ्यास के अतिरिक्त, जितने भी सांसारिक रीति-रिवाज थे, गुरु महाराज हिन्दू धर्म के अनुसार पूरा करते थे। अपने बाद गद्दी पर बैठने वालों को भी, इसी प्रकार रीति-रिवाजों पर चलने के लिये आदेश दे कर गये :

केसो गोपाल पंडित सद्विहो हर हर कथा पढ़ पुराण जीओ।
पिंड पतल किरया दीवा फुल हरसर पावए।

सो गुरु साहिबान का मत आन्तरिक रूहानी चढ़ाई का था। वे बाहर के रीति-रिवाज या धर्मों में कोई परिवर्तन नहीं करना चाहते थे। जैसे कि आजकल हुजूर महाराज जी भी सब सेवकों को यही उपदेश फ़रमाते हैं कि अपने-अपने धर्म में रहते हुए, सुरत-शब्द का अभ्यास करते रहो। धर्म बदलने से भगवान नहीं मिलता। बल्कि रूहानी उन्नति व भगवान का मिलाप, गुरु की सहायता से ही सम्भव है।

भोग के बाद हुजूर बाहर सैर के लिये तशरीफ़ ले गये तो बातचीत में हुजूर ने फ़रमाया कि मैं परमात्मा का धन्यवाद करता हूँ कि मेरी सन्तान कमाऊ और योग्य है। खुद कमा कर खाती है। फिर साध-संगत की सेवा करती है। किसी के सामने हाथ नहीं फैलाती। न कोई अवगुण है, न शराब, न मांस, न ही झगड़ा करती है, जिसका पंजाब में, आम तौर पर देहात में, जमींदारों में रिवाज है। जो साधु अपनी कमाई करके लोगों को सदुपदेश देता है वही सच्चा साधु है वरना लोगों का खाकर भजन-बन्दगी नहीं होती। ऐसा साधु जिसके घर में रहता है उसको उसकी इच्छानुसार चलना पड़ता है। जो अपनी कमाई खाता है वह स्वतन्त्र होता है।

8 अक्टूबर को डेरे से तार आया कि राय साहिब बेसुध हैं, इसलिये हुजूर ने हुक्म दिया कि हम कल सुबह हिसार के रास्ते खाना हो जायेंगे।

9 अक्टूबर की सुबह आठ बजे हुजूर ग्रेवाल मिल में, जोकि सड़क के पास है, आ गये। वहाँ से लारी पर सवार होकर, फ़तेहबाद में आधा घण्टा ठहर कर, दोपहर के साढ़े बारह बजे हिसार के रेलवे स्टेशन पर जा पहुँचे। वहाँ जो गाड़ी लुधियाना को जाती है, प्लेटफ़ार्म पर उपस्थित थी। उसमें सैंकेंड क्लास के डिब्बे में हुजूर ने स्थान ले लिया और वहाँ हम सबने खाना खाया। डिब्बे में पाँच-छः

व्यक्ति थे। हुजूर बीच वाली सीट पर लेट गये और जाखल जा पहुँचे। वहाँ हम सबने चाय आदि पी क्योंकि वहाँ गाड़ी एक घण्टा ठहरती है। परन्तु वहाँ दूध में खाँड की बजाय शक्कर मिली। वहाँ से चल कर रात के दस बजे लुधियाना आ पहुँचे। कार पहले से ही स्टेशन पर मौजूद थी। बाक़ी सत्संगी तो रात-भर वहीं रहे क्योंकि सारी रात कोई भी गाड़ी लुधियाना से डेरे को नहीं जाती। जो जाती है वह डेरे (ब्यास) नहीं ठहरती। यह रेलवे अधिकारियों की बेपरवाही का सबूत है। इसलिये हुजूर मोटर कार में सवार होकर रात के साढ़े बारह बजे डेरे आ पहुँचे। रात बड़ी अँधेरी थी। रास्ते में गड्ढे और ट्रक आ-जा रहे थे। यदि मुझे नींद न आई होती तो यात्रा मनोरंजक थी। क्योंकि मैं पहली रात के ढाई बजे सुबह का जागा हुआ था, पहले तो भूख ने सताया, फिर नींद ने भूख को भगा दिया। डेरे आते ही दूध पीकर बिस्तर पर ऐसा सोया कि सुबह के सात बजे आँख खुली।

राय साहिब हरनारायण जी की बीमारी का हाल

राय साहिब की ऐसी दशा है कि वह बहकी-बहकी बातें करते हैं। उनका मानसिक सन्तुलन बीमारी व पेशाब के रुकने के कारण बिगड़ा हुआ है। हुजूर फ़रमाते हैं कि राय साहिब के सब संचित कर्म, जो जन्म-जन्मान्तरों के ब्रह्म में जमा रहते हैं, साफ़ करके ले जाना है और अब सब कर्म समाप्ति पर ही हैं। यह राय साहिब पर बड़ी दया है। जो लोग विचार करते हैं कि राय साहिब को कष्ट क्यों ? यह उनकी ग़लती है। यह तो दया है। जैसे शम्स तबरेज़ ने फ़रमाया है :

तू जे ख़वारी हाये हमें नाली नमें बीनी इनायत हा।

मख़्वाह अज़ हक़ इनायत हाय या कम कुन शिकायत हा।

ऐ अपने दुःखों पर रोने वाले, परमात्मा की दया को देख। या तो परमात्मा से दया न माँग या शिकायतें कम कर। ऐसे ही एक और स्थान पर अपने दीवान में फ़रमाया है कि लोग दरी को लाठियों से इसलिये पीटते हैं कि उसमें से धूल आदि निकल जाये।

10 अक्टूबर को डाक का बहुत-सा काम था। कई दिनों की डाक पड़ी थी। उसके बाद शाम को छः बजे सत्संग हुआ। पहले तो स्वामी जी की वाणी में से दो शब्द लिये गए।

हंसनी क्यों पीवे तू पानी ॥

दूसरा :

हंसनी छानो दूध और पानी।

यह संसार, इसके स्वाद और विषय-विकार पानी हैं और शब्द का रस दूध है। हंसनी यानी गुरुमुख रूह ही दुनिया के स्वादों को छोड़कर दूध पीती है। बाहरी इन्द्रियों को रोककर अन्दर जाती है। फिर सार बचन वार्तिक में से एक बचन लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि जो सेवा सतगुरु को स्वीकार हो, वही सत्संगी को करनी चाहिये। मन-मत से की गई सेवा से सतगुरु प्रसन्न नहीं होते। कुछ सत्संगी कपड़ा आदि लाकर चाहते हैं कि गुरु उसको पहने या कोई फल या मिठाई सतगुरु को खिलाना चाहते हैं। क्योंकि सतगुरु किसी सेवक का न तो खाना चाहते हैं और न ही पहनना, इसलिये यह सेवा ज़बरदस्ती की है। सतगुरु सत्संगी का मन रखने के लिये रख भी लें तो भी सेवा वही अच्छी है जो गुरु को भावे।

आजकल राय साहिब लाला हरनारायण जी, जिन्होंने अठारह वर्ष तक हुजूर के सेक्रेटरी के रूप में कार्य किया, बहुत बीमार हैं। उनका पेशाब बन्द हो जाता है यानी गुर्दे काम नहीं करते, जिसके लिये आज सुबह डॉक्टर ने उनको इंजेक्शन दिये, जिससे कुछ पेशाब आने लगा। फिर भी शरीर में यूरमिक नामक विष (Uremic poison) है, जिसके कारण कभी-कभी होश की बातें करते हैं और कभी बेहोशी की। हुजूर आज दिन में तीन बार उनको देखने गये। परन्तु राय साहिब ने रोज़ की तरह आज उनकी ओर ध्यान नहीं दिया क्योंकि उनको हुजूर के आने का पूरी तरह से पता नहीं लगा होगा। दोपहर में राय साहिब ने हुजूर से कहा कि बीबी (लड़की) की कौन सँभाल करेगा? तो हुजूर ने फ़रमाया कि हम। फिर हुजूर ने उनके बाल-बच्चों को आदेश दिया कि राय साहिब का ध्यान मोह, ममता की ओर मत लाओ। उनको कहो कि बाल-बच्चों की चिन्ता मत करो बल्कि शब्द में सुरत जोड़ो। ऐसा न हो कि उनकी अट्ठारह वर्ष की सेवा इस अन्त समय में खराब हो जाये। आज शाम को भी हुजूर ने फ़रमाया कि शब्द में सुरत लगाओ। सुना है कि राय साहिब ने उत्तर दिया 'कहना आसान है'। सो राय साहिब को अन्दर से होश है परन्तु किसी से बातचीत नहीं करते। किसी-किसी बात का जवाब दे देते हैं।

आज एक पत्र गुरुमुखी में मुगलपुरा या उसके पास के गाँव से आया है। जिसमें लिखा था कि सत्संगी के एक लड़के को हृदय का रोग था। हुजूर से प्रार्थना की गई। हुजूर ने फ़रमाया डॉक्टर से चिकित्सा कराओ। इस पर मुगलपुरा में एक डॉक्टर से चिकित्सा करवाई तो वह ठीक हो गया। परन्तु गला बन्द हो गया। फिर डेरे में दर्शनों के लिये लाये। प्रार्थना की तो हुजूर ने फ़रमाया कि डॉक्टर से चिकित्सा कराओ। चिकित्सा से आराम हो गया परन्तु हिस्टिरिया हो गया। लोगों ने कहा कि लड़के में भूत आ गया है। इसलिये किसी खेलने-खिलाने वाले को बुलाकर लाये। लड़के को उसकी इच्छा के विरुद्ध खिलाया गया। परन्तु हुजूर ने उसको दर्शन देकर फ़रमाया कि मत खेलो। उसी डॉक्टर से चिकित्सा कराओ। इस पर उसी डॉक्टर से चिकित्सा करवाई तो आराम आ गया। अब पत्र में लिखा है कि आधे सिर का दर्द है। हुजूर ने उत्तर दिया कि यह कर्मों का खेल है। फिर चिकित्सा करवाओ।

हुजूर ने आज फ़रमाया कि राय साहिब को हुजूर स्वामी जी की वाणी सुनाओ। आज रात को फ़रमाया कि स्वामी जी की वाणी में से :

धाम अपने चलो भाई। पराये देश क्यों रहना।

और :

तुम धुर से चल कर आये। अब क्यों ऐसी ढील लगाये।

13 अक्टूबर की शाम श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से गुरु नानक देव जी का शब्द लिया गया :

मन मैगल साकत देवाना। बनखंड माया मोह हैराना।

इत उत जाहि काल के चापे। गुरुमुख खोज लहै घर आपे।

बिन गुरु सबदै मन नहीं ठौरा।

सिमरो राम नाम अत निरमल। अवर त्यागो हौमै कौरा।

यह शब्द जितना सुन्दर है उतना ही मन को लुभाने वाला है। इसमें वैराग्य और मन को निश्चल करने की ज़रूरत तथा उसका ढंग बताया गया है।

चुटकला- एक माई किसी साधु-महात्मा के पास गई। कहने लगी, सन्तों में तुम्हारे पाँव दबा दूँ। महात्मा बोले, अरी चरण कहा करते हैं। वह बोली, मुझ बेचारी को आग लगे, चरण भी कहने नहीं आते। इस पर सन्त जी गर्म होकर

बोले, माई, ऐसा मत कहो, नरकों में जाओगी। तब माई बोली, सन्त जी, वह भी आप जैसे महात्माओं के भाग्य में है। हम गरीबों को कौन वहाँ ले जाता है।

आज 14 अक्टूबर शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का भोग था। हुजूर ने व्याख्या करते हुए फ़रमाया कि महात्मा तो भला करते हैं। किसी का बुरा नहीं करते। परन्तु लोग अपनी अक्ल के कारण नुक़सान उठाते हैं। एक व्यक्ति के सन्तान नहीं होती थी। किसी महात्मा की शरण में गया। महात्मा करते तो अपने ध्यान से हैं परन्तु कोई बहाना रख लेते हैं। महात्मा ने कहा भाई, यह तावीज़ रख लो और अपनी बीवी के गले में मढ़वा कर लटका दो। उस समय पहलवान दंगल कर रहे थे। महात्मा ने कागज़ पर लिख दिया 'छिंझ पई डेकां फुलियाँ'। उसने कागज़ बिना पढ़े लपेटकर, मढ़वाकर, पत्नी के गले में डाल दिया। समय पाकर कई लड़के-लड़कियाँ उसके घर हो गये। महात्मा का श्रद्धालु बना रहा। दुर्भाग्य से एक मुन्तक़ी, जिसको पंजाबी में खरड़ ज्ञानी कहते हैं, वहाँ आ गया। महात्मा वहाँ से चले गए थे। कहने लगा कि हम नहीं मान सकते कि महात्मा तुझे सन्तान दे सकते हैं। तावीज़ दिखाओ। जब तावीज़ खोला तो वह लेख पढ़ा। मुन्तक़ी बहुत हँसा कि अरे, यह क्या मन्त्र है। यह सन्तान तो तुम्हारे भाग्य में थी। इसलिये हो गई। महात्मा ने क्या दिया। जब दोबारा महात्मा आया तो वह व्यक्ति, जिसके यहाँ सन्तान हुई थी, बोला महात्मा जी यह तो कोई मन्त्र न था। यह तो पाखण्ड था। इस पर महात्मा बोले कि अच्छा भाई डेकां फुलियाँ या न फुलियाँ। बस थोड़े दिनों में सारे बेटे-बेटियाँ मर गये और वह वैसे का वैसा ही हो गया।

आज मैंने उर्दू के एक समाचार-पत्र में पढ़ा है कि परमात्मा भक्ति से प्रसन्न होता है परन्तु जो जवानी व बचपन में भक्ति करता है उससे अधिक प्रसन्न होता है। परमात्मा दीनता और नम्रता से प्रसन्न होता है परन्तु जो धन-दौलत या पदवी पाकर नम्रता रखता है उससे अधिक प्रसन्न होता है। परमात्मा दान से खुश होता है परन्तु जो गरीबी में दान करता है उससे अधिक प्रसन्न होता है। परमात्मा लालची और क्रोधी से रुष्ट होता है परन्तु जो धनवान होकर लालची हो उससे अधिक रुष्ट होता है। परमात्मा पापी से रुष्ट होता है परन्तु जो बुढ़ापे में पाप करे उससे अधिक रुष्ट होता है।

राय साहिब लाला हरनारायण जी की अन्तिम यात्रा

आज 17 अक्टूबर मंगलवार को कार्तिक सुदी एकम को, दीवाली के दूसरे दिन दोपहर के बाद साढ़े तीन बजे, राय साहिब लाला हरनारायण जी ने चोला छोड़ा। वह सवा दो माह तक बीमार रहे। हृदय का रोग था। इस रोग में बहुत समय तक लेट नहीं सकते थे। बैठकर समय बिताते थे जैसे कि हृदय रोग में होता है। अन्तिम बारह दिनों में उनके गुर्दे कमज़ोर हो गये थे जिसके कारण पेशाब आना बन्द हो गया था। डॉक्टर इंजेक्शन देकर गुर्दे को उकसा कर पेशाब निकालते थे। जो पानी पीते, पेट में पड़ा रहता क्यों कि गुर्दे खून को साफ़ नहीं करते थे। अन्तिम दस दिनों में सबने उनको चारपाई पर सिरहाने के सहारे, कुछ बेहोशी की-सी हालत में देखा। आज दो दिनों से पेशाब बन्द था। शरीर में ज़हर जमा हो गया था। आत्मा सचखण्ड की ओर चढ़ाई कर गई। कई अनजान पूछेंगे कि उन्होंने बीस वर्ष तक सत्संग की सेवा की फिर उनको इतना कष्ट क्यों उठाना पड़ा। हुजूर ने फ़रमाया कि उन्होंने इस जन्म में कोई पाप नहीं किया था जिसकी सज़ा उनको भुगतनी पड़ती। परन्तु हुजूर की इच्छा थी कि संचित कर्म, जो करोड़ों जन्मों से ब्रह्म देश में प्रत्येक जीव के एकत्रित होते रहते हैं, वे यहाँ इस जन्म में भुगत लें, जिससे दोबारा जन्म न हो और न ही ब्रह्म देश में वे कर्म काटने पड़ें।

राय साहिब की मौत के एक-दो दिन बाद सरदार काहन सिंह भण्डारी ने अपने घर जाकर, रावलपिण्डी में चोला छोड़ दिया।

याराने रफ़्तग़ों को क्या रोड़े 'मुसीबत',
क्या हम रवाना सूये मुलके अदम न होंगे।¹⁰

उद्धरण

अध्याय 1

1. सार बचन, 8 : 12
2. सार बचन 18 : 5
3. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1041
4. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 641
5. सार बचन, 18 : 5
6. सार बचन, 8 : 1
7. सार बचन, 9 : 9
8. सार बचन, 19 : 18
9. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 1069
10. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 915
11. सार बचन, 18 : 9
12. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 725
13. सार बचन, 10 : 10
14. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 755
15. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1038
16. सार बचन, 9 : 1

अध्याय 2

1. सार बचन, 8 : 1
2. सार बचन, 18 : 5
3. सार बचन 15 : 13
4. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65
5. सन्तों की बानी, पृ. 275
6. सार बचन 10 : 1
7. कबीर साखी-संग्रह, पृ. 87
8. सार बचन, 19 : 13
9. सार बचन, 14 : 12
10. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 761

अध्याय 3

1. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323
2. म. 9, आदि ग्रन्थ, पृ. 1426
3. सार बचन, 18 : 5
4. सार बचन, 5 : 4
5. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 754
6. सार बचन, 16 : 1
7. सार बचन, 14 : 12
8. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323
9. सार बचन, 18 : 5
10. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 915
11. सार बचन, 8 : 11
12. सार बचन, 16 : 1
13. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1077
14. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323
15. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1042
16. सन्तों की बानी, पृ. 251
17. सार बचन, 18 : 5
18. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 725
19. म. 9, आदि ग्रन्थ, पृ. 1427
20. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323
21. सार बचन, 8 : 17
22. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 116
23. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323
24. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1290

25-26. सार बचन, 7 : 1

27. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1171

अध्याय 4

1. उत्तररामचरित, छठा अंक
- 2-3. सार बचन 10 : 1
4. कबीर, आदि ग्रन्थ, पृ. 340
5. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1171
6. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 1179
7. प्राप्त नहीं
8. प्राप्त नहीं
9. प्राप्त नहीं
- 10-11. सार बचन, 16 : 1
12. सार बचन, 18 : 5
13. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 757
14. सार बचन, 18 : 5 : 15
15. सार बचन, 8 : 13
16. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 864

अध्याय 5

1. सार बचन, 18 : 5
2. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 915
3. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 641
4. सार बचन, 15 : 11
5. म. 9, आदि ग्रन्थ, पृ. 1426
6. सार बचन, 19 : 18
7. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 923
8. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 747
9. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1075
10. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 466
11. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 465
12. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 34
13. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 725
14. सार बचन, 41 : 1
15. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65
16. कबीर, आदि ग्रन्थ, पृ. 1365
17. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1041
- 18-19. भाई बन् दी बीड़, पृ. 628
20. तुलसी शब्दावली, भाग 2, पृ. 42
21. प्राप्त नहीं
22. सार बचन, 19 : 9
23. सार बचन, 14 : 12
24. सार बचन, 8 : 1
25. सार बचन, 10 : 1
26. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 754
27. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 40
28. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1019
29. मानस 2 : 90 : 4
30. म. 9, आदि ग्रन्थ, पृ. 1426
31. प्राप्त नहीं

अध्याय 6

1. सार बचन, 9 : 9
2. सार बचन, 16 : 1
3. सार बचन 14 : 12
4. कबीर साखी-संग्रह, पृ. 87
5. सार बचन, 10 : 1
6. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65
7. गुरु नानक देव जी
8. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1171
9. कबीर, आदि ग्रन्थ, पृ. 340
10. घट रामायण, पृ. 8
11. पलटू साहिब की बानी, भाग 1, पृ. 67
- 12-14. घट रामायण, भाग 1, पृ. 1

अध्याय 7

1. सार बचन, 14 : 12
2. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 641
3. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 472
4. सार बचन, 18 : 5
5. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 810
6. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 906
7. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 915
8. सार बचन, 8 : 1
9. सार बचन, 8 : 17
10. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009
11. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 124
12. सार बचन, 5 : 4
13. सार बचन, 5 : 4-10

अध्याय 8

1. सार बचन 18 : 8
- 2-5. कबीर साहिब की शब्दावली, पृ. 65
6. कबीर, आदि ग्रन्थ, पृ. 340
- 7-9. कबीर साहिब की शब्दावली, पृ. 73
10. प्राप्त नहीं
11. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 641
12. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1074
13. कबीर, आदि ग्रन्थ, पृ. 332
14. सार बचन, 14 : 12
15. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 472
16. प्राप्त नहीं
17. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1072
18. प्राप्त नहीं
19. तुलसी साहिब
20. गुरु नानक देव जी
21. पलटू साहिब की बानी, भाग 1, पृ. 70
22. जन्मसाखी भाई बाला, पृ. 261
- 23-26. प्राप्त नहीं

14. सार बचन, 1 : 2
15. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 3
16. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 1045
17. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 91
18. सार बचन, 11 : 1
19. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 811
20. सार बचन, 27 : 6
21. सार बचन, 18 : 5
22. भाई गुरुदास दीयां बारां 35 : 20
23. तुलसी साहिब की शब्दावली, भाग 1, पृ. 25
24. रामचरितमानस 1. 1. 3
25. सार बचन 17 : 1

27. घट रामायण, भाग 1, पृ. 56
28. प्राप्त नहीं
29. पलटू साहिब की बानी, भाग 1, पृ. 64
30. प्राप्त नहीं
31. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 802
- 32-33. प्राप्त नहीं
34. गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 917
- 35-36. प्राप्त नहीं
37. पलटू साहिब की बानी, भाग 1, पृ. 23
38. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009
39. सार बचन, 9 : 1
40. कबीर साखी-संग्रह, पृ. 49
41. प्राप्त नहीं
42. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 725
43. कबीर साखी-संग्रह, पृ. 61
44. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 754
45. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323
46. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 1045

47. सार बचन, 19 : 16
48. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 249
49. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1209
50. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 757
51. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1094
52. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 124
53. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 641
54. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1038
- 55-57. आदि ग्रन्थ, पृ. 1039
58. रतन सागर, पृ. 78
59. प्राप्त नहीं

60. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 1063
61. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65
62. कबीर साखी संग्रह, पृ. 165
63. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 1045
64. सार बचन, 9 : 1
65. सार बचन, 9 : 1 : 4
66. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 939
67. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 940
68. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 463
69. सार बचन, 10 : 1

अध्याय 9

1. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1077
2. सार बचन, 18 : 5
3. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 256
4. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 557
5. नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1164
6. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 310
7. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 12
8. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 450
9. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 755

10. सार बचन, 38 : 3 : 11
11. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 725
12. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 726
13. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 256
14. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 43
15. सार बचन, 9 : 5
16. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 931
17. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1075
- 18-19. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1041

अध्याय 10

- 1-6. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 73
- 7-12. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 74
13. सार बचन, 10 : 1
14. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323
15. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 678
16. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 754
- 17-18. प्राप्त नहीं
19. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 755
20. सार बचन, 8 : 1

21. सार बचन, 33 : 15
- 22-25. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1015
26. सार बचन, 18 : 5
27. सार बचन, 33 : 21
28. सार बचन, 27 : 1
29. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 758
30. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 50
31. कबीर शब्दावली, भाग 2, पृ. 52

अध्याय 11

1. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1273
2. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 745
3. सार बचन, 8 : 11
4. सार बचन, 41 : 1
5. प्राप्त नहीं
6. सहजोबाई की बानी, पृ. 3
7. सार बचन, 19 : 13
8. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 13
9. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 754
10. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 1064
11. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 1065
12. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 1290
13. प्राप्त नहीं
14. सार बचन, 18 : 5

अध्याय 12

1. सार बचन, 2 : सिफत 4
2. म. 2, आदि ग्रन्थ, पृ. 139
3. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1026
4. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 561
5. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 102

अध्याय 13

1. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 915
2. सार बचन, 19 : 13
3. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1041
4. सार बचन, 18 : 5
5. सार बचन, 18 : 12
6. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 1057
7. सार बचन, 19 : 18
8. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009

अध्याय 14

1. सार बचन, 10 : 1

अध्याय 15

1. सार बचन, 5 : 4
2. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 755
3. सार बचन, 14 : 12
4. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009
5. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65
6. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 725
7. सार बचन, 9 : 9
- 8-9. सार बचन, 9 : 1
10. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1033

अध्याय 17

1. सार बचन, 10 : 1
2. बाईबल जॉन, 1:1
3. आदि ग्रन्थ, पृ. 536
4. सार बचन, 14 : 12

5. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009
6. सार बचन, 16 : 1
7. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 686

अध्याय 18

1. सार बचन, 38 : मास 9
2. सार बचन, 38 : मास 9 : 15
- 3-6. प्राप्त नहीं
7. सार बचन, 38 : मास 7 : 25
8. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 612
9. प्राप्त नहीं
10. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65
11. सार बचन, 14 : 12
12. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009
13. सार बचन, 16 : 1
14. सार बचन, 16 : 1 : 29, 41- 42

अध्याय 19

1. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 678
2. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 747
3. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 393
4. म. 9, आदि ग्रन्थ, पृ. 219
5. सार बचन, 8 : 1
6. प्राप्त नहीं
7. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1019
8. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 13
9. प्राप्त नहीं
10. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65

अध्याय 20

1. सार बचन, 14 : 12
2. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009
3. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1019
4. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 116
5. सार बचन, 10 : 1
6. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 40
7. सार बचन, 10 : 1
8. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65
9. सार बचन, 18 : 5
10. सार बचन, 15 : 16
11. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1041
12. सार बचन, 14 : 12
13. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009
14. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 43
15. सार बचन, 10 : 1
16. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 753
17. रामचरितमानस 3. 4. 4
18. सार बचन, 14 : 12
19. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009
20. सार बचन, 10 : 1
21. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1041
22. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65
23. सार बचन, 14 : 12
24. प्राप्त नहीं
25. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009

अध्याय 21

1. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 461
2. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 678
3. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 598
4. सार बचन, 6 : 7
5. सार बचन, 14 : 12
6. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009
7. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 910
8. सार बचन, 18 : 8
9. सार बचन, 8 : 17
10. सार बचन, 19 : 2
11. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1208
12. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 923
13. कबीर, आदि ग्रन्थ, पृ. 1365
14. सार बचन, 20 : 10

अध्याय 22

1. संतबानी संग्रह, भाग 1, पृ. 219
2. घट रामायण, भाग 1, पृ. 9
3. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 1044
4. सार बचन, 16 : 1
5. सार बचन, 14 : 12
6. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 124
7. सन्तों की बानी, पृ. 275
8. सार बचन, 21, गजल 3
9. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65

अध्याय 23

1. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 557
2. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 378
3. सार बचन, 18 : 5
4. सार बचन, 8 : 17
5. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65
6. ऋग्वेद 10 : 90:1
7. ऋग्वेद 10 : 121 : 1
8. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 1057
9. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 124
10. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 754
11. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 59
12. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 70
13. कबीर साखी-संग्रह, पृ. 87

अध्याय 24

1. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 1057
2. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 1058
3. सार बचन, 16 : 1
4. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 1324
5. सार बचन, 20 : 5
6. सार बचन, 5 : 4
7. शम्स तबरेज
8. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1042
9. सार बचन, 8 : 13
10. 18 : 66
11. सार बचन, 8 : 13 : 7
12. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 73
13. सार बचन, 19 : 16 : 1-4
14. सार बचन, 14 : 12
15. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009
16. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 641
17. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 753
18. सार बचन, 18 : 8

19. मौलाना रूम
20. भाई गुरदास 35 : 20
21. सार बचन, 28 : 5
22. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 310
23. कबीर साहिब
24. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 256
25. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 415
26. सार बचन, 9 : 9
27. प्राप्त नहीं

अध्याय 25

1. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1027
2. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 1063
3. म. 9, आदि ग्रन्थ, पृ. 1426
4. सुंदर, आदि ग्रन्थ, पृ. 923
5. सार बचन, 20 : 19
6. सार बचन, 20 : 20
7. सार बचन, 19 : 18
8. सार बचन, 33 : 10
- 9-10. प्राप्त नहीं
11. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 415

अनुक्रमणिका

अंजन माहे निरंजन 152
'अंश', 'बंस' से अभिप्राय 188
अनुराग सागर 10, 194-98
अन्तर में काल की आवाज़ 53-54
गुरु नानक साहिब के दर्शन 112-113
अभ्यास करने का ढंग 73-74, 102, 275
-में तारा दिखाई देना 13, 153
--मन न लगने का कारण 337, 345
अभ्यासी की सफलता कैसे 108
'अमृत' से अभिप्राय 90
अवगुणों को दूर करने के तरीके 138
अवतार भी कर्मों के अधीन 105, 135
अवतारों का उद्देश्य 172
अष्ट-दल कमल 21, 102
आत्म-परमात्म से अभिप्राय 130
आत्महत्या से सीधा नरक 171
आत्माओं को बुलाना 134-35
आत्मा की अवस्था 139, 142, 279, 331
-की चार चालें 119
-पवित्र कैसे 14, 142
-पारब्रह्म में जाने के काबिल कब 240
-माता के गर्भ में कैसे? 127
आत्मिक शक्तियों से बीमारियों का इलाज
24, 29, 100
'आदि निरंजन' से अभिप्राय 93
आवागमन का कारण 131, 178, 261
इंजील 89-90, 152
इन्द्रियाँ निर्मल कैसे? 64
-सांसारिक सम्बन्धों का कारण 91
ऋग्वेद 86, 325
कर्मकाण्ड और मुक्ति 276, 342

कर्म : दयाल, काल के 190
-सबसे बुरा 307
-सिद्धान्त 19, 103-05, 152, 265, 270,
298, 307, 334-35
करनी 141-42
करामातें, ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ 63
कलयुग में-मुक्ति का साधन 74
काम आठ प्रकार का 161, 189
काल 165, 171, 187, 192, 197, 220-21
-और दयाल में भेद 194, 302, 320
-का धोखा 151, 302
-के तीन वर 142, 262
'काहु न जानी शब्द की रीता' 68
क्रिया-कर्म असली 63
कुरान मजीद 24, 130-31
गरुड़ पुराण 282
गीता 93, 104, 165, 269, 272, 307, 330
गुरु अन्तर में प्रकट कब? 14
-अपूर्ण का सेवक 171
-अमरदास जी का 'सद' 107, 348
-का प्रत्येक सत्संगी से निजी सम्बन्ध 138
-कैसे कहते हैं? 154
--की जिम्मेदारी 215, 305
--ताक़त 76
--निन्दा 209
--पहचान 266-67
--महिमा 135, 210
--शरण 152, 307, 330
--सेवकों को सहायता 30, 53-54, 76,
99, 100, 106, 212, 263
-के चोला छोड़ने के बाद 67, 321-22

--बिना की गई भक्ति 175, 196, 275
-केवल शरीर नहीं 67, 98, 208
-के साथ कैसा बर्ताव? 138
-चरनन आशिक होना का अर्थ 81
-जीवित की जरूरत 89, 93, 155, 168
-द्वारा कमाया गया नाम पारस 196
-दो प्रकार के 192
-पर भरोसा 30, 143, 261, 277
-परमात्मा, शब्द एक ही 268
-पूरे के लक्षण 251, 263, 267, 329
-भक्ति 48, 120, 137
-भक्तों के वचन नहीं टालते 163
गुरुमत 49, 133, 329
गुरुमुख 93, 108, 186, 240
गुरुमुखों का आपसी प्रेम 178
गुरु मौत को भी टाल सकते हैं 304
-रामदास जी का गुरु के प्रति प्रेम 25
-रूह को जबरदस्ती क्यों नहीं खींचते 75,
142-43
-शब्द ब्रह्म तक अलग-अलग 128
-से गुस्सा 159
गृहस्थ और त्याग 75, 77
गैर-सत्संगियों के साथ सतगुरु 60
ग्रन्थ साहिब में मांस खाने की मनाही 288
ग्रहों का प्रभाव भजन सिमरन से कम 154
घट रामायण 121, 192-194, 276, 313,
315
चौरासी लाख योनियाँ 92, 197
जपजी 134
जानवरों में आपसी शत्रुता क्यों? 71
जालन्धर का सत्संग घर 129-130
जीव की अवस्था 62, 131, 211, 280,
332, 341-42
-सतनाम की अंश, ब्रह्म की नहीं 171
-हत्या का पाप 155
ज्योतिष विद्या 154, 219-20
श्वर, अश्वर का अर्थ 68
तक्रदीर, तदबीर में से कौन बड़ा? 119
तस्वीरें पूर्व के महात्माओं की 102
तीसरा तिल 21
त्रिलोकी 52 अक्षरों में 68, 76, 151
थेहड़ी रसूलपुर 87, 218, 26
दया तीन प्रकार की 138-39
दर्शन प्रेम-भाव से 52
दान-पुण्य 66, 211, 252, 272
दुःख प्रभु की दया 273-74, 349
दुनियादारी की बातें 73, 218, 236, 250-
51, 278
देवी-देवता 53, 135, 154, 197, 215,
230, 236, 295, 312, 337, 345
धन्ना द्वारा त्रिलोचन को ज्ञान 258-59
धर्म और रूहानियत 155, 250, 348
-ग्रन्थ 53, 130, 196, 223
धर्मराज, यमदूतों से छुटकारा 152
धर्म स्थान 111
ध्यान की विभिन्न मुद्राएँ 160, 165
-गुरु के स्वरूप का 20, 73-74, 78, 101,
243, 296, 306
-फोटो, मूर्तियों का 101, 257, 276
नम्रता 75
नरक, स्वर्ग 173, 335
नाम का बीज 143
-की लज्जत 161, 169, 211-12
-किसी को जबरदस्ती दिलाना 338
-लेते ही शब्द का अनुभव 101, 322
-वर्णात्मक, धुनात्मक 175, 249
-श्रेष्ठ कर्मों से 61
-सच्चा 144, 223, 284-85, 293, 342
निन्दा 279

- निर्वाण कीर्तन से अभिप्राय 92
नीम के वृक्षों का उद्धार 118
परीक्षा के वक्रत बिरला ही पास 143
पशु भी मनुष्य श्रेणी में शामिल 67
पाँच पठान और गुरु की दया 254-55
पाण्डव चार नरक में 194
पाप नाश करने का उपाय 19
पारब्रह्म 61, 68, 95, 128, 240, 296
-में दो अक्षर 68, 76, 119
पूजा मूर्तियों, देवी-देवताओं की 65, 173,
193-94, 256-59, 271, 294
प्रभु क्या है? 169
-पाप करने से क्यों नहीं रोकता 18, 242,
324
-भक्त की महिमा 298
-सर्वव्यापक 94
प्रसाद में दया 341
प्रारब्ध 221, 337, 339
प्राणायाम 74, 96, 159, 196, 263, 281
प्रेम गुरु से 64, 75
-दुनियावी 178, 249, 280
फ़कीर दो प्रकार के 96
फूलाबाई गुरु को न पकड़ सकी 98
बाबा काहन 135
-जैमल सिंह जी 106, 107, 260-61,
281, 305
---- और फ़रिश्ते 220
---- का निवास-स्थान 64
----- स्वामी जी से मिलाप 224-28
-बग्गा सिंह 65-66, 308
बुद्धि भ्रष्ट बुरे कर्मों के कारण 104-105
ब्रह्म 95, 133-34, 188, 240, 325
-की मुक्ति कल्प पर्यन्त 62-63, 328
ब्रह्मचर्य के लाभ 129, 161, 189
भक्ति, श्रद्धा : परमार्थ की नींव 26
भक्ति सागर 159, 189
भजन सिमरन और सांसारिक दुःख 137
--करना आवश्यक 187, 235
--न बनने का कारण 209
--पिछले जन्म में किया गया 268-69
--से बीमारी में दया 277
भाणा मानना 99, 149, 301, 333, 347
भूत-प्रेत, जादू टूटने 30, 135, 294, 301
भ्रम-चक्कर से मुक्ति 181
मांस खाने से मनाही क्यों? 41, 288
मन आत्मा का सम्बन्ध 341
-एक रस नहीं रहता 164
-एक रुकावट 143-44, 331
-की विभिन्न स्थितियाँ 144
-के चार कार्य 21
-के विकार दो प्रकार से उत्पन्न 210
-क्या है? 243-44
-पवित्र कैसे? 142
मनुष्य की आदतों में अन्तर क्यों? 197
-को तीन ताप 131, 178
-जन्म का उद्देश्य 215, 232, 242
--के बाद कौन-सा जन्म 252
-जामे की श्रेष्ठता 92, 127, 214, 236,
251, 257-58, 294, 332
-शरीर के चार भाग 242
--में अठारह कमल 68
---छः चक्र 68, 119, 150, 181, 258,
282
---तीन तिल 76
--हरि-मन्दिर 79, 111, 169, 193, 315
मनोकाश से परे प्राण नहीं 134, 159
-हृदय से तीसरे तिल तक 21
महाराज चरन सिंह जी की मंगनी 136

- सावन सिंह जी का गृहस्थ जीवन 15-16,
200, 346
-----जन्म दिन 173-74, 177, 315,
319-20.
-----दर्शनों के बारे में कथन 134
-----संगत के प्रति प्रेम 86, 114, 141,
181, 205-06, 241
-----को खाने सम्बन्धी आदतें 72
-----टांग की हड्डी टूटी 106
-----बीमारी 47, 86, 87, 91, 101,
123, 126, 129, 155, 157, 198-
205, 217, 228, 268
-----यात्रा से सृष्टि को लाभ 52
-----विनम्रता 320
-----सहनशीलता 59, 63, 97, 198,
243
-----कोढ़ियों से मिलने गए 65-66
-----को हुक्म सिंह का माथा टेकना 141
-----लिखे गए पत्र 23, 29, 97, 139,
141, 216, 253-56, 261, 286, 304,
305, 351
-----द्वारा मुसलमान तेलियों को नाम देने
की घटना 316
-----द्वारा लिखे गए पत्र 73, 134, 236,
251-52, 256
-----दोबारा संसार में आएंगे 252-53
-----ने नाम देना कब शुरू किया 305,
343-44
-----परिश्रमी 97, 132, 176-7, 237,
287, 288-89, 296
महाराजा रणजीत के विनाश का कारण 64
मात मण्डल की रूहों का विशेषाधिकार
188, 336-37
माता किशन कौर जी 338, 345
-देवी का ब्याह शहीदों से 51
मानसिक रोग कौन-कौन से 137
मुक्ति के तीन साधन 73, 90
-नेक कर्मों से नहीं 90, 93, 128, 188
236, 275-76
-शब्द सुनने से ही 102
मौत अटल है 162
-का समय 19, 21, 61, 107, 152, 165,
170-71, 172, 312
-के बाद 128, 170, 172, 276, 312
---'दिया' 'क्रिया कर्म' 63
--समय रोना पीटना 19, 61, 97, 107,
299, 308
-सत्संगी की 59, 61, 67, 70, 156, 164,
166, 338
--के रिश्तेदारों की 299
योग-हठ, ज्ञान, ध्यान 21, 74
रचना के समय 187, 197
रत्न सागर 170-71
'राधा स्वामी' अलग मजहब नहीं 158, 222
--से अभिप्राय 68, 222
रामायण 18, 142, 294
रिश्तेदार दुनियावी 103-04, 193, 231,
250
-सच्चा 20, 193, 250
रूहानी तरक्की को हज़म करना 74, 141
-नज़ारे बन्द होने का कारण 278-79
-सफ़र 14, 73-74, 94-95, 98, 121,
133-35, 160, 188, 240, 335
--आसान कब? 147
-स्वप्न 61, 99
विष्णु चक्र या नील चक्र 121
वेदान्तियों की अवस्था 63, 75
व्यास जी के सेवक 'जैमिनी' 143

- शब्द का खिंचाव कब? 102, 139, 249
 -के कारण शरीर जीवित 174-75, 243
 -मनोकाश से परे 21
 -से जुड़े जीवों की अवस्था 101
 शरण से अभिप्राय 21, 83, 128
 शरीर-स्थूल, सूक्ष्म, कारण 94-95, 99
 शान्ति सच्चि 256-57
 संभाल सत्संगी की 30, 70, 81, 98, 129, 156, 164, 305
 -सत्संगी के रिश्तेदारों की 81, 180
 संसार की अवस्था 91-92, 100, 127, 151, 152, 284
 -में चार पदार्थ 163
 ---श्रेणियाँ 284
 -तीन प्रकार के लोग 130
 संस्कृत को देववाणी क्यों कहते हैं? 150
 सांसारिक मान-बड़ाई 78
 सतलोक 62
 सत्संग का उद्देश्य 143, 249, 272
 सत्संगियों के साथ न्योता-भाजी 235
 -पर हुजूर की दया 24, 25, 53-54, 59, 188-89, 241, 265, 269-71, 276-77, 286, 304, 351
 सत्संगी का किसी से माथा टिकवाना 338
 --पल-पल का भजन-सिमरन 141-42
 सन्त गृहस्थ की मलाह क्यों देते हैं ? 75
 -त्यागी, गृहस्थ 15-16, 77
 -देवा सिंह 309, 313, 321, 323
 -प्राचीन समय के 89, 267
 सन्तमत का धर्म 251-252
 -का सार 49
 सन्त मौत से नहीं डरते 200
 -शाप नहीं देते 107-108
- सन्तों का उद्देश्य 172, 214, 222, 321
 --दुनिया के कार्यों में दाखल 220
 -की झिड़क 300
 --दया 107, 130, 339
 --परख 16-17, 333
 --प्रारब्ध नहीं रहती 106
 -- संगति 164, 165, 173, 179, 210
 -के उपकार 23, 48
 --वाक्य 64-65
 -को बहुत से जन्मों का ज्ञान 131
 'सम', 'दम' से अभिप्राय 129
 समाधि बनाना सन्तमत के विरुद्ध 323
 समाधियों तीन प्रकार की 121
 सहस्र दल कमल 49, 75, 121, 133, 160, 325
 साई लसूड़ी शाह 243
 साधुओं के लिये हिदायतें 145, 348
 सिक्खमत रूहानी फिलॉसफी 158
 सिमरन और ध्यान 11, 73
 -की ताकत 22, 177, 254, 301
 -की सीमितता 20, 73, 305
 सिमरन के समय मन भटके तो? 22, 78, 101, 134, 231, 275
 -जबान से या दिल से 78, 278
 सिमरन पाँच विशेष नामों का क्यों 293
 सुखमना 240, 296, 315, 329, 335
 सूक्ष्म मण्डल की रूहें स्थूल मण्डल में 326
 सूली का सूल 100, 145, 188-89
 सेवक की अवस्था 195, 204-205
 सेवा 16, 210, 285, 350
 स्वामी जी महाराज 222-224
 ---तुलसी साहिब 192, 224
 'स्वामी पद' 222

हमारे प्रकाशन

स्वामी जी महाराज

1. सारबचन संग्रह
2. सारबचन वार्तिक

बाबा जैमल सिंह जी महाराज

1. परमार्थी पत्र, भाग 1

महाराज सावन सिंह जी

1. परमार्थी पत्र, भाग 2
2. शब्द की महिमा के शब्द
3. प्रभात का प्रकाश
4. गुरुमत सिद्धान्त, भाग 1, 2

महाराज सरदार बहादुर जगत सिंह जी

1. आत्म-ज्ञान
2. रूहानी फूल

महाराज चरन सिंह जी

1. सन्तों की बानी
2. सन्तमत दर्शन, भाग 1 से 3
3. सन्त-संवाद भाग 1, 2
4. सन्त-मार्ग

'पूर्व के सन्त' पुस्तक-माला के अन्तर्गत

1. सन्त नामदेव
2. सन्त कबीर
3. गुरु रविदास
4. गुरु नानक का रूहानी उपदेश
5. गुरु अर्जुन देव
6. सन्त तुकाराम
7. नाम-भक्ति : गोस्वामी तुलसीदास
8. मीरा : प्रेम-दीवानी

5. सन्तमत सिद्धान्त
6. सन्तमत प्रकाश, भाग 1 से 5
7. परमार्थी साखियाँ
8. गुरुमत सार

5. जीवित मरिए भवजल तरिए
6. पारस से पारस
7. सत्संग संग्रह, भाग 1 से 6

- जनक पुरी
 शान्ति सेठी
 के. एन. उपाध्याय
 जनक पुरी
 महिन्द्र सिंह जोशी
 चन्द्रावती राजवाड़े
 के.एन.उपाध्याय, पंचानन उपाध्याय
 वीरेन्द्र सेठी

शब्द	9. सन्त दादू दयाल	के. एन. उपाध्याय
-के	10. सन्त पलटू	राजेन्द्र कुमार सेठी
-म	11. सन्त चरनदास	टी. आर. शंगारी
-से	12. सन्त दरिया (बिहार वाले)	के. एन. उपाध्याय
शर	13. तुलसी साहिब	जनक पुरी, वीरेन्द्र सेठी
शरी	14. उपदेश राधास्वामी (स्वामी जी महाराज)	सहगल, शंगारी, 'खाक', भण्डारी
शां	15. साई बुल्लेशाह	जनक पुरी, टी. आर. शंगारी
संभ	16. हजरत सुलतान बाहू	कृपाल सिंह 'खाक'
-स	17. सरमद	टी. आर. शंगारी, पी. एस. 'आलम'
संर	18. बोलै शेख फरीद	टी. आर. शंगारी
-रे	सतगुरुओं के विषय में	
--	1. रूहानी डायरी, भाग 1 से 3	राय साहिब मुंशी राम
--	2. धरती पर स्वर्ग	दरियाई लाल कपूर
सं	3. अनमोल खजाना	शान्ति सेठी
सां	4. मेरा सतगुरु	जूलियन पी. जानसन
सत	सन्तमत के सम्बन्ध में	
सत	1. नाम-सिद्धान्त	शंगारी, 'खाक', भण्डारी, सहगल
सत	2. सन्तमत विचार	टी. आर. शंगारी, कृपाल सिंह 'खाक'
-र	3. सन्त-सन्देश	शान्ति सेठी
	4. सन्त-समागम	दरियाई लाल कपूर
स	5. अमृत नाम	महिन्दर सिंह जोशी
-	6. अन्तर की आवाज़	सी. डब्ल्यू. सेंडर्स
स	7. हंसा हीरा मोती चुगना	सम्पादक: सन्तोख सिंह, टी. आर. शंगारी
-	8. हक्र-हलाल की कमाई	सम्पादित
-	9. जिज्ञासुओं के लिये	सम्पादित
-	10. बिनती और प्रार्थना के शब्द	संकलित
स	11. अमृत वचन	संकलित
-	अन्य प्रकाशन	
स	1. भाई गुरदास	महिन्दर सिंह जोशी
-	2. किताब-ए-मीरदाद	मिखाइल नइमी